लोह़ ओ कलम

क़लंदर बाबा औलिया रहमतुल्लाह अलै

लोह़ ओ कलम

www.ksars.org

समर्पण

मैं

यह किताब

पैग़म्बर–ए–इस्लाम

हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम

के आदेश से लिख रहा हूँ।

मुझे यह आदेश

हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम

की स्वरूप से

उवैसिय॰ तरीक़े से प्राप्त हुआ है।

(क़लंदर बाबा औलिया रहमतुल्लाह अलैह)

www.ksars.org

गुफ़्तेह–ए–ऊ गुफ़्तेह–ए–अल्लाह बूवद   गरचहु अज्हलूम–ए–अब्दुल्लाह बूवद के सापेक्ष, हामील–ए–'इल्म–ए–लदुनी, वाक़िफ–ए–असरार–ए–कन–फीकून, मुरशिद करीम, अब्दाल–ए–हक़, हसन उख़रा मोहम्मद अज़ीम बरक़िया[रह], हज़रत क़लंदर बाबा अवलिया[रह] की भाषा–ए–फ़ैज़–ए–तरजुमान से निकला हुआ प्रत्येक शब्द स्वयं हज़ूर बाबा साहब के आत्मिक संचरण से मेरे ज़ेह्न की स्क्रीन पर अंकित होता रहा। और फिर यह इल्हामी लेखन हज़रत क़लंदर बाबा अवलिया[रह] की मबारक भाषा और इस आज्ञाकारी के कलम से काग़ज़ पर स्थानांतरित होकर पुस्तक "लोह़–ओ–कलम" बन गई।

मेरे पास यह आत्मिक विज्ञान मनुष्य और जन्नात के लिए एक विरासत है। मैं यह अमानत बड़े–बुज़ुर्गों, मनुष्य और जन्नात की वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को सुपुर्द करता हूँ।

ख्वाजा शम्सुद्दीन अज़ीमी

www.ksars.org

अनुक्रमणिका

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम 10

रूया के लोक से मनुष्य का संबंध 14

रूया की क्षमताओं के स्तर 15

प्रथम पट्टिका या सुरक्षित पट्टिका (लोह़-ए-महफ़ूज़) 17

पट्टिका द्वितीय (लौह दोएम) 18

लोक जु (आलम-ए- जु) 19

अधिकता का संक्षेप 20

"जु" का वास्ता 21

अनुभूति की श्रेणीकरण 23

अस्तित्व की एकता (वह्दत-ए-वुजूद) और अस्तित्व की निगाह में एकता (वह्दत-ए-शौद) 24

आत्मा-ए-परम, आत्मा-ए-मानव, आत्मा-ए-प्राणि और षट् सूक्ष्म तत्त्व (लताइफ़े-सत्ता) 30

ईश्वरीय नाम (अस्माए-इलाहिया) 32

ईश्वरीय नामों की संख्या ग्यारह हज़ार है। 34

क़ानून: 35

ज्ञान-बोध(तफ़हीम) की पद्धति 35

स्वप्न और जागरण 36

सुरक्षित पट्टिका(लौहे-महफ़ूज़) और मुराकबा 37

तदल्ला 38

www.ksars.org

कुन फ़ैकून 39

नियम 42

सूत्र: 42

सत्य: 42

व्याख्या: 42

अल्म-ए-लदुन्नी 44

हर नाम तीन तजल्लीओं का समष्टि है 44

इस्म-ज़ात 46

आत्मा की केन्द्रीयताएँ और प्रेरणाएँ 50

सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की गति 51

बासिरा और नफ़्स का साक्षात्कार " शुहूद-ए-नफ़्सी" 53

विश्राम का अभ्यास"अमल-ए-इस्तरखा" 55

ज्ञान नकार"ला" और ज्ञानस्वीकार "इल्ला" 57

नकार (ला) का मुराकबा 58

क़ुवत-ए-इल्क़ा 60

साधक आकर्षित "सालिक मज़ज़ूब", आकर्षित साधक "मज़ज़ूब सालिक" 62

संबंध का विवरण "निस्बत का वर्णन" 66

निस्बत-ए-ओवैसिया 66

www.ksars.org

निस्बत-ए-सुकैना 66

निस्बत-ए-इश्क़ 66

निस्बत-ए-जज़्ब 66

अवतरण-क्रम"तनज़्ज़ुलात" 67

काल और स्थान का सिद्धांत 68

निगाह की शक्ति 70

वाणी की शक्ति 71

रसना 73

घ्राण शक्ति 74

स्पर्श शक्ति 75

कालिकता (*मक़ानियत*) और कालिकता (*ज़मानियत*) का रहस्य 83

ब्रह्मांड की संरचनात्मक रचना 85

प्रतिनिधित्व "नियाबत" क्या है? 86

सुरक्षित पट्टिका का नियम 91

आत्मिक संचरण (तसर्फ़) 91

आकर्षण "कशिश" का सिद्धांत 95

दार्शनिक विद्वानों 99

अना या मानवीय ज़ेह्न की संरचना 106

www.ksars.org

अना की विश्लेषण "तहलील" 106
ब्रह्मांड की संरचना 107
प्रकट और आंतरिक 108
आलम-ए-अमर (ईश्वर की कार्ययोजना का लोक) 110
निस्बत-ए याददाश्त "स्मृति" 114
आलम-ए-तम्साल 121
मुराकबा 122
शहूद (प्रत्यक्ष साक्षात्कार) 123
नमाज़ और ज़कात का कार्यक्रम 127
सृष्टि और आदेश 129
तीन आलम क्यों? 130
सृष्टि का नियम 132
नुज़ूल व सु ऊद अवतरण और आरोहण 136
ब्रह्मांडबिंदु॰ विचार उद्गार (फ़िक्र-ए-वुज्दानी) 140
इल्म-उल-यक़ीन 140
एक हक़ीक़त 140
अयन-उल-यक़ीन 141
हक़-उल-यक़ीन 141
नूर और अग्नि 142

www.ksars.org

दृष्टि......142

नाम-तत्त्व का ज्ञान(इल्म-उल-अस्मा) 143

इल्म-ए-हुज़ूरी (प्रत्यक्ष ज्ञान):......144

इख़फ़ा या इर्तिक़ा (गोपन या उत्कर्ष)......146

इल्म-ए-हुसूली (अर्जित ज्ञान):......146

इल्म-ए-लदुन्नी ईश्वरप्रदत्त ज्ञान 146

अवचेतन, अध्यवसाय और चेतना का अंतर 148

स्वरूप......150

विराम......150

दर्शन के इन्द्रिय 152

इन्द्रिय 152

चार चेतनाएँ......154

नबियों के आध्यात्मिक स्तर......157

अन्धकार भी रोशनी है......158

रोशनी के कोण 159

सृष्टि का सूत्र......161

ब्रह्मांड नस्मा का प्रकट रूप......162

वहम क्या है? 162

भूत और भविष्य......167

www.ksars.org

गोलक-गति (हरकत-ए-दौरी):........176

निगाह की व्यक्तिगत सतह........177

रात्रि और दिवस (लैल व नहार)........177

ईश्वर की आवाज़........179

काल-स्थान की वास्तविकता........181

काल—अकालिक की व्याख्या अकालिक कोण से........184

कार्यादेश (अमर) और सृष्टि के अंश........185

सृष्टि का रहस्य........187

जल धारणाओं का खोल है........189

ब्रह्मांड का उद्भव किस प्रकार होता है........189

काला बिंदु........193

अद्राक क्या है?........194

एक सेकेण्ड की विनाश, खरबों वर्षों की स्थायित्वता........195

अद्राक कहाँ से आया?........197

www.ksars.org

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मानव-समष्टि में ज़िन्दगी की गतिविधियों के विचाराधीन स्वभावगुणों की भिन्न-भिन्न संरचनाएँ होती हैं, जैसे संरचना अलिफ़, अ, ब, प, च इत्यादि। यहाँ चर्चा उस संरचना की है जो "पद पद चलाकर बोध का गन्तव्य तक पहुँचा देती है।

पहले हम एक भौतिक उदाहरण देते हैं। वह यह है कि यदि कोई आदमी चित्रकार बनना चाहे तो वह तस्वीर के आकृतियाँ को अपनी प्रकृति में धीरे-धीरे समाहित करता जाता है। उसके स्मृति-भंडार में यह बात सुरक्षित रहती है कि कानों की संरचना के लिए पेंसिल की एक विशेष प्रकार की रेखाओं का प्रयोग होगा, आँखों की संरचना के लिए दूसरी प्रकार की, बालों की संरचना के लिए तीसरी प्रकार की। अभ्यास करते-करते वह मानवी शरीर के प्रत्येक अंग की संरचना को पेंसिल के नक़्श की छवि में पूर्ण रूप से प्रकट करने पर अधिकार पा लेता है। अब हम उसे चित्रकार कह सकते हैं। यह सब किस प्रकार हुआ?

उसके ज़ेहन में मानवी आकृतियाँ का प्रतिबिंब विद्यमान था। जब इस प्रतिबिंब को उतारने के लिए उसने पेंसिल का उपयोग करना चाहा तो वह प्रतिबिंब जो उसके ज़ेहन में मौजूद था, बार-बार उसकी पथप्रदर्शन करता रहा। साथ ही जिस उस्ताद ने उसे चित्रकारी का कला सिखाया, वह यह बतलाता गया कि पेंसिल इस प्रकार प्रयोग की जाती है और किसी अंग की आकृति को क्रमबद्ध करना इस प्रकार कर्म में आता है। उस्ताद का कार्य केवल इसी क़दर था लेकिन तस्वीर का प्रतिबिंब उस्ताद ने उसके ज़ेहन में स्थानांतरित नहीं किया। वह उसके आंतरिक में पहले से विद्यमान था। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि उसकी आत्मा के भीतर मानव-समष्टि के हज़ार दर हज़ार आकृतियाँ संरक्षित थे। जब उसने एक उस्ताद की मार्गदर्शन में उन आकृतियाँ को काग़ज़ पर अंकित करना चाहा तो वे सभी आकृतियाँ जो ज़ेहन में मौजूद थीं काग़ज़ पर स्थानांतरित हो गईं।

इस तर्क या तुलना के अनुसार भौतिक कलाओं की इस प्रकार की हज़ारों मिसालें हो सकती हैं जिनसे हम केवल एक ही निष्कर्ष निकालते हैं और वह यह कि मनुष्य स्वभावतः चित्रकार, लेखक, दर्ज़ी, लोहार, बढ़ई, दार्शनिक, चिकित्सक आदि सब कुछ होता है, मगर उसे किसी विशेष कला में एक विशेष प्रकार का अभ्यास करना पड़ता है। इसके बाद उसके भिन्न-भिन्न नाम रख लिए जाते हैं और हम इस प्रकार कहते हैं कि फलाँ व्यक्ति चित्रकार हो गया, फलाँ व्यक्ति दार्शनिक हो गया। वस्तुतः वे सभी क्षमताएँ और आकृतियाँ उसके ज़ेहन में विद्यमान थीं। उसने केवल

www.ksars.org

उन्हें जागृत किया। उस्ताद ने जितना काम किया वह केवल क्षमता के जागरण में एक सहायता है।

अब हम मूल उद्देश्य की ओर आते हैं। जिस प्रकार कोई व्यक्ति चित्रकार, लेखक या दार्शनिक होता है उसी प्रकार स्वभावतः अपनी आत्मा के भीतर एक आरिफ़, एक आत्माज्ञानी जन, एक वली, एक ईश्वर-शिनास, एक पैग़म्बर विशेष प्रकार की आत्मिक आकृतियाँ और विशेष प्रकार की आत्मिक क्षमताएँ लिए होता है। (यहाँ कोई पैग़म्बर इसलिए चर्चा में नहीं है कि पैग़म्बरी समाप्त हो चुकी है। केवल आत्मिक ानी व्यक्ति, उसका नाम कुछ भी हो, हमारा उद्देश्य यही है।) अब हम क्षमताओं का उल्लेख अ से शुरू करते हैं।

अ (अलिफ़): एक मनुष्य क्या है? हम उसे किस प्रकार अभिज्ञात करते हैं और क्या समझते हैं?

हमारे सामने एक प्रतिमा है जो मांस-पेशी से निर्मित है। चिकित्सीय दृष्टिकोण से हड्डियों की संरचना पर नस-पेशियों की बनावट को एक शरीर का रूप और आकार दिया गया है। हम इसका नाम शरीर रखते हैं और इसे वास्तविक समझते हैं। इसकी सुरक्षा के लिए एक वस्तु बनाई गई है, जिसका नाम वसन है। यह वसन सूती कपड़े का, ऊनी कपड़े का या किसी खाल आदि का होता है। इस वसन का उपयोग केवल मांस-पेशी के शरीर की सुरक्षा के लिए होता है। वास्तव में इस वसन में अपनी कोई जीवन शक्ति या अपनी कोई गति नहीं होती। जब यह वसन शरीर पर होता है तो शरीर के साथ ही गति करता है अर्थात् इसकी गति शरीर से स्थानांतरित होकर इसे प्राप्त होती है। लेकिन वास्तविकता में यह शरीर के अंगों की गति होती है। जब हम हाथ उठाते हैं तो आस्तीन भी मांस-पेशी वाले हाथ के साथ गमन करती है यह आस्तीन वसन का हाथ है, जो वसन शरीर की सुरक्षा के लिए प्रयोग हुआ है। यदि इस वसन की परिभाषा की जाए तो कहा जाएगा कि जब यह वसन शरीर पर है तो शरीर की गति इसके भीतर स्थानांतरित हो जाती है और यदि इस वसन को उतारकर चारपाई पर रख दिया जाए या खूँटी पर लटका दिया जाए तो इसकी सारी गति समाप्त हो जाती हैं। अब हम इस वसन की तुलना शरीर के साथ करते हैं। इसकी अनेक उदाहरणें हो सकती हैं। यहाँ केवल एक उदाहरण देकर सही अर्थ को ज़ेहन में उतारा जा सकता है। वह यह है कि आदमी मर गया। मरने के बाद उसके शरीर को काट दीजिए, टुकड़े कर दीजिए, खींचिए, कुछ भी करिए। शरीर की अपनी ओर से कोई प्रतिरोध, कोई गति क्रियान्वित नहीं होगी। इस मृत शरीर को एक तरफ रख दीजिए तो इसमें जीवन का कोई अंश या किसी क्षण में उत्पन्न होने की कोई संभावना नहीं है। इसे जिस प्रकार रखा जाएगा, वैसे ही रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि मरने के बाद शरीर की स्थिति केवल वसन की रह जाती है। असली

www.ksars.org

मनुष्य इसमें उपस्थित नहीं रहता। वह इस वसन को छोड़कर कहीं चला जाता है। जब अनुभवों और परीक्षणों ने यह निर्णय दे दिया कि मांस-पेशी का शरीर केवल वसन है, असली आदमी नहीं, तो यह खोज आवश्यक हो गई कि असली मनुष्य क्या है और कहाँ चला गया?

यदि यह शरीर असली मनुष्य होता तो किसी न किसी प्रकार से इसमें जीवन का कोई अंश जरूर पाया जाता, लेकिन मानव-समष्टि का संपूर्ण इतिहास ऐसी कोई मिसाल प्रस्तुत नहीं कर सकता कि किसी मृत शरीर ने कभी कोई गति दिखाई हो।

इस स्थिति में हम उस मनुष्य का जिज्ञासु हो जाते हैं जो इस शरीर के वसन को छोड़कर कहीं चला जाता है। उसी मनुष्य का नाम अनबियाँ-ए-करामँ की भाषा में आत्मा है और वही मनुष्य का असली शरीर है। यही शरीर उन सभी क्षमताओं का मालिक है जिनके समुच्चय को हम जीवन कहते हैं।

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और दृष्टिकोणों में यह देखें कि वह स्थिति, जिसका नाम मृत्यु या मर जाना है, हमें कहीं मिलती है या नहीं। यदि यह स्थिति जीवन के किसी भी चरण में व्यक्ति पर पूरी तरह से हावी नहीं होती, तो फिर यह देखना चाहिए कि क्या इसी तरह की स्थिति किसी अंतराल में प्रकट होती है या नहीं।

इसका उत्तर बहुत सरल है। आदमी रोज़ सोता है और सोने की अवस्था में उसका शरीर एक निश्चित अंतराल में पूरी तरह वसन की तरह हो जाता है। इस बात की व्याख्या हम इस प्रकार कर सकते हैं कि जब आदमी गहरी नींद में होता है, इतनी गहरी नींद में कि वह केवल श्वास ले रहा होता है। श्वास लेने के अलावा जीवन का कोई प्रभाव इसमें नहीं पाया जाता। न इसके किसी अंग में गति है, न इसका मस्तिष्क किसी प्रकार की चेतना रखता है। यह स्थिति चाहे दो मिनट के लिए हो, दस मिनट के लिए हो या एक घंटे के लिए, किसी न किसी समय होती ही है। फर्क केवल इतना होता है कि आदमी का शरीर श्वास ले रहा है, यानी इसके भीतर जीवन का एक अंश शेष है, लेकिन अन्य संकेत समाप्त हो चुके हैं। इस स्थिति को हम किसी हद तक मृत्यु से मिलती-जुलती अवस्था कह सकते हैं।

जिसे हम सपना देखना कहते हैं, वह हमें आत्मा और आत्मा की क्षमताओं का पता देता है। यह इस प्रकार है कि हम सोए हुए हैं। सभी अंग पूरी तरह स्थगित हैं। केवल श्वास का आवागमन जारी है, लेकिन सपना देखने की अवस्था में हम चल-फिर रहे हैं, बातें कर रहे हैं, सोच रहे हैं,

www.ksars.org

दुःखी और प्रसन्न हो रहे हैं। कोई ऐसा कार्य नहीं है जो हम जाग्रत अवस्था में करते हैं और सपना देखने की अवस्था में नहीं करते।

कोई व्यक्ति यह आपत्ति कर सकता है कि सपना देखना केवल एक कल्पनात्मक वस्तु है और इसमें कल्पित क्रियाएँ होती हैं, क्योंकि जब हम जाग जाते हैं तो किए गए कार्यों का कोई प्रभाव शेष नहीं रहता। यह बात पूरी तरह निरर्थक है। प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में एक, दो, चार, दस, बीस ऐसे सपने अवश्य आते हैं कि जागने के बाद या तो उसे नहाने और स्नान करने की आवश्यकता पड़ती है या किसी भयानक सपना के बाद उसका पूरा भय और आतंक हृदय और मस्तिष्क पर छा जाता है, या जो कुछ सपना में देखा गया वह कुछ घंटे, कुछ दिन, कुछ महीने या कुछ वर्ष बाद पूर्णतः जाग्रत अवस्था में घटित होता है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जिसने अपने जीवन में इस प्रकार का एक या एक से अधिक सपने नहीं देखे हों। इस तथ्य के रोशनी में यह सिद्ध हो जाता है कि सपना केवल कल्पना नहीं है। जब यह मान लिया गया कि सपना केवल कल्पना नहीं है, तो सपने का महत्व स्पष्ट हो जाता है।

अब हम जाग्रत अवस्था के कार्यों और घटनाओं तथा सपना के कार्यों और घटनाओं को सामने रखकर दोनों की तुलना करते हैं।

यह रोज़मर्रा की बात होती है कि हम घर से चलकर बाजार पहुँच जाते हैं। किसी विशेष दुकान पर खड़े हैं और कोई वस्तु खरीद रहे हैं। यदि उस समय कोई व्यक्ति हमसे यह प्रश्न करे कि दुकान तक पहुँचने के रास्ते में आपने क्या देखा, तो हम मजबूरन यह उत्तर देते हैं कि हमने कुछ विचार नहीं किया। यह स्पष्ट हो गया कि जाग्रत अवस्था में हमारे चारों ओर जो कुछ होता है, यदि हम पूरी तरह ध्यान न दें, तो हमें यह नहीं पता चलता कि क्या हुआ, किस प्रकार हुआ और कब हुआ।

इस उदाहरण से यह प्रमाणित हो जाता है कि चाहे जाग्रत अवस्था हो या सपना, जब हमारा ज़ेहन किसी वस्तु की ओर या किसी कार्य की ओर केंद्रित है तो उसका महत्व है, अन्यथा जाग्रत अवस्था और सपना – दोनों का कोई महत्व नहीं है। जाग्रत अवस्था का बड़ा से बड़ा अंतराल बे-ख़याली में बीत जाता है और सपने का भी बहुत बड़ा भाग बे-ख़बरी में गुज़र जाता है। कितनी ही बार सपना अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है और कितनी ही बार जाग्रत अवस्था का भी कोई महत्व नहीं होता। फिर यह कैसे उचित है कि हम सपने की अवस्था और सपने के अंशों को, जो जीवन का आधा भाग है, नज़रअंदाज़ कर दें।

www.ksars.org

आइए! अब हम सपने के अंशों, सपने के महत्व और सपने की वास्तविकता का अन्वेषण करें।

मान लीजिए कि एक निबंधकार निबंध लिखने बैठता है। उसके ज़ेह्न में केवल शीर्षक है। न निबंध के क्रमबद्ध अंश मौजूद हैं, न विस्तार, लेकिन जैसे ही वह क़लम हाथ में उठाकर लिखना आरम्भ करता है तो निबंध के अंश क्रमशः और विस्तार सहित ज़ेह्न में आने लगते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि वाक्य का आशय लेखक के अतिचेतन में पहले से मौजूद था। वहीं से यह आशय अवचेतन अर्थात् ज़ेह्न में स्थानांतरित हुआ और शब्दों का वसन पहनकर काग़ज़ पर अंकित हो गया। यह निबंध, आशय की हैसियत में जहाँ मौजूद था, उसका नाम **'साबिता'** है, जिसे विशेषज्ञ अतिचेतन कह सकते हैं। फिर यही आशय स्थानांतरित होकर **'अय्यान'** में आया, अर्थात् अवचेतन में प्रविष्ट हुआ। अंततः यही आशय वाक्य की आकृति धारण कर लेता है। हम इसी अवस्था को **'जविया'** में स्थानांतरित होना कहते हैं और सामान्य लोग आशय के इस स्थानांतरण को चेतना में आना कहते हैं।

अब हम उन क्षमताओं का उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं जो स्वप्न अर्थात् 'रूया' के नाम से जानी जाती हैं। स्वप्न के लोक में मनुष्य भोजन करता है, पेय ग्रहण करता है और चलता-फिरता है। इसका अर्थ यह हुआ कि आत्मा मांस और त्वचा के शरीर के बिना भी गति करती और संचरण करती है। आत्मा की यह क्षमता जो केवल 'रूया' में सक्रिय होती है, हम किसी विशेष विधि से इसका अन्वेषण कर सकते हैं और इस क्षमता को जाग्रति में भी प्रयोग कर सकते हैं।

नबीगण (अलैहिमुस्सलाम) का ज्ञान यहीं से आरम्भ होता है। और यही वह ज्ञान है जिसके माध्यम से नबियों ने अपने शिष्यों को यह बताया है कि मनुष्य प्रारम्भ में कहाँ था और इस लोक-नासूत का जीवन पूर्ण करने के पश्चात् वह कहाँ चला जाता है।

रूया के लोक से मनुष्य का संबंध

यह देखा जाता है कि मनुष्य अपने ज़ेह्न में ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु से परिचित है। जिसे हम स्मृति कहते हैं, वह हर देखी हुई वस्तु और हर सुनी हुई बात को याद रखती है। जिन वस्तुओं से हम परिचित नहीं हैं, हमारे ज़ेह्न में उनसे परिचय प्राप्त करने की जिज्ञासा विद्यमान है। यदि इस जिज्ञासा का विश्लेषण किया जाए तो अनेक आत्मिक क्षमताओं का उद्घाटन होता है। यही जिज्ञासा वह क्षमता है जिसके माध्यम से हम ब्रह्मांड के प्रत्येक अंश से परिचित हो जाते

www.ksars.org

हैं। इस शक्ति की क्षमताएँ इतनी व्यापक हैं कि जब इनसे कार्य लिया जाए तो यह ब्रह्मांड की उन सभी सृष्टियों से परिचित हो जाती हैं, जो पहले कभी थीं, अब हैं या भविष्य में होंगी। परिचित होने के लिए हमारा ज़ेहन जिज्ञासा करता है। जिज्ञासा उस गति का नाम है जो पूरे ब्रह्मांड का आवरण किए हुए है। कुरआन पाक में आता है: “اَلَا اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْط -अला इन्नहू बिकुल्लि शैई मुँहीत”, अर्थात् ईश्वर हर चीज़ को आवृत करने वाली गुण रखते हैं। इस गुण का प्रतिबिंब मनुष्य की आत्मा में पाया जाता है। इसी प्रतिबिंब के माध्यम से मनुष्य का अवचेतन या अतिचेतन (तहत-लाशउर) रूया के लोक में ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु से परिचित होता है।

रूया की क्षमताओं के स्तर

नंबर १: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अलजू

नंबर २: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अल-अहक़ा

नंबर ३: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अल-मनाम

नंबर ४: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अल-मुल्कूत

नंबर ५: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अल-कुलियात

नंबर ६: प्रकटज्ञान(कश्फ़) अल-वुजूब

प्रकटज्ञान(कश्फ़) अलजू वह क्षमता है जिसके माध्यम से प्रत्येक आदमी वहदत के सापेक्ष परिचित होता है। ईश्वर की आज्ञा की रचना का नाम ब्रह्मांड है। इसी आदेश के माध्यम से ईश्वर की आवरण करने वाली गुण संपूर्ण संग्रह (कुलियात) में स्थानांतरित हुई है।

संपूर्ण संग्रह (कुलियात) के सभी अंश एक-दूसरे का चेतना रखते हैं। भले ही व्यक्ति के ज्ञान में यह बात न हो, लेकिन व्यक्ति की स्थिति कुलियात में एक स्थान रखती है। यदि ऐसा न होता तो मनुष्य चाँद, तारों और अपनी पृथ्वी से अलग वातावरण से परिचित नहीं हो पाता। उसकी निगाह सभी आकाशीय पिंडों को देखती है। यह इस बात का प्रमाण है कि प्रत्येक मनुष्य की इंद्रियाँ पृथ्वी से बाहर के वातावरण को भी पहचानती हैं। यही पहचान तसाव्वुफ़ की भाषा में ईश्वर की स्वभावों की प्रत्यक्षज्ञता (सिफ़ात-ए-इलाही की मैरेफ़त) कहलाती है। अब हम इस प्रकार कहेंगे कि मानव चेतना की निगाह ब्रह्मांड के प्रकट रूप को देखती है और मानव के अवचेतन की निगाह ब्रह्मांड के अंतःस्वरूप को देखती है। अन्य शब्दों में, मनुष्य का अवचेतन अच्छी तरह

www.ksars.org

जानता है कि ब्रहमांड के प्रत्येक अंश का रूप और आकृति, गतियाँ और आंतरिक संवेदनाएँ क्या हैं। वह इन सभी गतियों को केवल इसलिए नहीं समझ सकता कि उसे अपने अवचेतन का अध्ययन करना नहीं आता। यह अध्ययन रूया की क्षमताएँ जागृत करने के बाद संभव है।

सबसे पहले हम रूया की उस क्षमता का उल्लेख करते हैं जिसे तसव्वुफ़ की भाषा में कश्फ़ अलज़ू कहा जाता है।

मिसाल के रूप में, यदि एक मुद्दा-लेखक की बात लें तो स्पष्ट है कि मुद्दा का सार्थक अर्थ पहले से कुलियात के चेतना में, अर्थात् मुद्दा-लेखक के अवचेतन में विद्यमान था। वहीं से यह स्थानांतरित होकर लेखक के ज़ेहन तक पहुँचा। अब यदि कोई व्यक्ति इस मुद्दा का अवचेतन में अध्ययन करना चाहे तो रूया की इस क्षमता के माध्यम से, जिसे कश्फ़ अलज़ू कहा गया है, अध्ययन संभव है। चाहे यह मुद्दा दस हज़ार साल बाद लिखा जाना हो या दस हज़ार साल पहले लिखा जा चुका हो।

जिस समय ईश्वर ने शब्द " क़ुन" कहा, तो अनादि से अनंत तक जो कुछ भी किस प्रकार और किस क्रम में होना था, हो गया। अनादि से अनंत तक प्रत्येक अंश, उसकी सभी गतियाँ और स्थिरताएँ अस्तित्व में आ गईं। किसी भी समय में उसी गति का प्रदर्शन संभव है क्योंकि कोई अस्तित्वहीन, अस्तित्ववान नहीं हो सकता। अर्थात् ब्रहमांड में कोई ऐसी वस्तु मौजूद नहीं हो सकती जो पहले से अस्तित्व में न हो।

मनुष्य जब किसी कोण को सही रूप से समझना चाहता है तो उसकी स्थिति निष्पक्ष या न्यायप्रिय होती है और वह न्याय के रूप में कभी पक्षधर नहीं होता। न्याय को वादी और प्रतिवादी के मामलों को सही रूप से समझने के लिए न्याय का ही विचारधारा इस्तेमाल करना होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि एक विचारधारा पक्ष की है और एक विचारधारा न्याय की है।

प्रत्येक व्यक्ति के पास विचारधारा के दो कोण होते हैं। एक कोण मामला जानने वाले के रूप में और दूसरा कोण निष्पक्ष के रूप में। जब मनुष्य निष्पक्ष के रूप में जिज्ञासा करता है तो उस पर तथ्य प्रकट हो जाते हैं। इस जिज्ञासा की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति को अर्पित की गई है ताकि दुनिया का कोई वर्ग मामलों की समझ और सही निर्णय से वंचित न रहे।

www.ksars.org

प्रथम पट्टिका या सुरक्षित पट्टिका (लोह़-ए-महफ़ूज़)

अब यह निश्चित हो गया कि जब मनुष्य किसी निष्पक्ष कोण से तथ्यों को समझने का प्रयास करता है, तो सुरक्षित पट्टिका के नियम के अधीन मानव चेतना, अवचेतन और तहत-अवचेतन की अंतःछवि को पहचानने में सफल हो जाता है। अंतःछवि वह छवि है जो हुक्म के रूप में और प्रतिमा के रूप में सुरक्षित पट्टिका लोह़-ए-महफ़ूज़ (सतह-ए-कुलियात) पर अंकित है। इसी का पालन समय पर स्वतः प्रकट होता है।

चेतना का यह नियम है कि इस दुनिया में जितना मनुष्य सचेत होता है, उतना ही वह अपने परिवेश की चीज़ों में सतर्कता और लगाव उत्पन्न करता है। उसके ज़ेहन में परिवेश की सभी चीज़ें अपनी परिभाषा और प्रकार के साथ इस प्रकार संरक्षित रहती हैं कि जब उसे उन चीज़ों में से किसी की आवश्यकता पड़ती है, तो वह आसानी से अपनी उपयुक्त वस्तु ढूंढ लेता है।

यह स्पष्ट हुआ कि मानव चेतना में क्रमबद्ध रूप से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी वस्तुएँ और गतियाँ विद्यमान रहती हैं। अर्थात्, परिवेश का संग्रह मानव ज़ेहन में समाहित है। ज़ेहन को इतनी सुविधा नहीं मिलती कि चेतना की सीमा से निकलकर अवचेतन की सीमा में कदम रख सके। यहाँ एक सिद्धांत स्थापित होता है कि जब मनुष्य चाहे कि उसका ज़ेहन अवचेतन की सीमाओं में प्रवेश कर जाए, तो उसे इस भिड़ से स्वतंत्र होने का प्रयास करना चाहिए। मानव ज़ेहन, परिवेश से स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, चेतना की दुनिया से हटकर अवचेतन की दुनिया में प्रवेश कर जाता है।

ज़ेहन की इस क्रिया को **अस्तग़ना** कहा जाता है। यह अस्तग़ना ईश्वर की समदित(समदियत) गुण का प्रतिबिंब है, जिसे सामान्य भाषा में मानसिक रिक्ति कहा जाता है। यदि कोई व्यक्ति इसकी अभ्यास करना चाहे, तो इसके लिए अनेक साधन और तरीके उपलब्ध हैं, जिन्हें धार्मिक कर्तव्य के समान माना जाता है। इन कर्तव्यों का पालन करके मनुष्य खाली-ज़ेहन होने की कुशलता प्राप्त कर सकता है।

आध्यात्मिक विकास (सुलूक) की मार्गों में जितने भी पाठ पढ़ाए जाते हैं, उनका उद्देश्य भी मनुष्य को खाली-ज़ेहन बनाना है। वह किसी भी समय इच्छा करके खाली-ज़ेहन होने का मुराकबा कर सकता है।

मुराकबा एक ऐसे छवि का नाम है जो आँखें बंद करके किया जाता है। उदाहरण के लिए, जब मनुष्य अपनी नाश का मुराकबा करना चाहे, तो वह यह छवि बनाएगा मेरे जीवन के समस्त

www.ksars.org

चिन्ह विलीन हो चुके हैं। और अब मैं एक रोशनी बिंदु के रूप में विद्यमान हूँ। अर्थात् आँखें बंद करके यह छवि बनाए कि अब मैं अपनी स्वरूप की दुनिया से पूरी तरह स्वतंत्र हूँ। केवल इस दुनिया से मेरा संबंध शेष है, जिसके आवरण में अनादि से अनंत तक की सभी गतिविधियाँ मौजूद हैं।

इस प्रकार, जितना अधिक कोई व्यक्ति अभ्यास करता है, उतनी ही लोह़-ए-महफ़ूज़ की अंतःछवि उसके ज़ेहन पर प्रकट होती जाती है। धीरे-धीरे वह अनुभव करने लगता है कि अदृश्य के आकृतियाँ इस प्रकार घटित हैं और उन आकृतियों का अर्थ उसके चेतना में स्थानांतरित होने लगता है। अंतःछवि का अध्ययन करने के लिए केवल कुछ दिनों का मुराकबा पर्याप्त है।

पट्टिका द्वितीय (लौह दोएम)

"जु" तसव्वुफ़ की भाषा मे त का ऐसा संग्रह है जो ईश्वर की विशेषताओं के ख़ाकों पर आधारित है। “जु” को लौह द्वितीय कहा जाता है क्योंकि वह लौह-ए-अवल यानी सुरक्षित पट्टिका के का विस्तार है।

सुरक्षित पट्टिका ब्रह्मांड की सृष्टि से संबंधित ईश्वर के आदेशों का छवि-संग्रह है। ब्रह्मांड के भीतर जो भी गति घटित होने वाली है, उसकी छवि ज्यों की त्यों सुरक्षित पट्टिका पर अंकित है। ईश्वर ने आदमी को इरादे का अधिकार प्रदान किया है। जब मानवीय इरादों की छवियाँ सुरक्षित पट्टिका की छवियों में सम्मिलित हो जाती हैं, उस समय लौह-ए-अवल, लौह द्वितीय का रूप धारण कर लेती है। इसी लौह द्वितीय को सूफ़ी अपनी भाषा में “जु” कहते हैं। अर्थात सुरक्षित पट्टिका पहला तमसुल । (आलम-ए-तम्साल) है और “जु" दूसरा तमसुल । (दूसरा आलम-ए-तम्साल) है, जिसमें मानवीय इरादे भी सम्मिलित हैं।

प्रथम, ईश्वर की वह स्तुति वर्णित करना आवश्यक है जो क़ुरआन पाक में की गई है।

قُلْ هُوَاللهُ اَحَدٌOاَللهُ الصَّمَدُOلَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ Oوَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدُO

अनुवाद: हे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! कह दो, ईश्वर एक है। परिपूर्ण है। न किसी ने उसे जन्म दिया और न उसने किसी को जन्म दिया। और न उसका कोई परिवार है।

यहाँ ईश्वर की पाँच विशेषताएँ वर्णित की गई हैं। पहली विशेषता: वेदिता यानी वह विविधता नहीं है। दूसरी विशेषता: परिपूर्णता यानी वह किसी का आश्रित नहीं है। तीसरी विशेषता: वह किसी

www.ksars.org

का पिता नहीं है। चौथी विशेषता: वह किसी का पुत्र नहीं है। पाँचवीं विशेषता: उसका कोई परिवार नहीं है। यह परिभाषा सृष्टिकर्ता की है और सृष्टिकर्ता की जो भी परिभाषा होगी, वह सृष्टि की परिभाषा के विपरीत होगी। या सृष्टि की जो भी परिभाषा होगी, वह सृष्टिकर्ता की परिभाषा के विपरीत होगी। यदि हम सृष्टिकर्ता की परिभाषात्मक सीमाओं को छोड़कर सृष्टि की परिभाषा प्रस्तुत करें, तो इस प्रकार कहेंगे–सृष्टिकर्ता एक है, तो सृष्टि विविध है; सृष्टिकर्ता परिपूर्ण है, तो ष्टि आश्रित है; सृष्टिकर्ता पिता नहीं रखता, तो सृष्टि पिता रखती है; सृष्टिकर्ता का कोई पुत्र नहीं है, लेकिन सृष्टि का पुत्र होता है; सृष्टिकर्ता का कोई परिवार नहीं, लेकिन सृष्टि का परिवार होना आवश्यक है।

लोक जु (आलम-ए- जु)

जब ईश्वर ने 'कुन' कहा, तो ईश्वरीय विशेषताएँ ब्रह्मांड की रूप-रूपता ग्रहण कर गईं। अर्थात ईश्वर की विशेषताओं के मूल तत्व विविधता का रूप बन गए। यह रूप उन सभी आत्माओं या मूल तत्वों का संग्रह है जिन्हें अलग-अलग सृष्टि का रूप प्राप्त हुआ। सृष्टि की प्रथम परिभाषा यह हुई कि अविभाज्य तत्व यानी आत्माएँ, जिन्हें क़ुरआन में अम्र रब्बी कहा गया है, अस्तित्व के रूप में प्रकट हो गईं। इस परिभाषा को ध्यान में रखते हुए हम उस संबंध को नहीं भूल सकते जो सृष्टिकर्ता और सृष्टि के बीच है। इसी संबंध को तसव्वुफ़ की भाषा में "जु" कहा गया है।

"जु" की दूसरी परिभाषा यह है कि सृष्टि प्रत्येक क्षण में सृष्टिकर्ता के संबंध की आवश्यकता रखती है और सृष्टिकर्ता की विशेषताएँ ही प्रत्येक क्षण "जु" को नवजीवन प्रदान करती हैं।

"जु" के तीसरे चरण में एक ऐसा क्रम प्रकट होता है जिसे हम उत्पत्ति का माध्यम मानते हैं। तसव्वुफ़ की भाषा में इसका नाम रुख़-ए-उवल है।

"जु" का चौथा क्रम स्वयं उत्पत्ति के रूप और स्वरूप का नाम है, जिसे तसव्वुफ़ की भाषा में रुख़-ए-सानी कहते हैं। ये दोनों रुख़ "जु" के विविधता का संग्रह हैं।

"जु" के पाँचवें क्रम में व्यक्तियों का ज़ेहन संगठनात्मक स्वरूप ग्रहण कर लेता है, अर्थात "जु" का व्यक्तिगत अनुभव प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव का आंतरिक ग्रहण कर लेता है।

"जु", نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حبْلِ الْوَرِيْدِ व्याख्या है। ब्रह्मांड में जो कुछ भी चेतना को अनुभव होता है या दिखाई देता है, या जिसे चेतना ग्रहण करती है, उसका अस्तित्व तमसुल के प्रथम रूप में "जु" के भीतर पाया जाता है। कोई भी व्यक्ति, जहाँ भी हो, तमसुल का प्रतिबिंब है–चाहे वह

www.ksars.org

व्यक्ति मनुष्य हो, जिन्न हो, देवदूत हो, पौधों से हो, जड़ पदार्थ से हो, या किसी खगोलीय पिंड का स्वरूप रखता हो।

ब्रह्मांड का प्रत्येक व्यक्ति "जु" के माध्यम से अवचेतन रूप से एक-दूसरे से परिचित और जुड़ा हुआ है। तसव्वुफ़ की भाषा में "जु" की विस्तारपूर्ण जानकारी को अदृश्य अस्तित्व (मग़ीबात अकवान) कहा जाता है। यदि किसी व्यक्ति को अदृश्य अस्तित्व (मग़ीबात अकवान) का ज्ञान प्राप्त है, तो वह एक कण की गति को दूसरे कण की गति से सम्बद्ध देख सकता है। अन्य शब्दों में, "जु" का ज्ञान रखने वाला यदि हजार वर्ष पूर्व या हजार वर्ष पश्चात के घटनाओं का अवलोकन करना चाहे, तो वह कर सकता है।

अधिकता का संक्षेप

क़ुरआन पाक में ईश्वर ने फरमाया:

هُوَ الَّذِىْ يُصَوِّرُ كُمْ فِى الْاَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ

इस आयत में ईश्वर ने अविभाज्य तत्व का उल्लेख किया है और यह बताया है कि हमने अवचेतन को रूप और आकार प्रदान किया है। गर्भ में एक ऐसा चित्र बनाया गया है जिसका ज्ञान हमारे सिवा किसी को नहीं था।

ईश्वर ने गर्भ में ऐसी प्रतिमात्मक रूपरेखा बनाई है जो ईश्वर का कार्यादेश। (अम्र रब्बी) के रूप में अविभाज्य तत्व है। यह ऐसा प्रतिबिंब है जिसे ईश्वर के इरादे ने प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान से परिचित कर दिया है। वास्तव में ईश्वर का प्रत्येक आदेश व्यक्तिगत रूप से सम्पूर्ण सृष्टि के ज़ेहन में रूप और आकार ग्रहण कर गया है। अर्थात, जो भी रूप ईश्वर ने बनाया है, वह "जु" में अस्तित्व रखने वाले अरबों व्यक्तियों के ज्ञान में विद्यमान है।

ईश्वर के प्रत्येक आदेश की छवि, जो प्रत्येक कण में अंकित है, उसी छवि के ज्ञान से कोई आदमी अपनी सवारी के उस अश्व को पहचान सकता है जिसकी रूपरेखा और स्वरूप का कोई अश्व पूरी दुनिया में मौजूद न हो। एक माता अपने पुत्र को करोड़ों मनुष्यों में खोज लेती है और पुत्र के सैकड़ों मित्र उसकी विशिष्ट विशेषताओं को देखकर उसे पहचान लेते हैं। ईश्वर के आदेश की विशिष्ट रूपरेखा और समानता, जो एक बच्चे की आत्मा में समाहित है, उस बच्चे की निगाह में कबूतर, मोर या फाख़्ता की पहचान का साधन बन जाती है। कोई बच्चा सितारे को लाखों मील की दूरी से देखकर सितारा कह देता है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु की रूपरेखा और स्वरूप

www.ksars.org

प्रत्येक सृष्टि के व्यक्ति की प्रकृति में अंकित और समाहित है। कोई रूप हजारों वर्षों बाद भी जब किसी व्यक्ति की आँखों के सामने अपनी विशेषताओं के साथ प्रकट होती है, तो वह उसे ईश्वर का कार्यादेश। (अम्र रब्बी), आत्मा, अविभाज्य तत्व या व्यक्ति का नाम लेकर स्वतः पुकार उठता है:"मैं तुम्हें भलीभाँति पहचानता हूँ, तू ज़ैद है, तू महमूद है।"

"जु" का वास्ता

मानव जीवन के दो रुख़ हैं। एक प्रकट रुख़ और दूसरा आंतरिक रुख़। प्रकट रुख़ देखने वालों के लिए पहचान का साधन है कि यह फ़लाँ व्यक्ति है या यह फ़लाँ वस्तु है और आंतरिक रुख़ देखी हुई वस्तुओं की स्मृति का चित्रस्थान है, अर्थात देखी हुई सभी वस्तुएँ इस रुख़ में प्रतिमात्मक रूप में सुरक्षित रहती हैं। हम इन दोनों रुख़ों को पूरी तरह समझते और अनुभव करते हैं। जो कुछ हमारे आंतरिक रुख़ में अंकित और विद्‌यमान है, वह जब प्रकट रूप में हमारी आँखों के सामने आता है, तो हम बिना संकोच उसे पहचान लेते हैं। अब यह वास्तविकता स्पष्ट हो गई कि जो कुछ आंतरिक में है वही प्रकट में है, और जो वस्तु आंतरिक में विद्‌यमान नहीं है, वह प्रकट में नहीं हो सकती। अर्थात प्रकट आंतरिक का प्रतिबिंब है। आंतरिक मूल है और प्रकट उसका रोशनी है। और किसी व्यक्ति का आंतरिक उसकी अपनी स्वरूप है, ऐसी स्वरूप जो अम्र रब्बी अविभाज्य तत्व या आत्मा कहलाती है। वास्तविकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति की स्वरूप में पूरे ब्रह्मांड के सभी तत्व और उनके प्रेरणाएँ अंकित और विद्‌यमान हैं।

मनुष्य की स्वरूप दो भागों में विभक्त है। एक भाग आंतरिक है और दूसरा भाग बाहरी है आंतरिक भाग मूल है और बाहरी भाग उसी मूल की छाया है। आंतरिक भाग में वेदिता की स्थिति है और बाहरी भाग में विविधता। आंतरिक भाग में स्थान और समय दोनों नहीं होते, लेकिन बाहरी भाग में स्थान और समय दोनों विद्‌यमान हैं। आंतरिक भाग में प्रत्येक वस्तु अविभाज्य तत्व के रूप में होती है, किसी कालिकता का आवरण भी नहीं है। बाहरी भाग में कालिकता और कालिकता दोनों विद्‌यमान हैं।

उदाहरण:
हम किसी इमारत की एक दिशा में खड़े होकर उस इमारत के एक कोण को देखते हैं। जब उस इमारत के दूसरे कोण को देखना होता है तो कुछ कदम चलकर और कुछ दूरी तय करके ऐसी जगह खड़े होते हैं जहाँ से इमारत के दूसरे पक्ष पर निगाह पड़ती है और दूरी तय करने में थोड़ी देर भी लगती है। इस तरह निगाह का एक कोण बनाने के लिए कालिकता और काल दोनों का

www.ksars.org

होना आवश्यक है। इसे विस्तार से इस प्रकार बताया जा सकता है कि जब कोई व्यक्ति लंदन टॉवर को देखना चाहता है तो उसे कराची से यात्रा करके लंदन पहुँचना पड़ेगा। ऐसा करने में उसे हजारों मील की कालिकता और कई दिनों का काल लगेगा। अब निगाह का वह कोण बना जिससे लंदन टॉवर देखा जा सकता है। उद्देश्य केवल उस निगाह कोण का निर्माण करना था जो लंदन टॉवर को दिखा सके। यह मनुष्य की आत्मा के बाहरी हिस्से का निगाह कोण है।

इस कोण में कालिकता और काल के इस्तेमाल से बहुलता उत्पन्न हो जाती है। यदि आत्मा के आंतरिक निगाह कोण से काम लेना हो तो हम अपनी जगह बैठे-बैठे मन में लंदन टॉवर की छवि कर सकते हैं। कल्पना करने में जो निगाह उपयोग होती है वह अपनी असमर्थता के कारण एक धुंधला सा रूप दिखाती है। लेकिन वह कोण निश्चित रूप से बना देती है जो लंबी यात्रा करके लंदन टॉवर तक पहुँचने के बाद टॉवर को देखने में बनता है। यदि किसी प्रकार निगाह की दुर्बलता दूर हो जाए तो दृष्टिकोण का धुँधला रूपरेखा आलोकित होकर स्पष्ट दृश्य का स्वरूप धारण कर लेती है, और दर्शन का उद्देश्य उसी प्रकार पूर्ण हो जाता है, जैसे दीर्घ यात्रा की साधन-संपन्न कठिन साधना के पश्चात् पूर्ण होता है। सार्थक तत्व तो दृष्टिकोण की उपलब्धि है, चाहे वह जिस भी उपाय से संभव हो।

यह स्पष्ट हो गया कि एक मनुष्य की आत्मा फ़ि नफ़्सह॑ अविभाज्य अंश है। हर मनुष्य अपने निगाह कोण के तहत अपनी अस्तित्व में पूरे ब्रह्मांड का आवरण किए हुए है। इस ब्रह्मांड का जो स्वयं भी अविभाज्य अंश की है। अस्तित्व का आंतरिक हिस्सा अस्तित्व की एकता (वह्दत) और अस्तित्व का बाहरी हिस्सा बहुलता है। अस्तित्व की एकता (वह्दत) वह हिस्सा है जिसमें न कालिकता है न कालिकता, केवल साक्षी, दृश्य, और दर्शन अवलो कन। अर्थात् अनुभूति के तीन हिस्सों की उपस्थिति पाई जाती है और अस्तित्व के बाहरी हिस्से में केवल उस अनुभूति का प्रतिबिंब है जिसे बहुलता नाम दिया गया है। यह प्रतिबिंब कालिकता और कालिकता दोनों को आवृत करने के बाद अनुभूति को ठोस रूप में प्रस्तुत करता है। जैसे ही मनुष्य एक दिशा में बढ़ा और थोड़ा समय बीता, उसने अपनी अनुभूति में एक दबाव सा महसूस किया, तुरंत अनुभूति के टुकड़े होते चले गए। वह सोचने लगा, देखने लगा, सुनने लगा, सूंघने लगा और छूने लगा। यह अनुभूति भी जो दृष्ट के रूप में सब कुछ कर रही है अविभाज्य अंश है। दृश्य के रूप में जो कुछ भी महसूस हो रहा है वह भी अविभाज्य अंश है और अवलोकन के रूप में जो दृष्ट और दृश्य का मध्यस्थ है वह भी अविभाज्य अंश है। यही मूल तत्त्व अनुभूति और अस्तित्व की एकता (वह्दत) व बहुलता की वास्तविकता है।

www.ksars.org

अनुभूति की श्रेणीकरण

हर मनुष्य अविभाज्य अंश है और फ़ि-नफ़्सहि अनुभूति की हैसियत रखता है। उसको जब हम गति (हरकत) का नाम देना चाहेंगे तो निगाह (निगाह) कहेंगे।

आदमी दीद अस्त बाकी पूस्त अस्त

दीद आं बाशद कि दीद-ए-दोस्त अस्त

(रूमी)

इस पंक्ति में मौलाना रूम ने मनुष्य का तज़्किरा किया है जो अस्तित्व की एकता (वहदत) में अनुभूति के दर्ज़े पर है और बहुलता (कस्रत) में निगाह के दर्ज़े पर है।

उदाहरण: हम एक आदमकद दर्पण के सामने खड़े होते हैं और अपनी छवि देखते हैं। उस समय कहते हैं कि हम दर्पण में अपनी सूरत देख रहे हैं। वास्तव में यह विचारधारा अप्रत्यक्ष (बिलावास्ता) है, प्रत्यक्ष (बेराह-ए-रास्त) नहीं। जब हम इसी बात को प्रत्यक्ष कहना चाहेंगे तो कहेंगे - दर्पण हमें देख रहा है या हम उस चीज़ को देख रहे हैं जिसे दर्पण देख रहा है, यानी हम दर्पण के देखने को देख रहे हैं।

यह हुई प्रत्यक्ष विचारधारा। इसकी व्याख्या यह है कि जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तो पहले हमारे ज़ेहन में उसकी छवि होती है। दूसरे स्तर में हम उस वस्तु को अपनी आँख की निगाह से देखते हैं। यदि हमने उस वस्तु के बारे में कभी कोई विचार नहीं की या कभी नहीं सोचा है अथवा हमें कभी उस वस्तु का ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ तो हम उस वस्तु को नहीं देख सकते।

उदाहरण:
किसी व्यक्ति का एक हाथ पक्षाघातग्रस्त होकर शुष्क हो चुका है। हम उसके हाथ में शूल चुभोकर प्रश्न करते हैं– “बताओ! तुम्हारे पक्षाघातग्रस्त हाथ के साथ क्या व्यवहार किया गया?”

वह उत्तर देता है– “मुझे ज्ञात नहीं।”

उसने नकार में उत्तर क्यों दिया?

www.ksars.org

इसलिए कि सुई की चुभन उसने अनुभव नहीं की। अर्थात उसे सुई चुभने का ज्ञान नहीं हुआ जो अनुभूति का पहला स्तर होता है। वह इस अवस्था में सुई चुभने की क्रिया देख सकता था यदि उसकी आँखें खुली होतीं। यहाँ उसकी निगाह उसके ज़ेहन को सुई चुभने का ज्ञान दे सकती थी।

अतः प्रत्येक हाल में यही ज्ञान निगाह का पहला स्तर होता है।

मनुष्य को सबसे पहले किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त होता है - यह अनुभूति का पहला स्तर है। फिर वह उस वस्तु को देखता है - यह अनुभूति का दूसरा स्तर है। फिर उसे सुनता है - यह अनुभूति का तीसरा स्तर है। फिर वह उस वस्तु को सूँघता है - यह अनुभूति का चौथा स्तर है। फिर वह उसे छूता है - यह अनुभूति का पाँचवाँ स्तर है। वास्तव में अनुभूति का सही नाम निगाह है और इसके पाँच स्तर हैं। पहले स्तर में इसका नाम ख़याल (कल्पना) है। दूसरे स्तर में इसका नाम निगाह है। तीसरे स्तर में इसका नाम श्रवण (समा'अत) है। चौथे स्तर में इसका नाम घ्राण (शामा) है। और पाँचवें स्तर में इसका नाम स्पर्श (लम्स) है।

यह स्तर ज्ञान का एक अतिरिक्त रूप है। कल्पना अपने स्तर में प्रारम्भिक ज्ञान थी। निगाह अपने स्तर में एक अतिरिक्त ज्ञान हो गई। श्रवण (समा'अत) अपने स्तर में एक विस्तृत ज्ञान बन गया। और घ्राण (शामा) अपने स्तर में एक विस्तारात्मक ज्ञान हो गया। अंत में स्पर्श (लम्स) अपने स्तर में एक संवेदनात्मक ज्ञान बन गया। प्राथमिकता केवल ज्ञान को प्राप्त है, जो वास्तव में निगाह है। प्रत्येक इन्द्रिय उसी की श्रेणीकरण है। हम निगाह का अभिप्राय पूर्ण रूप से स्पष्ट कर चुके हैं।

अब इसके कोण और वास्तविकता का वर्णन करेंगे।

अस्तित्व की एकता (वह्दत-ए-वुजूद) और अस्तित्व की निगाह में एकता (वह्दत-ए-शौद)

निगाह दो प्रकार से देखती है - एक प्रत्यक्ष और दूसरी अप्रत्यक्ष। दर्पण का उदाहरण ऊपर दिया जा चुका है। जब हम अपनी स्वयं-आत्मा अर्थात् आंतरिक में देखते हैं तो यह निगाह का प्रत्यक्ष देखना है। यह देखना "जु" अर्थात् वह्दत में देखना है। वह्दत में देखने वाली यही निगाह मनुष्य, अम्र रब्बी आत्मा या अविभाज्य अंश है। यही निगाह साक्षी को दृश्य के निकट लाती है। यही निगाह उस कथन نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْد का उद्घाटन करती है। यही निगाह अपनी जगह ईश्वरीय ज्ञान (ज्ञान-ए-तौहीद) है। यही निगाह बहुलता में अतिरिक्त, विस्तृत, विस्तारात्मक और संवेदनात्मक प्रकृति बनती है। इसकी पहली गति ज्ञान-ए-तौहीद या वह्दत-ए-वुजूद है। इस निगाह

www.ksars.org

की दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं गति बहुलता या वहदत-ए-शौद है। यही निगाह जब अप्रत्यक्ष देखती है तो कालिकता और कालिकता का निर्माण करती है। इसके प्रेरणाओं में जैसे-जैसे परिवर्तन होता है, वैसे-वैसे बहुलता के स्तर सृजित होते जाते हैं। यह निगाह तनज़ुल-ए-ऊवल की हैसियत में शौर, निगाह की शक्ति, वाणी, घ्राण और स्पर्श बनती है।

हर अवतरण में इसके दो अंश होते हैं। यह निगाह गति में आने से पहले प्रथम अवतरण में ज्ञान और ज्ञानी बनती है, और गति में आने के बाद: द्वितीय अवतरण में शौर, तृतीय अवतरण में निगाह और निर्माण, चतुर्थ अवतरण में वाणी और श्रवण, पंचम अवतरण में रंगीनता और अहसास, षष्ठ अवतरण में आकर्षण और स्पर्श होती है।

प्रथम अवतरण अस्तित्व की एकता (वहदत) का एक स्तर है और द्वितीय अवतरण बहुलता के पाँच स्तर हैं। इस प्रकार अवतरणों (तनज़ुलों) की संख्या छह हो गई। पहला अवतरण अस्तित्व की एकता (वहदत) का सूक्ष्म अंश, दूसरे पाँच अवतरण बहुलता के सूक्ष्म अंश कहलाते हैं। अविभाज्य अंश, मनुष्य या आत्मा की संरचना यहीं से उद्घाटित होती है।

प्रथम स्वरूप ईश्वर है और ईश्वर का ज़ेहन (इल्मे वाजिब) कहलाता है। (वाजिब) में ब्रह्मांड का अस्तित्व ईश्वर की इच्छा के अधीन विद्यमान था। जब ईश्वर ने उसका प्रदर्शन पसंद किया तो आदेश दिया - कुन अर्थात् गति में आ। अतः ब्रह्मांड के रूप में (वाजिब) में जो कुछ विद्यमान था उसने पहली करवट बदली और गति आरम्भ हो गयी। पहली गति यह थी कि अस्तित्वों के प्रत्येक अविभाज्य अंश को अपना अंतर्ज्ञान हो गया। अस्तित्वों के प्रत्येक अविभाज्य अंश की विचारधारा में यह बात आयी कि "मैं हूँ"। यह विचारधारा एक गुमशुदगी और मग्नता का लोक था। प्रत्येक अविभाज्य अंश अनन्त अद्वैत-एकत्व की सरिता (दरीयाए तौहीद) के भीतर गोता लगा रहा था। प्रत्येक अविभाज्य अंश को केवल इतना अनुभव था कि "मैं हूँ"। कहाँ हूँ, क्या हूँ और किस प्रकार हूँ–इसका कोई अनुभव उसे नहीं था। इसी लोक को लोक अस्तित्व की एकता (वहदतुल वुजूद) कहते हैं। इस लोक को सूफ़ी साधक केवल (वहदत) का नाम भी देते हैं। यह (वहदत), ईश्वर की एकता हरगिज़ नहीं है क्योंकि ईश्वर के किसी स्वरूप को शब्दों में व्यक्त करना असम्भव है। यह *अस्तित्व की एकता (वहदत)* मानव-ज़ेहन की अपनी एक कल्पना है, जो केवल मनुष्य की सीमित विचारधारा का प्रदर्शन करती है, किन्तु ईश्वर के किसी असीम गुण को ठीक प्रकार से व्यक्त करने में सर्वथा असमर्थ और अपर्याप्त है। यह असंभव है कि किसी शब्द के माध्यम से ईश्वर के गुण का पूर्ण प्रकाशन हो सके।

www.ksars.org

इस सत्य को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि *अस्तित्व की एकता (वह्दत)* मानव-विचार की अपनी एक नवोन्मेष होने के नाते अधिकतम मानव-विचार के ज्ञान और उसकी व्यापकता को ही प्रकट करती है। जब कोई मनुष्य *अस्तित्व की एकता (वह्दत)* शब्द का प्रयोग करता है तो उसका अर्थ केवल यही निकलता है कि उसने ईश्वर की एकत्वता को इस स्तर तक समझा है। दूसरे शब्दों में, *अस्तित्व की एकता (वह्दत)* का आशय मनुष्य की अपनी विचार-सीमा तक ही सीमित है। इसी सीमितता को मनुष्य *असीमता* का नाम देता है। वास्तव में ईश्वर इस प्रकार की वर्णनात्मक सीमाओं से कहीं अधिक उच्च और श्रेष्ठ हैं। जब हम *अस्तित्व की एकता (वह्दत)* कहते हैं तो वस्तुतः अपनी ही विचार-एकता का उल्लेख करते हैं। इसी स्थान से *लोक-ए-वह्दत-उल-वुजूद* के पश्चात् *लोक-ए-वह्दत-उश्शहूद* का प्रारम्भ होता है। ईश्वर आत्माओं को सम्बोधित होकर कहते हैं:

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْअलस्तु बिरब्बिकुम (क्या मैं नहीं हूँ रब तुम्हारा?)

यहीं से मनुष्य या (अमर रब्बी) की निगाह अस्तित्व में आ जाती है। वह देखता है कि किसी ने मुझे मुख़ातिब किया और मुख़ातिब पर उसकी निगाह पड़ती है। वह कहता है बला – जी हाँ, मुझे आपकी रब्बानियत का एतेराफ़ है और मैं आपको पहचानता हूँ (क़ुरआन)।

यह वही स्थान है जहाँ अमर रब्बी ने दूसरी गति की, या दूसरी करवट ली। इसी स्थान पर वह बहुलता से परिचित हुआ। उसने देखा कि मेरे सिवा और भी सृष्टि है, क्योंकि सृष्टि के हुजूम का शहूद उसे प्राप्त हो चुका था, उसे देखने वाली निगाह मिल चुकी थी। यह (वाजिब) का द्वितीय अवतरण हुआ। इस द्वितीय अवतरण की सीमाओं में मनुष्य ने अपने अस्तित्व की गहराई का अनुभव और दूसरी सृष्टि की उपस्थिति का शहूद उत्पन्न किया। प्रथम अवतरण की स्थिति (इल्म) और (अलीम) की थी – अर्थात् मनुष्य को केवल अपने होने का अंतर्ज्ञान हुआ था।

मैं हूँ" ... "मैं" (अलीम- सर्वज्ञ)) और "हूँ" (इल्म)। द्वितीय अवतरण में अनुपस्थिति की सीमा से आगे बढ़कर उसने स्वयं को देखा और दूसरों को भी देखा। इसी को लोक अस्तित्व की एकता का साक्षात्कार (वह्दतुल शहूद) कहते हैं। प्रथम अवतरण जो मात्र अंतर्ज्ञान था, जब अनुभूति की गहराई प्राप्त हुई तो निगाह अस्तित्व में आ गयी। निगाह अंतर्ज्ञान की गहराई का दूसरा नाम है।

नियम:

www.ksars.org

अंतर्ज्ञान (इद्राक) गहरा होने के बाद निगाह (निगाह) बन जाता है। अंतर्ज्ञान जब तक हल्का हो और केवल विचार की सीमाओं में विद्यमान रहे, उस समय तक आत्मिक उद्‌भेदन (मशाहिदा) की अवस्था प्रकट नहीं होती। अनुभूति (एहसास) केवल विचारधारा (फ़िक्र) की सीमा तक काम करती है। जब विचारधारा एक ही बिन्दु पर कुछ क्षणों के लिए केन्द्रित हो जाती है, वह बिन्दु आकृतियाँ (ख़दोख़ाल) और रूप-आकृति (शक्ल ओ सूरत) का स्वरूप धारण कर लेता है। इसी को आत्मिक उद्‌भेदन या शहूद कहते हैं। अब विचारधारा निगाह की हैसियत में उसी बिन्दु पर कुछ क्षण और केन्द्रित रहती है, तो बिन्दु बोल उठता है – या दूसरे शब्दों में, निगाह जो बिन्दु का आत्मिक उद्‌भेदन कर रही है, बोलने लगती है। उसी बिन्दु पर अमर रब्बी कहता भी है और सुनता भी है।

यह वाक्-शक्ति (क़ुव्वत-ए-गोयाई) जिसे नुत्क़ कहते हैं, यदि थोड़ी देर और उस बिन्दु की ओर ध्यान दे, तो विचारधारा और अनुभूति में रूप-रंग की छटाएँ का स्रोत फूट पड़ता है, और वह अपने चारों ओर रंग-विचित्रता का एक हुजूम अनुभव करने लगती है।

जब उस समष्टि पर अमर रब्बी की निगाह थोड़ी देर और केन्द्रित रहती है तो चेतना (शऊर) मानव में आकर्षण की उज्ज्वल नेहर उत्पन्न हो जाती हैं। इन प्रवाहों का एक गुण यह भी है कि वे अपने लक्ष्यबिंदु या प्रत्यक्ष को, जिसे वे देख रही हैं या अनुभव कर रही हैं, स्पर्श कर लेती हैं। इन प्रवाहों की इस क्रिया का नाम स्पर्श (लम्स) है। यहाँ से यह नियम पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि (इल्म) ही की भिन्न-भिन्न गतियाँ या अवस्थाओं का नाम ख़याल, निगाह (निगाह), वाणी (गुफ़्तार), गन्ध-ग्राहकता (शाम्हा) और स्पर्श (लम्स) है।

वर्णित नियम से यह उद्‌घाटन हो जाता है कि एक ही सत्य अपनी अवस्था बदलता रहता है। इन परिवर्तनों में विभिन्न आत्मिक उद्‌भेदन का क़ियाम है। जिस बिन्दु पर जो आत्मिक उद्‌भेदन घटित होता है वही अमर रब्बी की गति बन जाता है। जिस प्रकार ख़याल ज्ञान है, उसी प्रकार निगाह (निगाह) भी ज्ञान है और निगाह के बाद की सभी अवस्थाएँ भी ज्ञान हैं। कोई भी अवस्था इन सीमाओं से बाहर क़दम नहीं रख सकती। ज्ञान की सीमाओं के भीतर ही वह क्रमशः गहरी होती चली जाती है।

हमारी विचारधारा ऊपर से नीचे की ओर सीढ़ियाँ उतरती है और हम विचारधारा की आकृति-रूप को विभिन्न अनुभूतियों का नाम देते चले जाते हैं। जब हम एक ख़याल को ज़ेहन में तीव्रता से अनुभव करते हैं तो वही ख़याल आकृति-रूप बनकर प्रकट हो जाती है। वही आकृति-रूप आगे गहन विचारधारा के प्रभाव से संवाद करने लगती है। थोड़ी और तीव्रता होती है तो यही संवाद

www.ksars.org

रंग-विचित्रता में प्रकाशमान हो जाता है। अंतिम चरण में अनुभूति की तीव्रता के कारण हम उन रंग-विचित्रताओं की ओर स्वयं को आकर्षित होता हुआ अनुभव करते हैं, यहाँ तक कि हमारी इन्द्रिय उन रंग-विचित्रताओं को छू लेती है। यहीं पर हमारा जिज्ञासा समाप्त हो जाता है। यह स्थिति मानव विचारधारा के लिए स्वाद की पराकाष्ठा है। इस अंतिम बिन्दु से फिर मानव विचारधारा को लौटना पड़ता है। अर्थात् जिस वस्तु को हमने अभी छुआ था, हमारी इन्द्रिय उससे दूर होने लगती है। यही स्थिति हमारी इन्द्रिय की प्रतिक्रिया (रद्द-ए-अमल) है, जो कालिकता (मकानियत) और कालिकता (ज़मानियत) की विभाजन रेखा का अनुभव कराती है। अभी हम जिस वस्तु से निकट थे, धीरे-धीरे उससे दूर होते चले जाते हैं और समष्टि में इसी बिन्दु की दूरी का नाम मृत्यु (मौत) है। मृत्यु घटित होने के बाद आत्मा (रूह) गुज़रे हुए अनुभवों से एक समष्टिगत नवज्ञान (इल्मे-जदीद) प्राप्त करती है। इसी लोक का नाम लोक अदृश्य का साक्षात्कार (आलमे ग़ैब का शहूद) है।

एक बार फिर जीवन की व्याख्या की जाती है:

यह ब्रह्मांड (काइनात) अपनी प्रत्येक आकृति-रूप और प्रत्येक गति (हरकत) के साथ ईश्वर के ज्ञान में विद्यमान था। इसी विद्यमानता का नाम अस्तित्व-ए-रोया (वुजूदे-रुइया) है और जिस ज्ञान में ब्रह्मांड की विद्यमानता थी, ईश्वर के उस ज्ञान को (इल्मे-वाजिब) या (इल्मे-क़लम) कहते हैं। (इल्मे-वाजिब) ईश्वर की एक विशेषता है, जिसे स्वरूप का प्रतिबिम्ब कहा जाता है।

इल्मे-वाजिब के बाद जब ईश्वर की गुण एक क़दम और नीचे उतरती हैं तो लोक-ए- सत्य-प्रसंग (आलमे-वाक़िआ) या आध्यात्मिक आत्माएँ (आलमे-अरवाह) का प्राकट्य हो जाता है। यही वह स्थल है जब ईश्वर ने प्राकट्य-ए-तख़्लीक़ का इरादा किया और शब्द कुन कहकर अपने इरादे को ब्रह्मांड की आकृति-रूप प्रदान किया। यहाँ से दो अवस्थाएँ स्थापित हो जाती हैं—एक अवस्थाएँ ईश्वर के ज्ञान की, दूसरी अवस्थाएँ ईश्वर के इरादे की। वास्तव में इरादा ही अनादि की शुरुआत करता है। अनादि के प्रारम्भिक चरण में अस्तित्वगत तत्व स्थिर और मौन थे। अस्तित्वगत तत्व की इस आकृति को आध्यात्मिक भाषा में (इल्मे-वहदत), कुल्लियात या (इल्मे-लौहे महफ़ूज़ – सुरक्षित पट्टिका) कहा जाता है। जब ईश्वर को यह मंज़ूर हुआ कि अस्तित्वगत तत्व का सुकूत टूटे और गति का आरम्भ हो, तो ईश्वर ने अस्तित्वगत को मुख़ातिब करके कहा:

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ

अलस्तु बिरब्बिकुम

www.ksars.org

अब अस्तित्वगत तत्व की प्रत्येक शै केन्द्रित हो गयी और उसमें चेतना उत्पन्न हो गयी। उस चेतना ने उत्तर में बला कहकर ईश्वर के *रब* होने का स्वीकार कर लिया। यही लोक-ए- सत्य-प्रसंग की पहली शक्ल थी।

जब वस्तुओं में गति की शुरुआत हुई तो लोक- सत्य-प्रसंग की दूसरी शक्ल का आरम्भ हो गया। इस शक्ल का नाम साधारण भाषा में कस्रत (बहुलता) है। और इसी शक्ल को प्रतिमात्मक लोक (आलमे-मिसाल) या "जु" कहा जाता है।

यहाँ से ईश्वर का कार्यादेश (अमर रब्बी) आत्मा, अविभाज्य अंश या मनुष्य जीवन का आरम्भ करता है और उसी का प्रतिबिम्ब भौतिक लोक में घटनाओं की आकृति-रूप धारण कर लेता है। भौतिक लोक का यह प्रतिबिम्ब वस्तुओं का दूसरा प्रतिमात्मक स्वरूप है। स्वरूप का प्रतिबिम्ब (इल्मे-वाजिब) या (इल्मे-क़लम) (इल्मे-वाजिब) - ज्ञान सुरक्षित पट्टिका का प्रतिबिम्ब "जु" अर्थात् प्रतिमात्मक लोक (आलमे-तम्साल) है। प्रतिमात्मक लोक का प्रतिबिम्ब द्वितीय प्रतिमात्मक स्वरूप (तमस्सुल सानी) या संमिश्रण (आलमे-तख़लीत) है। लो संमिश्रण को ही लोक प्रसंग भी कहते हैं।

www.ksars.org

आत्मा-ए-परम, आत्मा-ए-मानव, आत्मा-ए-प्राणि और षट् सूक्ष्म तत्त्व (लताइफ़े-सत्ता)

सृष्टि की संरचना में आत्मा के तीन हिस्से होते हैं—आत्मा-ए-परम आत्मा-ए-मानव आत्मा-ए-प्राणि

आत्मा-ए-परम "इल्मे-वाजिब" के *अविभाज्य अंश* से संयोजित है।

आत्मा-ए-मानव "इल्मे-वह्दत" के *अविभाज्य अंश* से निर्मित है।

और आत्मा-ए-प्राणि "जु" के *संयोजक अविभाज्य अंश* पर आधारित है।

आत्मा-ए-परम की *प्रारम्भ* सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा से होती है और *अन्त* सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी (लतीफ़े-ख़फ़ी) पर होता है। यह रोशनी का एक मंडल है जिसमें *ब्रह्मांड* की समस्त अदृश्य *सूचनाएँ* अंकित होती हैं। यही वे *सूचनाएँ* हैं जो *अनादि* से *अनन्त* तक की घटनाओं के मूल सत्य-पाठ की हैसियत रखती हैं। इस मंडल में *सृष्टि* की *मस्लहतों* और *अस्रार* का लेखा संरक्षित है। इस मंडल को साबिता कहते हैं।

आत्मा-ए-मानव की *प्रारम्भ* सूक्ष्म तत्त्व-सिर्री (लतीफ़े-सिर्री) से होती है और *अन्त* सूक्ष्म तत्त्व-रूही (लतीफ़े-रूही) पर होता है। यह भी रोशनी का एक मंडल है। इस मंडल में वे *आदेश* अंकित रहते हैं जो जीवन का चरित्र बनते हैं। इस मंडल का नाम **"अअयान"** है।

आत्मा-ए-प्राणि की *प्रारम्भ* सूक्ष्म तत्त्व-क़ल्बी (लतीफ़े-क़ल्बी) से होती है और *अन्त* सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी (लतीफ़े-नफ़्सी) पर होता है। यह रोशनी का तीसरा मंडल है। इसका नाम **"जुय्या"** है। इस मंडल में जीवन का प्रत्येक कर्म अंकित होता है। *कर्म* के वे दोनों हिस्से—जिनमें ईश्वर के *आदेश* के साथ *जिन्न* और *मनुष्य* का *विकल्प* भी सम्मिलित है—अविभाज्य अंश दर अंश अंकित रहते हैं।

रोशनी के ये तीनों मंडल तीन *पृष्ठों* की तरह एक-दूसरे के साथ जुड़े रहते हैं। इनका समष्टिगत नाम आत्मा, अमर रब्बी, अविभाज्य अंश या मनुष्य है।

सूक्ष्म तत्त्व (लतीफ़ा) उस *आकृति-रूप* का नाम है जो अपने आकृतियों के माध्यम से *अर्थ* का आत्मिक उद्भेदन करता है। उदाहरण के लिए—दीपक की लौ एक ऐसा *सूक्ष्म तत्त्व* है जिसमें उजाला, रंग और ऊष्मा तीनों एक साथ संग्रहीत हैं। (इनकी क्रमबद्धता से एक ज्वाला बनती है जो साक्षात्कार की एक आकृति है।) इन तीन अवयवों से मिलकर साक्षात्कार की बनने वाली आकृति का नाम ज्वाला रखा गया है। यह ज्वाला जिन अवयवों का *प्रकट* है, उनमें से प्रत्येक अवयव को एक सूक्ष्म तत्त्व (लतीफ़ा) कहा जाएगा।

www.ksars.org

- सूक्ष्म तत्त्व संख्या 1: ज्वाला का उजाला है।
- सूक्ष्म तत्त्व संख्या 2: ज्वाला का रंग है।
- सूक्ष्म तत्त्व संख्या 3: ज्वाला की ऊष्मा है।

इन तीनों *सूक्ष्म तत्वों* का समष्टिगत नाम दीपक है। जब कोई व्यक्ति शब्द दीपक का प्रयोग करता है तो *अर्थगत* रूप से उसका अभिप्राय इन तीनों *सूक्ष्म तत्वों* की संयुक्त आकृति होती है।

इस प्रकार *मनुष्य* की आत्मा में छह सूक्ष्म तत्त्व होते हैं, जिनमें पहला सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा है। सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा *ईश्वरीय ज्ञान (इल्मे-इलाही)* की फ़िल्म का नाम है। यह फ़िल्म सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी (लतीफ़े-ख़फ़ी) की रोशनी में साक्षात्कार की जा सकती है। इन दोनों *सूक्ष्म तत्वों* का समष्टिगत नाम साबिता है। इस प्रकार साबिता के दो प्रयोग हुए–एक प्रयोग *ईश्वरीय ज्ञान* के तमसुल हैं। दूसरा प्रयोग आत्मा की वह रोशनी है जिसके द्वारा उन प्रतिमात्मक संसारों का साक्षात्कार होता है। तसव्वुफ़ की भाषा में इन दोनों प्रयोग का समष्टिगत नाम "तदल्ला" है। तदल्ला वास्तव में ईश्वरीय नाम (अस्माए-इलाहिया) की *संरचना* है। अस्माए-इलाहिया ईश्वर की वे गुण हैं जो स्वरूप का प्रतिबिम्ब बनकर संदर्भ में अवतरण की *आकृति* धारण कर लेती हैं। यही गुण *अस्तित्वगत तत्वों* के प्रत्येक कण में तदल्ला बनकर व्याप्त होती हैं। जन्म, उत्कर्ष और पतन की *मस्लहतें* इसी तदल्ला में अंकित हैं। इसी तदल्ला से *ईश्वरीय ज्ञान* के प्रतिबिम्ब की शुरुआत होती है। जिस *मनुष्य* पर *ईश्वरीय ज्ञान* का यह प्रतिबिम्ब *अनावृत* हो जाता है, वह दैवी नियति से सूचित हो जाता है। इसी तदल्ला या तजल्लि का *अंदराज (दर्ज़)* साबिता में होता है। जैसे अलिफ़-लाम-मीम *स्रष्टा और सृष्टि* के मध्य संबंध की व्याख्या है – अर्थात् अलिफ़-लाम-मीम के *गूढ़ रहस्यों* को समझने वाला *मनुष्य* ईश्वर की सिफ़ते- तदल्ला या गुप्त शासन-सूत्र (रम्ज़े-हुक़्मरानी) को पढ़ लेता है।

तदल्ला का ज्ञान रखने वाला कोई *मनुष्य* जब अलिफ़-लाम-मीम पढ़ता है तो उस पर वे सभी गूढ़ रहस्य अनावृत हो जाते हैं जिन्हें ईश्वर ने *सूरए-बक़रा* में व्यक्त किया है। अलिफ़-लाम-मीम के माध्यम से *साहिबे-साक्षात्कार* पर वे अस्रार अनावृत हो जाते हैं जो *अस्तित्वगत तत्वों* की *जीवनी-रेखा* हैं। वह ईश्वर की उस सिफ़ते- तदल्ला को देख लेता है जो *ब्रह्मांड* के प्रत्येक कण की आत्मा में तजल्लि के रूप में जुड़ी हुई है। कोई *सूफ़ी साधक (अहले-शहूद)* जब किसी व्यक्ति के सूक्ष्म तत्त्व-ए-ख़फ़ी (लतीफ़े-ख़फ़ी) में अलिफ़-लाम-मीम देखता है, तो यह समझ लेता है कि इस *बिन्दु* में सिफ़ते- तदल्ला की रोशनियाँ अवशोषित हैं। यही रोशनियाँ *अनादि* से *अनन्त* तक की सभी घटनाओं का आत्मिक उद्‌भेदन करती हैं। सूक्ष्म तत्त्व-ए-ख़फ़ी के आंतरिक उद्‌भेदन का अर्थ है सूक्ष्म तत्त्व-ए-अख़फ़ा का उद्‌भेदन; और इन दोनों *सूक्ष्म तत्वों* का समष्टिगत नाम आत्मा-ए-परम (रूह-ए-आज़म) या साबिता है।

www.ksars.org

यदि हम साबिता को एक *बिन्दु* या एक *पृष्ठ* मान लें तो उस *पृष्ठ* का एक सफ़हा (पृष्ठ) सूक्ष्म तत्त्व-ए-अख़फ़ा होगा और दूसरा सूक्ष्म तत्त्व-ए-ख़फ़ी। वास्तव में सूक्ष्म तत्त्व-ए-ख़फ़ी नूर "नूरी" लेखन रोशनियाँ मय का एक संक्षिप्त रूप (SHORT FORM) है जिसे पढ़ने के बाद कोई रहस्यमय सत्य का ज्ञानी उसके पूरे *मफ़हूम* से सूचित हो जाता है। उस *मफ़हूम* के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि वह संक्षिप्त है, क्योंकि SHORT FORM होने के बावजूद वह अपनी जगह किसी *मनुष्य* की जन्म-यात्रा से सम्बद्ध ईश्वर की समस्त *मस्लहतों* की व्याख्या है। इसी को अस्रार की भाषा में अस्मा या (इल्मे-क़लम – ज्ञान-ए-क़लम) कहा जाता है। यह ज्ञान दो हिस्सों पर आधारित है–

प्रारम्भिक भाग अस्माए-इलाहिया (ईश्वरीय नाम)

द्वितीय भाग इल्मे-हुरूफ़े-मुक़त्तआत (विच्छिन्न अक्षरों का ज्ञान)

ईश्वरीय नाम (अस्माए-इलाहिया)

अल्फ़ाज़	अर्थ / मानी	अल्फ़ाज़	अर्थ / मानी
الله	ईश्वर	الرَّحْمٰنُ	बहुत दयालु
الرَّحِيْمُ	अत्यधिक रहम करने वाला	المَلِكُ	शहंशाह, सार्वभौम शासक
الْقُدُّوْسُ	पवित्र, दोषरहित	السَّلَامُ	शांति देने वाला
الْمُؤْمِنُ	विश्वास और सुरक्षा प्रदान करने वाला	الْمُهَيْمِنُ	निगहबान, संरक्षक
الْعَزِيْزُ	ग़ालिब, शक्तिशाली	الْجَبَّارُ	सर्वशक्तिमान
الْخَالِقُ	सृजनहार, पैदा करने वाला	الْبَارِئُ	निर्माता
الْمُصَوِّرُ	आकृति देने वाला	الْغَفَّارُ	गुनाह बख़्शने वाला
الْقَهَّارُ	सब पर ग़ालिब	الْوَهَّابُ	बहुत देने वाला
الرَّزَّاقُ	रोज़ी देने वाला	الْفَتَّاحُ	खोलने वाला, फ़ैसला करने वाला
الْعَلِيْمُ	सब कुछ जानने वाला	الْقَابِضُ	क़ब्ज़ा रखने वाला
الْبَاسِطُ	फैलाने वाला	الْخَافِضُ	पस्त करने वाला
الرَّافِعُ	ऊँचा करने वाला	الْمُعِزُّ	इज़्ज़त देने वाला

www.ksars.org

الْمُذِلُّ	अपमानित करने वाला	السَّمِيعُ	सुनने वाला
الْبَصِيْرُ	देखने वाला	الْحَكَمُ	हुक्म करने वाला
الْعَدْلُ	न्याय करने वाला	اللَّطِيْفُ	सूक्ष्मदर्शी
الْخَبِيْرُ	सब जानने वाला, ख़बरदार	الْحَلِيْمُ	धैर्यवान
الْعَظِيْمُ	महान	الْغَفُوْرُ	माफ़ करने वाला
الشَّكُوْرُ	कृतज्ञता का क़द्रदान	الْعَلِيُّ	बहुत ऊँचा
الْكَبِيْرُ	सबसे बड़ा	الْحَفِيْظُ	निगहबान, सुरक्षा देने वाला
الْمُقِيْتُ	शक्ति प्रदान करने वाला	الْحَسِيْبُ	हिसाब लेने वाला
الْجَلِيْلُ	महान	الْكَرِيْمُ	कृपालु
الرَّقِيْبُ	निगरानी रखने वाला	الْمُجِيْبُ	प्रार्थना का उत्तर देने वाला
الْوَاسِعُ	सब कुछ समेटने वाला	الْحَكِيْمُ	बुद्धिमान, स्थिर करने वाला
الْوَدُوْدُ	मित्रवत, प्रेम करने वाला	الْمَجِيْدُ	महान, गौरवशाली
الْبَاعِثُ	जगाने वाला	الشَّهِيْدُ	साक्षी, उपस्थित
الْحَقُّ	सत्य	الْوَكِيْلُ	कार्यसिद्धि करने वाला, संरक्षक
الْقَوِيُّ	शक्तिशाली	الْمَتِيْنُ	मजबूत
الْوَلِيُّ	मित्र, सहायक	الْحَمِيْدُ	प्रशंसा योग्य
الْمُحْصِيْ	गिनने वाला	الْمُبْدِئُ	आरम्भ करने वाला
الْمُعِيْدُ	फिर से लौटाने वाला	الْمُحْيِيْ	जीवन देने वाला
اَلْمُمِيْتُ	मृत्यु देने वाला	الْحَيُّ	सदा जीवित
الْقَيُّوْمُ	सबको थामने वाला	الْوَاجِدُ	पाने वाला
الْمَاجِدُ	महानता वाला	الْواحِدُ	एकमात्र
الاَحَدُ	अद्वितीय	الصَّمَدُ	बे-नियाज़
الْقَادِرُ	सामर्थ्यवान	الْمُقْتَدِرُ	शक्ति प्रदर्शित करने वाला
الْمُقَدِّمُ	आगे करने वाला	الْمُؤَخِّرُ	पीछे करने वाला

www.ksars.org

الأَوَّلُ	पहला	الأخِرُ	अंतिम
الظَّاهِرُ	प्रकट	البَاطِنُ	आंतरिक, छिपा हुआ
الْوَالِي	काम बनाने वाला	الْمُتَعَالِي	बहुत ऊँचा
الْبَرُّ	नेकी करने वाला	التَّوَابُ	तौबा क़बूल करने वाला
المُنْتَقِمُ	बदला लेने वाला	العَفُوُ	माफ़ करने वाला
الرَّؤُوفُ	दयालु, मेहरबान	مَالِكُ الْمُلْكِ	बादशाहत का मालिक
ذُوالْجَلاَلِ وَالإِكْرَامِ	महानता और सम्मान का मालिक	الْمُقْسِطُ	न्याय करने वाला
الْجَامِعُ	इकट्ठा करने वाला	الْغَنِيُّ	बे-नियाज़
الْمُغْنِيُ	बे-नियाज़ करने वाला	اَلْمَانِعُ	रोकने वाला
الضَّارُ	हानि पहुँचाने वाला	النَّافِعُ	लाभ देने वाला
النُّوْرُ	प्रकाश	الْهَادِي	मार्गदर्शन करने वाला
الْبَدِيعُ	नमूना रहित सृजनहार	اَلْبَاقِ	सदा रहने वाला
الْوَارِثُ	उत्तराधिकारी	الرَّشِيْدُ	मार्ग दिखाने वाला
الصَّبُوْرُ	धैर्यवान		

ईश्वरीय नामों की संख्या ग्यारह हज़ार है।

ये नाम तीन संदर्भ में विभाजित हैं–

प्रथम: ईश्वरीय नाम-ए-इ़तलाक़िया

द्वितीय: ईश्वरीय नाम-ए-अइ़निया

तृतीय: ईश्वरीय नाम-ए-कोनिया

ईश्वरीय नाम-ए-इ़तलाक़िया वे नाम हैं जो केवल ईश्वर के परिचय में हैं। मनुष्य या अस्तित्वगत तत्वों का उनसे प्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं। उदाहरण के लिए–अलीम। ईश्वर अलीम है, और वह अपने ज्ञान तथा गुणों से स्वयं ही परिचित है। मनुष्य का अवधारणा या ज़ेहन की कोई उड़ान

www.ksars.org

भी ईश्वर के अलीम होने की छवि को किसी प्रकार स्थापित नहीं कर सकती। अलीम की अलीम की यह प्रकृति व्यापक नाम भी है यहाँ पर व्यापक नाम की दो स्थितियाँ क़ायम हो जाती हैं। अलीम ब-स्थिति ज़ात और अलीम ब-स्थिति अनिवार्य परमात्मा। अलीम ब-स्थिति ज़ात ईश्वर का वह गुण है जिसकी निस्बत अस्तित्वगत तत्वों को प्राप्त नहीं और अलीम ब-स्थिति अनिवार्य परमात्मा वह गुण है जिसकी निस्बत अस्तित्वगत तत्वों को प्राप्त है पहली निस्बत को प्रथम अवतरण कहा जाता है।

ईश्वरीय व्यापक नामों की संख्या सूफ़ी साधक के निकट लगभग ग्यारह हज़ार है। इन ग्यारह हज़ार ईश्वरीय व्यापक नामों के एक पक्ष का प्रतिबिम्ब सूक्ष्म तत्व-अख़फ़ा और दूसरे पक्ष का प्रतिबिम्ब सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी कहलाता है। इस प्रकार प्रथम निस्बत में साबिता ईश्वर की ग्यारह हज़ार गुण का समष्टि है। साबिता का लेख पढ़कर एक रहस्यमय सत्य का ज्ञानी उन ग्यारह हज़ार तजल्लियों के तमसुल का साक्षात्कार करता है।

साबिता को जब अलीम का संबंध दिया जाता है तो उसका अर्थ यह होता है कि अस्तित्वगत तत्व ईश्वर से ब-स्थिति अलीम एक संबंध रखते हैं लेकिन यह संबंध ब-स्थिति अलीम समष्टि नहीं होता बल्कि ब-स्थिति अलीम अंश होता है। ब-स्थिति अलीम समष्टि वह है जो ईश्वर का अपना विशिष्ट ज्ञान है। अत साबिता के द्वारा ईश्वर ने मनुष्य को नामों का ज्ञान प्रदान किया तो उसे अलीम की निस्बत प्राप्त हो गई। इसी ज्ञान को अदृश्य अस्तित्व "ग़ैब अक़्वान" कहा जाता है। यह ज्ञान अलीम की निस्बत के अंतर्गत प्राप्त होता है।

क़ानून:

यदि मनुष्य ज़ेहन को रिक्त करके उस संबंध की ओर उन्मुख हो जाए तो साबिता की सभी तजल्लियात साक्षात्कार कर सकता है। यह संबंध वास्तव में एक स्मृति है। यदि कोई व्यक्ति मुराकबा के द्वारा उस स्मृति को पढ़ने का प्रयास करे तो वह उसे अनुभूति प्रवेशया साक्षात्कार में पढ़ सकता है। नबी और नबियों के विरासत प्राप्त समूह ने ज्ञान-बोध (तफ़हीम) की विचारधारा पर इस स्मृति तक पहुँच प्राप्त की है।

ज्ञान-बोध (तफ़हीम) की पद्धति

ज्ञान-बोध की पद्धति दिन-रात के चौबीस घंटों में एक घंटा, दो घंटे या अधिकतम ढाई घंटे सोने और शेष समय जागृत रहने की आदत डालकर प्राप्त की जा सकती है।

ज्ञान-बोध की पद्धति को सूफ़ी साधक "सैर- गमन" और "फ़तह- विजय" के नाम से भी व्यक्त करते हैं। तफ़हीम का मुराकबा आधी रात बीतने के बाद करना चाहिए।

www.ksars.org

मनुष्य की आदत है जागने के बाद सोना और सोने के बाद जागना, वह दिन लगभग जागकर और रात सोकर गुज़ारता है। यही तरीका प्रकृति का आवेदन बन जाता है। ज़ेहन का कार्य देखना है। यह कार्य वह निगाह के माध्यम से करने का अभ्यस्त है। वास्तव में निगाह ज़ेहन के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जागृत अवस्था में ज़ेहन अपने परिवेश की हर वस्तु को देखता, सुनता और समझता है। सोने की अवस्था में भी यह क्रिया जारी रहती है, केवल उसके आकृतियाँ गहरी या हल्की होती हैं। जब आकृतियाँ गहरी होती हैं तो जागने के बाद स्मृति उन्हें दोहरा सकती है। हल्की आकृतियों को स्मृति भुला देती है। इसीलिए हम उस सम्पूर्ण वातावरण से परिचित नहीं होते जो नींद की अवस्था में हमारे सामने होता है।

स्वप्न और जागरण

आत्मा की संरचना निरंतर गति चाहती है। जागरण की भाँति निद्रा में भी मनुष्य कुछ न कुछ करता रहता है, किन्तु वह जो कुछ करता है उससे अवगत नहीं होता। केवल स्वप्न की अवस्था ऐसी है जिसका उसे ज्ञान होता है। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वप्न के अतिरिक्त निद्रा की अन्य गतियों से किस प्रकार अवगत हों। मनुष्य का स्वरूप निद्रा में जो गतियाँ करता है यदि स्मृति किसी प्रकार इस योग्य हो जाए कि उसे सुरक्षित रख सके तो हम नियमित रूप से उसका एक लेखा रख सकते हैं। स्मृति किसी छवि को उसी समय सुरक्षित रखती है जब वह गहरी हो। यह साक्षात्कार है कि जागरण की अवस्था में हम जिस वस्तु की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं उसे सुरक्षित रख सकते हैं और जिसकी ओर ध्यान नहीं देते उसे भूल जाते हैं। नियमत जब हम निद्रा की सभी गतियों को सुरक्षित रखना चाहें तो दिन-रात हर समय निगाह को सजग रखने का उपक्रम करेंगे। यह उपक्रम केवल जागरण से ही सम्भव है। प्रकृति इस बात की आदी है कि आदमी को सुलाकर स्वरूप को जागृत कर देती है। फिर स्वरूप की गतियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। प्रारम्भ में इस आदत का उल्लंघन करना प्रकृति के संकोच का कारण बनता है। न्यूनतम दो दिन दो रात बीत जाने के पश्चात् प्रकृति में कुछ विस्तार उत्पन्न होने लगता है और स्वरूप की गतियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं। आरम्भ में नेत्र मूँदकर स्वरूप की गतियों का साक्षात्कार किया जा सकता है। लगातार इसी प्रकार अनेक सप्ताह या अनेक मास जागरण का उपक्रम करने के पश्चात् नेत्र खोलकर भी स्वरूप की गतियाँ प्रकट होने लगती हैं। सूफ़ी साधक नेत्रबन्ध की अवस्था को वुरूद प्रवेश और खुले नेत्र की अवस्था को साक्षात्कार कहते हैं। वुरूद या साक्षात्कार में निगाह के देखने का साधन (LENS) सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी (लतीफ़े-ख़फ़ी) का लेंस होता है और जो कुछ दृष्टिगोचर होता है, वह जवैया के प्रभाव होते हैं। ये प्रभाव साबिता की वे दैवीय तजल्लियात हैं जिनका प्रतिबिम्ब जवैया में आकृति और गति का रूप धारण कर लेता है। जब तक ये तजल्लियात

www.ksars.org

साबिता में रहती हैं तब तक ग़ैबुल-ग़ैब कहलाती हैं और उन्हें इल्मे-इलाही भी कहा जाता है। इन तजल्लियों के प्रतिबिम्ब को अअयान में अदृश्य या ईश्वरीय आदेश कहा जाता है। फिर यही तजल्लियात जवैया की सीमा में प्रवेश करने पर वुरूद या साक्षात्कार बन जाती हैं।

सुरक्षित पट्टिका(लौहे-महफ़ूज़) और मुराकबा

अनादि से अनन्त तक जो कुछ होने वाला है वह समस्त का समस्त सामूहिक रूप से सुरक्षित पट्टिका (लौहे-महफ़ूज़) पर अंकित है। यदि हम अनादि से क़ियामत तक का सम्पूर्ण कार्यक्रम अध्ययन करना चाहें तो सुरक्षित पट्टिका में उसकी तमसुल देख सकते हैं। अर्थात सुरक्षित पट्टिका सम्पूर्ण अस्तित्वमान का एकीकृत कार्यक्रम है। यदि हम किसी एक व्यक्ति विशेष के जीवन का कार्यक्रम अध्ययन करना चाहें तो सुरक्षित पट्टिका के अतिरिक्त उसका अंकन उस व्यक्ति के अअयान में देखा जा सकता है। अर्थ यह है कि अनिवार्य ज्ञान (इल्मे-क़लम/वाजिब) अनादि से अनन्त तक ब्रह्मांड के अदृश्य ज्ञान का रिकॉर्ड है। कुलीयात या सुरक्षित पट्टिका अनादि से हश्र तक के आदेशों का रिकॉर्ड है।

"जु" अनादि से अनन्त तक अस्तित्वमान के कर्मों का रिकॉर्ड है, किन्तु व्यक्ति के साबिता में केवल व्यक्ति से सम्बद्ध अदृश्य ज्ञान का लेखा अंकित होता है। व्यक्ति के अअयान में केवल उसके अपने विषयक आदेश रहते हैं और व्यक्ति के जवैया में केवल उसके अपने कर्मों का रिकॉर्ड सुरक्षित होता है।

व्याख्या:

ईश्वरीय ज्ञान की तजल्लि का जो प्रतिबिम्ब मनुष्य के साबिता में होता है वह आकृति-रूप अर्थात तमसुल की भाषा में अंकित होता है। ये प्रतिमाएँ ईश्वर की मस्लहतों और रहस्यों की व्याख्या होती हैं। ये व्याख्याएँ सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी (लतीफ़े-ख़फ़ी) की रोशनियों में अध्ययन की जा सकती हैं। यदि सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी की रोशनी प्रयुक्त न हो तो ये व्याख्याएँ निगाह और मनुष्य के ज़ेहन पर अनावृत नहीं हो सकतीं। ज्ञान-बोध की पद्धति में निरंतर जागृत रहने के कारण सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी की रोशनी क्रमशः बढ़ती जाती है। इसी रोशनी में अदृश्य के समस्त नक़्श प्रकट होने लगते हैं क्योंकि यही रोशनी सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा से सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी तक फैल जाती है। हम पूर्व में साबिता का उल्लेख कर चुके हैं। वृत्त और बिंदु की वही हैसियत अअयान और जवैया की भी है।

गुप्त रहस्यों का ज्ञानी सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी की रोशनी में साबिता की तजल्लि यात को, आध्यात्मिक विस्तार का ज्ञानी सूक्ष्म तत्त्व-रूही की रोशनी में अअयान के आदेशों को और आध्यात्मिक संक्षेप का ज्ञानी सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनी में जवैया के कर्मों को पढ़ सकता है। जो संबंध सूक्ष्म

www.ksars.org

तत्व-ख़फ़ी का अख़फ़ा की तजल्लि यात से है, वही संबंध सूक्ष्म तत्व-रूही का सूक्ष्म तत्व-सिर्री के आदेशों से है और वही संबंध सूक्ष्म तत्व-नफ़्सी का सूक्ष्म तत्व-क़ल्बी के कर्मों से है।

सूक्ष्म तत्व-क़ल्बी (लतीफ़े-क़ल्बी) में मनुष्य के सभी कर्मों का रिकॉर्ड रहता है। इस रिकॉर्ड को सूक्ष्म तत्व-नफ़्सी (लतीफ़े-नफ़्सी) की रोशनी में पढ़ा जा सकता है। मुराकबा के माध्यम से सूक्ष्म तत्व-नफ़्सी की रोशनी इतनी बढ़ जाती है कि उसके द्वारा लोक-तमसुल (आलमे-तम्सील यानी "जु") के भीतर घटित हो चुके और होने वाले सभी कर्मों की प्रतिमाएँ देखी जा सकती हैं।

तदल्ला

तदल्ला ईश्वर की उन समष्टिगत गुण का नाम है जिनका प्रतिबिम्ब मनुष्य के साबिता को प्राप्त है। क़ुरआन पाक में जिस "नियाबत " ईश्वरीय प्रतिनिधित्व का उल्लेख है और ईश्वर ने इल्मुल-अस्मा की हैसियत में जो ज्ञान आदम को प्रदान किया था, उसके गुण और अधिकार के विभाग तदल्ला ही के रूप में अस्तित्व रखते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपनी "नियाबत " ईश्वरीय प्रतिनिधित्व के अधिकारों को समझना चाहे तो उसे तदल्ला के अवयवों की पूरी जानकारी प्राप्त करनी होगी।

सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि ईश्वर का प्रत्येक अस्मा (नाम) ईश्वर की एक गुण का नाम होता है और वह गुण आंशिक रूप से ईश्वर के प्रतिनिधि यानी मनुष्य को अनादि काल में प्रदान हुआ था। उदाहरण के लिए, ईश्वर का एक नाम है रहीम। इसकी गुण है सृष्टि करना यानी उत्पन्न करना। इसलिए सृष्टि की जितनी भी विधाएँ अस्तित्वमान में प्रयुक्त हुई हैं, उन सबका प्रेरक और ख़ालिक़ रहीम है। यदि कोई व्यक्ति रहीम की आंशिक गुण का लाभ उठाना चाहे तो उसे अस्मा-ए-रहीम की गुण का अधिक से अधिक भंडार अपने आंतरिक स्वरूप में संचित करना होगा। इसका साधन भी मुराकबा है। एक निश्चित समय निर्धारित कर के साधक को अपनी विचारधारा के भीतर यह अनुभव करना चाहिए कि उसकी स्वरूप को ईश्वर की गुण रहीमी का एक अंश प्राप्त है।

क़ुरआन पाक में ईश्वर ने जहाँ ईसा (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) के "मोज़िज़ात " दैवी चमत्कार का उल्लेख किया है, वहाँ यह बताया है कि मैंने ईसा को आत्मा फूँकने का गुण प्रदान किया है। यह गुण मेरी ओर से स्थानांतरित हुआ और उसके परिणाम मैंने प्रदान किए।

إِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا

بِإِذْنِي ۖ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي ۖ

www.ksars.org

– (सूरए माइदा : आयत 110)

अनुवाद :"और जब तू मिट्टी से मेरे आदेश से जीव की आकृति बनाता है, फिर उसमें फूँक मारता है तो वह मेरे आदेश से जीव हो जाता है; और तू जन्म से अंधे को और कोढ़ी को मेरे आदेश से अच्छा कर देता है; और जब तू मेरे आदेश से मुर्दों को जीवित कर खड़ा कर देता है।"

शब्दों के अर्थों में अस्मा रहीम की गुण मौजूद है।

कुन फ़ैकून

जब ईश्वर ने ब्रह्मांड की रचना की और कुन कहा, उस समय अस्मा रहीम की क़ुव्वते-तसर्फ़ (आत्मिक संचरण की शक्ति) ने गति में आकर ब्रह्मांड के सभी अवयवों और कणों को आकृति और रूप प्रदान किया। जब तक शब्द रहीम "अस्मा-ए-इतलाक़िया" नामकी हैसियत में था, तब तक उसकी गुण केवल ज्ञान की अवस्था में थी; लेकिन जब ईश्वर ने कुन कहा, तो रहीम अस्मा-ए-इतलाक़िया से संदर्भ में अवतरण कर के "अस्मा-ए-आईनिया" नाम-प्रत्यक्ष की सीमाओं में प्रवेश कर गया और रहीम की सिफ़त-ए-इल्म में गति (गति) उत्पन्न हो गई। इसके बाद गति की गुण के संबंध से शब्द रहीम का नाम अस्मा-ए-आईनिया ठहरा।

इसके बाद ईश्वर ने अस्तित्वगत को संबोधित किया:

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ

(पहचान लो, मैं तुम्हारा रब हूँ)

आत्माओं ने उत्तर में कहा: बला (जी हाँ, हमने पहचान लिया)।

जब आत्माओं ने रब होने का स्वीकार कर लिया तो अस्मा रहीम की हैसियत अस्मा-ए-आईनिया से संदर्भ में अवतरण कर के अस्मा-ए-कोनिया नाम-सृष्टिगत हो गई।

तसव्वुफ़ की भाषा में अस्मा-ए-इतलाक़िया की सीमा को सिफ़ते-तदल्ला कहा जाता है। अस्मा-ए-आइनिया की गुण को इबदा कहा जाता है और अस्मा-ए-कोनिया की गुण को ख़ल्क़ कहा जाता है। अस्मा-ए-कोनिया की गुण के प्रकट को तदबीर कहा जाता है। जहाँ ईश्वर ने क़ुरआन पाक में ईसा (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) के आत्मा फूँकने का वर्णन किया है, वहाँ अस्मा रहीम की इन तीनों गुण की ओर संकेत किया गया है और तीसरी गुण के प्रकट को आत्मा फूँकने का नाम दिया गया है।

www.ksars.org

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि मनुष्य को साबिता की स्थिति में अस्मा रहीम की सिफ़ते-तदल्ला प्राप्त है और वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त इसी गुण से मुर्दों को जीवित करने या किसी वस्तु को उत्पन्न करने का कार्य संपन्न कर सकता है।

फिर यही अस्मा रहीम का संदर्भ में अवतरण (तनज़्ज़ुल) सिफ़ते-आइनिया की सूरत में अअयान के भीतर मौजूद है, जिसके आत्मिक संचरण की क्षमताएँ मनुष्य को पूर्ण रूप से प्राप्त हैं। अस्मा रहीम की सिफ़ते-कोनिया मनुष्य के जवैया में पैवस्त है और उसे ईश्वर की ओर से इस गुण के प्रयोग का अधिकार भी प्राप्त है। ईश्वर ने हज़रत ईसा की मिसाल देकर इस नेमत की व्याख्या कर दी है। यदि कोई मनुष्य इस गुण की क्षमता को उपयोग करना चाहे तो उसे अपने साबिता, अपने अअयान और अपने जवैया में मुराकबा के माध्यम से इस विचार को स्थिर करना होगा कि मेरी स्वरूप अस्मा-ए-रहीम की गुण से सम्बद्ध है। इस विचार के अभ्यास के दौरान वह इस तथ्य का साक्षात्कार करेगा कि उसके साबिता, उसके अअयान और उसके जवैया से अस्मा-ए-रहीम की गुण आत्मा बनकर उस मुर्दे में प्रविष्ट हो रही है जिसे वह जीवित करना चाहता है। यह सत्य है कि अस्तित्वमान की जितनी भी आकृतियाँ और रूप हैं वे सभी अस्मा-ए-रहीम की गुण का नूरी (प्रकाशात्मक) समुच्चय हैं। यह समुच्चय मनुष्य की आत्मा को प्राप्त है। इस स्थिति में मनुष्य की आत्मा एक सीमा में साहिबे-तदल्ला, एक सीमा में साहिबे-इबदा और एक सीमा में साहिबे-ख़ल्क़ है। जिस समय वह विचार की पूर्ण अभ्यास प्राप्त कर लेने के बाद अस्मा-ए-रहीम की इस गुण को स्वयं से पृथक आकृति और रूप देने का संकल्प करेगा, तो सिफ़ते-तदल्ला के अंतर्गत उसका यह अधिकार गति में आ जाएगा।

सिफ़त-इबदा के अंतर्गत हिदायत गति में आएगी और सिफ़त-ख़ल्क के अंतर्गत तक़वीन गति में आएगी। और ये तीनों गुण का प्रकट उस सजीव की आकृति और रूप धारण करेगा जिसे अस्तित्व में लाना अभिप्रेत है।

<u>संयोजन</u>:

सिफ़त-तदल्ला (दैवी अधिकार) (साबिता) + सिफ़त-इबदा-इलाही (अइन) (किसी वस्तु की पूर्ण आकृति और रूप) + सिफ़त-ख़ल्क-इलाही (जुय्या) (जीवन की गतियाँ और स्थितियाँ) = प्रकट (अस्तित्व-नासूती)

हमारी दुनिया के अनुभव यह बताते हैं कि पहले हम किसी वस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। यदि कभी संयोगवश ऐसा हो जाए कि हमें किसी वस्तु के बारे में कोई जानकारी न हो और वह अचानक हमारी आँखों के सामने आ जाए, तो हम उस वस्तु को बिल्कुल नहीं देख सकते।

www.ksars.org

उदाहरण संख्या 1:

लकड़ी के एक फ़्रेम में एक छवि लगाकर उस छवि की समतल पर बहुत ही पारदर्शी दर्पण रखा जाए और किसी व्यक्ति को कुछ दूरी पर खड़ा कर परीक्षणार्थ यह पूछा जाए कि बताओ तुम्हारी आँखों के सामने क्या है–तो उसकी निगाह केवल छवि को देखेगी। पारदर्शी होने की वजह से दर्पण को नहीं देख सकेगी। यदि उस व्यक्ति को यह बता दिया जाए कि दर्पण में छवि लगी हुई है, तो पहले उसकी निगाह दर्पण को देखेगी, फिर छवि को देखेगी। पहली स्थिति में, यद्‍यपि देखने वाले की निगाह दर्पण में से गुज़रकर छवि तक पहुँची थी, लेकिन उसने दर्पण को अनुभव नहीं किया। परंतु जानकारी होने के बाद दूसरी स्थिति में कोई व्यक्ति पहले दर्पण को देखता है और फिर छवि को। यह उदाहरण निगाह का है।

उदाहरण संख्या 2:

हिरोशिमा का एक पर्वत जो परमाणु बम से नष्ट हो चुका था, लोगों को दूर से अपनी आकृति और रूप में दिखाई देता था, लेकिन जब उसे छूकर देखा गया तो धुएँ के प्रभाव तक नहीं पाए गए। इस अनुभव से यह स्पष्ट हो गया कि केवल देखने वालों का ज्ञान ही निगाह का कार्य कर रहा था।

उदाहरण संख्या 3:

सामान्य अनुभव है कि गूँगे-बहरों में देखने की क्षमता तो होती है लेकिन वे न बोल सकते हैं और न सुन सकते हैं। न बोल पाना और न सुन पाना इस तथ्य का प्रमाण है कि उनका ज्ञान केवल निगाह तक पहुँच सकता है। अर्थात उनकी निगाह ज्ञान का स्थानापन्न तो बन जाती है लेकिन देखी हुई वस्तुओं की व्याख्या नहीं कर सकती। उनकी वे क्षमताएँ जो ज्ञान को सुनने और बोलने की आकृति और रूप देती हैं, लुप्त हैं। इसलिए उनका ज्ञान केवल निगाह तक सीमित रहता है। यहाँ से यह उद्‍घाटित हो जाता है कि ज्ञान क्रमशः विभिन्न रूप धारण करता है। इस प्रकार की हज़ारों मिसालें मिल सकती हैं। परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि किसी वस्तु का ज्ञान न हो तो निगाह रिक्त के समान है। अर्थात ज्ञान को हर अवस्था में प्राथमिकता प्राप्त है और शेष इंद्रियों को गौणता।

क़ानून:
प्रत्येक अनुभूति चाहे वह निगाह हो, श्रवण हो या स्पर्श हो, वह ज्ञान की ही एक शाखा है। ज्ञान ही उसकी नींव है। ज्ञान के बिना सभी अनुभूतियाँ नकारात्मक स्तर रखती हैं। यदि किसी वस्तु का ज्ञान नहीं है तो न उस वस्तु का देखना संभव है और न सुनना संभव है। अन्य शब्दों में, किसी वस्तु का ज्ञान ही उसका अस्तित्व है। यदि हमें किसी वस्तु की जानकारी प्रदान नहीं की गई है तो हमारे लिए वह वस्तु रिक्त है।

www.ksars.org

नियम:

जब ज्ञान प्रत्येक अनुभूति की नींव है तो ज्ञान ही निगाह है, ज्ञान ही श्रवण है, ज्ञान ही वाणी है और ज्ञान ही स्पर्श है। अर्थात किसी मनुष्य का सम्पूर्ण चरित्र केवल ज्ञान है।

सूत्र:

ज्ञान और केवल ज्ञान ही अस्तित्वगत तत्व है। ज्ञान से बढ़कर अस्तित्वगत तत्व की कोई हैसियत नहीं।

सत्य:

ज्ञान सत्य है और अज्ञान अनस्तित्व है। नाम-ए- गुण ही अस्तित्वगत तत्व हैं। गुण की पहली उपस्थिति का नाम **इ़तलाक़**, दूसरी उपस्थिति का नाम **आइ़न**, तीसरी उपस्थिति का नाम **कोन** है और इन तीनों उपस्थितियों का नाम प्रकट या अस्तित्व है।

व्याख्या:

ज्ञान-इ़तलाक़, ज्ञान-आइ़न और ज्ञान-कोन के एकीकृत होने का नाम अस्तित्व या प्रकट है।

निगाह = इ़तलाक़ + आइ़न + कोन = ज्ञान = अस्तित्व

श्रवण = इ़तलाक़ + आइ़न + कोन = ज्ञान = अस्तित्व

वाणी = इ़तलाक़ + आइ़न + कोन = ज्ञान = अस्तित्व

घ्राण = इ़तलाक़ + आइ़न + कोन = ज्ञान = अस्तित्व

स्पर्श = इ़तलाक़ + आइ़न + कोन = ज्ञान = अस्तित्व

दृष्टि, श्रवण, वाणी, घ्राण और स्पर्श = अस्तित्व = ज्ञान

ऊपर वर्णित तथ्यों के अनुसार अस्तित्व केवल नाम-ए-इलाही के गुणों का प्रतिबिम्ब है। ईश्वर का प्रत्येक नाम ईश्वर का गुण है। ईश्वर का प्रत्येक गुण ईश्वर का ज्ञान है और ईश्वर के ज्ञान के तीन प्रतिबिम्ब हैं–

प्रयोग (इ़तलाक़)

आइ़न और (अनादि सूक्ष्म रूप)

कोन।

www.ksars.org

इन तीनों प्रतिबिम्बों का समष्टि ही प्रकट या अस्तित्व है। वास्तव में किसी भी अस्तित्व या प्रकट की नींव नाम-ए-इलाही के गुण हैं और नाम-ए-इलाही के छह अवतरणों से ब्रह्मांड लोक-अस्तित्व में आया। नाम का अवतरण गुण है, गुण का अवतरण ज्ञान है। ज्ञान ने जब अवतरण किया तो उसके तीन प्रतिबिम्ब अस्तित्व में आए–इ़तलाक़, आइन और कोन। इन तीनों प्रतिबिम्बों ने जब अवतरण किया तो प्रकट या अस्तित्व बन गया। अस्तित्व की व्याख्या ऊपर हो चुकी है और यह निश्चित किया जा चुका है कि अस्तित्व केवल ज्ञान है। जब गुण का प्रतिबिम्ब अस्तित्व है तो गुण का प्रतिबिम्ब ही ज्ञान हुआ। क्योंकि नाम गुण है, इसलिए नाम का संबंध प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान से सिद्ध हो जाता है। जब नाम अवतरण करेगा तो ज्ञान बन जाएगा और ज्ञान ही अपनी आकृति और रूप में **प्रकट-कोनिया** होगा। यही वे नाम हैं जिनका उल्लेख क़ुरआन पाक में है।

www.ksars.org

अल्म-ए-लदुन्नी

इन ही नामों का ज्ञान आदम अलैहिस्सलातो वस्सलाम को दिया गया था। इन ही नामों का ज्ञान प्रतिनिधित्व (नियाबत) की निधि है। इन ही नामों के ज्ञान को तसव्वुफ़ की भाषा में *अल्म-ए-लदुन्नी* कहते हैं।

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا

जब ईश्वर ने ज्ञान का विभाजन किया तो सबसे पहले अपने गुणों के नामों का परिचय कराया। इन ही नामों को *नाम-ए-गुणात्मक* कहा जाता है। यही नाम वह ज्ञान हैं जो ईश्वर के ज्ञान का प्रतिबिम्ब हैं। गुण की परिभाषा के बारे में यह जानना आवश्यक है कि ईश्वर के हर गुण के साथ नहर-एऔर रहमतके गुण भी संगृहीत होते हैं, जैसे रबानियत के गुण के साथ नहर-एऔर रहमतभी सम्मिलित हैं या समदियत के गुण के साथ नहर-एऔर रहमतशामिल हैं। इसी तरह अहदियत के गुण के साथ नहर-एऔर रहमतके गुण का होना अनिवार्य है। अर्थात् ईश्वर का कोई भी गुण नहर-एऔर रहमतके बिना नहीं है। जब हम ईश्वर को *बसीर* कहते हैं तो उसका तात्पर्य यह होता है कि ईश्वर बसीर होने के गुण में क़ादिर और रहीम भी है, यानी उसे बसीर होने में पूर्ण शक्ति और पूर्ण सृजनात्मक नहर-एप्राप्त है।

हर नाम तीन तजल्लीओं का समष्टि है

ईश्वर का कोई नाम वास्तव में एक तजल्ली है। यह तजल्ली ईश्वर के एक विशेष गुण की धारक होती है और इस तजल्ली के साथ गुण-नहर-एकी तजल्ली और गुण-रहमत की तजल्ली भी सम्मिलित होती है। इस प्रकार हर गुण की तजल्ली के साथ दो तजल्ली और होती हैं। अर्थात् हर नाम तीन तजल्लीओं का समष्टि है। एक तजल्ली गुण-नाम की, दूसरी तजल्ली गुण-नहर-एकी, तीसरी तजल्ली गुण-रहमत की। फलत किसी तजल्ली के नाम को **इस्म** कहा जाता है। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हर नाम सामूहिक हैसियत में दो गुणों पर आधारित है। एक स्वयं तजल्ली और एक तजल्ली का गुण। जब हम ईश्वर का कोई नाम मन में पढ़ते हैं या जिह्वा से उच्चारित करते हैं तो एक तजल्ली अपने गुण के साथ गति में आ जाती है। इस गति को हम ज्ञान कहते हैं जो वस्तुतः ईश्वर के ज्ञान का प्रतिबिम्ब है। यह गति तीन अवयवों पर आधारित है।

पहला अवयव तजल्ली है जो सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा के भीतर अवतरित होती है।

दूसरा अंश तजल्ली का गुण है, जो सूक्ष्म तत्त्व-ए-सिरी में अवतरण करता है।

www.ksars.org

तीसरा अवयव उस तजल्ली के गुण की संरचना है जो सूक्ष्म तत्त्व-कल्पी में अवतरित होती है और यही अवयव निगाह है और इसी अवयव की कई गतियाँ हैं जो एक के बाद एक सूक्ष्म तत्त्व-कल्पी ही में घटित होती हैं। वाणी और श्रवण, घ्राण और गंधज़ान हैं। अब यह घ्राण और गंधज़ान एक और गति के ज़रिये रंगों के आकार-प्रकार बनकर सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी को अपनी तरफ़ खींचते हैं। सूक्ष्म तत्त्व-कल्पी और सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की यही दरमियानी आकर्षण क्रिया या परिणाम है।

इसी तरह आत्मा तीन गतियाँ करती है जो एक साथ प्रकट होती हैं। पहली गति किसी वस्तु का जानना है जिसका अवतरण सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा में होता है। दूसरी गति अनुभव करना है जिसका अवतरण सूक्ष्म तत्त्व-सिर्री में होता है। तीसरी गति इच्छा और क्रिया है जिसका अवतरण सूक्ष्म तत्त्व-कल्पी और सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी में होता है। प्रत्येक गति साबिता से प्रारम्भ होकर जवैया पर समाप्त हो जाती है। जैसे ही साबिता के सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा में जानना घटित हुआ, सूक्ष्म तत्त्व-ख़फ़ी ने उसे रिकार्ड कर लिया। फिर जैसे ही अयन के सूक्ष्म तत्त्व-सिर्री में अनुभव करना घटित हुआ, सूक्ष्म तत्त्व-रूही ने उसे रिकार्ड कर लिया। फिर जवैया के सूक्ष्म तत्त्व-कल्पी में उसकी क्रिया घटित हुई और सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी ने उसे रिकार्ड कर लिया। साबिता ने जाना, अअयान ने अनुभव किया और जवैया ने क्रिया की। ये तीनों गतियाँ एक साथ प्रारम्भ हुईं और एक साथ समाप्त हो गईं। इस प्रकार जीवन क्षण-प्रतिक्षण गति में आता रहा।

व्यक्ति के जीवन से संबंधित ज्ञान की सभी तजल्लीयाँ साबिता में, विचार की सभी तजल्लीयाँ अअयान में और क्रिया के सभी चिन्ह जवैया में रिकार्ड हैं। सामान्य अवस्था में हमारी निगाह इस ओर कभी नहीं जाती कि अस्तित्वगत सभी पिण्डों और व्यक्तियों में एक गुप्त सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध की खोज सिवाय आध्यात्मिक जन के और किसी प्रकार के विद्वान अथवा कलाकार नहीं कर सकते, जबकि इसी सम्बन्ध पर ब्रह्मांड के जीवन का आश्रय है। यही सम्बन्ध सभी आकाशीय पिण्डों और पिण्डों में रहने वाले चेतन और अचेतन व्यक्तियों को एक-दूसरे के परिचय का कारण है।

हमारी निगाह जब किसी तारे पर पड़ती है तो हम अपनी निगाह के माध्यम से तारे के मानवीय रूप को अनुभव करते हैं। तारे का बशर्रा कभी हमारी निगाह को अपने दृश्य से नहीं रोकता। वह कभी नहीं कहता कि मुझे मत देखो। यदि कोई गुप्त सम्बन्ध विद्यमान न होता तो प्रत्येक तारा और प्रत्येक आकाशीय दृश्य हमारी जीवन को स्वीकार करने में कोई न कोई बाधा अवश्य उत्पन्न करता। यही गुप्त सम्बन्ध सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सभी व्यक्तियों को एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध किए हुए है।

यहाँ इस सत्य का उद्घाटन होता है कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक ही सत्ता की सम्पत्ति है। यदि ब्रह्मांड के विभिन्न पिण्ड विभिन्न सत्ताओं की सम्पत्ति होते तो निश्चय ही एक-दूसरे के परिचय में संघर्ष उत्पन्न हो जाता। एक सत्ता की सम्पत्ति दूसरी सत्ता की सम्पत्ति से परिचित होना कभी स्वीकार

www.ksars.org

न करती। कुरआन पाक ने इसी स्वामी सत्ता का परिचय शब्द **अल्लाह** से कराया है। पवित्र नामों में यही शब्द **अल्लाह** नाम-स्वरूप है।

नाम-ए-ज़ात स्वामित्वाधिकार अधिकार रखने वाली सत्ता का नाम है और नाम-ए-गुण सामर्थ्यवान अधिकार रखने वाली सत्ता का नाम है। ऊपर की पंक्तियों में ईश्वर के दोनों गुण—रहमत और क़ुदरत—का उल्लेख हुआ है। प्रत्येक नाम सामर्थ्यवान गुण रखता है और नाम-ए-ज़ात मालिकाना अर्थात् सृजनशीलता के अधिकार का धारक है। इसे सूफ़ी भाषा में रहमत कहा जाता है। इसलिए प्रत्येक गुण के साथ ईश्वर का सामर्थ्यवान और करुणामय गुण अनिवार्य रूप से आता है। यही दो गुण समस्त सृष्टि के सभी प्राणियों के बीच गुप्त संबंध की स्थिति रखते हैं। अर्थात् सूर्य का रोशनी धरतीवासियों की सेवा से इसलिए इनकार नहीं कर सकता क्योंकि धरती और सूर्य एक ही सत्ता की संपत्ति हैं। वह सत्ता स्वामित्वाधिकार अधिकार में शासनकारी शक्तियों से सम्पन्न भी है और उसकी रहमत तथा शक्ति किसी भी समय यह स्वीकार नहीं करती कि उसकी संपत्तियाँ एक-दूसरे की पहचान से इंकार कर दें, क्योंकि ऐसा होने से उसकी नहर-एपर आक्षेप आता है। इस प्रकार प्रत्येक सृजन-बिंदु पर ईश्वर के दो गुण—नहर-एऔर रहमत—का प्रभावी होना अनिवार्य है। इसलिए यही दोनों गुण ब्रह्मांड के प्राणियों का पारस्परिक संबंध हैं।

अब यह सत्य प्रकट हो जाता है कि ब्रह्मांडीय व्यवस्था के निर्माण, संयोजन और संपादन पर ईश्वर के दो नामों का शासन है—एक नाम "अल्लाह" और दूसरा नाम "क़दीर"। सभी नाम-ए-गुणों में से प्रत्येक नाम इन दोनों नामों के साथ जुड़ा हुआ है। यदि ऐसा न होता तो ब्रह्मांड के प्राणी एक-दूसरे से परिचित न रह सकते थे और न ही उनकी पारस्परिक सेवा संभव होती।

इस्म-ज़ात

अब हम शब्द अल्लाह अर्थात् इस्म-ज़ात के विषयों का तज़किरा करेंगे।

अल्लाह का अलिफ़ अहदियत के समस्त मंडलों की तजल्लि का नाम है। अहदियत की तजल्लि से आशय सृष्टि की वह संरचना है जो तनज़ुल-ए-ज़ात अर्थात् वाजिब के अनवार हैं। अस्तित्वमान में ये अनवार नहर-ए-तस्वीद के माध्यम से प्रसारित होते हैं। यही नहर-ए-तस्वीद प्रत्येक सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा को सींचती है। इस प्रकार प्रत्येक सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा एक-दूसरे से परिचित और अवगत है। ब्रह्मांड के वे सभी चेतन प्राणी जिनमें सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा मौजूद है, सब के सब नहर-ए-तस्वीद के माध्यम से इस अदृश्य संबंध में एक-दूसरे से जुड़े हुए और परिचित हैं। यही वह आधार है जिसके द्वारा हम अस्तित्वगत तत्व की प्रत्येक वस्तु को जानते हैं। नहर-ए-तस्वीद के सूक्ष्म रोशनी ही वे किरणें हैं जो मनुष्य, जिन्न और चेतन प्राणियों की स्मृति (हाफ़िज़ा) का कार्य करती हैं। इन्हीं किरणों में अस्तित्वमान का पूरा रिकार्ड सुरक्षित है। जब हम किसी वस्तु को याद

www.ksars.org

करना या जानना चाहते हैं तो यही किरणें गति करके अअयान से होते हुए जवैया में प्रविष्ट होती हैं और हमारा चेतना निर्मित करती हैं। तब हम किसी भूली हुई वस्तु को या जानी हुई वस्तु को अपने चेतना में अनुभव कर लेते हैं। इस सत्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य के सूक्ष्म तत्व-अख़फ़ा में अनादि से अनन्त तक का समस्त ज्ञान-भंडार सुरक्षित है। यदि वह इस भंडार से लाभ उठाने की साधना करे तो विभिन्न कालों के विविध घटनाक्रम, दुर्घटनाएँ और जानकारियाँ अख़फ़ा की किरणों से प्राप्त कर सकता है।

अस्तित्वगत तत्व के जीवन के सभी अवयव वही हैं जो ब्रहमांड के अस्तित्व में आने से पहले ईश्वर के ज्ञान में थे। यह समझना आवश्यक है कि अस्तित्वमान के सभी संयोजक अवयव वही हो सकते थे जो पहले से ईश्वर के ज़ेहन में विद्यमान थे। इन्हीं संयोजक अवयवों का एक नियम के अंतर्गत क्रमबद्ध होना जीवन और अस्तित्व के रूप में प्रकट हुआ। इस भाव को और अधिक स्पष्ट करने हेतु एक प्रश्न प्रस्तुत करते हैं। इस प्रश्न के उत्तर में नियम की अनेक स्थितियाँ उद्घाटित हो जाएँगी।

प्रश्न: जीवन क्या है?

उत्तर: जैसे ईश्वर के चेतन में मनुष्य और उसकी आकृति-प्रकृति उसी प्रकार विद्यमान थी जिस प्रकार मनुष्य वर्तमान स्थिति में उत्पन्न होकर परिपक्व आकार लेकर एक आयु तक एक विशेष स्वरूप के रूप में जीवन व्यतीत करता है। इस उदाहरण की व्याख्या इस प्रकार की जाती है कि मनुष्य का स्वरूप एक गति है। यह गति ईश्वर के आदेश से आरम्भ होती है। इस गति के सहस्रों अवयव हैं और प्रत्येक अवयव एक गति है। अर्थात् मनुष्य का स्वरूप असंख्य गतियों का समष्टि है। जब मनुष्य ने अपने जीवन की प्रथम गति की तो उस गति की शुरुआत को अलग और अन्त को अलग स्वरूप बनने का अवसर मिला। प्रारम्भ में जो गति घटित हुई, वह सृजनता के गुण का प्रकट थी। वह गति आरम्भिक अवस्थाओं से गुज़रकर पूर्णता तक पहुँची। पहला अवयव प्रारम्भिक गति और दूसरा अवयव पूर्णता। दोनों मिलकर मानव-जीवन की एक तमसुल बने। उस गति के तुरन्त पश्चात् जीवन की दूसरी गति प्रारम्भ हो गई। फिर उसकी भी पूर्णता हुई। ये दोनों प्रतिमाएँ हुईं। पहली प्रतिमा एक रिकार्ड थी और दूसरी प्रतिमा भी एक पृथक रिकार्ड के रूप में विद्यमान हुई। यदि पहली प्रतिमा का रिकार्ड सुरक्षित न रहता तो जीवन की पहली गति, जो जीवन का एक अवयव है, नष्ट हो जाती। इसी प्रकार दूसरी प्रतिमा का रिकार्ड सुरक्षित न रहता तो दूसरी गति भी नष्ट हो जाती। यदि नाश का यह क्रम चलता रहता तो जीवन की प्रत्येक गति घटते ही लुप्त हो जाती। इस प्रकार किसी मनुष्य का समस्त जीवन निरर्थक हो जाता और तब किसी प्रकार भी हम जीवन को जीवन नहीं कह सकते थे। इसलिए यह आवश्यक हुआ कि जीवन की प्रत्येक गति संरक्षित रहे। जीवन की प्रत्येक गति ईश्वर के गुण सृजनता के अधीन घटित हुई है अर्थात् सृजनता के गुण की सीमाओं में प्रकट हुई। उस गति का संरक्षित रहना ईश्वर के ऐसे गुण में सम्भव था जो परिपूर्ण आवरण कर सके और संरक्षण की नहर-एरखता हो। अतः यह

www.ksars.org

आवश्यक हो गया कि गति, जो सृजनता के गुण के अधीन प्रारम्भ हुई थी, उसकी पूर्णता नहर-एके गुण की सीमाओं में हो। अब प्रत्येक गति के लिए यह अनिवार्य हो गया कि वह गुण सृजनता अर्थात् रहमत की सीमाओं में प्रारम्भ हो और गुण स्वामित्व अर्थात् नहर-एकी सीमाओं में पूर्ण हो। इस सिद्धान्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि रहमत और नहर-एकी छाया में ही गति अस्तित्व में आ सकती थी। इन दोनों गुणों का सहारा लिये बिना गति का अस्तित्व असम्भव है।

इस कथन से यह सिद्ध हो जाता है कि जीवन रहमत और नहर-एका समष्टि है। ईश्वर के जितने भी गुण हैं, उनमें से प्रत्येक गुण के साथ रहमत और नहर-एका जुड़ना निश्चित है।

‘अलिफ़’ जिन प्रकाश-तरंगों का नाम है उन्हें तसव्वुफ़ के अनुयायी की भाषा में "सिर्र" गुप्त संकेत कहा जाता है। सिर्र वे अनवार हैं जो अपनी सूक्ष्मता के कारण उच्चतम साक्षात्कार रखने वालों को दृष्टिगोचर होती हैं। यही वे अनवार हैं जो नहर-ए-तसवीद के माध्यम से अस्तित्वगत तत्व को सींचती हैं। इन्हीं अनवार के द्वारा साधक ईश्वर की आत्मिक उद्भेदन प्राप्त करता है।

नहर-ए-तज्रीद, नहर-ए-तशहीद और नहर-ए-तज़हीर के अनवार स्वरूप-ज्ञान (मारिफ़त-ए-ज़ात) तक नहीं पहुँचा सकते। आत्मा-स्वरूप की पहचान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि साधक उन अनवार की आत्मिक उद्भेदन प्राप्त करे जिनका नाम अलिफ़ है।

सुरक्षित पट्टिका का नियम यह है कि जब कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से परिचित होता है तो अपनी प्रकृति में उसका प्रभाव स्वीकार करता है। इस प्रकार दो व्यक्तियों में से एक प्रभाव डालने वाला और दूसरा प्रभाव स्वीकार करने वाला होता है। परिभाषागत रूप से हम इन दोनों में से एक का नाम "संवेदनशील" और दूसरे का नाम "संवेद्य" रखते हैं। संवेदनशील, संवेद्य का प्रभाव स्वीकार करता है और पराजित की स्थिति रखता है। उदाहरण के लिए ज़ैद जब महमूद को देखता है तो महमूद के सम्बन्ध में अपनी जानकारी के आधार पर कोई मत बनाता है। यह मत महमूद का गुण है जिसे ज़ैद अपने भीतर एक अनुभव के रूप में स्वीकार करता है। अर्थात मनुष्य दूसरे मनुष्य या किसी वस्तु के गुण से प्रभावित होकर और उस गुण को स्वीकार करके अपनी हार और अधीनता का स्वीकार करता है। यहाँ आकर मनुष्य, पशु, वनस्पति और जड़ पदार्थ सब एक ही पंक्ति में खड़े दिखाई देते हैं और मनुष्य की श्रेष्ठता विलुप्त हो जाती है। अब यह समझना आवश्यक हो गया कि आखिर मनुष्य की वह कौन-सी स्थिति है जो उसकी श्रेष्ठता को स्थिर रखती है और उस स्थिति को प्राप्त करना किस प्रकार सम्भव हो सकता है।

नबियों ने इस स्थिति को प्राप्त करने का प्रबंध इस प्रकार किया कि जब वे किसी वस्तु के विषय में सोचते तो उस वस्तु और अपने बीच कोई प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं करते थे। सदैव उनकी विचारधारा यह होती थी कि ब्रहमांड की सभी वस्तुओं का और हमारा स्वामी ईश्वर है। किसी वस्तु का संबंध हमसे प्रत्यक्ष नहीं है बल्कि हमसे प्रत्येक वस्तु का संबंध ईश्वर की आत्मिक ज्ञान

www.ksars.org

(मारिफ़त) से है। धीरे-धीरे उनकी यह विचारधारा स्थिर हो जाती थी और उनका ज़ेहन ऐसे रुझान उत्पन्न कर लेता था कि जब वे किसी वस्तु की ओर संबोधित होते थे तो उस वस्तु की ओर ध्यान जाने से पहले ईश्वर की ओर ध्यान जाता था। उन्हें किसी वस्तु की ओर ध्यान देने से पूर्व यह अनुभूति स्वभावतः होती थी कि यह वस्तु हमसे प्रत्यक्ष कोई संबंध नहीं रखती। उस वस्तु का और हमारा संबंध केवल ईश्वर के कारण है।

जब उनकी विचारधारा यह होती थी तो उनके ज़ेहन की प्रत्येक गति में ईश्वर का अनुभव होता था। ईश्वर ही अनुभूत के रूप में उनका संबोधित और केंद्र बनता था और नियम की निगाह से ईश्वर के गुण ही उनका अनुभव बनते थे। धीरे-धीरे ईश्वर के गुण उनके ज़ेहन में एक स्थायी स्थान प्राप्त कर लेते थे या यूँ कहें कि उनका ज़ेहन ईश्वर के गुणों का प्रतिनिधि बन जाता था। यह स्थान प्राप्त होने के पश्चात उनके ज़ेहन की प्रत्येक गति ईश्वर के गुणों की गति होती थी। और ईश्वर के गुणों की कोई गति शक्ति और शासन के गुण से रिक्त नहीं होती थी। परिणामस्वरूप उनके ज़ेहन को यह नहर-एप्राप्त हो जाती थी कि वे अपने संकल्प के अनुसार अस्तित्वगत तत्व के किसी कण, किसी व्यक्ति और किसी सत्ता को गति में ला सकते थे।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ की आंतरिक व्याख्या इसी मौलिक पाठ पर आधारित है। औलिया-ए-किराम में अहल-ए-निज़ामत को ईश्वर की ओर से यही ज़ेहन प्रदान किया जाता है और क़ुर्ब-ए-नवाफ़िल वाले औलिया-ए-किराम अपनी साधना और मुजाहिदों के माध्यम से इसी ज़ेहन को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

www.ksars.org

आत्मा की केन्द्रीयताएँ और प्रेरणाएँ

सूक्ष्म केन्द्रों " लताइफ़ " का विवरण पहले आ चुका है। आत्मा के छह सूक्ष्म केन्द्र वास्तव में आत्मा की छह केन्द्रिताएँ हैं, जिन्हें बहुत व्यापकता प्राप्त है। इन केन्द्रिताओं की गति दिन-रात के अन्तराल से एक के बाद दूसरी लगातार प्रकट होती रहती है। छह सूक्ष्म केन्द्रों में से तीन की गति जागृति में और बाकी तीन की गति निद्रा में क्रियाशील रहती है। इन सूक्ष्म केन्द्रों की गतियों को हम निम्नलिखित हिस्सों में विभाजित कर सकते हैं।

ये हिस्से जागृति या निद्रा के अन्तराल हैं। जागृति के अन्तराल में सबसे पहला अन्तराल वह है जब मनुष्य सो कर उठता है और उस पर अर्ध-जागृति की अवस्था छा जाती है। इस अन्तराल में सूक्ष्म केन्द्र-नफ़्सी गति करता है और उसकी व्यापकताओं में जितनी भी चिन्तन और क्रिया की धाराएँ हैं, वे सब एक साथ प्रवाहित होने लगती हैं।

दूसरा अन्तराल उस समय शुरू होता है जब खुमार उतर चुका होता है और पूर्ण जागृति की अवस्था होती है। इस अन्तराल में सूक्ष्म केन्द्र-क़ल्बी की सभी योग्यताएँ अपनी व्यापकताओं में हलचल करती रहती हैं। यह अन्तराल समान रूप से कष्ट और आनन्द की स्थिति पर आधारित होता है। इस अन्तराल में कष्ट और आनन्द के भाव संतुलित रहते हैं या कभी-कभी कष्ट का भाव बढ़ जाता है।

जागृति का तीसरा अन्तराल प्रसन्नता, अन्तःप्रज्ञा और आनन्द की शक्ति के प्रभावी होने का दौर है। इस अन्तराल में लगातार सूक्ष्म केन्द्र-रूह़ी की गति बनी रहती है।

जागृति के इन तीनों अन्तरालों के बाद निद्रा का पहला अन्तराल शुरू हो जाता है जिसे ऊँघ (झपकी) कहते हैं।

इस अवस्था में सूक्ष्म केन्द्र-सिरी गति में रहता है। निद्रा की दूसरी अवस्था, जिसे हल्की निद्रा कहा जाना चाहिए, सूक्ष्म केन्द्र-ख़फ़ी की गति का अन्तराल होती है। निद्रा की तीसरी अवस्था में, जब निद्रा पूरी तरह गहरी हो जाती है, तो सूक्ष्म केन्द्र-अख़फ़ा की प्रेरणाएँ प्रकट होती हैं। इन सभी अवस्थाओं के प्रारम्भ में मनुष्य पर निश्चलता (शान्ति) की स्थिति अवश्य छा जाती है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति सो कर उठता है तो आँखें खोलने के बाद कुछ क्षण पूर्ण निश्चलता के होते हैं और जब इन्द्रियों को धीरे-धीरे जागने का अवसर मिलता है तो आरम्भिक रूप से इन्द्रियों में कुछ न कुछ शान्ति अवश्य होती है। इसी प्रकार अन्तःप्रज्ञा प्रारम्भ होने से पहले मनुष्य की प्रकृति कुछ क्षणों के लिए निश्चल अवश्य हो जाती है। जिस प्रकार तीनों जागृति की अवस्थाएँ प्रारम्भिक कुछ क्षणों की निश्चलता से प्रारम्भ होती हैं, उसी प्रकार ऊँघ प्रारम्भ होने के समय पहले इन्द्रियों पर बहुत हल्की निश्चलता छा जाती है और कुछ क्षण बीत जाने के बाद

www.ksars.org

इन्द्रियों की यह निश्चलता बोझिल होकर ऊँघ का रूप धारण कर लेती है। इसके बाद आरम्भिक निद्रा के कुछ निश्चल क्षणों से हल्की निद्रा की शुरुआत होती है, फिर गहरी निद्रा की निश्चल तरंगें थोड़े समय के लिए मानव शरीर पर प्रभावी हो जाती हैं। यह प्रभाव आगे चलकर गहरी निद्रा बन जाता है। अब हम प्रत्येक सूक्ष्म केन्द्र की गति और गति से सम्बन्धित अवस्था को संक्षेप में वर्णन करेंगे।

सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की गति

जब निद्रा से नेत्र खुलते हैं तो सबसे पहली गति पलक झपकने की होती है। पलक झपकने की क्रिया नेत्र-बासिरा (निगाह) को गति देती है। बासिरा ऐसी स्थिति है जो किसी वस्तु से अवगत होने की पुष्टि करती है, इस प्रकार कि वह वस्तु उस समय उपस्थित है। अर्थात् किसी वस्तु का मानसिक रूप से बोध प्राप्त है। यह क्रिया स्मृति से सम्बंधित बात है किन्तु जब स्मृति अपनी स्मरण-शक्ति को ताज़ा करना चाहती है या कोई बाहरी अनुभव स्मृति में किसी चिन्ह को जाग्रत करता है, उस समय बासिरा जो पलक के निरंतर क्रिया से उस बोध के रूप-रेखाओं और आकृति को देखने योग्य हो चुकी है, उसके सामने होने की पुष्टि करती है। पलक झपकने की यह क्रिया उसी समय आरम्भ होती है जब सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी गति में आ चुका हो। सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की गति किसी वस्तु की ओर प्रवृत्ति उत्पन्न करने की शुरुआत करती है। सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी के सक्रिय होने पर मनुष्य की सूक्ष्म संवेदना अर्थात् निगाह प्रवृत्ति का आरम्भ करती है। नेत्र खुलते ही अवचेतन रूप से मनुष्य की यह इच्छा होती है कि वह जाने कि चारों ओर क्या वस्तुएँ विद्यमान हैं और वातावरण में किस प्रकार की आकृतियाँ पाई जाती हैं। वह उन सबकी जानकारी चाहता है और ऐसी जानकारी चाहता है जो प्रमाणित हो। जब तक मनुष्य की अपनी संवेदनाओं में कोई ऐसी इन्द्रिय न हो जो विद्यमान वस्तुओं की पुष्टि करने वाली हो, वह संतुष्ट नहीं होता। अतः सबसे पहले उसकी निगाह यह कार्य सम्पन्न करती है। आँखें बंद होने की स्थिति में निगाह का कार्य स्थगित था। पलक झपकते ही वह स्थगन समाप्त हो गया और निगाह पुनः क्रियाशील हो उठी।

नियम: संयोजन के नियमों में से एक नियम यह है कि जब तक नेत्रों के परदे गति न करें और नेत्रों के गोलकों पर आघात न डालें, नेत्र की नसें कार्य नहीं करतीं। उन नसों की संवेदनाएँ उस समय कार्य करती हैं जब उनके ऊपर नेत्रों के परदों का आघात पड़ता है। सिद्धांत यह हुआ कि बंद नेत्र जैसे ही खुलते हैं पहले दो-तीन क्षणों के लिए खुल कर स्थिर हो जाते हैं। यह स्थिरता सूक्ष्म तत्त्व-अख़फ़ा की गति को समाप्त करती है, जिसके बाद तुरंत जैसे ही सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की केंद्रता को स्पंदन होता है, झुकाव, प्रवृत्ति या इच्छा की शुरुआत हो जाती है। उदाहरणार्थ,

www.ksars.org

जाग्रत व्यक्ति अपने चारों ओर को जानना चाहता है और अपने वातावरण को समझने की ओर उन्मुख होता है। यह सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की पहली गति है। इस झुकाव या इच्छा के बाद और इच्छाएँ लगातार और एक के बाद एक उत्पन्न हो जाती हैं। जब तक सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की गति बन्द न हो यह सिलसिला जारी रहता है और बसारत की तरह शरीर-मानव की समस्त इन्द्रियाँ उत्पन्न हुई इच्छाओं की पुष्टि, प्रमाण और परिपूर्ति में लगी रहती हैं। यदि सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनी किसी ओर झुकाव करती है तो मनुष्य के सभी अनुभव अपने द्वार उसी ओर खोल देते हैं। इन्द्रियों में सबसे अधिक सूक्ष्म इन्द्रिय बसारत है जो सबसे पहले सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी के रोशनी से प्रभावित होती है। यह रोशनी मनुष्य को प्रारम्भ में कल्पना-लोक से परिचित कराती है। इस लोक में ज़ेहन दो प्रकार की छवियाँ प्रस्तुत करता है। एक प्रकार वह है जो भावात्मक छवियों पर आधारित होती है और दूसरा प्रकार चित्रात्मक छवियाँ होती हैं। भावात्मक छवियों से यह अभिप्राय नहीं है कि ज़ेहन-मानव में कोई भाव बिना आकार या बिना रूपरेखा के आ सकते हैं। भावों की प्रकृति चाहे जितनी सूक्ष्म हो आकार और रूपरेखा पर ही आधारित होती है। पहले पहल जब शक्ति-बासिरा गति करती है तो निगाह बाहरी वस्तु को भीतरी में और भीतरी वस्तुओं को बाहरी में देखती है। इस तात्पर्य की व्याख्या के लिए दर्पण का उदाहरण दिया जा सकता है।

उदाहरण: दर्पण का उदाहरण एक रूप में हम पहले बयान कर चुके हैं। दूसरी रूप यह है कि दर्पण देखने वाली निगाह को चकाचौंध कर देता है और उसकी प्रतिमा को, जो उसके सामने है, निगाह पर प्रकट कर देता है।

यह वह देखना है जो भीतर से बाहर आकर दृश्य का रूप धारण करता है। इसके विपरीत जब देखने की क्रिया बाहर से भीतर की ओर होती है तो कोई ***मुहीज*** (जो वस्तु किसी इन्द्रिय के माध्यम से ज़ेहन-मानव को अपनी उपस्थिति का अनुभव कराती है उसे मुहीज कहते हैं) निगाह के सामने आकर स्वयं निगाह को दर्पण की स्थिति प्रदान करता है और अपने रूपरेखाओं से ज़ेहन-मानव को सूचना देता है। जब इन दोनों कोणों में निगाह डालकर शोध किया जाता है तो यह बात उद्घाटित हो जाती है कि ज़ेहन-मानव हर स्थिति में दर्पण का काम करता है और यही एक साधन है जिससे आत्मा-ए-मानव अपनी छवियों को मूर्त आकार और रूप में देखती है।

यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव-मन में वस्तुओं की उपस्थिति का अनंत क्रम निरंतर स्थापित रहता है। जिस मन में वस्तुओं की उपस्थिति का यह क्रम विद्यमान है, वह मन सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी (लतीफ़े-नफ़्सी) के अनवार की रचना है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनियाँ याँ अपनी व्यापकता के अनुसार अनंत सीमाओं तक फैली हुई हैं। यदि इन अनंत रोशनियों की सीमा-निर्धारण करना हो तो समस्त ब्रह्मांड को इन असीम रोशनियों में

www.ksars.org

आबद्ध स्वीकार करना पड़ेगा। ये रोशनियाँ अस्तित्वगत तत्व की प्रत्येक वस्तु का आवरण करती हैं। इनके आवरण से बाहर किसी वहम, ख़याल या छवि का निकल पाना असंभव है। तसव्वुफ़ की भाषा में रोशनी के इस मंडल को जवैया कहा जाता है। जवैया में जो कुछ घटित हो चुका है या वर्तमान में घट रहा है अथवा भविष्य में घटेगा, वह सब मानव-स्वरूप की निगाह के सामने है। बाहरी जगत के भीतर जो कुछ विद्यमान है, जाग्रत अवस्था में निगाह उसकी पुष्टि करती है। यदि निगाह की पहुँच वहाँ तक न हो तो छवियाँ उसके अस्तित्व की ओर संकेत कर देती हैं। यदि छवियों की पकड़ भी वहाँ तक न पहुँचे तो ख़याल अर्थबोधक रूप में उसे प्रस्तुत कर देती है। यदि कोई वस्तु कल्पना की सीमाओं से भी परे है तो वहम किसी न किसी प्रकार उसकी उपस्थिति का अनुभव करा देता है। सिद्धांततः यह स्वीकार करना पड़ता है कि जवैया की रोशनियाँ याँ मानव-स्वरूप को अनंत सीमाओं तक व्यापक बना देती हैं।

साक्षात्कार के धारकों (साहिबाने-शुहूद) ने आध्यात्मिक विकास (सुलूक) की राहों में निगाह को "जुय्या" की समस्त व्यापकताओं में देखने पर विवश किया है। नबियों की शिक्षाओं में इस प्रयास का प्रथम पाठ दिन-रात के भीतर इक्कीस घंटे बीस मिनट जाग कर पूरा किया जाता है।

नबियों की शिक्षाएँ अर्थात ज्ञान-बोध की पद्धति का दूसरा पाठ अंधकार में लंबे समय तक बिना पलक झपकाए निगाह जमाना है। पहले अभ्यास को **तक़वीन** और दूसरे अभ्यास को **इस्तिग़्ना** कहा जाता है।

हज़रत ओवैस क़रनी (रज़ि.) के निवास पर जब इब्ने-हिशाम भेंट करने पहुँचे तो उन्हें बहत्तर घंटे अर्थात तीन दिन और तीन रातें प्रतीक्षा करनी पड़ी। लगातार बहत्तर घंटे नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के पश्चात हज़रत ओवैस क़रनी (रज़ि.) ने यह दुआ की:

“बार-ए-इलाही! मैं अधिक सोने से और अधिक खाने से केवल तेरी ही पनाह माँगता हूँ।”

एक सूफ़ी इसी प्रकार लगातार जागते रहने से अपने भीतर साक्षात्कार की शक्तियों को जाग्रत कर लेता है। इसका संक्षिप्त उल्लेख पहले किया जा चुका है कि मानव में ऐसी क्षमताएँ निहित हैं जो समय-समय पर अपने गुणों का प्रकटीकरण करती रहती हैं। बासिरा मानव की एक इंद्रिय है। यहाँ उसकी रचना और संरचना का वर्णन किया जाता है।

www.ksars.org

बासिरा और नफ़्स का साक्षात्कार " शुहूद-ए-नफ़्सी"

हम ऊपर कह चुके हैं कि सूक्ष्म तत्व-नफ़्सी (लतीफ़े-नफ़्सी) की रोशनियाँ याँ अस्तित्वगत तत्व के हर कण का आवरण करती हैं। इसी सूक्ष्म तत्व-नफ़्सी की एक किरण का नाम बासिरा है।

यह किरण पूरे ब्रह्मांड के मंडल में घूमती रहती है। यूँ कहना चाहिए कि समस्त ब्रह्मांड एक मंडल है और सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनी एक दीपक है। इस दीपक की लौ की नाम बासिरा है। जहाँ इस दीपक की लौ की प्रतिबिंब पड़ता है वहाँ आस-पास और निकटवर्ती क्षेत्र को दीपक की लौ देख लेती है। इस लौ में जितनी रोशनियाँ याँ हैं उनमें श्रेणीकरण और विविधता पाई जाती है–कहीं लौ की रोशनी बहुत मंद, कहीं मंद, कहीं तीव्र और कहीं अत्यंत प्रखर होता है। जिन वस्तुओं पर लौ की रोशनी बहुत मंद पड़ती है, हमारे ज़ेहन में उन वस्तुओं का केवल विचार उत्पन्न होता है। जिन वस्तुओं पर लौ की रोशनी तीव्र पड़ती है, हमारे ज़ेहन में उनका छवि (कल्पना) स्थान ग्रहण कर लेती है। और जिन वस्तुओं पर लौ की रोशनी अत्यंत पड़ती है, वहाँ तक हमारी निगाह पहुँचकर उन्हें देख लेती है। इस प्रकार सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की जवैया के चार प्रारम्भिक चरण होते हैं। इनमें से प्रत्येक चरण सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनियों के शुहूद (साक्षात्कार) का एक क़दम है। शुहूद किसी भी रोशनी तक, चाहे वह अत्यंत मंद हो या प्रखर, निगाह के पहुँच जाने का नाम है। शुहूद-ए-नफ़्सी वह क्षमता है जो अत्यंत मंद से मंद रोशनी को भी निगाह में स्थानांतरित कर देता है, ताकि उन वस्तुओं को–जो अब तक मात्र वहम थीं–ख़दोख़ाल, आकृति, रंग और रूप की हैसियत में देखा जा सके।

आत्मा की वह शक्ति जिसका नाम शुहूद है, वहम को, ख़याल को या छवि को निगाह तक लाती है और उनके सूक्ष्म अंशों को निगाह पर प्रकट कर देती है। आत्मा की यह शक्ति जब सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की सीमाओं में लौटती है और उसकी रोशनियों में नियमबद्ध होकर उद्भासित होती है तो वह वे शर्तें पूरी करती है जो जाग्रति की इंद्रियों का विशेष लक्षण हैं। और उन विशेषताओं के प्रकटीकरण का नाम शुहूद-ए-नफ़्सी है। जिन सीमाओं में शुहूद-ए-नफ़्सी कार्य करता है, उन सीमाओं का नाम **जवैया** है। इन सीमाओं की सूक्ष्मताएँ जाग्रति का उद्देश्य, जाग्रति की गतियाँ, जाग्रति का अर्थ और जाग्रति के परिणाम उत्पन्न करती हैं। यह चरण शुहूद-ए-नफ़्सी का पहला क़दम है। इस चरण में सभी क्रियाएँ केवल बासिरा या निगाह से संबंधित रहती हैं। इस शुहूद की और अधिक उन्नत अवस्थाएँ वही स्थिति उत्पन्न करती हैं जो जाग्रति के जगत में बासिरा के अतिरिक्त अन्य चार इंद्रियों–शामह (घ्राण), समाअत (श्रवण), ज़ायिका (रसना) और लामिसा (स्पर्श) में उत्पन्न होती हैं।

जब सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनियाँ याँ बार-बार की पुनरावृत्ति से प्रभावित हो जाती हैं–अर्थात बासिरा की किसी इंद्रिय का लगातार दोहराव होता है–तो क्रमशः अन्य इंद्रियाँ भी व्यवस्थित हो जाती हैं। इस व्यवस्था का आधार सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी की रोशनियों के अधिक से अधिक होने में है। यह वृद्धि उस समय सर्वाधिक होती है जब कोई मनुष्य जाग्रति में मानसिक प्रवृत्तियों को लगातार एक ही बिंदु पर केंद्रित करने का आदी हो जाए। और यह स्थिति अमल-ए-इस्तिग़्रा (शांत ध्यान का अभ्यास) को बार-बार करने से प्राप्त हो जाती है।

www.ksars.org

विश्राम का अभ्यास "अमल-ए-इस्तरखा"

नफ़्सीय सूक्ष्म केन्द्र। (लतीफ़ा-ए-नफ़्सी) की रोशनी में विश्राम का पहला चरण श्रवण का सक्रिय हो जाना है। यह चरण मनुष्य या किसी जीव के आंतरिक विचारों को ध्वनि बनाकर साधक के श्रवण तक पहुँचा देता है। अर्थबोध **तफ़हीम** की प्रक्रिया में इस अनुभव को प्रबल करने के लिए कुछ भौतिक साधनों का भी प्रयोग किया जाता है, जिनमें से एक काली मिर्च का चूर्ण है। इस चूर्ण को पानी की एक-दो बूँदों के साथ रूई के छोटे से फाहे पर लगाकर कानों के छिद्रों में रखा जाता है—मुराकबा के समय भी और विश्राम के अभ्यास के समय भी।

अमल-ए-इस्तरख का दूसरा चरण यह है कि नफ़्सीय केंद्र की रोशनियाँ घ्राण और स्पर्श को सक्रिय कर सकती हैं और साधक किसी वस्तु को, चाहे उसका अंतराल लाखों प्रकाश-वर्ष क्यों न हो, सूँघ सकता है और छू सकता है। रोशनी की गति प्रति सेकंड दो लाख मील से अधिक है। नफ़्सीय केंद्र की रोशनियों को प्रबल करने में अनेक प्रकार के चिंतन और साधनाओं का उपयोग किया जाता है। अभ्यास और विचार की कुछ उदाहरणें प्रस्तुत करना आवश्यक है।

संख्या 1: अलिफ़ अनवार जिनका उल्लेख इस समस्त विवेचन में है, ईश्वर का एक गुण है—ऐसा गुण जिसका विश्लेषण हम मानव-अस्तित्व में कर सकते हैं। यही गुण मनुष्य का अवचेतन है। सामान्य धारणा में अवचेतन को उन क्रियाओं का आधार माना जाता है जिनका ज्ञान बुद्धि को प्रत्यक्ष नहीं होता। यदि हम किसी ऐसे आधार पर गंभीर चिंतन करें जिसे हम या तो समझते नहीं या समझते हैं तो उसका अर्थ केवल “ना” (नकार) तक सीमित होता है।

हर आरंभ का नियम सुरक्षित पट्टिका के विधान में एक ही है और वह यह कि जब हम आरंभ की अर्थवत्ता पर विचार करते हैं, तो हमारे चिंतन की गहराइयों में सबसे पहले “ना” (नकार) का भाव प्रकट होता है। अर्थात् हम आरंभ के पहले चरण में केवल निषेध से परिचित होते हैं, जबकि सामान्य बुद्धि ने इस अर्थ को समझने का प्रयास नहीं किया। किन्तु सुरक्षित पट्टिका का नियम यह अपेक्षा करता है कि हम इस सत्य का पूर्ण विश्लेषण करें। इस “ना” का विश्लेषण किए बिना हम किसी भी सत्य को नहीं समझ सकते।

हर वह सत्य जिससे हम किसी प्रकार, चाहे तोहमाती रूप से या विचारात्मक ढाँचों पर या छवि-आधारित दृष्टिकोण पर परिचित हैं, एक सत्ता रखता है, चाहे वह सत्ता "ला" (निषेध) हो या प्रतिपादन। जब हम सुरक्षित पट्टिका (लोह़ महफ़ूज़) के नियम की धाराओं को समझ चुके हों तो किसी भी सत्य को, चाहे वह निषेध हो या प्रतिपादन, एक ही छवि की ज्योति में देखेंगे। जब हम प्रतिपादन को 'है' कहते हैं अर्थात उसे एक सत्ता मानते हैं, तो निषेध को 'नहीं है' कहते हैं अर्थात उसे भी ऐसी सत्ता मानते हैं जिसके होने का ज्ञान हमें प्राप्त नहीं। अर्थात हम अज्ञानता

www.ksars.org

का नाम निषेध रखते हैं और ज्ञान का नाम प्रतिपादन। जिसको हम प्रतिपादन या ज्ञान कहते हैं वह इस बिना कि हम अज्ञानता से परिचित हों, हमारी पहचान में नहीं आ सकता। दूसरे शब्दों में, पहले हमने अज्ञानता को पहचाना, फिर ज्ञान को।

www.ksars.org

ज्ञान नकार"ला" और ज्ञान स्वीकार "इल्ला"

जब हमें किसी वस्तु की अनुभूति प्राप्त हो जाती है, चाहे वह अज्ञान की ही अनुभूति क्यों न हो, वह भी अंततः अनुभूति है, और हर अनुभूति सुरक्षित पट्टिका (लौह महफ़ूज़) के नियम में एक सत्य होती है। इसीलिए बिना किसी विकल्प के हमें अज्ञान की अनुभूति का नाम भी ज्ञान ही मानना पड़ता है। सूफ़ियों की भाषा में अज्ञान की अनुभूति को ज्ञान "ला" और ज्ञान की अनुभूति को ज्ञान "इल्ला" कहा जाता है। ये दोनों अनुभूतियाँ अलिफ़-अनवार की दो तजल्लियात हैं—एक तजल्लि "ला" और दूसरी तजल्लि "इल्ला"।

जब कोई साधक अपने ज़ेहन में इन दोनों सत्यों को सुरक्षित कर लेता है तो उसके लिए साक्षात्कार के घटकों को समझना सरल हो जाता है। अतः हर साक्षात्कार इन्हीं दो घटकों पर आधारित होता है, जिनमें पहला घटक अर्थात् ज्ञान "ला" को अवचेतन कहते हैं। जब कोई आध्यात्मिक साधक अवचेतन अर्थात् ज्ञान "ला" से परिचित होना चाहता है तो उसे बाहरी जगत के सभी भ्रमों, कल्पनाओं और विचारों को भूलना पड़ता है। उसे अपनी स्वरूपता अर्थात् अपने ज़ेहन की आंतरिक गहराइयों में चिंतन करना होता है। यह चिंतन एक ऐसी गति है जिसे किसी विशेष छवि में सीमित नहीं किया जा सकता। इसे ही "चिंतन-ला" कहा जाता है। अर्थात् कुछ क्षणों के लिए या अधिक समय के लिए ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जाए जिसमें हर दृष्टिकोण अज्ञान का हो। यह "चिंतन-ला" अमल-इस्तिर्ख़ा (आराम की साधना) के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। जब साधक का ज़ेहन निरंतर इस्तिर्ख़ा की प्रक्रिया से गुजरता है, तो उसकी आंतरिक सीमाएँ हर चिंतन से रिक्त हो जाती हैं। उस समय ज़ेहन "चिंतन-ला" में पूर्ण रूप से मग्न हो जाता है और इस समाधि में अवचेतन का साक्षात्कार प्राप्त हो जाता है।

ला" के रोशनी " अलिफ़ लाम मीम" के अनवार का अंश हैं। "अलिफ़ लाम मीम" के अनवार को समझने के लिए "ला" के अनवार की पहचान और उनकी व्याख्या आवश्यक है। "ला" के अनवार, अल्लाह के ऐसे गुण हैं जो एकता का परिचय कराते हैं। अनेक लोग यह प्रश्न करते हैं कि अल्लाह से पहले क्या था? जब किसी सूफ़ी का ज़ेहन "ला" के रोशनी से प्रशिक्षित हो जाता है, तो उसके विचार से यह प्रश्न मिट जाता है क्योंकि वह यह जान लेता है कि अल्लाह की हस्ती से पहले किसी और अस्तित्व का कोई संभव होना ही नहीं। इस अवस्था में उसका ज़ेहन पूरी तरह एकत्व की अवधारणा को स्वीकार कर लेता है। यही वह प्रथम बिंदु है जहाँ से कोई साधक अल्लाह की अनुभूति की ओर पहला क़दम बढ़ाता है। उस क़दम की सीमाओं में पहले उसे अपनी स्वरूपता का अनुभव होता है। वह स्वयं को खोजने पर भी नहीं पाता, और यहीं से उसे अल्लाह की एकता का सच्चा बोध और अनुभूति का सटीक अर्थ मिल जाता है। यही वह अवस्था है जिसे फ़नाईयत कहा जाता है। इसे कुछ लोग फ़ना-ए-इलाही भी कहते हैं। जब तक किसी साधक के ज़ेहन में "ला" के रोशनी की संपूर्ण विस्तृतता उत्पन्न न हो जाए, तब तक वह "ला" के अर्थ या अनुभूति

www.ksars.org

से परिचित नहीं हो सकता। आरंभ में साधक "ला" के रोशनी को अपनी बुद्धि की गहराइयों में अनुभव करता है। यह अनुभव चेतना की सीमाओं से परे रहता है, परंतु चिंतन की उड़ान इसे छू लेती है। यही स्थिति अल्लाह की प्रेम-मग्नता को जन्म देती है और साधक को प्रशिक्षित करती है। तफ़हीम (आध्यात्मिक शिक्षा) के आरंभिक पाठ–जाग्रत रहने की साधना–इस मग्नता के प्राप्ति में बहुत सहायक होती है। जब इस अभ्यास के द्वारा सूफ़ी का ज़ेहन समाधि के चित्र अंकित कर लेता है और उसमें प्रभावशीलता उत्पन्न हो जाती है, तो "ला" का चिंतन सक्रिय हो जाता है। फिर इस्तिग़्रा के अभ्यास से यह चिंतन ऊर्जा और शक्ति प्राप्त करता है। जब यह ऊर्जा प्रबल हो जाती है, तो "ला" के अनवार अंतःनिगाह के सम्मुख प्रकट होने लगते हैं। यह अनवार उस चिंतन को और भी सूक्ष्म बना देता है, जिससे अवचेतन साक्षात्कार की नींव पड़ती है। इसी अवचेतन साक्षात्कार की अवस्था में साधक को ख़िज़्र (अलैहिस्सलाम), औलिया-ए-तक़्वीन और फ़रिश्तों का दर्शन होने लगता है और उनसे वार्ता का अवसर मिलता है। यही अवचेतन साक्षात्कार उनके संकेतों और प्रतीकों को साधक की भाषा में उसकी श्रवण शक्ति तक पहुँचाता है। धीरे-धीरे संवाद की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और देवदूतों के माध्यम से ग़ैबी व्यवस्थाओं के अनेक रहस्य उद्घाटित होने लगते हैं।

ला' के मुराकबा में नेत्रों को यथासम्भव अधिक समय तक मूँदकर रखना अनिवार्य है। उपयुक्त होगा कि कोई रोमशीतल रूमाल अथवा वस्त्र नेत्रों पर आवरणस्वरूप प्रयुक्त किया जाए। श्रेयस्कर यह है कि वस्त्र तौलिये के सदृश रोमयुक्त हो अथवा तद्रूप तौलिया ही प्रयुक्त किया जाए, जिसका रोम दीर्घ और मृदु हो, किन्तु अत्यधिक सूक्ष्म न हो। इस आवरण में विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए कि नेत्रपटल तौलिये अथवा वस्त्र के रोमों की पकड़ में आ जाएँ। यह पकड़ न अति शिथिल हो कि निष्फल सिद्ध हो और न अति दृढ़ कि नेत्रों में वेदना उत्पन्न हो। अभिप्राय यह है कि नेत्रपटल सतत् लघु दाब का अनुभव करते रहें। सम्यक् दाब से नेत्रगोलक की गति पर्याप्त रूप से निलम्बित हो जाती है। इस अवरोध की अवस्था में जब दृष्टि का प्रयोग करने का प्रयत्न किया जाता है तो नेत्र की आन्तरिक शक्तियाँ, जिन्हें आत्मिक नेत्र की दृष्टि कहा जा सकता है, सक्रिय हो उठती हैं।"

नकार (ला) का मुराकबा

मुराकबा की अवस्था में आंतरिक निगाह से काम लेना ही उद्देश्य होता है। यह उद्देश्य तभी पूरा हो सकता है जब आँख की डेलों को अधिकतम निष्क्रिय रखा जाए। आँख की डेलों के ठहराव में जितना अधिक इज़ाफ़ा होगा उतनी ही आंतरिक निगाह की गति बढ़ती जाएगी। वास्तव में यही गति आत्मा के रोशनी में देखने का झुकाव उत्पन्न करती है। आँख की डेलों में ठहराव हो जाने

www.ksars.org

से नफ़्सीय सूक्ष्म में उत्तेजना होने लगती है और यह उत्तेजना आंतरिक निगाह की गति के साथ तीव्रतर होती जाती है, जो साक्षात्कार में सहायक सिद्ध होती है।

उदाहरण: मनुष्य के शरीर की संरचना पर विचार करने से उसकी गतियों के परिणाम और नियम का अनुमान लगाया जा सकता है। जाग्रति में आँखों की डेलों पर त्वचा का आवरण सक्रिय रहता है। जब यह आवरण गति करता है तो डेलों पर हल्की चोट डालता है और आँख को एक क्षण के लिए रोशनी और दृश्यों से अलग कर देता है। आवरण की इस गति का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि बाहरी वस्तुएँ जितनी भी हैं, आँख उनसे धीरे-धीरे परिचित होती है और जिस प्रकार परिचित होती जाती है, उसी प्रकार मस्तिष्क को भी सूचना पहुँचाती रहती है। सिद्धांत यह हुआ कि भौतिक वस्तुओं का अनुभव हल्की चोट के बाद रोशनी से अलगाव चाहता है। इस दौरान वह मस्तिष्क को बता देता है कि मैंने क्या देखा है। जिन वस्तुओं को हम भौतिक आकृतियों में अनुभव करते हैं, उन वस्तुओं के अनुभव को जाग्रत करने के लिए आँखों की भौतिक डेलें और आवरण की भौतिक गतियाँ आवश्यक हैं। यदि हम उन्हीं वस्तुओं की आध्यात्मिक रूप-आकृति का अनुभव जाग्रत करना चाहें तो इस क्रिया के विपरीत व्यवस्था करनी होगी। इस स्थिति में आँख को बंद करके आँख की डेलों को निष्क्रिय और स्थिर करना आवश्यक है। भौतिक वस्तुओं का अनुभव भौतिक आँख में निगाह के माध्यम से घटित होता है और जिस निगाह के द्वारा भौतिक अनुभव घटित होता है, वही निगाह किसी वस्तु की आध्यात्मिक रूप-आकृति देखने में भी प्रयुक्त होती है। या यूँ कहें कि निगाह भौतिक गतियों और आध्यात्मिक गतियों दोनों में एक समान साधन है। देखने का कार्य हर स्थिति में निगाह ही संपन्न करती है। जब हम आँखों के भौतिक साधनों को निष्क्रिय कर देंगे और निगाह को केंद्रित रखेंगे तो सुरक्षित पट्टिका के नियम के अनुसार क़ुव्वत-ए-अल्का अपना कार्य करने पर बाध्य होगी। तब निगाह किसी वस्तु की आध्यात्मिक रूप-आकृति को अवश्य देखेगी। क्योंकि जब तक निगाह देखने का कार्य न कर ले, क़ुव्वत-ए-अल्का के कर्तव्य पूरे नहीं होते। इस प्रकार जब हम किसी आध्यात्मिक रूप-आकृति को देखना चाहें, देख सकते हैं। सूफ़ी संतजन ने इसी प्रकार के देखने के अभ्यास का नाम मुराकबा रखा है। यहाँ एक अन्य गौण नियम भी विचाराधीन आता है। जिस प्रकार सुरक्षित पट्टिका के नियम के अनुसार भौतिक और आध्यात्मिक दोनों अनुभवों में निगाह का कार्य समान है, उसी प्रकार भौतिक और आध्यात्मिक दोनों स्थितियों में संकल्प का कार्य भी समान है। जब हम आँखें खोलकर किसी वस्तु को देखना चाहते हैं तो पहली गति संकल्प करना है, अर्थात् पहले संकल्प-शक्ति में गति उत्पन्न होती है। इस गति से निगाह इस योग्य हो जाती है कि बाहरी सूचनाओं को ग्रहण कर सके। इसी प्रकार जब तक संकल्प-शक्ति में गति न होगी, आध्यात्मिक रूप-आकृति की सूचनाएँ प्राप्त नहीं हो सकतीं। यदि कोई व्यक्ति आदतन निगाह को आध्यात्मिक रूप-आकृति देखने में प्रयुक्त करना चाहे तो उसे प्रारंभ में संकल्प की गति को सामान्य बनाना होगा। अर्थात् जब मुराकबा करने वाला आँखें बंद करता है तो सबसे पहले संकल्प में अवरोध उत्पन्न होता है। इस अवरोध को गति में परिवर्तित करने की आदत डालना आवश्यक है। यह बात निरंतर अभ्यास

www.ksars.org

से प्राप्त हो सकती है। जब आँख बंद करने के बावजूद संकल्प में क्षीणता उत्पन्न न हो और संकल्प की गति मध्यम शक्ति से चलती रहे तो निगाह को आध्यात्मिक रूप-आकृति देखने में कोई कठिनाई नहीं होगी और गुप्त गतियों की सूचनाओं का क्रम जारी रहेगा। जब हर प्रकार का अभ्यास पूर्ण हो जाएगा तो उसे आँख खोलकर देखने में या आँख बंद करके देखने में कोई अंतर अनुभव नहीं होगा।

सुरक्षित पट्टिका के नियम के अनुसार प्रेरणा-शक्ति जिस प्रकार भौतिक प्रभाव उत्पन्न करने की बाध्य है, उसी प्रकार आध्यात्मिक आकृतियों की रचना करने की भी उत्तरदायी है। जितना कार्य किसी व्यक्ति की कुव्वत-ए-अल्का भौतिक मूल्यों में करती है, उतना ही कार्य वह आध्यात्मिक मूल्यों में भी करती है। दो व्यक्तियों के कार्य की मात्रा का अंतर उनकी कुव्वत-ए-अल्का की मात्रा के अंतर की वजह से होता है।

क़ुवत-ए-इल्क़ा

कुव्वत-ए-अल्का की तफ़सील यह है कि सूफ़ी जिसे हुइयत कहते हैं उस को विस्तारपूर्वक ज़ेहन में बिठा लेना चाहिए। वास्तव में हुइयत "ला" की तजल्लियातका केंद्र है। इस केंद्र का सिद्धि क़ुवत-ए-इल्क़ा की आधार क़ायम करता है। इसकी व्याख्या यह है कि स्वरूप की तजल्लियात जब अवतरण कर के अनिवार्य की छाप में तब्दील होती हैं तो अस्तित्वगत तत्वों के बारे में ईश्वर-ज्ञान का बोध सृजित हो जाता है। यह प्रथम अवतरण है। इस बात का ज़िक्र हम पहले ज्ञान-कलम " इल्मे-क़लम" के नाम से भी कर चुके हैं। ये तजल्लियात ऐसे रहस्य हैं जो ईश्वर की इच्छा का पूरा परिवेष्टन कर लेती हैं। जब ईश्वर की इच्छा एक बार और अवतरण करती है तो यही रहस्य सुरक्षित पट्टिका के संक्षेप का रूप धारण कर लेते हैं। इन्हीं रूपों का नाम मत तक़दीर-ए-मुबरम रखता है। वास्तव में यह बोध की संज्ञाएँ हैं। बोध से तात्पर्य वह अर्थ-प्रवृत्ति है जो ईश्वर के आदेश की नींव बनती है। यह बोध संक्षेप की प्रकृति है। इसमें कोई विस्तार नहीं पाया जाता। यहाँ यह समझना आवश्यक है कि अब अनादिकाल" तक चक्र-ए-अज़लिया" का प्रवर्तन विद्यमान है। दूसरे शब्दों में जहाँ तक वास्तविक उपकार या क्रियाशीलता की शाखाएँ यानी आविष्कार और ईजाद का सिलसिला जारी है, चक्र-ए-अज़लिया ही गिना जाएगा। क़ियामत तक और क़ियामत के बाद अनंत काल तक जो-जो नए कार्य सामने आते रहेंगे, चाहे उसमें स्वर्ग और नर्क के आदिकाल, मध्यकाल और अंतिम काल ही क्यों न हों, वे सब अनादिकाल "चक्र-ए-अज़लिया" की सीमाओं में ही माने जाएँगे। अनंत काल तक संभावनाओं का हर प्रदर्शन अनादि ही के परिवेष्टन में बँधा हुआ है। यही कारण है कि जो भी अवतरण ज्ञान-कलम के रहस्यों का सामने आ रहा है या सामने आएगा वह उसी संक्षेप का विस्तार होगा जिसे सुरक्षित पट्टिका की

www.ksars.org

कुल प्रविधियाँ कहा जाता है। क़ुरआन में ईश्वर ने फ़रमाया है कि मैं सुरक्षित पट्टिका का मालिक हूँ जिस आदेश को चाहूँ क़ायम रखूँ और जिस आदेश को चाहूँ रद्द कर दूँ।

لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ oيَمْحُواللهُ مَا يَشَآءُ وَ يُثْبِتُ وَعِنْدَهٗٓ اُمُّ الْكِتٰبِo

(सूरा-ए-रअद, आयत 38-39)

अनुवाद :हर वचन लिखा हुआ है। मिटाता है ईश्वर जो चाहे और रखता है, और उसके पास है मूल पुस्तक।

यह आदेश उसी सारांश के बारे में है जिसका अर्थ यह है कि ईश्वर जब चाहे और जिस प्रकार चाहे रहस्यों के अर्थ और रुझान बदल सकते हैं। यहाँ ज़रा व्याख्या और विस्तार के साथ उक्त आयत पर विचार करने से अनादि चक्र की व्यापकताओं का अनुमान हो सकता है। यदि ईश्वर अपनी किसी मस्लहत को सृजनात्मक आविष्कारों और इजादों के सारांश में बदलना पसंद करते हैं तो यह ईश्वर के नियम के विरुद्ध नहीं है। दूसरे अवरोहण के बाद सारांश की तफ़सील आदेशों के पूरे ख़दुख़ाल प्रस्तुत करती है। यहाँ तक कालिकता और कालिकता का कोई दख़ल नहीं होता। लेकिन **"जु"** यानी तीसरे अवरोहण के बाद जब कोई शै मिश्रण लोक की सीमाओं में प्रवेश करके पंचभौतिकता के वस्त्र को स्वीकार करती है, उस समय कालिकता की बुनियादें पड़ती हैं। यही इल्क़ा की अंतिम मंज़िल है। इस मंज़िल में जो अवस्थाएँ और सूरतें घटित होती हैं उन्हें प्रत्यक्ष प्रभाव कहते हैं। इसकी मिसाल सिनेमा से दी जा सकती है। जब ऑपरेटर मशीन को गति देता है तो फ़िल्मी रील का प्रतिबिंब कई लेंसों (LENSES) के ज़रिये अंतरिक्ष से गुज़रकर पर्दे पर पड़ता है। यद्यपि अंतरिक्ष में हर वह तस्वीर जो पर्दे पर दिख रही है अपने सभी ख़दुख़ाल और पूरी हरकतों के साथ मौजूद होती है लेकिन आँख उसे देख नहीं सकती। अधिकतम वह किरण नज़र आती है जिसमें तस्वीरें मौजूद होती हैं। जब ये तस्वीरें पर्दे से टकराती हैं तब उनका प्रत्यक्ष प्रभाव पूरी तरह देखने वाली आँख की परिधि में समा जाता है। इस प्रदर्शन का नाम ही प्रत्यक्ष प्रभाव है। इसी की सीमाओं में हर कालिकता और हर कालिकता की सृष्टि होती है। जब तक कोई शै केवल ईश्वर के ज्ञान की सीमाओं में थी उस समय तक उसने अनिवार्य का लेंस पार नहीं किया था यानी उसमें आदेश के आकृति मौजूद नहीं थे। लेकिन अनिवार्य के लेंस से गुज़रने के बाद जब उस शै के अस्तित्व ने कुल्लियात या सुरक्षित पट्टिका की सीमाओं में क़दम रखा, उस समय आदेश के आकृति व्यवस्थित हो गए। फिर इस लेंस से गुज़रने के बाद **"जु"** में, जिसे प्रतिरूप लोक भी कहते हैं, तम्सीलात यानी छवियाँ जो आदेश की सामग्री और अर्थ की व्याख्या करती हैं, अस्तित्व में आ गईं। अब ये छवियाँ "जु" के लेंस से गुज़रकर एक पूर्ण तम्सील का

www.ksars.org

रूप ले लेती हैं। इस लोक को मिश्रण लोक या प्रतिरूप लोक भी कहते हैं। लेकिन अभी पंचभौतिकता उनमें सम्मिलित नहीं हुई है यानी इन छवियों ने शरीर या भौतिक देह का वस्त्र नहीं पहना। जब तक इन छवियों का पंचभौतिकता से संबंध न हो, ये अनुभूति से परिचित नहीं होतीं।

इल्क़ा की शुरुआत पहले लेंस के पारगमन चरण से होती है। जब तक अस्तित्वगत तत्व की सभी क्रियाशीलताएँ ईश्वर के ज्ञान में रहीं, वे इल्क़ा पहली मंज़िल में थीं और जब सुरक्षित पट्टिका के लेंस से गुज़रीं तो ईश्वरीय आदेशों में आकृति और प्रभाव उत्पन्न हो गए। यह इल्क़ा की दूसरी मंज़िल है। जब आदेश और अर्थ की क्रियाशीलताएँ जु के लेंस से गुज़रकर रूप और आकार धारण कर लेती हैं तो यह इल्क़ा की तीसरी मंज़िल होती है। इस मंज़िल से पार होने के बाद सभी छवियाँ नासूती लोक के चरण में प्रवेश कर जाती हैं। यहाँ उन्हें स्थानिकता, कालिकता और अनुभूति से सामना होता है। यह इल्क़ा की चौथी मंज़िल है।

साधक आकर्षित "सालिक मज़ज़ूब", आकर्षित साधक "मज़ज़ूब सालिक"

"अल्का" अवतरण दो इल्म पर मुश्तमिल है। तसव्वुफ़ में एक का नाम प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म हज़ूरी) और दूसरे का नाम अर्जित ज्ञान (इल्म हुसूली) है।

जब कोई अम्र आलम-ए-तहक़ीक़ यानी अनिवार्य परमात्मा वह, कुलियात या जु के चरणों **"में"** होता है उस वक़्त उसका नाम प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म हज़ूरी) है। प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म हज़ूरी) अनिवार्य कर्तव्यों का निकटत्व (क़ुर्ब फ़राइज़) और ऐच्छिक उपासना का निकटत्व (क़ुर्ब नवाफ़िल) दोनों सूरतों में साधक या आकर्षित की मंज़िल है। अक्सर अहल-ए-तसव्वुफ़ को साधक और आकर्षित के मआनी में धोका होता है। साधक किसी ऐसे आदमी को समझा जाता है जो प्रकट कर्म या प्रकट वस्त्र से अलंकृत हो। यह ग़लत है। किसी मनुष्य का अनिवार्य कृत्य और अनुशंसित कृत्य अदा कर लेना जिनमें फ़राइज़ "अनिवार्य कर्तव्य"और "अनुकरणीय आचरण" भी शामिल हैं, साधक होने के लिये बिल्कुल ना-काफ़ी है। साहिब-ए-आध्यात्मिक विकास (साहिब सुलूक) होने के लिये आंतरिक कैफ़ियात को स्वभाविक प्रवृत्ति के रूप में मौजूद होना या अर्जन के रूप में सूक्ष्म तत्त्व का रंग मोहब्बत और क्रियात्मक एकत्व का रंग क़बूल करना शर्त-ए-अव्वल है। अगर किसी मनुष्य के सूक्ष्म तत्त्व में गति नहीं है और वह क्रियात्मक एकत्व से रंगीन नहीं हुए हैं तो उसका नाम साधक नहीं रखा जा सकता। कोई आदमी यह सवाल कर सकता है कि यह रंगीनी और स्थिति किसी के अपने अधिकार की बात नहीं है। हम भी यही कहते हैं कि यह चीज़ ऐच्छिक नहीं है। इसलिए जो लोग आध्यात्मिक विकास (सुलूक) को ऐच्छिक चीज़ समझते हैं वे ग़लती

www.ksars.org

पर हैं। अलबत्ता आध्यात्मिक विकास (सुलूक) की मार्गों में प्रयास एक ऐच्छिक कार्य है। प्रारम्भिक निगाह में अपनी कोशिश का नाम आध्यात्मिक विकास (सुलूक) रखा जाता है। लोग उस आदमी को साधक कहते हैं जो इस मार्ग में प्रयत्नशील हो। अगर किसी के सूक्ष्म केंद्र रंगीन नहीं हुए हैं तो उसका नाम साधक रखना केवल संकेत है। लोग मंज़िल-प्राप्त को गुरु और अधिकारी-पुरुष कहते हैं। किन्तु मंज़िल-प्राप्त वही है जिसके सूक्ष्म केंद्र रंगीन हो चुके हैं, और जिसके सूक्ष्म केंद्र रंगीन हो चुके हैं वह केवल साधक कहलाने का अधिकारी है। ऐसा मनुष्य गुरु या अधिकारी-पुरुष कहलाने का अधिकार कदापि नहीं रखता। गुरु या अधिकारी-पुरुष उस मनुष्य को कहते हैं जो कर्मों की एकता (तौहीद-अफ़आल) से प्रगति करके गुणों की एकता (तौहीद-सिफ़ाती) की मंज़िल तक पहुँच चुका हो।

शब्द आकर्षित (मजज़ूब) के प्रयोग में और उसकी अर्थवत्ता व समझ में भी इसी प्रकार की गंभीर ग़लतियाँ हो जाती हैं। लोग पागल और व्याकुल को आकर्षित कहते हैं। दूसरे शब्दों में किसी पागल और दीवाना का नाम ही "ग़ैर-मुकल्लफ़" कर्तव्य-निर्बंधित और आकर्षित है। यह ऐसी ग़लती है जिसका सुधार अल्का के उल्लेख में कर देना अत्यन्त आवश्यक है। सामान्य रूप से लोग आकर्षित साधक या साधक आकर्षित के बारे में बहस और विमर्श करते हैं। कुछ लोगों का विचार है कि आकर्षित साधक से श्रेष्ठ और उच्च है लेकिन वे यह निर्णय नहीं कर सकते कि आकर्षित साधक कौन है और साधक आकर्षित कौन है। यहाँ इसका स्पष्टीकरण भी आवश्यक है।

आकर्षित केवल उस मनुष्य को कहते हैं जिसे ईश्वर ने अपनी ओर खींच लिया हो। आकर्षित को आकर्षण की विशेषता *अनिवार्य कर्तव्यों का निकटत्व* या *अस्तित्व का निकटत्व* के माध्यम से प्राप्त होती है। इस विशेषता की प्राप्ति में *ऐच्छिक उपासना का निकटत्व* को हरगिज़ कोई दख़ल नहीं।

आकर्षण (जज़्ब) उस मनुष्य के स्वरूप में घटित होता है जो *कर्मों की एकता (तौहीद-अफ़आली)* अर्थात् सूक्ष्म केंद्रों की रंगीनी से उछल कर अचानक *स्वरूप की एकता (तौहीद-ए-ज़ाती)* की सीमा में प्रवेश कर जाए। उसे *गुणों की एकता (तौहीद-सिफ़ाती)* की मंज़िलें तय करने और *गुणों की एकता* से परिचित होने का अवसर नहीं मिलता।

जिस मनुष्य की आत्मा में स्वभावतः वियोजन घटित होता है उसे सूक्ष्म केंद्रों को रंगीन करने के प्रयास में कोई विशेष कार्य नहीं करना पड़ता। अर्थात् किसी विशेष घटना या हादसे के अन्तर्गत, जो केवल चेतना की विचारधारा की सीमाओं में प्रकट हुआ है, उसके आंतरिक में *कर्मों की एकता*

www.ksars.org

(तौहीद-अफ़आली) उद्घाटित हो जाती है। वह प्रकट और आंतरिक रूप से किसी चिहन के माध्यम से या कोई निशानी देखकर यह समझ जाता है कि परदे के पीछे अदृश्य रोशनी में एक सत्यता मौजूद है और उस सत्यता के संकेत पर लोक-गुप्त की दुनिया कार्य कर रही है तथा उस लोक-गुप्त के कर्म, गति और ठहराव की छाया यह ब्रह्मांड है। क़ुरआन पाक में जहाँ इसका उल्लेख है कि ईश्वर उसे उचक लेता है, वही इसी ओर संकेत है।

परम सत्ता से मानव-जाति या जिन्नात-जाति का संबंध दो प्रकार पर है। एक प्रकार *आकर्षण (जज़्ब)* कहलाता है और दूसरा प्रकार *ज्ञान*। सहाबा-ए-किराम के दौर में और आरंभिक युगों में जिन लोगों को *मरतबा-ए-इहसान* प्राप्त था, उनके सूक्ष्म केंद्र *हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम* की मोहब्बत से रंगीन थे। उन्हें इन दोनों प्रकार के संबंध का अधिक ज्ञान नहीं था। उनकी ध्यानशीलता अधिकतर *हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम* के सम्बन्ध में विचारधारा में ही व्यय होती थी। यही कारण था कि उन्होंने आध्यात्मिक मूल्यों का अधिक परीक्षण नहीं किया, क्योंकि उनकी आत्मिक प्यास *हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम* के कथनों पर ध्यान केन्द्रित करने से ही शान्त हो जाती थी। उन्हें हदीसों में अत्यधिक अनुराग था। इस गहनता का एक बड़ा कारण यह भी था कि उन लोगों के ज़ेहन में हदीसों की शुद्ध साहित्यिकता, ठीक-ठीक आशय और सम्पूर्ण गहराइयाँ मौजूद थीं। हदीसें पढ़ने के बाद और हदीसें सुनने के बाद वे हदीसों के *अनवार* से पूर्ण लाभ उठाते थे। इस प्रकार उन्हें शब्दों के नूरी तमसुल की खोज की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। वे शब्दों के नूरी तमसुल से, बिना किसी शिक्षा और बिना किसी प्रयास के, परिचित थे।

जब मुझे (हज़ूर क़लंदर बाबा औलिया) उच्च लोक की ओर रुझान के अवसर प्राप्त हुए तो मैंने यह देखा कि सहचर संतों की आत्माओं में उनके *अयन* पवित्र क़ुरआन के अनवार और उपदेशों के अनवार, अर्थात् पवित्रता का नूर और नबूवत का नूर, से परिपूर्ण हैं। इससे मैंने यह अनुमान लगाया कि उन्हें सूक्ष्म केंद्रों को रंगीन करने में प्रयास नहीं करना पड़ता था। उस युग में आध्यात्मिक मूल्यों का उल्लेख और विचार का न पाया जाना सम्भवतः इसी कारण से है। किन्तु उत्तरवर्ती काल में लोगों के हृदय से पवित्र क़ुरआन के अनवार और उपदेशों के अनवार लुप्त होने लगा। उस समय लोगों ने इन तत्वों की प्यास अनुभव कर ईश्वर की ओर पहुँचने के साधन खोजे। उसी क्रम में इस प्रकार नज्मुद्दीन और उनके शिष्य, जैसे शहाबुद्दीन सुहरवर्दी तथा मोइनुद्दीन चिश्ती, ऐसे संत थे जिन्होंने *ऐच्छिक उपासना का निकटत्व* के माध्यम से ईश्वर की ओर पहुँचने की धाराओं में असंख्य नवाचार किए और विभिन्न प्रकार के स्मरण तथा साधनाओं की शुरुआत की। ये तत्व हसन बसरी के युग में नहीं मिलते। इन लोगों ने ईश्वर से वह संबंध खोजा जिसे *ज्ञानात्मक संबंध* कहा जा सकता है, अर्थात् ईश्वर के गुणों को जानने में उन्होंने

www.ksars.org

गहनता प्राप्त की और फिर स्वरूप को समझने के मूल्य स्थापित किए। इसी संबंध का नाम सूफ़ी जन *निस्बत इल्मिया* कहते हैं क्योंकि यह संबंध अथवा निस्बत मुख्यतः जानने पर आधारित है। अर्थात् जब कोई साधक ईश्वर के गुणों को समझने के लिये विचार का आयोजन करता है, उस समय वह *मआरिफ़त* की उन राहों पर होता है जो स्मरण और विचार से परिपूर्ण होती हैं। इस स्थिति में कहा जा सकता है कि किसी साधक को *निस्बत-ए-इल्मिया* प्राप्त है। यह मार्ग या निस्बत, *आकर्षण* के मार्ग या निस्बत से सर्वथा भिन्न है। इसी कारण इस मार्ग को *ऐच्छिक उपासना का निकटत्व* कहा जाता है।

बहाउद्दीन नक्शबन्दी और ग़ौस-ए-आज़म के अतिरिक्त उस युग के कम लोग *आकर्षण* से परिचित हुए।

www.ksars.org

संबंध का विवरण "निस्बत का वर्णन"

निस्बत-ए-ओवैसिया

निस्बत-ए-ओवैसिया का उद्भेदन सबसे पहले *हज़रत ग़ौस-ए-आज़म* के मार्ग में हुआ। इसकी तुलना ऐसे जलस्रोत से की जा सकती है जो किसी पर्वत के भीतर या किसी मैदान में अचानक फूट पड़े और कुछ दूरी तक बहकर फिर भूमि में समा जाए और गुप्त रूप से भूमि के भीतर बहते-बहते किसी अन्य स्थान पर फव्वारे की भाँति प्रकट हो। *इस तर्क या तुलना के अनुसार* हज़रत ग़ौस-ए-आज़म के बाद यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा। लोग इसी संबंध को निस्बत-ए-ओवैसिया कहते हैं। इस निस्बत का प्रभाव गुप्त रूप से या तो *उच्च देवदूत* के माध्यम से, अथवा नबियों की आत्माओं की ज्ञान-प्राप्ति से, या फिर *अनिवार्य कर्तव्यों का निकटत्व* प्राप्त प्राचीन संतों की आत्माओं के द्वारा होता है।

निस्बत-ए-सुकैना

यह निस्बत पहले *आकर्षण,* फिर *इश्क़* और फिर *सुकैना* की निस्बतों के समुच्चय पर आधारित है। *सुकैना* वह निस्बत है जो प्रायः सहचर संतों को प्राप्त थी। यह निस्बत *हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम* की इश्क़ के माध्यम से *नबूवत के रोशनी* के अर्जन से उत्पन्न होती है।

निस्बत-ए-इश्क़

जब मानव-हृदय में ईश्वर की अनुकम्पाओं और उपकारों की भीड़ होती है और मनुष्य ईश्वर के वरदानों पर विचार करता है, उस समय *ईश्वर-अनवार* के तमसुल बार-बार मानव-स्वभाव में प्रवाहित होते हैं। यहीं से इस संबंध या निस्बत-ए-इश्क़ की नींव पड़ती है। क्रमशः इस निस्बत के आंतरिक तल्लीनता की अवस्थाएँ प्रकट होने लगती हैं। फिर वे सूक्ष्म केंद्र या रोशनी के मंडल, जो आत्मा को घेरे रहते हैं, उनमें रोशनी का रंग चढ़ने लगता है। अर्थात् उन मंडलों में ईश्वरीय अनवार क्रमशः जुड़ते रहते हैं। इस प्रकार *निस्बत-ए-इश्क़* की जड़ें दृढ़ हो जाती हैं।

निस्बत-ए-जज़्ब

इस निस्बत का तृतीय अंग *निस्बत-ए-जज़्ब* है। यह वही निस्बत है जिसे उत्तरवर्ती संतों के बाद सबसे पहले *बहाउलहक़ वद्दीन नक्शबन्दी* ने *निशानहीन का निशान* नाम दिया। इसी को

www.ksars.org

नक्शबन्दी परंपरा *स्मृति* कहती है। जब ज्ञानी का ज़ेहन उस दिशा में रुझान करता है जहाँ *अनादि* के अनवार छाए हुए हैं और *अनादि* से पहले की आकृतियाँ विद्यमान हैं, तो वही आकृतियाँ ज्ञानी के हृदय में बार-बार घूमती हैं और केवल *अस्तित्व की एकता (वहदत)* ज्ञानी के विचार को घेरे रहती है। और जब हर ओर *हुईयत* का आधिपत्य हो जाता है, तो यहीं से इस निस्बत की किरणें आत्मा पर अवतरण करती हैं। जब ज्ञानी उनमें घिर जाता है और कहीं निकलने का मार्ग नहीं पाता, तो बुद्धि और चेतना से विरक्त होकर स्वयं को इस निस्बत के रोशनी पर छोड़ देता है।

अवतरण-क्रम " तनज़ुलात"

अब हम *अवतरणों* का उल्लेख करते हैं ताकि इस निस्बत की वास्तविकता स्पष्ट हो जाए। प्रत्यक्ष (जली) *अवतरण* तीन हैं। प्रत्येक प्रत्यक्ष *अवतरण* के साथ एक अप्रत्यक्ष (ख़फ़ी) *अवतरण* भी है। हर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष *अवतरण* के साथ एक *वरूद* या एक *साक्षात्कार* का संबंध है। पहला प्रत्यक्ष *अवतरण* रहस्य(सिर)-ए-अकबर है, दूसरा प्रत्यक्ष *अवतरण रूह-ए-अकबर* है और तीसरा प्रत्यक्ष *अवतरण शख़्स-ए-अकबर* है। *शख़्स-ए-अकबर* उस प्रकट का नाम है जिसे *ब्रह्मांड* कहते हैं। यही ब्रह्मांड भौतिक आँख देखती और पहचानती है। ब्रह्मांड की संरचना में प्रथम आधार वह *रोशनी* है जिसे पवित्र ग्रंथ ने *जल (पानी)* के नाम से उल्लेख किया है।

आधुनिक विज्ञान में इसे *गैसों* के नाम से व्यक्त किया जाता है। इन्हीं सैकड़ों गैसों के मेल से प्रारम्भ में जो संयोजन बना, उसे *पारा* या पारे के विविध रूपों में एक प्रकट के रूप में देखा जाता है। इन्हीं संयोजनों की अनेक विधियों से भौतिक पिंडों की संरचना होती है और इन्हीं भौतिक पिंडों को *त्रिविध उत्पत्ति*—पशु, वनस्पति और जड़—कहा जाता है। सूफ़ी भाषा में इन इन गैसों में से प्रत्येक गैस के प्रारम्भिक रूप का नाम *नस्मा* है। दूसरे शब्दों में, *नस्मा* गति की उन मौलिक किरणों के समूह का नाम है जो *अस्तित्व* की शुरुआत करती हैं।

गति यहाँ उन रेखाओं को कहा गया है जो अंतरिक्ष में इस प्रकार फैली हुई हैं कि न तो वे एक-दूसरे से दूरी पर हैं और न ही एक-दूसरे में विलीन हैं। यही रेखाएँ भौतिक पिंडों में आपसी संबंध का माध्यम हैं। इन रेखाओं को केवल *साक्षात्कार* की वह निगाह देख सकती है जिसे आत्मा की निगाह कहा जाता है। कोई भी भौतिक दूरबीन इन्हें किसी रूप में नहीं देख सकती, किन्तु उनके प्रभावों को भौतिकता प्रकट के रूप में अनुभव कर सकती है। इन्हीं रेखाओं को ज्ञानी जनों की खोज में *तमसुल* की अभिव्यक्ति कहा जाता है।

www.ksars.org

काल और स्थान का सिद्धांत

जब विद्यालयों में छात्रों को आरेखन सिखाया जाता है तो एक काग़ज़ उपयोग होता है जिसे *ग्राफ़* कहते हैं। इस काग़ज़ में छोटे-छोटे चौकोर खाने बने होते हैं। इन्हीं चौकोर खानों को आधार मानकर आरेखन सिखाने वाला शिक्षक वस्तुओं, जीव-जंतुओं और मनुष्यों की आकृतियाँ बनाना सिखाता है। शिक्षक बताता है कि इन छोटे खानों की इतनी संख्या से सिर, इतनी संख्या से नाक, इतनी संख्या से मुख और इतनी संख्या से गला बनता है। इन खानों के माप से वे विभिन्न अंगों की संरचना का अनुपात निर्धारित करते हैं, जिससे छात्रों को आकृति बनाने में सुविधा होती है। इस प्रकार यह ग्राफ़ चित्रों की मूल है। दूसरे शब्दों में, इस ग्राफ़ को व्यवस्थित करने से ही आकृतियाँ प्रकट हो जाती हैं। ठीक इसी प्रकार *नस्मा* की ये रेखाएँ सभी भौतिक पिंडों की संरचना में मूल का कार्य करती हैं। इन्हीं रेखाओं की गणना और संयोजन *त्रिविध उत्पत्ति* (पशु, वनस्पति, जड़) की स्थिति और रेखांकन निर्मित करते हैं। *सुरक्षित पट्टिका* के नियम के अनुसार वास्तव में ये रेखाएँ या निरवर्ण किरणें छोटी-बड़ी प्रेरणाएँ हैं। इनका जितना अधिक समेकन होता जाता है उतनी ही और उसी प्रकार की ठोस संवेदनाएँ संयोजित होती जाती हैं। इन्हीं के समेकन से रंग और आकर्षण की अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं। और इन्हीं रेखाओं की गति और परिक्रमाएँ *विराम* उत्पन्न करती हैं। एक ओर इन रेखाओं का समेकन *कालिकता* निर्मित करता है और दूसरी ओर इन रेखाओं की परिक्रमाएँ *कालिकता* की रचना करती हैं।

सूफ़ियों की परिभाषा में रेखाओं के इस नियम को नस्मा का आकर्षण कहा जाता है। अर्थात् नस्मा अपनी आवश्यकता और अपने प्राकृतिक आग्रहों के अनुसार *संभावित* का रूप ग्रहण कर लेता है। सूफ़ियों में *संभावित* उस वस्तु को कहते हैं जिसे अंतिम अवस्था या पूर्णता के बाद भौतिक नेत्र देख सकते हैं। यह भौतिक स्थिति, जो त्रिविध उत्पत्ति (पशु, वनस्पति, जड़) की किसी जाति में दिखाई देती है, *विशिष्टता* कहलाती है। ये रेखाएँ विशिष्टता से पूर्व जिन मौलिक स्थितियों की रचना करती हैं, उन तियों का नाम सूफ़ियों की भाषा में *सत्यस्थिति* है। इसी स्थिति को *तमसुल* भी कहा जाता है। यह स्थिति वास्तव में *एकात्मक* है। *सुरक्षित पट्टिका* के नियम में नस्मा की वह समानता जिसे भौतिक नेत्र नहीं देख सकते, *एकात्मक स्थिति*, *सत्यस्थिति* या *तमसुल* कहलाती है। और नस्मा का वह रूप जिसे भौतिक नेत्र देख सकते हैं, *संयुक्त स्थिति*, *विशिष्टता* या *शरीर* कहलाता है। जब *एकात्मक स्थिति* सामूहिकता का रूप लेकर अपनी मंज़िल तक पहुँच जाती है तो वह *संयुक्त स्थिति* बन जाती है। अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था *एकात्मक*

www.ksars.org

स्थिति है और अंतिम अवस्था *संयुक्त स्थिति* है। प्रारम्भिक अवस्था को आत्मा की निगाह देखती है और अंतिम अवस्था को शरीर की निगाह देखती है।

नस्मा वह गुप्त रोशनी है जिसे नूर की किरणों में देखा जा सकता है और नूर वह गुप्त रोशनी है जो स्वयं भी दिखाई देता है और अन्य गुप्त रोशनियों को भी दिखाता है।

www.ksars.org

पंचेन्द्रिय (हव़ासे–ख़म्सा)

नस्मा = *दृश्य (मशहूद) + नूर (नूर)* और नूर (नूर) = *साक्षी (शाहिद) + दृश्य (मशहूद)*

निगाह की शक्ति

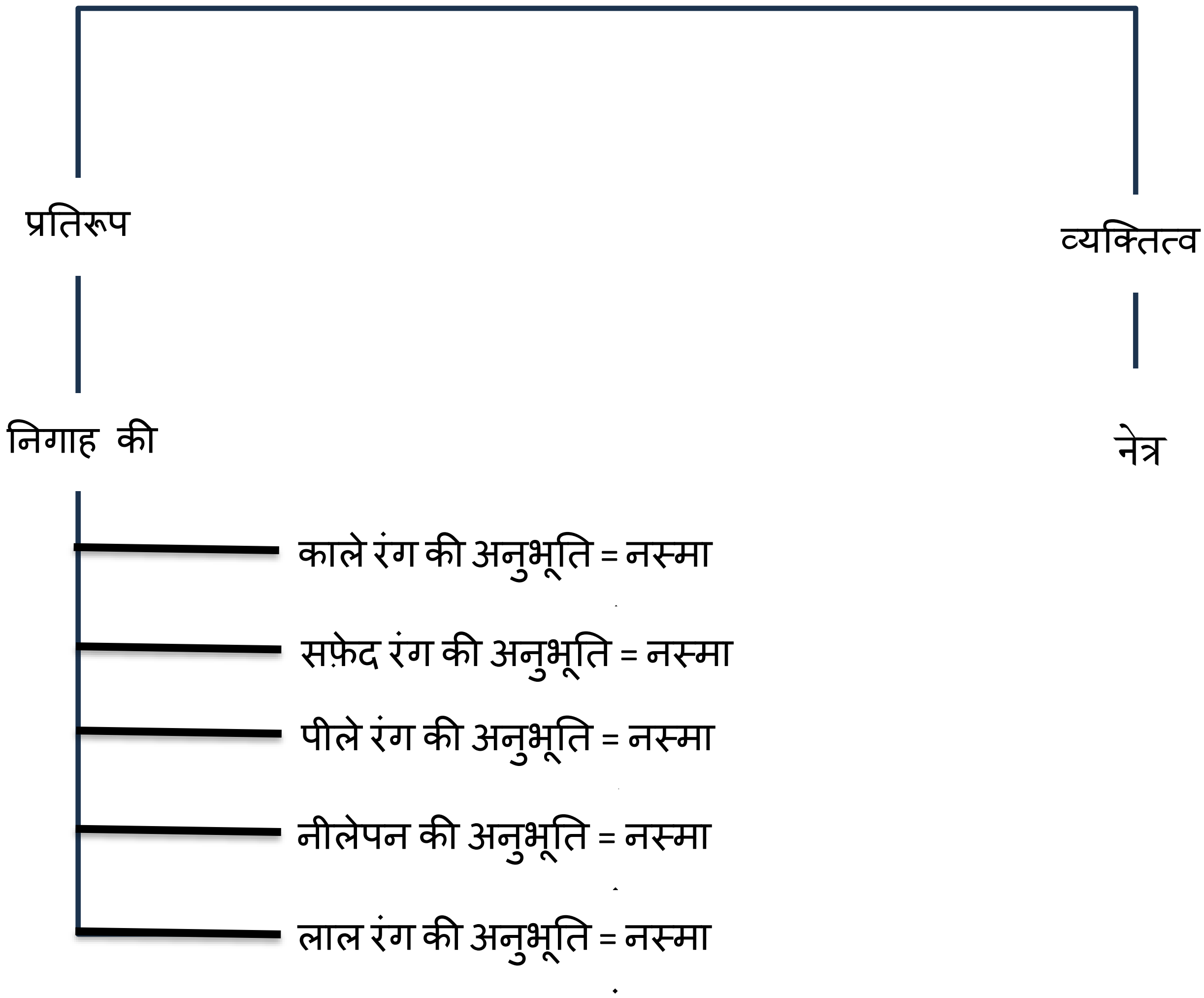

www.ksars.org

वाणी की शक्ति

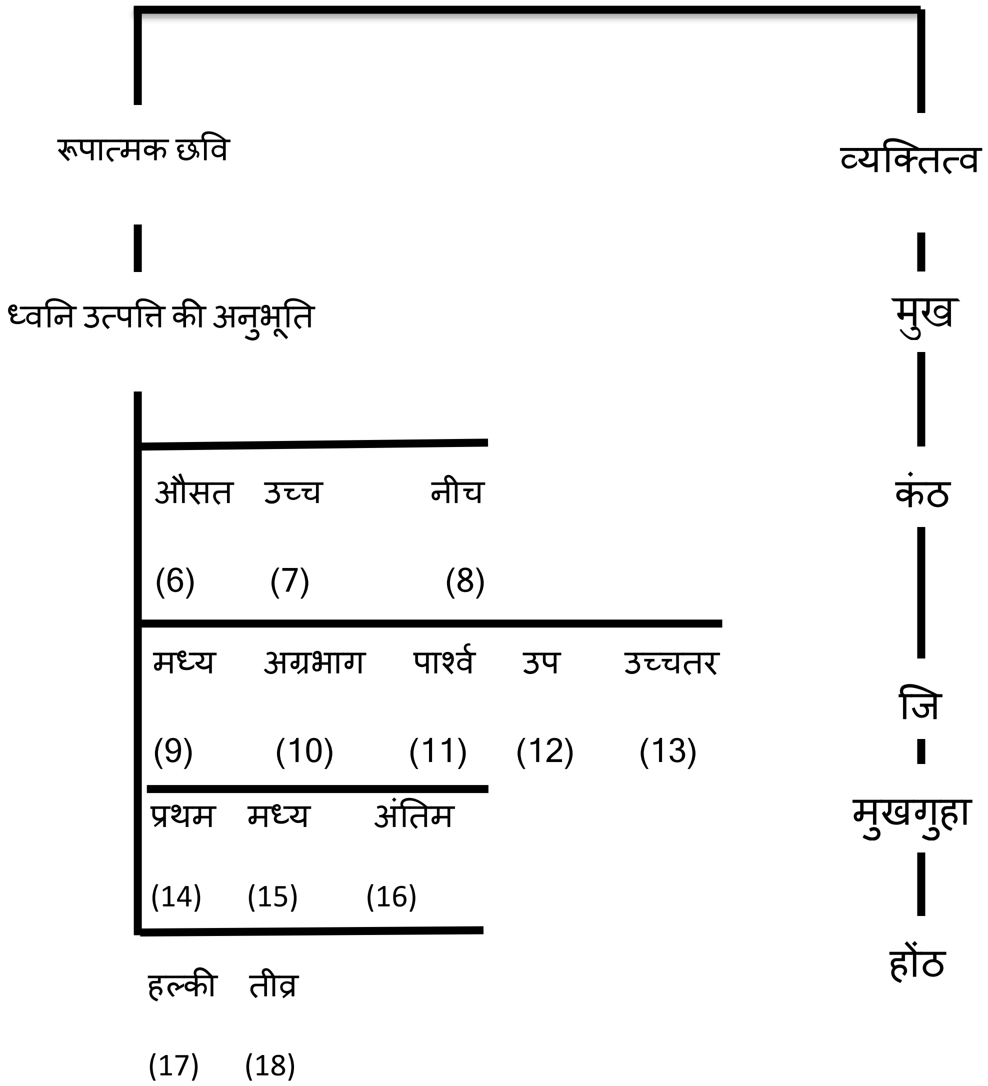

www.ksars.org

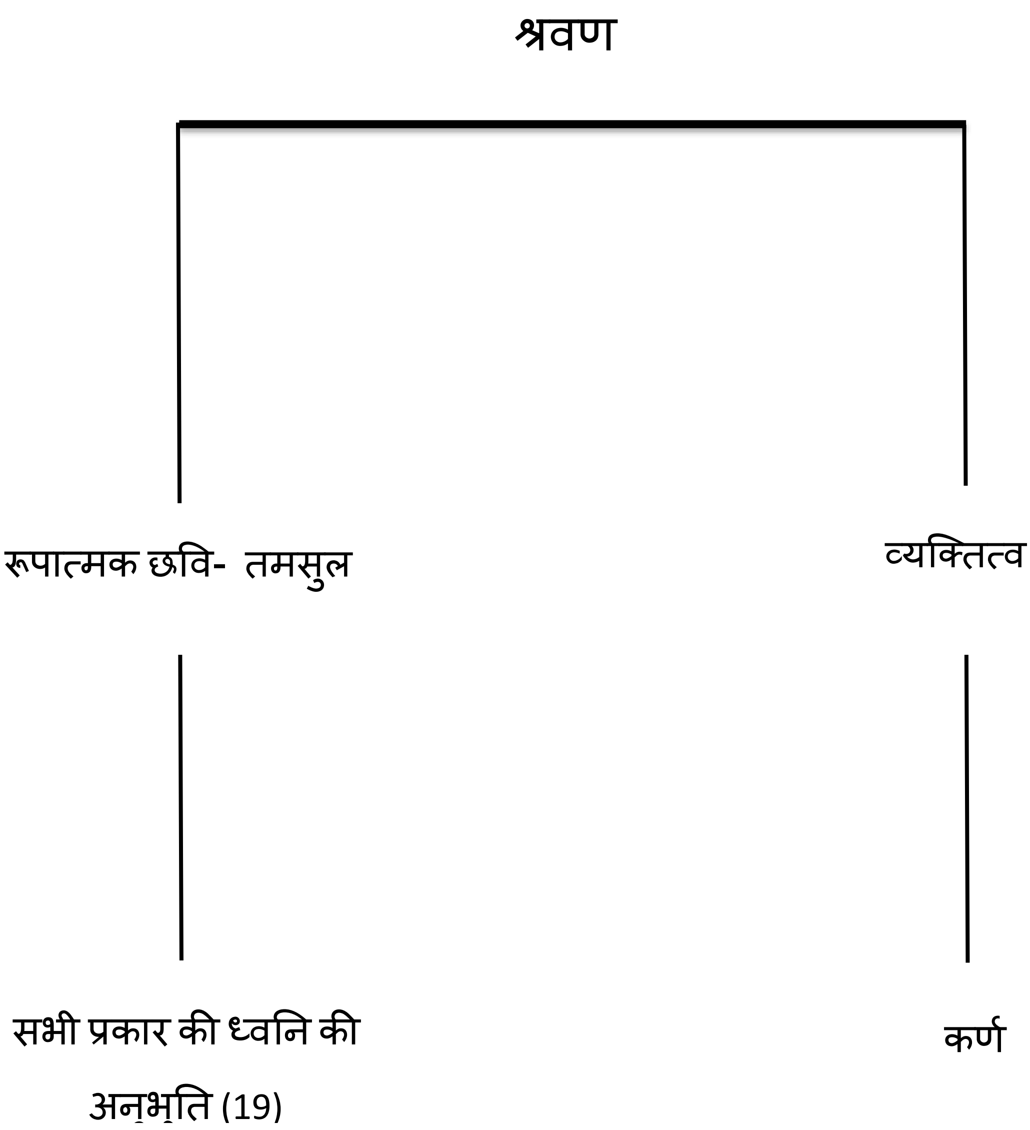

www.ksars.org

रसना

- निगाह की
  - रस की अनुभूति
    - मधुर (20)
    - अम्ल (21)
    - कटु (22)
    - निर्रस (23)
    - तीक्ष्ण (24)
    - लवण (25)
    - लवण (25)
    - क्षारीय (26)
- **व्यक्तित्व**
  - जीभ

www.ksars.org

घ्राण शक्ति

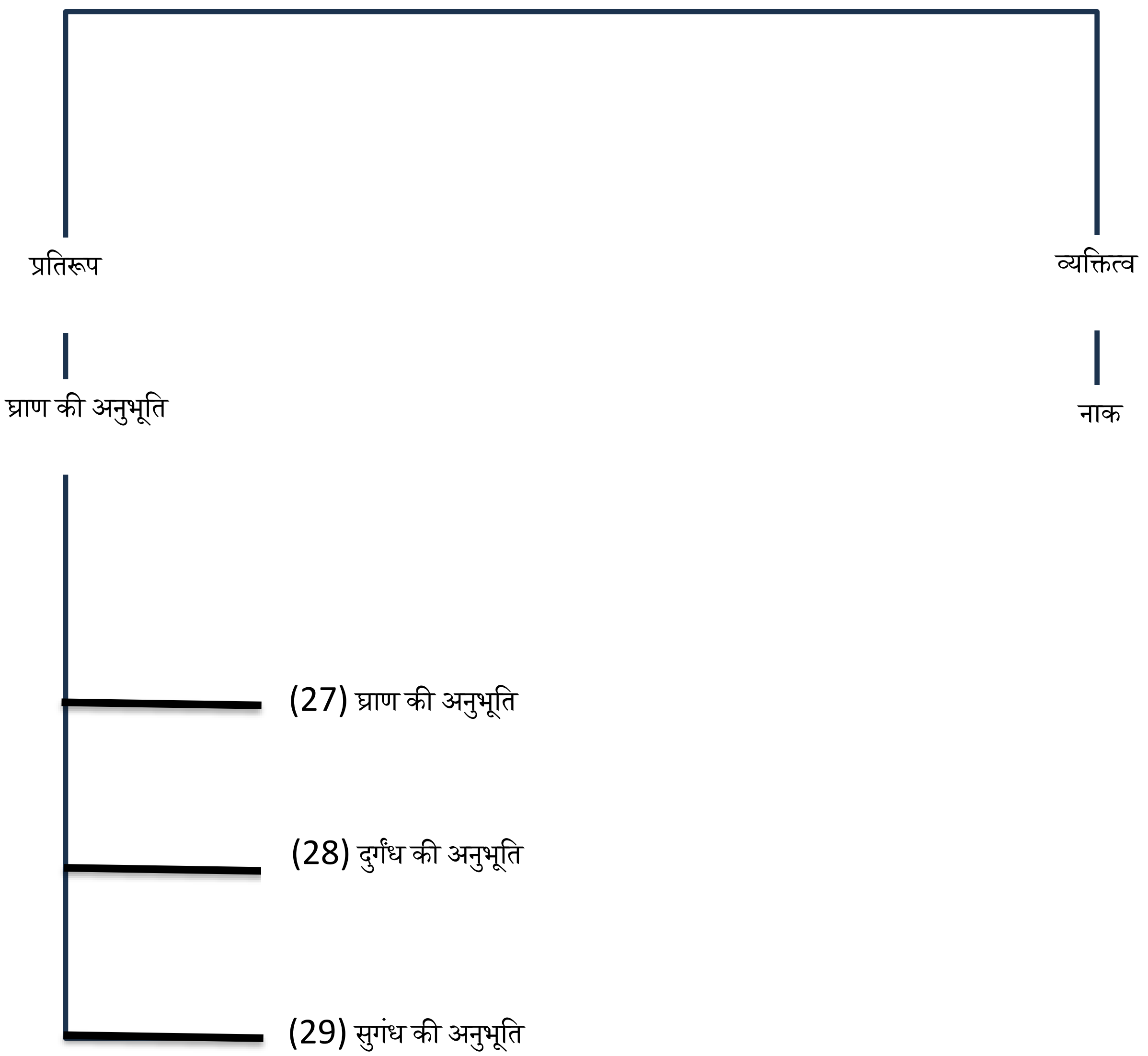

www.ksars.org

स्पर्श शक्ति

- छवि
  - स्पर्श की
    - खुरदरा (30), चिकना (31), गोल (32)
    - समतल (33), मुलायम (34), कठोर (35), आर्द्र (36), वायवीय (37)
    - उष्ण (38), शीतल (39), हल्का (40), उभरा हुआ (41)
    - गंभीर (42), पतला (43), फूला (44), स्पंजी (45)
    - बिखरने वाली (49), चिपकाव (48), नुकीला (47), दबा-छिपा हुआ (46)
    - चमकदार (50), सूक्ष्मता (51), परावर्तक (52), पतला (53)
    - घना (54), पारदर्शी (55), गति (56), संचारण (57)
    - कुरकुरा (64), लंबा (63), स्थूल (62), प्रवाह (61), उड़ान (60), गलना (59), पूर्ण गति (58)
- व्यक्तित्व
  - अवयव

www.ksars.org

उदाहरण

सोना = नस्मा संख्या 3+35+31+50+51

लाल खड़िया = नस्मा संख्या 5+31+35+49

सेब = नस्मा संख्या 3+2+5+32+36+45+20+21+29

गुलाब का फूल = नस्मा संख्या 5+36+31+43+29+24

तंबाकू = नस्मा संख्या 3+36+43+34+35+30+31+28+22

जल = नस्मा संख्या 2+36+53+49+52+23+27+19+55+40+39+38+58+61+60+48

पारा = नस्मा संख्या 1+50+54+36+53+42+39+24+29+52+58+48

लकड़ी = नस्मा संख्या 3+36+42+53+62+48+27

लोहा (इस्पात) = नस्मा संख्या 1+35+42+30+48+24+59+92

टमाटर = नस्मा संख्या 5+36+50+45+32+62+31+42+34+21+29

आलू = नस्मा संख्या 2+46+36+25+29+42+32+35+54

काँच = नस्मा संख्या 1+50+35+31+55+49+48+59+61+39+52+53+42+54

उपर्युक्त निरूपण के अनुसार हम नस्मा की सामूहिकता और उसकी अवस्थाओं का कुछ अनुमान लगा सकते हैं।

स्पष्ट होना चाहिए कि जिस वस्तु को *अनुभूति (हस)* कहा जाता है उसके दो अंग होते हैं। इन दोनों अंगों को हम दो पक्ष भी कह सकते हैं। किसी ऐसे पिंड में जिसे भौतिक कहा जाता है, ये दोनों पक्ष एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। सामान्य धारणाओं में कोई वस्तु इन्हीं दोनों पक्षों का योग मानी जाती है। यही *सुरक्षित पट्टिका* का नियम है। कोई वस्तु चाहे *मूर्त* हो या *अमूर्त*, अदृश्य हो या दृश्य–हर स्थिति में यह नियम अनिवार्य है। ये दोनों पक्ष किसी भी वस्तु में अवश्य पाए

www.ksars.org

जाते हैं। दृश्य वस्तुओं में तो यह स्थिति प्रत्यक्ष अनुभव में आती है, किन्तु अदृश्य वस्तुओं में यद्यपि भौतिक नेत्र इस दशा का अनुभव नहीं कर पाते, तथापि सत्य इससे भिन्न नहीं है। अतः अदृश्य वस्तुओं में भी जब किसी प्रकार साक्षात्कार किया जाता है तो यही नियम वहाँ भी क्रियाशील दिखाई देता है। दृश्य वस्तुओं में जिस प्रकार ये दोनों पक्ष आपस में संयुक्त रहते हैं, उसी प्रकार अदृश्य वस्तुओं में भी ये दोनों पक्ष एक-दूसरे से संबद्ध पाए जाते हैं, चाहे उस संबद्धता की प्रकृति कुछ भी हो। इसी नियम के अंतर्गत "अनुभव" या "अनुभूति" के भी यही दो पक्ष या दो स्तर होते हैं।

एक पक्ष या एक स्तर वहाँ पाया जाता है जहाँ अवलोकन करने वाली शक्ति विद्यमान है और अनुभव करती है, और दूसरा पक्ष वहाँ पाया जाता है जहाँ अवलोकन करने वाली शक्ति की निगाह पड़ रही है, अर्थात् जहाँ अनुभव करने वाली इन्द्रिय केन्द्रित है।

सुरक्षित पट्टिका के नियम के अनुसार ये दोनों स्तर मिलकर किसी तत्त्व का कार्य या विधान बनते हैं और एक ही रूप माने जाते हैं। उदाहरण के लिए हम काले रंग को श्यामपट्ट पर देखते हैं। उसका विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है: श्यामपट्ट = नस्मा संख्या 31 + 35

इस उदाहरण में पट्ट का काला रंग “अनुभूति” का एक स्तर है और देखने वाली आँख का अनुभव “अनुभूति” का दूसरा स्तर है। इस प्रकार ये दोनों स्तर मिलकर एक विशिष्ट तत्त्व का एक कार्य, एक विधान या एक गति बनते हैं। *तसव्वुफ़* की भाषा में अनुभूति के इन दोनों स्तरों के संयोग का नाम *तमसुल* है। अर्थात् यह एक रूप है जहाँ दो स्तर अपनी सम्पूर्ण विशेषताओं सहित संगठित हो गए हैं। अनुभव यह बताते हैं कि कोई वस्तु दृश्य हो या अदृश्य, बिना आकार और रूप के नहीं हो सकती, क्योंकि बिना आकार-रूप के किसी वस्तु का अस्तित्व सत्य की निगाह से असम्भव है। *तसव्वुफ़* की भाषा में जहाँ दो स्तरों का आकार और रूप मिलकर एक अस्तित्व की सृष्टि करते हैं, उस अस्तित्व को *तमसुल* कहते हैं। यद्यपि इस अस्तित्व को भौतिक नेत्र नहीं देख सकते, किन्तु आत्मा की निगाह इस अस्तित्व को उसी प्रकार देखती है जैसे भौतिक नेत्र किसी भौतिक रूप को देखते और अनुभव करते हैं।

शरीर की भाँति तमसुल में भी आयाम (Dimensions) होते हैं और आत्मिक निगाह इन आयामों के विस्तार को न केवल देखती है बल्कि उनकी कालिकता का अनुभव भी करती है। सूफ़ीजन इसी तमसुल को *हेउला* कहते हैं। वास्तव में यह अनुभूतियों का ढाँचा है जिसमें वे सभी क्रमबद्ध घटक उपस्थित होते हैं जिन्हें एक कदम आगे बढ़ने पर भौतिक नेत्र विधिवत् देखते हैं और भौतिक स्पर्शेंद्रिय विधिवत् अनुभव करती है।

www.ksars.org

किसी वस्तु की उपस्थिति पहले *तमसुल* या *हेउला* के रूप में अवतरित होती है। यह *हेउला* नस्मा-एकात्मक (नस्मा-ए-मुफ़रद) की संयोजित स्थिति है। इसके बाद दूसरे चरण में यही नस्मा-एकात्मक जब नस्मा-संयुक्त (नस्मा-ए-मुरक्कब) का रूप धारण करता है तो उसकी गति में अत्यधिक शैथिल्य और जड़ता उत्पन्न हो जाती है। इसी शैथिल्य और जड़ता का नाम “ठोस अनुभूति” है।

हमने ऊपर नस्मा की दो प्रकारें वर्णित की हैं – *एकात्मक (मुफ़रद)* और *संयुक्त (मुरक्कब)*। यहाँ इसका थोड़ा स्पष्टीकरण आवश्यक है। वास्तव में नस्मा-ए-मुफ़रद प्रेरणाओं का समूह है जो एक दिशा से दूसरी दिशा में प्रवाहित रहती हैं।

एक विशेष अवतरण की सीमा तक नस्मा की गति एकात्मक स्थिति में रहती है। यह स्थिति या अवतरण बिल्कुल एक परदे की तरह है–अर्थात् ऐसा परदा जो निरवर्ण किरणों से बना है, जिनका रुख़ एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर गति कर रहा है। ये निरवर्ण किरणें वास्तव में गतिशील रेखाएँ हैं जो वस्त्र के ताने की तरह यद्यपि अलग-अलग हैं, किन्तु एक-दूसरे में गुंथी हुई भी हैं। यह वस्त्र जब तक इस दशा में बिना बाने के, अर्थात् एकतरफ़ा रहता है, तब तक यह नस्मा-ए-मुफ़रद की स्थिति पर क़ायम है। इस वस्त्र के भीतर जितने भी आकृतियाँ और रेखांकन उभरते हैं, उनका नाम *जिन्न* और *जिन्नों की दुनिया* है।

किन्तु जब यही वस्त्र ऐसे अवतरण की सीमाओं में प्रवेश करता है जहाँ इसके ऊपर वस्त्र के बाने की तरह दूसरी गति, जो पहली गति की विपरीत दिशा में सतत प्रवाहित है, आकर गुंथ जाती है और इस वस्त्र के भीतर अनेक आकृतियाँ और रेखांकन बन जाते हैं, तो इन आकृतियों और रेखांकनों का नाम *मनुष्य* और *मनुष्यों की दुनिया* है। अर्थात् तमसुल-मुफ़रदया एकात्मक गति *जिन्नों की दुनिया* है और नस्मा-ए-मुरक्कब या संयुक्त गति *मनुष्यों की दुनिया* है। हमने जिसका नाम “गति” रखा है, यही वही “अनुभूति” है जिसके *हेउला* को हम ऊपर *तमसुल* कह चुके हैं। जब तक यह गति *अप्रकट* क्षेत्र में रहती है, *तमसुल* कहलाती है, और जब यह गति *प्रकट* क्षेत्र में आ जाती है, तो यह उसका नाम शरीर हो जाता है। इसी शरीर को हम ठोस भौतिकता कहते हैं।

पिछले पृष्ठों में हमने ग्राफ बनाकर उनके भीतर एक काल्पनिक जिन्न और एक काल्पनिक आदमी का चित्र प्रस्तुत किया है। यदि उस चित्र को ध्यान से देखा जाए तो यह अनुमान हो जाता है कि ये रेखाएँ, जो एक दिशा से दूसरी दिशा की ओर मुड़ी हुई हैं, वास्तव में गतियों की छवि हैं। इन गतियों में केवल गति की लंबाई ही सभी प्रकार के गुणों का नमूना बनती है। उदाहरणार्थ, एक गति जिसकी विशेष लंबाई है, उसके गुण भी विशेष होंगे। *सुरक्षित पट्टिका* के

www.ksars.org

नियम में जो लंबाई के मानक किसी गुण के लिए निश्चित हैं, वही किसी संरचना और रूपांकन का मौलिक सिद्धांत है। ब्रहमांड में जितनी वस्तुएँ, जितने रूप-रंग, जितनी क्षमताएँ होती हैं, उनमें से प्रत्येक के लिए गति की विशेष लंबाई निश्चित है। अनुभव यह दर्शाते हैं कि यदि गति का मापन 'अलिफ़' है तो उस 'अलिफ़' माप की गति से जो भी उद्भव उत्पन्न होगा वह अनादि से अनन्त तक एक ही प्रकार का होगा। उस रूपांकन या उद्भव का आकार, उसका रंग, उसके आयाम, उसकी क्षमताएँ सदा निश्चित और निर्धारित रहेंगी। न उनमें कोई कमी होगी न वृद्धि। और इन्हीं गतियों के एक विशेष संयोजन का परिणाम किसी जाति के व्यक्ति के रूप में प्रकट होता है, चाहे वह जाति मनुष्य-जगत की वनस्पतियाँ, जड़-पिंड, पशु हों या जिन्न-जगत की वनस्पतियाँ, जड़-पिंड या पशु। प्रथम अवस्था में वह नस्मा-मुरक़ब अर्थात् दो विरोधी गतियों का परिणाम होगा जिसे हम दोहरी गति कह सकते हैं, और दूसरी अवस्था में वह केवल एकदिशीय गति का परिणाम होगा जिसे हम एकहरी गति भी कह सकते हैं।

www.ksars.org

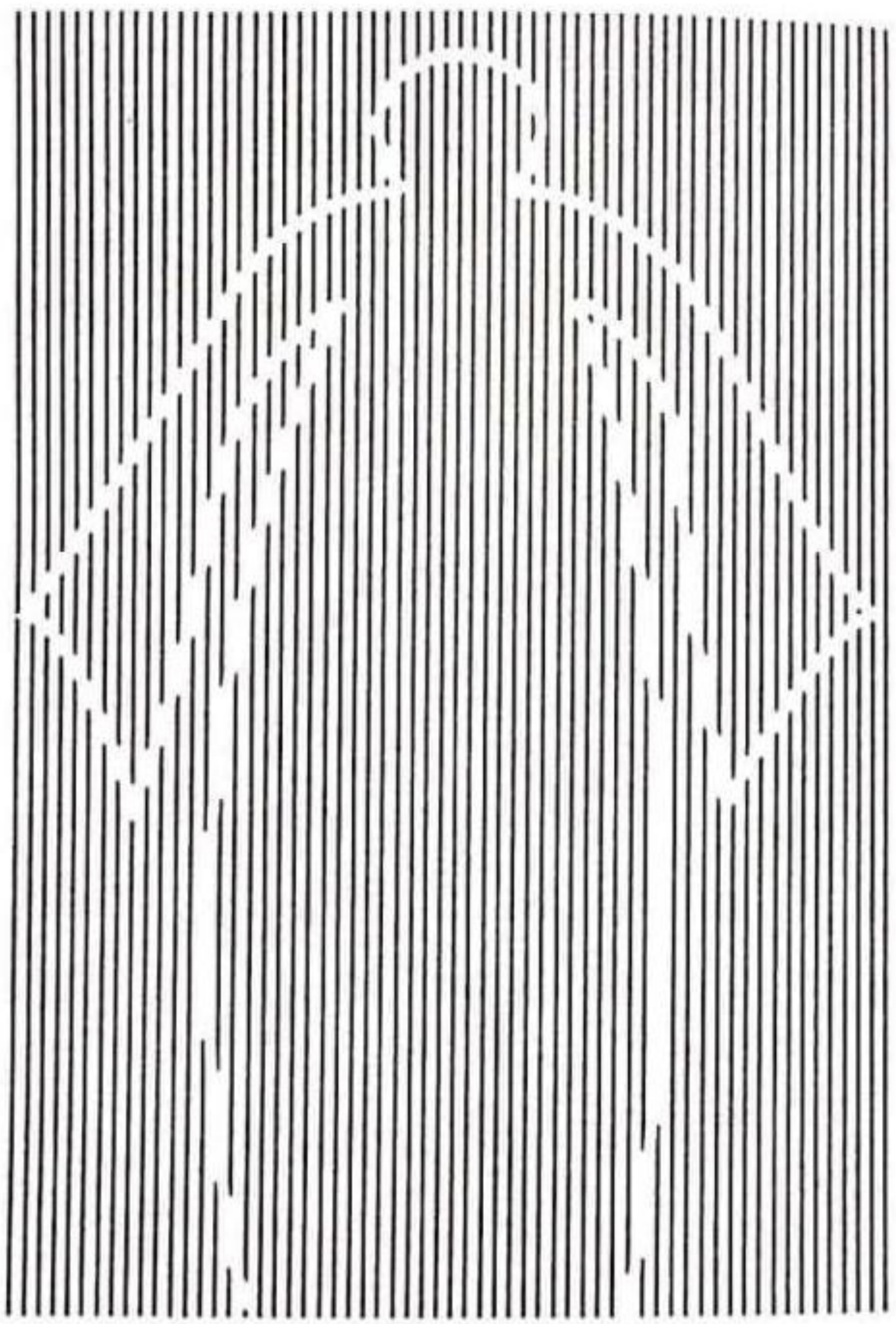

जिन्न अथवा जिन्न की दुनिया = नस्मा मफ़रद अथवा हरकत मफ़रद

www.ksars.org

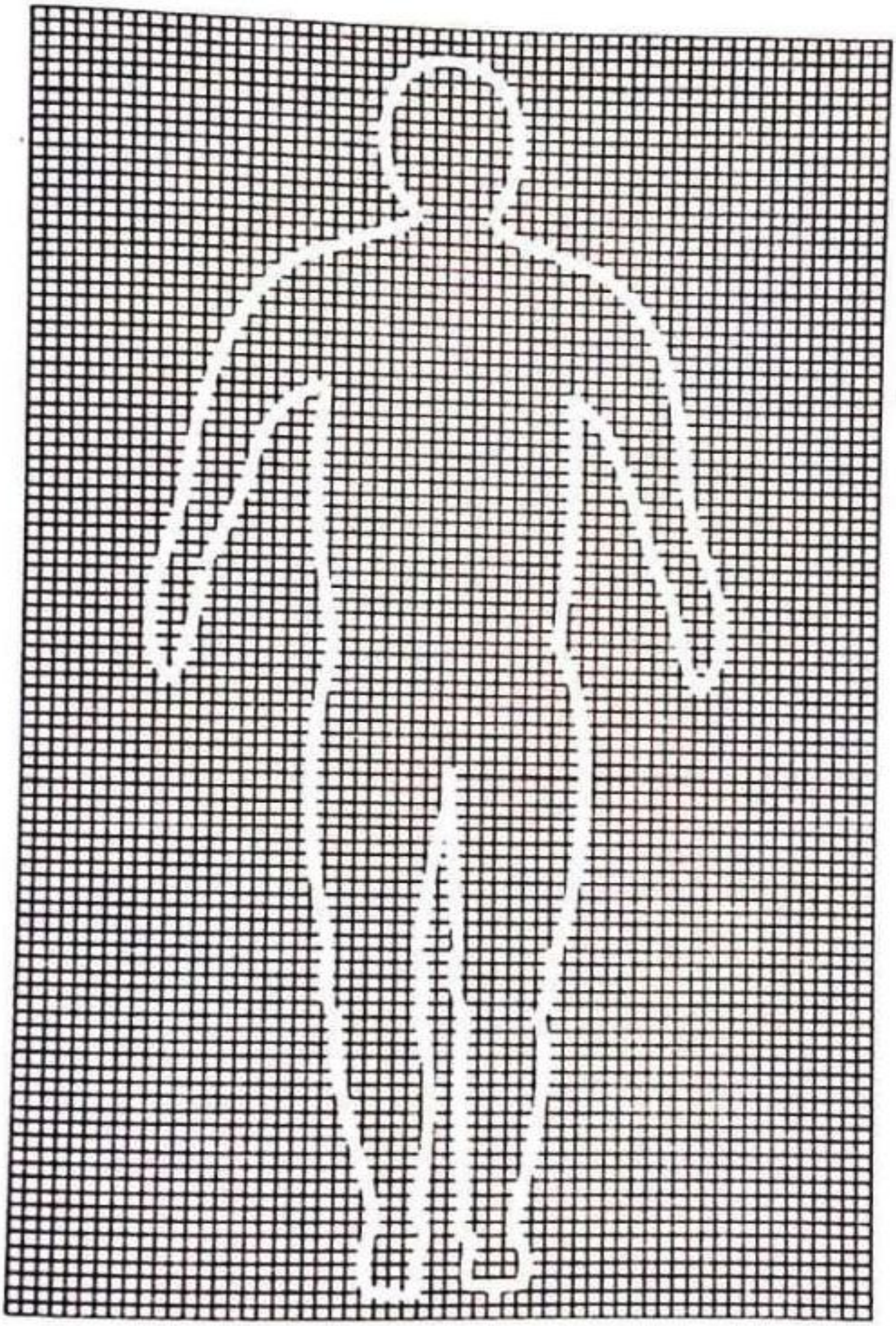

मनुष्य अथवा मनुष्य की दुनिया = नस्मा मुरक़्ब अथवा हरकत मुरक़्ब

www.ksars.org

ईश्वर ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया है कि मैंने हर वस्तु को दो प्रकार पर उत्पन्न किया है:

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

(पारा 27, रुकू 2, आयत 49)

अनुवाद (मौलाना थानवी): और हमने हर चीज़ को दो-दो प्रकार बनाया ताकि तुम (इन उत्पन्न वस्तुओं से *एकत्व* को) समझो।

यहाँ यह समझना आवश्यक है कि गति की सृष्टि में दो-दो प्रकार की क्या प्रकृति है। इस प्रकृति के विश्लेषण में *अनुभूति (हस्स)* को भली प्रकार जानना ज़रूरी है। हमने श्यामपट्ट की मिसाल में *अनुभूति* के दोनों पक्षों का उल्लेख किया है। वास्तव में वही दोनों पक्ष यहाँ भी चर्चा में आते हैं।

जिस वस्तु को हम गति कहते हैं वह केवल एक अनुभूति है, जिसका एक पक्ष बाहरी दिशा में है और दूसरा पक्ष भीतर की ओर है। जब नस्मा के भीतर एक रूप विशेष क्रमों के अधीन उत्पन्न होता है तो वह ऐसी गतियों का समूह बनता है जो एक ओर स्वयं रूप की अनुभूति है और दूसरी ओर रूप की लोक का अनुभव है।

हम इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं कि जिनको सूफ़ीजन *प्रकट अस्तित्व (ज़ाहिर अल-वुजूद)* कहते हैं, वह दो स्तरों पर आधारित है। इनमें से पहला स्तर कोई आयाम नहीं रखता और दूसरे स्तर में पहले स्तर के रूपांकन आयामों सहित प्रकट होते हैं। लेकिन इस अवस्था तक केवल प्राकृतिक विशेषताओं का अस्तित्व होता है, प्रकृति की सक्रियता नहीं होती। धर्म ने पहले स्तर का नाम *आत्माओं का लोक (आलम-ए-अरवाह)* रखा है और इस लोक के अवयवों को *आत्मा* कहा है। दूसरा स्तर *प्रतिमा-लोक (आलम-ए-मिसाल)* का है और पारिभाषिक रूप से दूसरे स्तर के प्रत्येक अवयव का नाम *प्रतिमा (तमसुल)* है। इन दोनों स्तरों में वही भेद है जो हम ऊपर स्पष्ट कर चुके हैं।

www.ksars.org

कालिकता *(मक़ानियत)* और कालिकता *(ज़मानियत)* का रहस्य

क़ुरआन पाक के इन शब्दों وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ में ईश्वर ने *कालिकता (मक़ानियत)* और *कालिकता (ज़मानियत)* का रहस्य प्रकट किया है।

किसी भी वस्तु के अस्तित्व में तीन प्रकार की धाराएँ होती हैं। एक प्रवृत्ति (अहवाल) अवस्थाओं की है, दूसरी प्रवृत्ति (आसार) चिह्नों की है और तीसरी प्रवृत्ति इन दोनों का समाहार है, जिसे (अहकाम) कहा जाता है। किसी वस्तु के दो प्रकार होने से अभिप्राय उसके दो पक्ष हैं। ये दोनों पक्ष एक-दूसरे के विपरीत होते हैं, किन्तु एक-दूसरे से पूर्णतः जुड़े भी रहते हैं। यद्यपि विपरीत होने का कारण उनके गुणों का भेद (जैसे कर्ता-कार्य, बनाने वाला-बनाया हुआ) उन्हें अलग-अलग कर देता है, तथापि इन दोनों का समष्टि ही वस्तु का अस्तित्व कहलाती है। दूसरे शब्दों में, जब ये दोनों पक्ष एकत्र होते हैं, तो उनकी सामूहिकता ही *अनुभूत वस्तु* बन जाती है। वस्तु का एक पक्ष संवेदक (अनुभव करने वाला) होता है, और वस्तु का दूसरा पक्ष अनुभूत (जो अनुभव किया जाता है)। तसव्वुफ़ की भाषा में वस्तु का संवेदनशील पक्ष *अहल (अहवाल)* कहलाता है, और उसका अनुभूत पक्ष *आसार* कहलाता है। इन दोनों का संयुक्त नाम *अहकाम* है। धर्म की भाषा में इसी को अमर-ए-रब्बी कहा जाता है।

अतः अमर-ए-रब्बी के दो पक्ष या दो अवयव हुए। एक पक्ष *अहल (अहवाल)* है – जो गुण और क्षमता का जानने वाला या उसका उपयोग करने वाला है। दूसरा पक्ष *आसार* है – जो गुण और क्षमता स्वयं है। ये दोनों अवयव मिलकर एक *अमर-ए-रब्बी* की हैसियत रखते हैं। दोनों अवयव आपस में जुड़े होने के बावजूद एक-दूसरे से भिन्न हैं। वास्तव में यही विभाजन वह *क्रिया* है जो *अवतरण (तनज़्ज़ुल)* के बाद एक निगाह से *काल (ज़मान)* और दूसरी निगाह से *स्थान (मकान)* कहलाती है। जब यह क्रिया अनुभूति की ज़ेहन की सीमाएँ के चारों ओर घटित होती है तो उसका नाम *काल* है, और जब यह क्रिया अनुभूति के *रूप-आकार* की सीमाओं के चारों ओर घटित होती है तो उसका नाम *स्थान* है।

यदि ईश्वर वस्तुओं के अस्तित्व को जोड़े-जोड़े में न रचते, तो यह मध्यस्थ क्रिया – जो काल और स्थान बनती है – उत्पन्न ही न होती। यह क्रिया तब प्रकट होती है जब वस्तु के अस्तित्व में *आयाम* उत्पन्न हो जाते हैं। और आयामों का उद्भव *प्रतिमा-लोक (आलम-ए-मिसाल)* में होता है, *आत्मा-लोक (आलम-ए-अरवाह)* में नहीं होता। इसी कारण *आत्मा-लोक* में न तो *काल* होता है और न ही *स्थान*। वहाँ वस्तु का अस्तित्व केवल *आदेश-रूप (अमर-ए-शक़्ल)* होता है, गतिशील

www.ksars.org

आदेश नहीं होता। अतः नस्मा की दुनिया वहीं से आरम्भ होती है जहाँ से गति का उदय होता है।

तम्सील: उदाहरण जैसे नमाज़ पढ़ने वाले के ज़ेहन में जब नमाज़ की *अनुभूति* उत्पन्न होती है तो उसके दो पक्ष होते हैं – एक पक्ष स्वयं नमाज़ की *रूप-रचना (हैयत)* है और दूसरा पक्ष नमाज़ का अनुभव करने वाला *चेतन मन*।

यदि ऊपर उल्लिखित ईश्वर के आदेश की और अधिक व्याख्या की जाए तो *अनुभूति* के अनेक द्वैतीय पक्षों का उल्लेख करना पड़ेगा। इनमें से एक पक्ष *सामान्य* और दूसरा *विशेष* है। विशेष पक्ष का उल्लेख हम कर चुके हैं। इसके सम्मुख *अनुभूति* का सामान्य पक्ष वह है जो *प्रबल (ग़ालिब)* का दर्जा रखता है। इस अवसर पर *शख़्से-अकबर (व्यापक पुरुष)* का उल्लेख करना आवश्यक है। अर्थात् *शख़्स (व्यक्ति)* के भी दो पक्ष हैं – एक *शख़्से-अकबर* और दूसरा *शख़्से-असगर*। *शख़्से-अकबर* की प्रकृति प्रबल की है और *शख़्से-असगर* की स्थिति अप्रबल की है। एक प्रकार से हम इन दोनों को *जाति (प्रकार)* और *व्यक्ति (फर्द)* का नाम भी दे सकते हैं – जिनमें से एक *मूल (मसदर)* है और दूसरा *उपजात (मुश्तक़)*। अतः यदि हम सामान्य अनुभूति का वर्णन करें तो उस अनुभूति को *शख़्से-अकबर* की अनुभूति माना जाएगा।

पिछले पृष्ठों में *शख़्से-अकबर* का उल्लेख हुआ है। यहाँ उसके विषय में संक्षेप में बताना आवश्यक है।

ईश्वर ने क़ुरआन पाक में फ़रमाया है: وَعَلَّمَ آدَمَ الأَسْمَاءَ كُلَّهَا

अनुवाद: और ईश्वर ने हज़रत आदम (अलैहिस्सलातो वस्सलाम) को (उन्हें उत्पन्न करके) सब वस्तुओं के *नाम* (उन वस्तुओं के गुण और प्रभाव सहित) सिखा दिए। अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि और धरती पर मौजूद सभी वस्तुओं के नाम और उनके गुण-धर्म आदम को प्रदान कर दिए। *सुरक्षित पट्टिका* की पारिभाषिक भाषा में *अस्मा* उन शीर्षकों और विशेषताओं का नाम है जिनके द्वारा वस्तुओं की प्रकृति और वास्तविकता का बोध कराया जाता है।

उस रुकू का आरंभिक श्लोक में ईश्वर ने आदम को अपना *नायब (प्रतिनिधि)* बनाने का उल्लेख किया है और दूसरी आयत में यह स्पष्ट कर दिया है कि मैंने आदम को *इल्म-उल-अस्मा* प्रदान किया है। अब यदि *हिकमत-ए-तक़्वीन* (सृष्टि की गूढ़ व्यवस्था) की रोशनी में इन दोनों के संबंध को खोजा जाए तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि ईश्वर की *नायबी* का संबंध *इल्म-उल-अस्मा* से अत्यन्त गहरा है।

www.ksars.org

ब्रह्मांड की संरचनात्मक रचना

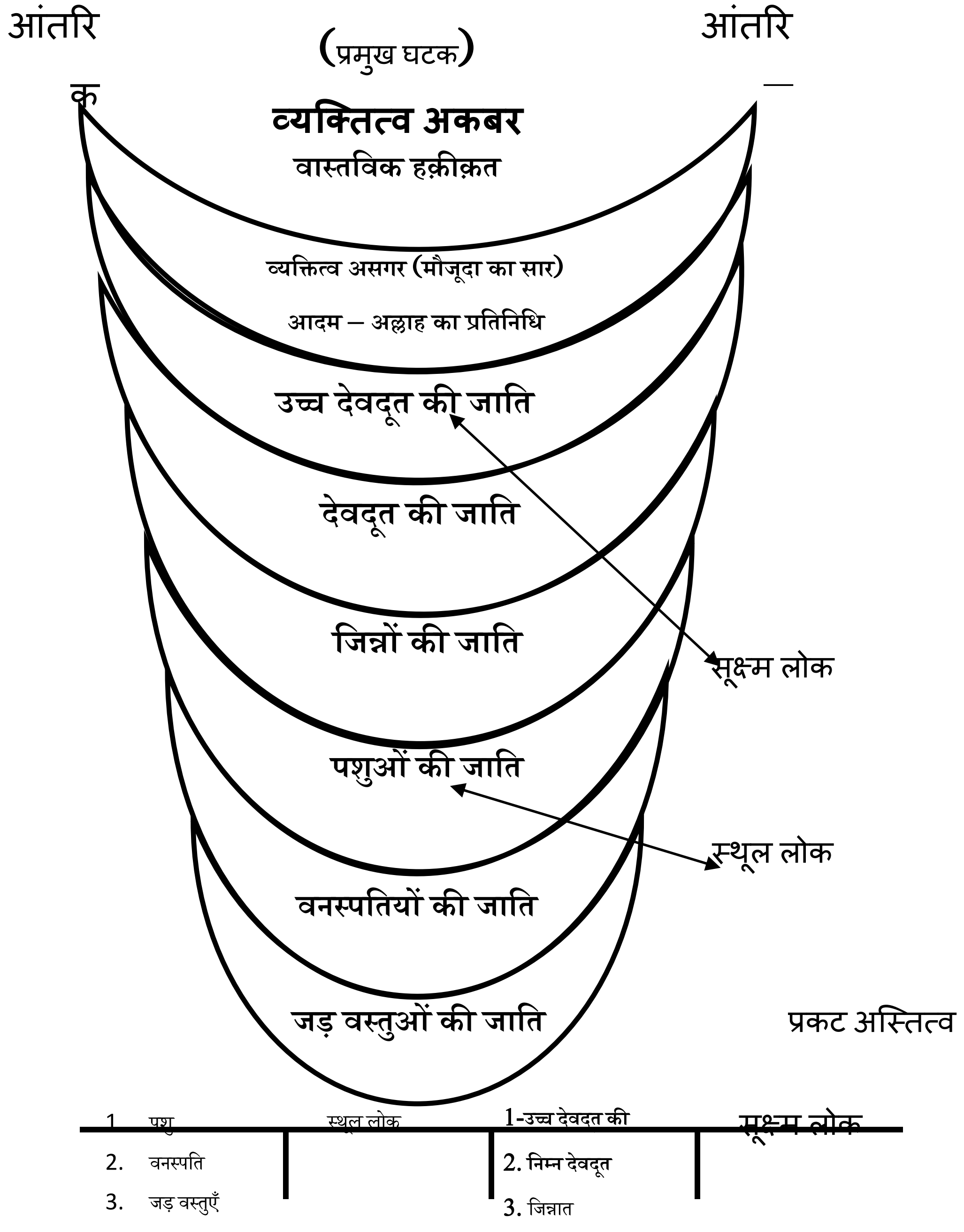

www.ksars.org

प्रतिनिधित्व "नियाबत" क्या है?

ईश्वर की ओर से इस ब्रहमांड के व्यवस्थागत कार्यों को समझना और ईश्वर द्वारा दिए गए *इल्मुल-अस्मा* (नामों के ज्ञान) की रोशनी में उन कार्यों को चलाना प्रतिनिधित्व की परिधि में आता है।

जब ईश्वर ने मनुष्य को अपना प्रतिनिधि बना दिया, तो यह निश्चित हो गया कि ईश्वर की शक्ति के जितने भी क्षेत्र हैं, उनमें किसी न किसी रूप में प्रतिनिधि का संबंध अवश्य है।

सृष्टि की रहस्यमयी व्यवस्था (हिकमत-ए-तक़्वीन) की निगाह से यहाँ *इल्मुल-अस्मा* का थोड़ा विश्लेषण करना आवश्यक है। क़ुरआन में ईश्वर ने कहा है: "कुन फ़यकून" – *मैंने कहा हो जा और वह हो गया।* अर्थात् यह समस्त ब्रहमांड (अस्तित्वमान तत्व) ईश्वर ने *कुन* कहकर उत्पन्न कर दिया। कुन के चार सृजनात्मक विभाग हैं: इब्दा - इसका अर्थ यह है कि यद्यपि सृष्टि के प्रकट होने के कोई साधन या कारण विद्यमान नहीं थे, लेकिन जब ईश्वर ने कहा *कुन*, तो समस्त सृष्टि बिना किसी साधन और कारण के सुव्यवस्थित और पूर्ण हो गई। यही सृजन का प्रथम विभाग है।

सृष्टि (तक़्वीन) का द्वितीय पक्ष 'ख़ल्क़' है। इसका अर्थ यह है कि जो कुछ अस्तित्वमान तत्व के रूप और आकार में प्रकट हुआ, उसमें गति और स्थिरता की प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो गईं और जीवन की अवस्थाएँ क्रमशः घटित होने लगीं। अर्थात् अस्तित्वमान तत्व में जीवन-प्रक्रिया का आरंभ हो गया।

तक़्वीन का तृतीय विभाग 'तदबीर' है। यह अस्तित्वमान तत्वों के जीवन-व्यवहार की व्यवस्था और स्थान-निर्धारण के अध्यायों पर आधारित है।

हिकमत-ए-तक़्वीन का चौथा विभाग - तदला है तदला का अर्थ है सृष्टि की रहस्यमयी व्यवस्था (हिकमत-ए-तक़्वीन) का वह विभाग जिसके द्वारा नियति और भाग्य के अनुशासन की कड़ियाँ और निर्णय व्यवस्थित होते हैं।

मनुष्य को, ईश्वर का प्रतिनिधि होने के नाते, *इल्मुल-अस्मा* की हिकमत-ए-तक़्वीन के रहस्य और संकेत इसलिए प्रदान किए गए हैं कि वह ब्रहमांड के प्रशासनिक कार्यों में प्रतिनिधि के कर्तव्यों को पूरा कर सके।

www.ksars.org

ब्रह्मांड की संरचना को समझने के लिए इसके मरातिब (स्तरों) और अवयवों का ज्ञान आवश्यक है। रूपरेखा में: व्यक्तित्व अकबर को अंतर्य अस्तित्व (बातिनुल-वुजूद) कहा गया है। सूक्ष्म जगत (आलम-ए-ख़फ़ीफ़) के तीन स्तर और स्थूल जगत (आलम-ए-शदीद) के तीन स्तर को प्रकट अस्तित्व (ज़ाहिरुल-वुजूद) कहा गया है। इन दोनों जगतों के छह स्तरों में से प्रत्येक का संबंध एक प्रजाति से है। इस प्रकार यह छह प्रजातियाँ हुईं। इनके अतिरिक्त एक प्रजाति जिसका नाम आदम की प्रजाति (नौ-ए-आदम) है, उसे शख़्स असगर कहा गया है। यह शख़्स-ए-असगर उन छह प्रकारों का सार है और बरज़ख अर्थात् मध्य-साधन है शख़्स-ए-अकबर, अस्तित्व के अंतरंग और बहिरंग का।

उल्लेखित छह प्रजातियों में से प्रत्येक प्रजाति असंख्य व्यक्तियों पर आधारित है। साथ ही हर प्रजाति का एक नफ़्स-ए-कुल्लियह होता है। इसी नफ़्स-ए-कुल्लियह को हम प्रजाति (नौ) कहते हैं। यह नफ़्स-ए-कुल्लियह अपनी प्रजाति के सभी व्यक्तियों के मूल तत्वों का संग्रह है। हर प्रजाति की सत्ता (माहियत), गुणात्मकता (कैफ़ियत), और क्रियाशीलता (फ़इलियत) उसके नफ़्स-ए-कुल्लियह में स्थित रहती है। ये तीनों अवस्थाएँ – सत्ता, गुणात्मकता और क्रियाशीलता – उस नफ़्स-ए-कुल्लियह की तअय्युनात (निर्धारित रूपरेखाएँ) कहलाती हैं। ये एक प्रकार के निश्चित नक़्श व निगार हैं जो अनादि से अनंत तक की कालिकता (मक़ानियत) और कालिकता (ज़मानियत) को समेटते हैं।

जब भौतिक जगत (आलम-ए-नासूत) में इन चित्रण और अलंकरण का अवरोहण (नुज़ूल) होता है, तो गति (हरकत) या क्रियाशीलता (फ़इलियत) इन्हीं चित्रण और अलंकरण को काल और स्थान के स्तर (ज़मान और मक़ान के मरातिब) प्रदान करती है।

आत्मा में अप्रतिबंध स्थिति के सिवा गति के सभी विभाग सम्मिलित हैं। अप्रतिबंध स्थिति से आशय ईश्वर की वह तजल्लि है जिसे तसव्वुफ़ में "तसवीद" कहा जाता है। इस मुतलक तजल्लि के दो विभाग हैं। नीचे दर्जे का विभाग ख़फ़ी और ऊँचे दर्जे का विभाग अख़फ़ा है। प्रथम विभाग अख़फ़ा से ईश्वरीय तजल्लि का अवरोहण द्वितीय विभाग ख़फ़ी की ओर होता है। यही तजल्लि का अंतिम विभाग है। इसके बाद स्तर-ए-प्रकट अर्थात गति शुरू हो जाती है। इस गति का पहला विभाग सूक्ष्म तत्त्व-सिरी है। दूसरा, तीसरा और चौथा सूक्ष्म तत्त्व-रूही, सूक्ष्म तत्त्व-क़ल्बी और सूक्ष्म तत्त्व-नफ़्सी है। इन सूक्ष्म तत्त्व में क़ल्बी और नफ़्सी दो विभाग नस्मह कहलाते हैं। ये दोनों स्तर गति के अंतिम अवयव हैं। लतीफ़ा-ए-सिरी और रूही के विभाग को स्तर-ए-माहियत

www.ksars.org

कहा जाता है। लतीफ़ा-ए-क़ल्बी को कैफ़ियत और लतीफ़ा-ए-नफ़्सी को फ़इलियत का नाम दिया जाता है।

शाखाएँ-ए-ज़ाहिरी से अभिप्राय शाखाएँ-ए-गति हैं और शाखाएँ-ए-बातिनी से अभिप्राय 'तजल्लि मुतलक' के चरण हैं, जिसके विषय में हज़ूर (अलैहि-अस्सलातु वस्सलाम) की हदीस है।

مَنْ عَرَفَ نَفْسَہٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّہٗ

अर्थ: जिसने अपने स्वरूप को पहचाना उसने ईश्वर की रब्बानियत को पहचान लिया।

यही रब्बानियत की सत्ता आंतरिक के दो विभागों पर विभाजित है जो तजल्लि की निरंतर और सतत धारा के रूप में मनुष्य के आंतरिक से प्रवाहित होती है। आंतरिक के दो विभाग अख़फ़ा और ख़फ़ी और प्रकट के दो विभाग सिरी और रूही का संबंध शख़्स-ए-अकबर से है और प्रकट के दो विभाग क़ल्बी और नफ़्सी का संबंध शख़्स-ए-असगर से है।

तजल्लि की सबसे पहली धारा का नाम नेहर-ए-तसवीद है और दूसरी धारा का नाम नेहर-ए-तज्रीद, तीसरी धारा का नाम नेहर-ए-तशहीद और चौथी धारा का नाम नेहर-ए-तज़हीर है। नेहर-ए-तसवीद की तजल्लि लतीफ़ा-ए-अख़फ़ा और लतीफ़ा-ए-ख़फ़ी को क्रमशः सींचती है। अख़फ़ा और ख़फ़ी ये दोनों विभाग अस्ल-ए-नफ़्स (मूल स्वरूप) हैं। तजल्लि का अवतरण वास्तव में लतीफ़ा-ए-सिरी से शुरू होता है। यही वह चरण है जो आत्माज्ञानी जन के लिए अत्यंत ख़तरनाक है जब वे मलाकूतियत (स्वर्गीय स्तर) से अवतरण करके नासूतियत (भौतिक स्तर) की ओर झुकते हैं। शैतानी कु-गति की शुरुआत लतीफ़ा-ए-सिरी से होती है क्योंकि यही लतीफ़ा आत्मा-ए-मनुष्य का पहला विभाग है। इसी शाखा से मनुष्य 'मुतलक़ियत' (निरपेक्षता) को भूलने का और रब्बानियत से इनकार करने का प्रयास करता है तथा अपनी मूल सत्ता से विमुख रहता है।

यदि वह अपने मूल स्वरूप का दर्शन करना चाहे तो ईश्वर सर्वशक्तिमान की उद्घाटित हुई निशानियाँ विद्यमान हैं। जैसे मनुष्य का श्वास लेना उसके चेतना से अलग एक क्रिया है। वह श्वास लेता है लेकिन श्वास लेने की शुरुआत उसके इरादे से नहीं होती। पलक झपकती है लेकिन उसका संबंध उसकी चेतना से कुछ नहीं। इसी तरह रक्त का नेहर और शरीर की आंतरिक गतियाँ ऐसे कार्य हैं जो मनुष्य की अपनी असल अर्थात् अवचेतन से संबंधित हैं। जब मनुष्य अपनी असल अर्थात् अवचेतन से अवतरित होकर चेतना की दुनिया में कदम रखता है उस समय वह अपनी जीवन की क्रियाशीलताओं से परिचित होता है जबकि सभी सत्ताएँ और गुणात्मकताएँ अवचेतन में घट चुकी थीं।

www.ksars.org

रब्बानियत की पहली तजल्लि जिसका नाम तसवीद है, व्यक्तित्व अकबर अर्थात् नफ़्स-ए-कुल्लियह में सबसे पहले रब्बानियत का कार्य पूरा करती है। और इस कार्य को क़ुरआन करीम ने यूँ बताया है :

अनुवाद: ईश्वर आकाशों और पृथ्वी का नूर है। उसकी नूर का उदाहरण उस ताख़चे के समान है जिसमें एक दीपक रखा हो और वह दीपक काँच की क़ंदील में हो।

अर्थात यह स्तर वराय-अवचेतन (अवचेतन से भी परे) है। और अवचेतन की संरचना और व्यवस्था ईश्वर की ओर से होती है। इसकी बुनियादें स्वयं ईश्वर की तजल्लि पर आधारित हैं। तसवीद की सींचन का संबंध अख़फ़ा और ख़फ़ी से है। ये दोनों विभाग वराय-अवचेतन से भी ऊपर हैं। इन्हीं दोनों विभागों को तसव्वुफ़ में **मुतलकियत** कहा जाता है। ये दोनों विभाग तजल्लि के ऊपरी मंडल हैं। पहला मंडल अख़फ़ा और दूसरा मंडल ख़फ़ी इस लिए अलग हैं कि ख़फ़ी मंडल की तजल्लि अख़फ़ा से कम सूक्ष्म है। यही वे दो विभाग हैं जिन्हें ईश्वर ने "नूर असमावात" कहा है। इसके बाद लतीफ़ा-ए-सिरी और लतीफ़ा-ए-रूही के दो विभाग आते हैं। ये दोनों विभाग अवतरित तजल्लि के आगे के दो मंडल हैं जिनमें पहला मंडल अधिक सूक्ष्म नूरानियत रखता है और दूसरा अपेक्षाकृत कम सूक्ष्म नूरानियत रखता है। इन्हीं दोनों विभागों को ईश्वर ने "शीशे की क़ंदील" कहा है।

ये चारों विभाग तजल्लि, चारों मंडल, ज्ञान सूक्ष्म लोक (आलम-ए-ख़फ़ीफ़) या अदृश्य लोक (आलम-ए-ग़ैब) में गिने जाते हैं और इन्हीं चार मंडलों का नाम शख़्स-ए-अकबर है।

आत्मा के अंतिम दो विभाग सूक्ष्म तत्व-ए-क़ल्बी और सूक्ष्म तत्व-ए-नफ़्सी के दो प्रकाशमय मंडल हैं जिन्हें नस्मह या आलम-ए-शदीद कहा जाता है। नस्मह की मिसाल ईश्वर ने दीपक की लौ से दी है। यही आलम-ए-गति या आलम-ए-शहादत है। यही आलम कालिकता और कालिकता दोनों का समुच्चय है। आत्मा के इन दोनों मंडलों को शख़्स-ए-असगर कहते हैं। नफ़्स-ए-कुल्लियह शख़्स-ए-अकबर है जो चार विभागों का संग्रह है और नफ़्स-ए-जुज़वी शख़्स-ए-असगर है जो दो विभागों का संग्रह है। नफ़्स-ए-कुल्लियह अदृश्य है और नफ़्स-ए-जुज़वी प्रत्यक्ष है। नफ़्स-ए-कुल्लियह गुण और सार का नाम है। नफ़्स-ए-जुज़वी गुणात्मकता (कैफ़ियत) और क्रियाशीलता (फ़इलियत) का नाम है। नफ़्स-ए-कुल्लियह सृष्टि के ज्ञान का नाम है और नफ़्स-ए-जुज़वी स्वयं सृष्टि है। नफ़्स-ए-कुल्लियह सबको घेरे हुए है और यह ईश्वर की रब्बानियत का विभाग है।

www.ksars.org

सृष्टि की संरचना दो प्रकारों और दो स्थितियों पर आधारित है। प्रथम - नफ़्स-ए-कुल्लियह या ज्ञान-ए-शय द्वितीय - नफ़्स-ए-जुज़वी या स्वयं शय। अर्थात् पहले ज्ञान-ए-शय, फिर शय, और उसके बाद पुनः ज्ञान-ए-शय है।

उदाहरण: जब हम गुलाब को देखते हैं तो पूर्ण विश्वास की सीमा तक यह समझते हैं कि गुलाब के ऊपर की पीढ़ियाँ (पूर्वज) मौजूद थीं। ये पीढ़ियाँ ज्ञान-ए-शय की हैसियत रखती हैं। यद्यपि वे माली के सामने मौजूद नहीं हैं और माली उन्हें देख भी नहीं सकता, लेकिन गुलाब का मौजूद होना उन ऊपरी पीढ़ियों के मौजूद होने की पूर्ण गवाही है। शय के बाद फिर ज्ञान-ए-शय आता है, अर्थात गुलाब के बाद गुलाब की आगामी पीढ़ियों का होना सुनिश्चित है, यद्यपि गुलाब की आगामी पीढ़ियाँ भी माली के सामने प्रकट नहीं हैं।

ज्ञान-ए-शय को शाश्वत स्थायित्व प्राप्त है और इसी का दूसरा नाम अदम है। ज्ञान-ए-तौहीद की शुरुआत यहीं से होती है। ज्ञान-ए-शय कभी नष्ट नहीं होता, केवल शय नष्ट होती है। जैसे गुलाब के पूर्वज और गुलाब की संतान। गुलाब स्वयं शय है और उसके पूर्वज व संतान ज्ञान-ए-शय हैं, और यही ज्ञान-ए-शय रब्बानियत की सत्ता है। केवल शय अर्थात गुलाब नष्ट होने वाली चीज़ है, लेकिन ज्ञान-ए-शय या रब्बानियत की सत्ता को हमेशगी प्राप्त है।

www.ksars.org

सुरक्षित पट्टिका का नियम

आत्मिक संचरण (तसर्फ़)

तज्ली प्रथम अवतरण करके नूर बनती है और नूर अवतरण करके रोशनी या प्रकट रूप बन जाती है। यही प्रकट रूप वस्तु है जो तज्ली और नूर की प्रतिमात्मक छवि (तसव्वुर) है। अन्य शब्दों में, तज्ली प्रथम अवतरण करके नूर बनी और नूर अवतरण करके वस्तु या प्रकट रूप बनी। प्रकट रूप तज्ली और नूर से उत्पन्न हुआ फिर नूर और तज्ली ही में लीन हो गया। और यदि ईश्वर चाहेगा तो इस अनुपस्थित को फिर उपस्थित कर देगा। आरिफ़ वस्तु के ज्ञान में ही आत्मिक संचरण (तसर्फ़) करता है जिसका प्रभाव वस्तु पर प्रत्यक्ष पड़ता है।

आत्मिक संचरण (तसर्फ़) की तीन प्रकारें हैं :

१. अलौकिक चमत्कार (मुअजिज़ा)
२. दिव्य सिद्धि (करामत)
३. प्रपंचमय ज्ञान (इस्तिदराज़)

यहाँ तीनों का भेद समझना आवश्यक है। इस्तिदराज़ वह ज्ञान है जो अआराफ़ की दुष्ट आत्माओं या शैतान-उपासक जिन्नों के प्रभाव में आदमी में विशेष कारणों से पोषित हो जाता है। इसकी एक मिसाल हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के काल में भी प्रस्तुत हुई है।

उस समय साफ़ इब्न सय्याद नाम का एक लड़का मदीने के क़रीब किसी बाग़ में रहता था। अवसर पाकर शैतान के शिष्य ने उसे वश में कर लिया और उसकी छठी इंद्रिय को जागृत कर दिया। वह चादर ओढ़कर आँखें बंद कर लेता और देवदूत की गतिविधियों को देखता और सुनता रहता। वह गतिविधियाँ जनता में बयान कर देता। जब हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उसकी ख्याति सुनी तो एक दिन हज़रत उमर फ़ारूक़ से कहा: “आओ, ज़रा इब्न सय्याद को देखें!”

उस समय वह मदीने के क़रीब एक लाल टीले पर खेल रहा था। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उससे पूछा – बता, मैं कौन हूँ।

वह रुका और सोचने लगा। फिर बोला – आप अमीयों (अनपढ़ जन) के रसूल हैं लेकिन आप कहते हैं कि मैं ईश्वर का रसूल हूँ।

www.ksars.org

हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कहा – तेरा ज्ञान अपूर्ण है, तू शक में पड़ गया। अच्छा बता, मेरे दिल में क्या है।

उसने कहा – दख़, अर्थात (ईमान न लाने वाला।) यानी आप मेरे विषय में यह मानते हैं कि मैं आस्था नहीं लाऊँगा।

हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कहा – फिर तेरा ज्ञान सीमित है। तू उन्नति नहीं कर सकता। तू यह भी नहीं जानता कि ऐसा क्यों है।

हज़रत उमर ने कहा – या रसूल अल्लाह, यदि आप अनुमति दें तो मैं इसकी गर्दन काट दूँ। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने कहा – "ऐ उमर, यदि यह दज्जाल है तो तुम उस पर क़ाबू नहीं पा सकोगे और यदि दज्जाल नहीं है तो इसका क़त्ल अतिरिक्त है। इसे छोड़ दो।" अदृश्य की दुनिया में शब्द और अर्थ कुछ नहीं होते। हर वस्तु आकार और रूप धारण करती है, चाहे वह वहम हो, ख़याल हो या अहसास। यदि किसी मनुष्य की छठी इंद्रिय जागृत हो तो उसके ज़ेहन में अदृश्य निगाह की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। हिब्रानी भाषा में नबी अदृश्य-दर्शी को कहते हैं और रसूल अदृश्य के दूत को। इसी कारण इब्न सय्याद हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के मरतबा-ए-रसूलियत को ठीक से समझ नहीं पाया। उसने केवल यह देखा कि हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम अदृश्य के दूत हैं और उसकी अदृश्य निगाह अपनी ही सीमा तक या उन जिन्नों की सीमा तक थी जो उसके साथी या शिक्षक थे। जब उसने हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को समझने की कोशिश की तो ईश्वरीय मारिफ़त न मिलने के कारण उसने हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को अदृश्य का रसूल कहा। उसकी अदृश्य निगाह केवल इतनी थी कि हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम एक अनपढ़ जनजाति में उत्पन्न हुए और उनके अलौकिक चमत्कार उसी अनपढ़ जनजाति में प्रकट हुए। इसी विचार के अंतर्गत उसने हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को अनपढ़ का रसूल कहा। जब हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने उसे इस्तिदराज़ज्ञान की सीमा में क़ैद देखा तो उससे पूछा – बता, मेरे दिल में क्या है। उसने उत्तर दिया – दख़। और जब हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने देखा कि इब्न सय्याद को मारिफ़त प्राप्त नहीं होगी तो आपने कहा – तू उन्नति नहीं कर सकता।

अत इब्न सय्याद की तरह किसी भी इस्तिदराज़ज्ञान वाले को ईश्वर की मारिफ़त प्राप्त नहीं हो सकती। इस्तिदराज़ज्ञान और नबूवत के ज्ञान में यही भेद है कि इस्तिदराज केवल अदृश्य-निगाह तक सीमित रहता है, जबकि नबूवत का ज्ञान मनुष्य को अदृश्य-निगाह की सीमाओं से निकालकर ईश्वर की मारिफ़त तक पहुँचा देता है।

www.ksars.org

नबूवत के ज्ञान के प्रभाव में जब कोई अलौकिक घटना (ख़ारिक-ए-आदत) नबी से प्रकट होती थी तो उसे अलौकिक चमत्कार कहा जाता था, और जब कोई ख़ारिक-ए-आदत वली से प्रकट होती है तो उसे दिव्य सिद्धि कहा जाता है, लेकिन यह भी नबूवत के ज्ञान के प्रभाव में ही होती है। अलौकिक चमत्कार और दिव्य सिद्धि का आत्मिक संचरण स्थायी होता है। स्थायी से अभिप्राय यह है कि जब तक आत्मिक संचरण का धारक संचरण स्वयं उसे न हटाए, वह नहीं हटेगी। लेकिन इस्तिदराज़ के प्रभाव में जो कुछ होता है वह स्थायी नहीं होता और उसका असर वातावरण के परिवर्तनों से स्वयं नष्ट हो जाता है। इस्तिदराज़ के प्रभाव में जो कुछ होता है उसे टोना कहा जाता है।

तज्ली की वह रोशनियाँ जो चेतना से भी परे है, उसी से सृष्टि की सभी मूल जड़ें जुड़ी हुई हैं। यह ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में सबसे सूक्ष्म केंद्र तक संचरण करती रहती है। यदि इस तज्ली को सूक्ष्मतम केंद्र से गुजरते समय कोई अप्रिय आदेश मिल जाए तो उसके भीतर महिमा की एक विशेष स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

इस्तिदराज़ के सिद्धांत सीमिततम केंद्र में कोई अप्रिय प्रभाव उत्पन्न कर देते हैं। इस अप्रिय प्रभाव के कारण तज्ली , जो कल्याण की वास्तविकता है, विरक्त हो जाती है और विरक्ति के परिणामस्वरूप कोई न कोई विध्वंसक प्रभाव प्रकट हो जाता है। जब कोई व्यक्ति सीमिततम केंद्र के खोल में किसी प्रकार की दुर्गंध या किसी प्रकार की अशुद्धि उत्पन्न कर लेता है तो उसकी शक्तियाँ विध्वंस और विघटन पर हावी हो जाती हैं। इसका कारण केवल यह होता है कि तज्ली ने उदासीनता अपना ली है और उसकी उदासीनता से कल्याण की प्रभावशीलताएँ निष्क्रिय हो गई हैं। सीमिततम केंद्र का खोल मानव शरीर है।

उदाहरण के लिए साधु अपने सीमिततम केंद्र के खोल अर्थात शरीर पर राख मलकर त्वचा के रोमकूपों को पूरी तरह बंद कर लेते हैं। परिणामस्वरूप उनके शरीर की आंतरिक दप्तियाँ, जिन्हें जीवन का सार कहना चाहिए, स्थूल होकर सूक्ष्म बन जाती हैं। यही दुर्गंध किसी दूसरे शरीर या अनेक शरीरों के सीमिततम केंद्रों की ओर बहने लगती है और वहाँ अपने प्रभाव उत्पन्न कर देती है, जिससे वे शरीर या शरीर समूह विध्वंसक गतिविधियों में संलग्न हो जाते हैं।

हर धर्म में उपासना के लिए स्नान या वज़ू का प्रबंध किया जाता है, जबकि उपासना का संबंध केवल ज़ेहन से है, शरीर से नहीं। स्नान और वज़ू का उद्देश्य प्रकृति को प्रसन्न कर एकाग्रता उत्पन्न करना है।

www.ksars.org

सिद्धांत: यहाँ यह समझना आवश्यक है कि हमारे कार्य और कर्म, जो शारीरिक अंगों से प्रकट होते हैं, कहाँ उत्पन्न होते हैं और उनकी उत्पत्ति किस प्रकार होती है। अब ज़रा सार की ओर ध्यान दीजिए। यह सार *शख़्स-ए-अकबर* का विशेष गुण है। और *शख़्स-ए-अकबर* सभी सृष्टियों की विभिन्न प्रकारों का समूह है, जिनमें से हम कई प्रकारों और सृष्टियों को जानते हैं – शेर, घोड़ा, शाहीन, तारे, चाँद, सूरज, धरती, आकाश, जिन्न, देवदूत, मनुष्य, हवा, पानी, चाँदी, सोना, रत्न, कंकड़-पत्थर, पहाड़, समुद्र, हरियाली और कीट-पतंगे। इन सब में से प्रत्येक एक प्रकार या सृष्टि है। उनकी प्रकार या प्रकृति ही उनकी सार है। इस सार का प्राकट्य सदैव एक ही ढंग पर होता है। जैसे शेर का एक रूप और एक विशेष प्रकृति होती है। उसकी आवाज़ भी विशिष्ट है। ये सब उसकी पूरी प्रकार को समेटे हुए हैं। इसी प्रकार मनुष्य भी विशेष रूप, विशेष आदतें और विशेष योग्यताएँ रखता है। परंतु ये दोनों प्रकार अपनी सार में एक-दूसरे से अलग हैं। किंतु मूल सार दोनों की एक है और दोनों में समान शारीरिक आवश्यकताएँ – स्नेह, दुख और क्रोध पाई जाती हैं। यह समानता प्रकार की सार में नहीं बल्कि मूल सार में है। यही मूल सार जीवन का वह केंद्र है जहाँ जीवन की सीमाओं में छोटे कीट की जीवन और चाँद-सूरज की जीवन एकत्र हो जाती है। इस सिद्धांत से हमें आत्मा के दो भागों का ज्ञान प्राप्त होता है – प्रत्येक प्रकार की विशिष्ट सार, और अन्य सभी प्रकारों की एकमात्र सार। यही एकमात्र सार *रूह-ए-अज़म* और *शख़्स-ए-अकबर* है। और प्रत्येक प्रकार की विशिष्ट सार *शख़्स-ए-असगर* है। और इसी *शख़्स-ए-असगर* के प्रकट रूपों को व्यक्ति कहा जाता है। उदाहरण के लिए, सभी मनुष्य *शख़्स-ए-असगर* की सीमाओं में एक ही सार हैं। प्रथम प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति व्यष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-असगर) की सीमाओं में, अर्थात् असगर सार के मंडल में, एक-दूसरे से परिचित होते हैं। द्वितीय प्रत्येक व्यक्ति सभी प्रकारों के व्यक्तियों से समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) की सीमाओं में, अर्थात् अकबर सार के मंडल में, परिचित है। शेर दूसरे शेर को शेर के रूप में व्यष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-असगर) की योग्यता से पहचानता है मगर वही शेर किसी आदमी को या नदी के पानी को या अपने रहने की धरती को या ठंड और गर्मी को समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) की योग्यता से पहचानता है। असगर सार की शक्ति एक शेर को दूसरे शेर के करीब ले आती है। लेकिन जब एक शेर को प्यास लगती है और वह पानी की तरफ़ झुकता है तो उसकी प्रकृति में यह गति अकबर सार की तरफ़ से होती है और वह केवल अकबर सार की बदौलत यानी समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) की वजह से यह बात समझता है कि पानी पीने से प्यास मिट जाती है।

www.ksars.org

आकर्षण "कशिश" का सिद्धांत

अतः सजीव या निर्जीव प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अकबर योग्यता ही सामाजिक जीवन की समझ रखती है। एक बकरी सूर्य की ऊष्मा को इसलिए अनुभव करती है कि वह और सूर्य समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) की सीमाओं में एक-दूसरे से संबद्ध रहते हैं। यदि कोई मनुष्य समष्टि-स्वरूप की सीमाओं में समझ और विवेक न रखता हो तो वह किसी दूसरी प्रकार के व्यक्तियों को न पहचान सकता और न ही उसका उपयोग जान सकता है। जब आदमी की आँख तारे को एक बार देख लेती है तो उसका स्मरण तारों की प्रकार को सदा-सदा के लिए अपने भीतर सुरक्षित कर लेता है। स्मरण को यह योग्यता समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) से प्राप्त होती है। परंतु जब कोई मनुष्य अपनी प्रकार के किसी मनुष्य को देखता है तो उसकी ओर एक आकर्षण अनुभव करता है। यह आकर्षण व्यष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-असगर) का विशेष गुण है। यहाँ से असगर सार और अकबर सार का विभाजन हो जाता है। अकबर सार को दूरस्थ आकर्षण कहा जाता है और असगर सार को समीपस्थ आकर्षण।

तज्ली की धारा सभी प्रकारों की सृष्टियों में दूरस्थ आकर्षण का परस्पर संबंध उत्पन्न करती है। यही तज्ली जब अवतरण करके नूर का रूप धारण करती है तो समीपस्थ आकर्षण बन जाती है। तृतीय स्तर पर जब यह तज्ली नूर से अवतरण करके रोशनी का रूप धारण करती है तो एक ही प्रकार के दो व्यक्तियों के बीच पारस्परिक आकर्षण को गति में ले आती है।

आध्यात्मिक लोक में अनैच्छिक गति का नाम आकर्षण है और ऐच्छिक गति का नाम कर्म है। सभी अनैच्छिक गतियाँ समष्टि-स्वरूप (शख्स-ए-अकबर) की इच्छा से घटित होती हैं, लेकिन व्यक्ति की सभी गतियाँ व्यक्ति की अपनी इच्छा से संपन्न होती हैं। जहाँ तक नहर-ए-तस्वीद, नहर-ए-तज्रीद और नहर-ए-तशहीद के गुण मानव-स्वरूप में गति करते हैं, वहाँ तक उसका स्थान सामाजिक और समष्टि-स्वरूप का स्थान है। परंतु जहाँ से नहर-ए-तज़हीर का गुण गति में आता है, वहाँ से मानव-स्वरूप का स्थान व्यक्तिगत हो जाता है।

नहर-ए-तस्वीद , नहर-ए-तज्रीद और नहर-ए-तशहीद की सीमाओं की गति में जब कोई अलौकिक घटना घटित होती है तो उसे दिव्य सिद्धि (करामत) कहा जाता है। और जब नहर-ए-तज़हीर की सीमाओं की गति में कोई अलौकिक घटना घटित होती है तो उसे इस्तिदराज़ कहा जाता है।

कुरआन पाक में ईश्वर ने कहा है: اللّٰہُ نُوْرُ السّمٰوٰتِ وَالْاَرْض इसका उल्लेख पहले आ चुका है। इसकी और व्याख्या यह है कि सभी उपस्थितियाँ एक ही मूल से उत्पन्न होती हैं, चाहे वे उपस्थितियाँ

www.ksars.org

ऊँचाई की हों या गहराई की। हम संरचना की क्रमबद्धता को निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट कर सकते हैं।

काँच का एक बहुत बड़ा ग्लोब है। इस ग्लोब के भीतर दूसरा ग्लोब है। इस दूसरे ग्लोब के भीतर एक तीसरा ग्लोब है। इस तीसरे ग्लोब में गति का प्रकट रूप होता है और यह गति रूप-आकृति, शरीर और भौतिकता के माध्यम से प्रकट होती है। पहला ग्लोब सूफ़ी भाषा में नहर-ए-तस्वीद या तज्ली कहलाता है। यह तज्ली अस्तित्वमान के प्रत्येक कण से क्षण-प्रतिक्षण गुजरती रहती है ताकि उसकी मूल सींची जाती रहे। दूसरा ग्लोब नहर-ए-तज्रीद या नूर कहलाता है। यह भी तज्ली की तरह क्षण-प्रतिक्षण ब्रह्मांड के प्रत्येक कण से गुजरता रहता है। तीसरा ग्लोब नहर-ए-तशहीद या तजल्लि का है। इसका कार्य जीवन को बनाए रखना है। चौथा ग्लोब नस्मा का है जो गैसों का समूह है। इसी नस्मा की भीड़ से भौतिक रूप-आकृति और प्रकट रूप (मज़हरात) बनते हैं। इंजील के भीतर इसी बात को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया गया है।

इंजील: आमाल, अध्याय संख्या 17, आयत 24 से 28

संख्या 1। आयत संख्या 24

जिस ईश्वर ने संसार और उसकी सभी वस्तुओं को उत्पन्न किया, वह आकाशों और धरती का स्वामी होकर मनुष्य के हाथों से बनाए हुए मंदिरों में नहीं रहता।

इस आयत में नहर-ए-तस्वीद और नहर-ए-तज्रीद का वर्णन है। प्रथम – ईश्वर की सृजन-शक्ति संपूर्ण ब्रह्मांड के प्रत्येक कण पर प्रभावी है। इसी शक्ति के प्रभाव को आध्यात्मिक भाषा में नहर-ए-तज्रीद या नूर कहा जाता है। ("संसार और उसकी सभी वस्तुओं को उत्पन्न किया" = नहर-ए-तस्वीद ,"आकाशों और धरती का स्वामी होकर"---- नहर-ए-तज्रीद)

न वह किसी वस्तु का मोहताज होकर आदमियों के हाथों से सेवा लेता है क्योंकि वही तो स्वयं सभी को जीवन, श्वास और सब कुछ प्रदान करता है।

(जीवन नहर-ए-तशहीद, सब कुछ नहर-ए-तज़हीर या नस्मा)

संख्या 3: नहर-ए-तशहीद या रोशनी, जिसे इंजील की भाषा में जीवन कहा गया है। इसकी दान-प्रणाली अनादि से अनंत तक जारी है।

संख्या 4: नहर-ए-तज़हीर की धारा जिसका दूसरा नाम नस्मा है, ब्रह्मांड के भौतिक पिंडों को सुरक्षित और सक्रिय रखती है।

www.ksars.org

अब हम नस्मा की योग्यताओं का वर्णन करेंगे। इस वर्णन के कुछ हिस्से इस्तिदराज़ के विशेष विवरण हैं। क़ुरआन पाक से यह तथ्य सिद्ध है कि अनादि से अनंत तक ईश्वर का आदेश लागू है और ईश्वर हर वस्तु पर व्याप्त है:

اَلَآ اِنَّـهُمْ فِىْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَـآءِ رَبِّـهِمْ ۗ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيْطٌ

(आयत 54, सूरा हाम सिजदा, पारा 25)

ईश्वर के आदेश की अवहेलना और ईश्वर के ज्ञान से किसी वस्तु का बाहर होना असंभव है। अन्य शब्दों में ईश्वर की ओर से एक रिकार्ड ज्ञान का है जो ईश्वर का गुण है और एक रिकार्ड ईश्वर का आदेश है जो ईश्वर की आत्मिक अनुभूति (मारिफ़त) है।

ईश्वर की आत्मिक अनुभूति (मारिफ़त) प्राचीन है। वह ईश्वर की भाँति सदैव और सदैव स्थिर रहेगी।[1]

अतः ये दोनों अभिलेख (रिकार्ड) ईश्वर की ज्ञान-गुण (सिफ़त-ए-इल्म) और आदेश-गुण (सिफ़त-ए-हुक्म) में उपस्थित हैं। ज्ञान-गुण को इल्म-उल-क़लम और आदेश-गुण को सुरक्षित पट्टिका (लौह-ए-महफ़ूज़) कहा जाता है। ये दोनों अभिलेख ऐसी अदृश्य (ग़ैब) की दुनिया का संकेत देते हैं जिससे हमारी दुनिया की शुरुआत होती है। सुरक्षित पट्टिका (लौह-ए-महफ़ूज़) के सभी आदेश तमसुल के रूप में अदृश्य लोक (आलम-ए-ग़ैब) में उपस्थित हैं और ये आदेश ईश्वर के ज्ञान के अनुसार विस्तारपूर्वक लोक-ए-नासूत (आलम-ए-नासूत) अर्थात् इस भौतिक दुनिया में अवतरित होते हैं। ईश्वर ने क़ुरआन पाक में कहा है: “मैंने हर वस्तु को दो पहलुओं पर उत्पन्न किया है।” इस अवतरण का एक पहलू कार्य कराने वाले – अर्थात् उच्च देवदूत हैं और दूसरा पहलू कार्य करने वाली लोक-ए-नासूत (आलम-ए-नासूत) की सृष्टि है।

नहरों की सीमाएँ चार आलमों से संबोधित हैं।

नहर तसविद’ की सीमा आलम-ए-लाहूत है।

नहर-ए-तज्रीद की सीमाएँ आलम-ए-जबरूत हैं,

[1] (नोट): ईश्वर के ये चारों अधिकार (तसल्लुत) निरंतर और स्थायी हैं। इनमें से कोई भी अधिकार यदि विच्छेदित हो जाए तो ब्रह्मांड नष्ट हो जाएगा। चाहे वह अधिकार सृजन (ख़ालिक़ियत) का हो, स्वामित्व (मालिक़ियत) का हो, जीवन-दान का हो या सूक्ष्म वायु-समूह (नस्मा) का दान हो।

www.ksars.org

नहर-ए-तशहीद की सीमाएँ आलम-ए-मल्कूत और

नहर-ए-तज़हीर की सीमाएँ आलम-ए-नासूत हैं।

आलम-ए-लाहूत वह मंडल है जिसके भीतर इल्म-ए-इलाही ग़ैब के रूप में प्रतिष्ठित है। इस मंडल की तजल्लि में असंख्य मंडल ऐसे हैं जो सूक्ष्मतम बिंदु से वृत्ताकार रूप धारण कर विस्तार पाते हैं और सम्पूर्ण ब्रह्मांड को आवृत करते रहते हैं। तजल्लि का प्रत्येक बिंदु जब वृत्त बनता है तो पहले प्रत्येक बिंदु के वृत्त से विशाल होता है। तजल्लि के ये असंख्य वृत्त ब्रह्मांड की सभी मूलताओं की मूल हैं। हम इस ग़ैब का नाम 'बरतर-ओ-राए-शहूद' (ग़ैबुल-ग़ैब) रख सकते हैं। अवचेतन की मूल तजल्लि के इन्हीं मंडलों से सृष्टि की विभिन्न प्रकार की मूलताएँ बनती हैं। यदि समस्त अस्तित्वमान तत्वों की क्षमताएँ संचित कर ली जाएँ और हम उन क्षमताओं की सार को खोजना चाहें तो इस खोज की पराकाष्ठा पर हमें तजल्लि के मंडल मिलेंगे। परंतु उन मंडलों को केवल आत्मा की निगाह देख सकती है, जो सृष्टि की मूल है।

जब यह तजल्लि अपनी सीमा से अवतरण करती है तो ब्रह्मांड की प्रकारांतरों (अन्वाअ काएनात) की स्वरूपता – छवि बन जाती है।[2]

हम इसे सामान्य शब्दों में अवचेतन (ग़ैब) कह सकते हैं। तसव्वुफ़ में ऐसी स्वरूपता (माहियत) की सीमाओं का नाम नहर-ए-तज्रीद है। जब यह नेहर-मार्ग अपनी सीमाओं से अवतरण करता है तो चेतना बन जाता है। इसी चेतना-मंडल का नाम नहर-ए-तशहीद है। जब नहर-ए-तशहीद अपनी सीमाओं से अवतरण करता है तो यह अनुभव-जगत (आलम-ए-महसूस) की सीमाओं में प्रवेश करता है, जिसे भौतिक लोक (आलम-ए-नासूत) भी कहा जाता है। यही लोक गति (हरकत) का प्राकट्य है। इसी को तसव्वुफ़ की भाषा में मज़हर कहते हैं।

ज्ञान की दो प्रकारें हैं: प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म-ए-हुज़ूरी) अर्जित ज्ञान (इल्म-ए-हुसूली)

[2] होने से ईश्वर पर किसी कर्म (फ़अल) के प्रकट होने की ज़िम्मेदारी आरोपित नहीं होती, क्योंकि ईश्वर ने मनुष्य को बुराई या भलाई करने का अधिकार (इख़्तियार) दिया है।
इसकी पहली मिसाल हज़रत आदम (अ.स.) के लिए निषिद्ध वृक्ष (शजर-ए-ममनूआ) के समीप जाने की मनाही थी। इसका अर्थ यह हुआ कि ईश्वर ने मनाही करने से पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को यह अधिकार दे दिया था कि वे उस निषिद्ध वृक्ष के समीप जाएँ या न जाएँ।
स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में बुराई और भलाई का स्रष्टा (ख़ालिक़) होना ईश्वर का गुण (सिफ़त) है, लेकिन बुराई करना या न करना मनुष्य का अपना अधिकार (इख़्तियार) है।

www.ksars.org

प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म-ए-हुज़ूरी) की दो प्रकारें हैं: ग़ैब-उल-ग़ैब और ग़ैब – (इल्म-उल-क़लम और इल्म-उल-लौह)

अर्जित ज्ञान (इल्म-ए-हुसूली) की भी दो प्रकारें हैं: चेतना का ज्ञान (इल्म-ए-शऊर) अनुभव का ज्ञान (इल्म-ए-अहसास)

'इल्म-ए-हुज़ूरी' ब्रहमांड के गुणात्मक अनुभूति का समुच्चय है। 'इल्म-ए-हुज़ूरी' आत्मा की जागृति से प्राप्त होता है।

'इल्म-ए-हुसूली' यद्यपि केवल आत्मा की प्रेरणाओं का परिणाम है, परन्तु उसका प्रकटिकरण शरीर के माध्यम से होता है।

दार्शनिक विद्वानों एक ज्ञानी सूफ़ी साधक (आरिफ़) मज़हर अर्थात् भौतिक लोक (आलम-ए-नासूत) से आरोहण करता हुआ सीढ़ी-दर-सीढ़ी देव-लोक (आलम-ए-मल्कूत), शक्ति (जबरूत) और ईश्वरलोक (लाहूत) तक पहुँच जाता है। यह उन्नति शारीरिक प्रयत्नों का परिणाम नहीं होती। इस मार्ग में केवल आत्मा के प्रयत्न ही काम देते हैं।

मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम तक जितने भी शास्त्र अवतरित हुए हैं उनमें इस तथ्य की पूर्ण व्याख्या की गई है। यूनानी दर्शन ने भी इन्हीं शास्त्रों से लाभ उठाया है, यद्यपि यह लाभ उन्हें केवल नबियों के शिष्यों द्वारा पहुँचा; किन्तु उनकी अपनी बुद्धि की क्रीड़ा ने इसे और अधिक उलझा दिया और ऐसी परिवर्तित विकृतियाँ उत्पन्न कीं जिनसे उनके शिष्य भ्रामक मार्ग पर पड़ गए। इन यूनानी दार्शनिकों के अतिरिक्त अन्य देशों के दार्शनिक भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूर्व इन विकृतियों में सहभागी थे। दर्शन-शिक्षा का यह विशेष काल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति के बाद और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की उत्पत्ति से पूर्व का है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम और उनके बाद आने वाले नबियों की शिक्षाओं में जिस स्व-अहं (अना) की व्याख्या की गई है, उसी स्व-अहं को दार्शनिकों के प्रयासों ने न केवल अस्पष्ट किया बल्कि निरर्थक बना दिया। विशेषतः तीसरी, चौथी और पाँचवीं हिजरी शताब्दी में इस्लामी विद्वान यूनानी दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुए। उनकी विचारधारा बुद्धि की ऐसी राहों पर अग्रसर दिखाई देती है जो दर्शन ने निकाली थीं। वास्तव में इस प्रकार के छलपूर्ण विद्वान उस आत्मिक अनुभूति (मारिफ़त) से दूर हो चुके थे जो हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम से सहाबा-ए-कराम, ताबेईन और ताबे-ताबेईन तक पहुँची थी। जिस स्व-अहं (अना) का हमने उल्लेख किया है, क़ुरआन पाक में अनेक स्थानों पर उसकी ओर संकेत

www.ksars.org

मिलता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के ज़ेहन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि “मेरा रब कौन है? कहाँ है?” और इस जिज्ञासा में उनका ज़ेहन तारे, चाँद और सूर्य की ओर स्थानांतरित होता है। क़ुरआन पाक की आयत...

وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ ﴿٧٥﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ
هَـٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ ﴿٧٦﴾ فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَـٰذَا رَبِّي ۖ فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ
يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ﴿٧٧﴾ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَـٰذَا رَبِّي هَـٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا
قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٧٨﴾ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ
﴿٧٩﴾ وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ ۚ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّـهِ وَقَدْ هَدَانِ ۚ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا ۗ
وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۗ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٨٠﴾ وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّـهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا ۚ فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۖ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ
أُولَـٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾ وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

अनुवाद (सूरा अनआम, आयत 76-84, पारा 7):

और इसी प्रकार हमने इब्राहीम को आकाशों और पृथ्वी की सृष्टियों का दर्शन कराया ताकि वे आरिफ़ हो जाएँ और पूर्ण विश्वास (यक़ीन) करने वालों में सम्मिलित हो जाएँ। फिर जब रात्रि का अंधकार उन पर छा गया तो उन्होंने एक तारा देखा। कहा – “यह मेरा प्रभु है।” परन्तु जब वह अस्त हो गया तो कहा – “मैं अस्त हो जाने वालों से प्रेम नहीं रखता।” फिर जब उन्होंने चन्द्रमा को प्रकाशित देखा तो कहा – “यह मेरा प्रभु है।” परन्तु जब वह भी अस्त हो गया तो कहा – “यदि मेरा प्रभु मुझे निरंतर मार्गदर्शन न करता रहे तो मैं भी अवश्य ही पथभ्रष्ट जनों में सम्मिलित हो जाऊँ।” फिर जब उन्होंने सूर्य को प्रकाशमान देखा तो कहा – “यह मेरा प्रभु है, यह सबसे महान है।” परन्तु जब वह भी अस्त हो गया तो कहा – “ऐ मेरी क़ौम! निश्चय ही मैं तुम्हारे शिर्क से विमुख हूँ। मैं अपना मुख उसकी ओर करता हूँ जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया, और मैं शिर्क करने वालों में नहीं हूँ।” और उनकी क़ौम ने उनसे वाद-विवाद करना आरम्भ किया। उन्होंने कहा – “क्या तुम अल्लाह के विषय में मुझसे वाद-विवाद करते हो, जबकि उसी ने मुझे मार्ग प्रदान किया है? और मैं उन वस्तुओं से नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का साझी ठहराते हो। हाँ, यदि मेरा पालनहार कोई आदेश (अमर) चाहता हो, तो वही होगा। मेरा पालनहार हर वस्तु को अपने ज्ञान के घेरे में लिए हुए है। क्या तुम ध्यान नहीं करते?” “और मैं उन वस्तुओं से कैसे भय करूँ जिन्हें तुमने अल्लाह का साझी बनाया है, जबकि तुम उस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी चीज़ों को साझी ठहराया है जिन पर अल्लाह ने कोई प्रमाण अवतरित नहीं किया? तो दोनों दलों में से शांति का अधिक अधिकारी कौन है, यदि तुम

www.ksars.org

जानते हो? वे लोग जो आस्था (ईमान) रखते हैं और अपनी आस्था को शिर्क के साथ मिश्रित नहीं करते – उन्हीं के लिए शांति है और वही मार्गदर्शन पर चल रहे हैं।” “और यही हमारी दैवी तर्क थी जो हमने इब्राहीम को उनकी क़ौम के मुकाबले में दी थी। हम जिसे चाहते हैं, पद में ऊँचा उठा देते हैं। निश्चय ही आपका प्रभु बड़ा ज्ञानवान और बड़ा तत्वदर्शी है।”

(सूरह अन्आम — आयत 76 से 84 – पारा 7)

किन्तु जब वे चन्द्रमा और सूर्य को अपनी आँखों से ओझल होते देखते हैं तो कहते हैं – “मैं छिपने वालों को अपना मित्र नहीं रखता।” इसका अर्थ यह है कि प्रभु (रब) का निषेध असम्भव है। प्रभु वह है जिसका मनुष्य के अंतःकरण (ज़मीर) से पृथक होना कदापि सम्भव नहीं। ग़ैर-प्रभु वह है जिसका मनुष्य के अंतःकरण से पृथक होना सम्भव है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम के इस कथन से स्व-अहं (अना) की व्याख्या हो जाती है। इसी स्व-अहं (अना) को हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने स्वरूप (नफ़्स) कहा है और ईश्वर ने इसे हबल-उल-वरिद (जीवनी-रेखा) कहा है। यही वह मानवीय स्वरूप (ज़ात-ए-इंसानी) या स्व-अहं (अना/ज़मीर) है जिससे उसका प्रभु अलग नहीं हो सकता। और यही आत्मिक अनुभूति (मारिफ़त-ए-इलाही) का पहला चरण है। यदि स्व-अहं (अना) अपने प्रभु को स्वयं से अलग समझे तो वह आत्मिक अनुभूति (मारिफ़त-ए-इलाही) से वंचित है।

दुनिया का प्रत्येक मनुष्य जानता है कि जीवन की नवीनीकरण (तजदीद) प्रत्येक क्षण होता रहता है। इस नवीनीकरण के प्रकट भौतिक साधन वायु, जल और आहार हैं। किन्तु मनुष्य-शरीर पर एक अवस्था ऐसी भी आती है जब वायु, जल और आहार जीवन का नवीनीकरण नहीं कर सकते। भौतिक लोक (मादी दुनिया) में ऐसी स्थिति को मृत्यु कहा जाता है। जब मृत्यु आ जाती है तो किसी प्रकार की वायु, किसी प्रकार का जल और किसी प्रकार का आहार मनुष्य के जीवन को पुनः स्थापित नहीं कर सकता।

यदि वायु, जल और आहार ही मानवीय जीवन का कारण होते तो किसी मृत शरीर को इन वस्तुओं के माध्यम से पुनर्जीवित करना असम्भव न होता। अब यह सत्य प्रकट हो जाता है कि मानवीय जीवन का कारण वायु, जल और आहार नहीं है बल्कि कुछ और है। उस कारण की व्याख्या भी क़ुरआन पाक के इन शब्दों से होती है: …

سُبْحٰنَ الَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّاتُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّالَايَعْلَمُوْنَ

(सूरा या-सीन, आयत 36):

www.ksars.org

"पवित्र है वह सत्ता जिसने सब वस्तुओं को द्‌वैत स्वरूप पर उत्पन्न किया।"

इस आयत की प्रकाशना में जीवन के कारणों में एक ओर चेतन कारण हैं और दूसरी ओर अवचेतन कारण। एक कारण ग़ैर-प्रभु (ग़ैर-रब) का निषेध है, जो जीवन को बनाए रखने के लिए अविभाज्य अंश (जुज़्व-ए-आज़म) है। मनुष्य, समष्टि-स्वरूप (शख़्स-ए-अकबर) की इच्छा (इरादा) के अधीन इस आदेश का पालन करने पर विवश है। जब हम आदमी के समूचे जीवन का विश्लेषण करते हैं तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि मानवीय जीवन का आधा भाग अवचेतन के अधीन और आधा चेतन के अधीन है। जन्म के पश्चात मानवीय आयु का एक अंश पूर्णतः अचेतन अवस्था में व्यतीत होता है। फिर यदि हम सम्पूर्ण जीवन में निद्रा (नींद) के अवकाश को गिनें तो वह आयु का एक तिहाई से भी अधिक होता है। यदि अचेतन आयु और निद्रा के अवकाश को एक साथ जोड़ा जाए तो वे आयु का आधा भाग होंगे। यही वह आधा है जिसे मनुष्य अवचेतन के अधीन जीता है। ऐसा कोई मनुष्य उत्पन्न नहीं हुआ जिसने ईश्वर (क़ुदरत) के इस नियम को तोड़ दिया हो। चुनाँचे हम जीवन के दो हिस्सों को अवचेतन जीवन और चेतन जीवन के नाम से जानते हैं। यही जीवन की दो प्रकारें हैं। अवचेतन जीवन का भाग अनिवार्यतः ग़ैर-प्रभु का निषेध करता है और उस निषेध का परिणाम उसे अनैच्छिक रूप से शारीरिक जागृति के रूप में प्राप्त होता है। अब यदि कोई व्यक्ति अवचेतन के अधीन जीवन के अवकाशों में वृद्‌धि कर दे तो उसे आत्मिक जागृति (रूहानी बिदारी) प्राप्त हो सकती है। इसी सिद्‌धान्त को क़ुरआन पाक ने सूरा मज़म्मिल में व्यक्त किया है।

हे वस्त्रों में लिपटने वाले! रात को नमाज़ में खड़े रहा करो – किन्तु थोड़ी रात; अर्थात् आधी रात (जिसमें विश्राम करो) या आधे से कुछ कम, अथवा आधे से कुछ अधिक। और क़ुरआन को भली प्रकार स्पष्ट पढ़ो – (एक-एक अक्षर को पृथक करके)। निश्चय ही हम तुम पर एक भारी वचन उतारने वाले हैं। निस्संदेह रात का उठना दिल और ज़बान का उत्तम सामंजस्य लाता है और बात भली प्रकार सीधी निकलती है। निस्संदेह तुम्हें दिन में बहुत से कार्य रहते हैं (सांसारिक भी और धार्मिक भी)। और अपने प्रभु का नाम स्मरण करते रहो और सब से कटकर केवल उसी की ओर ध्यान लगाओ। वही पूर्व और पश्चिम का स्वामी है, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं।"

(सूरा मज़म्मिल, आयतें 1-9)

उपरोक्त आयतों की रोशनी में जिस प्रकार शारीरिक ऊर्जा के लिए मनुष्य अवचेतन रूप से ग़ैर-प्रभु का निषेध करने का बाध्य है, उसी प्रकार आत्मिक जागृति के लिए चेतन रूप से ग़ैर-प्रभु का निषेध करना अनिवार्य है। सूरा मज़म्मिल की इन आयतों में ईश्वर ने यही नियम स्पष्ट किया

www.ksars.org

है: जिस प्रकार अवचेतन रूप से ग़ैर-प्रभु का निषेध करने से शारीरिक जीवन निर्मित होता है, उसी प्रकार चेतन रूप से ग़ैर-प्रभु का निषेध करने से आत्मिक जीवन प्राप्त होता है।

जिस वस्तु को उपरोक्त अनुच्छेद में अवचेतन कहा गया है, और जिसे हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने स्वरूप (नफ़्स) कहा, और क़ुरआन पाक ने हबल-उल-वरिद (जीवनी-रेखा) कहा, उसी को तसव्वुफ़ की भाषा में स्व-अहं (अना) कहा जाता है। जब ग़ैर-प्रभु का निषेध किया जाता है और स्व-अहं (अना) का चेतन शेष रहता है, तो यही स्व-अहं (अना) अपने प्रभु की ओर आरोहण करता है। जब यह स्व-अहं (अना) आरोहण करके दैवी गुण (सिफ़त-ए-इलाही / समष्टि-स्वरूप) में लीन हो जाता है तो दैवी गुण के साथ सम्बद्ध होकर गति करता है। स्व-अहं (अना) के दैवी गुण में लीन हो जाने की अनेक अवस्थाएँ हैं। पहली अवस्था है – आस्था (ईमान) लाना। इस आस्था के विषय में क़ुरआन पाक ने अपनी प्रारम्भिक आयत में शर्तें निर्धारित कर दी हैं।

المٓoذٰلِکَ الْکِتٰبُ لَارَیْبَ فِیْہِ ھُدًی لِّلْمُتَّقِیْنَoالَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ

अनुवाद: (सूरा अल-बक़रह): "यह ईश्वर की पुस्तक है, जिसमें कोई संदेह नहीं; यह मार्ग-दर्शन करने वाली है ईश्वर से डरने वालों के लिए। ऐसे लोग वे हैं जो अदृश्य (ग़ैब) पर आस्था (ईमान) रखते हैं।"

क़ानून: अदृश्य लोक से परिचित होने के लिए अदृश्य लोक पर आस्था रखना आवश्यक है। उपरोक्त आयत में सुरक्षित पट्टिका (लौह-ए-महफ़ूज़) का यही नियम व्यक्त हुआ है। मानव-प्रकार अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इस नियम पर अमल करता है। यह दिन-रात के अनुभव और अवलोकन हैं। जब तक हम किसी वस्तु की ओर आस्था के साथ उन्मुख नहीं होते, हम न तो उसे देख सकते हैं और न समझ सकते हैं। यदि हम किसी वृक्ष की ओर निगाह उठाते हैं तो उस वृक्ष की संरचना, पत्तियाँ, पुष्प, रंग सब कुछ हमारी आँखों के सम्मुख आ जाता है; किन्तु पहले हमें नियम की शर्त पूरी करनी पड़ती है – अर्थात् पहले हमें इस बात पर आस्था रखनी होती है कि हमारी आँखों के सामने एक वृक्ष है। उस आस्था के कारण कुछ भी हों, तथापि अपने बोध (इद्राक) में उस वृक्ष को, जो हमारी आँखों के सामने उपस्थित है, एक स्थायी सत्य मानने के बाद ही हम उसके पुष्प, पत्ते, संरचना और रूप-रंग को देख सकते हैं। यदि हमारे ज़ेहन में वृक्ष का विचार ही न हो, तो फिर उसकी व्याख्या करना हमारी निगाह (बसारत) के लिए असम्भव है, क्योंकि निगाह स्वयं आस्था की पुष्टि करती है।

www.ksars.org

हमारी दैनंदिन जीवन में यही क़ानून प्रवाहित और सक्रिय है। जब हम एक नगर से दूसरे नगर की ओर यात्रा करते हैं तो हमें इस बात का विश्वास होता है कि जिस नगर की ओर हम जा रहे हैं वह अस्तित्व में है, यद्यपि उस नगर को हमने देखा न हो। सुरक्षित पट्टिका का यही वह क़ानून है जो भौतिक दुनिया और आत्मिक दुनिया दोनों में समान रूप से लागू है। शिशु की शिक्षा-प्रशिक्षण का सारा आधार इसी क़ानून पर है। प्रत्येक शिशु बताई हुई बात को सत्य मानकर लाभ प्राप्त करता है।

अब हम स्व-अहं (अना) के अवतरण और आरोहण की थोड़ी व्याख्या करते हैं। स्व-अहं या मानवीय स्वरूप या नफ़्स जिसे आत्मा भी कहते हैं, रोशनी का ऐसा ही सूक्ष्म तत्व है जो एक ओर अपनी मूल के साथ और दूसरी ओर अपनी प्रकार के साथ सम्बद्ध है। इसकी मूल दैवी गुणों का वह समुच्चय है जिसके माध्यम से समस्त ब्रह्मांड की इंद्रियाँ एक सूत्र में बँधी हुई हैं। मानो रोशनी का एक सूक्ष्म सागर है जिसकी समतल पर ब्रह्मांड की सभी आकृतियाँ और रूप उभरते हैं और उनमें से प्रत्येक आकृति और रूप अपने कार्यों और प्रयोजनों को पूरा कर पुनः सागर में विलीन हो जाती है। प्रत्येक प्रकार की किसी एक आकृति या रूप का नाम व्यक्ति (फ़र्द) है। इस व्यक्ति का अनुभव दो अंशों से मिश्रित है। यह अनुभव सागर की गहराई से अपना सफ़र प्रारम्भ कर समतल तक पहुँचता है। समतल पर उभरने के बाद व्यक्ति का गुप्त अनुभव चेतना बन जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति से जो क्रियाएँ प्रकट होती हैं वे सभी चेतन क्रियाएँ कहलाती हैं। यही उसकी बाह्य जीवन है।

किन्तु व्यक्ति का गुप्त अनुभव उसका अवचेतन है। वास्तव में यह अवचेतन सागर की सभी बूँदों के गुप्त अनुभवों का समुच्चय है। दूसरे शब्दों में इसे सागर का सामूहिक चेतन कहा जाना चाहिए। सागर का सामूहिक चेतन ही व्यक्ति का अवचेतन होता है। इसी प्रकार समस्त व्यक्ति जो सागर की गहराई से उभरकर समतल पर आते हैं, वे सब एक गुप्त चेतन के सूत्र में बँधे हुए हैं। जब सागर में इस चेतन की डोर हिलती है तो समतल पर उभरने वाले सभी व्यक्ति स्वयं को एक-दूसरे से परिचित और आत्मीय अनुभव करते हैं। जब एक आदमी सूर्य को देखता है तो उसे ऐसा अनुभव होता है कि सूर्य भी मेरी भाँति इस ब्रह्मांड का एक व्यक्ति और एक अंग है। वहाँ उसके ज़ेहन की समतल पर उसकी हस्ती और सूर्य की हस्ती का समान अनुभव होता है, यद्यपि एक आदमी की प्रकार सूर्य की प्रकार से पूर्णतः भिन्न है। इसी सम्बन्ध और परिचय को तसव्वुफ़ में निस्बत संबंध कहा जाता है। यह निस्बत वही गुप्त अनुभव है जो सागर की गहराई में प्रत्येक प्रकार के प्रत्येक व्यक्ति को व्यापता है। इसी कारण ब्रह्मांड का प्रत्येक कण ब्रह्मांड के समान्य गुणों का स्वामी है। मनुष्य का स्व-अहं अपने चेतन में इसी गुप्त अनुभव या निस्बत

www.ksars.org

के माध्यम से धीरे-धीरे अपने प्रयत्नों द्वारा ब्रह्मांड के विभिन्न गुणों से परिचित हो लेता है। गुप्त रूप से तो मनुष्य का स्व-अहं ब्रह्मांड के समान्य गुणों से पहले ही परिचित होता है, किन्तु वह अपने प्रयत्नों के द्वारा धीरे-धीरे इस गुप्त अनुभव को अपने चेतन में स्थानांतरित कर लेता है। अब उसमें यह योग्यता उत्पन्न हो जाती है कि सागर के भीतर ब्रह्मांड के समान्य गुणों में जो प्रेरणाएँ होती हैं उन्हें अनुभव करता और देख लेता है। जब सागर के भीतर या अदृश्य में गति होती है तो व्यक्ति को उसका पूर्ण ज्ञान होता है। क़ुरआन पाक में ईश्वर ने इसका वही क़ानून स्पष्ट किया है जिसका उल्लेख पहले आ चुका है।

“हमने सब वस्तुओं को दो प्रकारों पर उत्पन्न किया है।”

दो प्रकार या दो पक्ष मिलकर अस्तित्व होते हैं। उदाहरण के लिए, प्यास, वस्तु का एक पक्ष है और जल दूसरा पक्ष। प्यास आत्मा की आकृति है और जल शरीर की आकृति – अर्थात् अनुपालन (उमत्साल) के दो पक्ष हैं: एक आत्मा, दूसरा शरीर। वे दोनों एक-दूसरे से पृथक नहीं हो सकते। यदि संसार से प्यास का अनुभव लुप्त हो जाए तो जल भी लुप्त हो जाएगा। सूफ़ी भाषा में आत्मा वाले पक्ष को तम्स्सुल कहा जाता है और भौतिक पक्ष को शरीर कहा जाता है। यदि संसार में कोई महामारी उत्पन्न हो तो यह निश्चित है कि उसकी औषधि पहले से विद्यमान है। इसी प्रकार महामारी और उसकी औषधि दोनों मिलकर एक अनुपालन (उमत्साल) कहलाएँगे।

क़ानून: किसी वस्तु की अर्थवत्ता, माहियत या आत्मा को इल्म-ए-शै कहा जाता है और उसका शारीरिक प्रसार या प्रकट रूप को शै कहा जाता है। यदि किसी प्रकार आत्मा का प्रमाण हो जाए तो वस्तु का अस्तित्व होना निश्चित है।

जिस समय हम उष्णता अनुभव करते हैं उस समय हमारे अनुभव के आंतरिक पक्ष में निरंतर शीत का अनुभव सक्रिय रहता है। जब तक आंतरिक रूप से शीत का यह अनुभव शेष रहता है, हम बाह्य रूप से उष्णता अनुभव करते हैं। अर्थात् अवचेतन में शीत का अनुभव और चेतन में उष्णता का अनुभव दोनों मिलकर एक अनुपालन (उमत्साल) हैं। अत एक पक्ष इल्म-ए-शै और दूसरा पक्ष शै होता है। यदि कहीं इल्म-ए-शै का पता मिल जाए तो फिर वस्तु का अस्तित्व में आना अनिवार्य है। यदि किसी की प्रकृति कुनैन (Quinine) की ओर आकर्षित होने लगे तो अवश्य ही उसके भीतर मलेरिया (Malaria) विद्यमान है। उसका होना अनिवार्य है क्योंकि कुनैन की ओर आकर्षण इल्म-ए-शै है और मलेरिया शै है।

www.ksars.org

अना या मानवीय ज़ेहन की संरचना

जब हम किसी वस्तु की ओर देखते हैं तो चिकित्सा-विज्ञान की शोध के अनुसार उस वस्तु से निकलने वाली रोशनियाँ नेत्रों के द्वारा मस्तिष्क के सूचनात्मक भंडार तक पहुँचती हैं। हम इस प्रक्रिया को देखना कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह हमारा आंतरिक ज्ञान है। इस आंतरिक ज्ञान के अनेक अवयव हैं जिन्हें बासिरा या बासिरा के अतिरिक्त अन्य इंद्रियों का नाम दिया जाता है और यही इंद्रियाँ अवलोकन का साधन बनती हैं। ये अवलोकन विचार से आरम्भ होकर देखना, सुनना, चखना, सूँघना और छूने पर पूर्ण होते हैं। अवलोकनों में किसी शारीरिक गति का हस्तक्षेप नहीं होता। ये केवल अना की प्रेरणाएँ हैं। अवलोकनों में भौतिक अंग निष्क्रिय रहते हैं। वस्तुतः जीवन अना की प्रेरणाओं का नाम है। अना के ही शरीर को रूपात्मक आत्मा (रूह-ए-मिसाली) कहा जाता है। यही शरीर स्वप्न में चलता-फिरता और समस्त कार्य करता है। यह जिस्म-ए-अना स्थूल (ख़ाक़ी) शरीर के साथ भी गति करता है और बिना स्थूल शरीर के भी।

कर्मों की दो प्रकारें हैं:

एक प्रकार उन कर्मों का है जो बिना स्थूल शरीर के संपन्न होते हैं जैसे स्वप्न के कर्म। दूसरे प्रकार के कर्म वे हैं जो हम जाग्रति में स्थूल शरीर के साथ संपन्न करते हैं। इन कर्मों का आरम्भ भी मानसिक प्रेरणाओं से होता है। बिना ज़ेहन की दिशा-निर्देशना के स्थूल शरीर अत्यल्प भी गति नहीं कर सकता। अर्थात् आंतरिक प्रेरणाएँ ही जीवन के वास्तविक कर्म हैं।

अब हम अना की सक्रियता (फ़ा'इलियत) का विश्लेषण करते हैं।

ज़ैद ने महमूद को देखा। ज़ैद एक "अना" है। वह केवल अपनी अना की सीमा में देख सकता है। वह अपनी अना की सीमा से बाहर क़दम नहीं रख सकता। गोया उसने महमूद को अपनी ही अस्तित्व-सीमा में देखा है। अनुभवों की भाषा में यूँ कहा जाएगा कि ज़ैद की अना ने स्वयं को महमूद बनकर देखा है क्योंकि ज़ैद महमूद की सीमा में और महमूद ज़ैद की सीमा में क़दम नहीं रख सकता। यदि ज़ैद महमूद की सीमा में क़दम रख सकता तो उसका नाम ज़ैद न रहता बल्कि महमूद बन जाता और उसकी अपनी अना नष्ट हो जाती। देखने की क्रिया जिन सीमाओं में घटित हुई, वे सीमाएँ केवल ज़ैद की अना से जुड़ी हुई हैं। वस्तुतः हर अना में ब्रह्मांड की सभी अनाएँ मौजूद हैं और हर अना एक स्वतंत्र व्यष्टि-स्वरूप की हैसियत भी रखती है।

अना की विश्लेषण "तहलील"

ख़ाकी (भौतिक) लोक के साथ एक दूसरी दुनिया भी आबाद है। यह दूसरी दुनिया धर्म की भाषा में सीमांत लोक (आराफ़) या बरज़ख़ कहलाती है। इस

www.ksars.org

लोक में जीवन-भर मनुष्य का आना-जाना होता रहता है। इस आने-जाने के बारे में अनेक सच्चाइयाँ मनुष्य की निगाह से छुपी रहती हैं, लेकिन यह आवागमन ग़फ़लत की अवस्था में घटित होता है। जब मनुष्य सो जाता है तो ख़ाकी लोक मलकोती लोक में परिवर्तित हो जाता है। वहाँ वह चलता-फिरता, खाता-पीता और वे सभी कार्य करता है जो जाग्रत अवस्था में कर सकता है। मनुष्यों ने इसका नाम स्वप्न रखा है, लेकिन कभी इस सत्य पर विचार करने का प्रयास नहीं किया कि स्वप्न भी जीवन का एक अंश है।

इस स्थान पर ब्रहमांड की संरचना का संक्षिप्त उल्लेख कर देना आवश्यक है। सामान्य परिभाषा में जिसे जड़ पदार्थ कहा जाता है, वही जीवन का प्रारम्भिक हैयूला है।

ब्रहमांड की संरचना ब्रहमांड की संरचना में नस्मा सूक्ष्म (नज़र न आने वाली रोशनी) की तरह हर वस्तु का आवरण किए हुए है। आवरण करने से आशय है कि प्रत्येक सकारात्मक और नकारात्मक जीवन की बिसात में नस्मा व्याप्त है। अर्थात् प्रत्येक वस्तु के लघुतम और अचिह्न अंश अविभाज्य अंश की नींव दो प्रकारों पर आधारित है–एक उसकी नकारात्मकता और दूसरी उसकी सकारात्मकता। इन्हीं दोनों क्षमताओं की संयुक्तता का नाम नस्मा है।

हम सामान्य वार्ता में शब्द 'प्यास' का प्रयोग करते हैं, किन्तु इस शब्द के जो अर्थ समझे जाते हैं वे वास्तविक नहीं हैं। वास्तव में प्यास और जल दोनों मिलकर एक अस्तित्व बनाते हैं। नकारात्मकता प्यास है, सकारात्मकता जल है। स्पष्ट रूप से कहना चाहिए कि प्यास आत्मा है और जल शरीर है। प्यास एक पक्ष है और जल दूसरा पक्ष। यद्यपि ये दोनों पक्ष परस्पर विरोधी हैं, तथापि ये एक ही अस्तित्व के दो अंश हैं। प्यास से जल को और जल से प्यास को अलग नहीं किया जा सकता। जब तक संसार में प्यास विद्यमान है, जल भी विद्यमान है। अर्थात् प्यास का होना जल के अस्तित्व का उज्ज्वल प्रमाण है और जल का होना प्यास के अस्तित्व का उज्ज्वल प्रमाण है। आध्यात्मिक विज्ञान में ये दोनों मिलकर एक अस्तित्व हैं, परन्तु इनकी संबद्धता ऐसी नहीं है जैसी एक पन्ने के दो पृष्ठों की होती है। एक पन्ने के दो पृष्ठ एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते, किन्तु प्यास और जल का अस्तित्व ऐसा पन्ना है जिसमें केवल स्थानिक दूरी है, कालिक दूरी नहीं है। इसके विपरीत, कागज़ के पन्ने में केवल कालिक दूरी है, स्थानिक दूरी नहीं है। वस्तुओं की संरचना में ईश्वर ने दो पक्ष रखे हैं। किसी वस्तु के दो पक्षों में या तो स्थानिक दूरी प्रमुख होती है या कालिक दूरी प्रमुख होती है।

www.ksars.org

एक मनुष्य पृथ्वी पर जन्म लेता है और प्रस्थान करता है—इन दोनों पक्षों के मध्य कालिक दूरी होती है। इस कालिक दूरी के रेखाचित्र ही उसका जीवन हैं, जो वस्तुतः कालिकता है।

प्रकट और आंतरिक ऊपर की विवेचना से यह ज्ञात होता है कि किसी वस्तु के जीवन का कालिक पक्ष आंतरिक और स्थानिक पक्ष प्रकट है। हम जिसे प्रकट कहते हैं, उसके सभी रेखाचित्र "स्थानिकता-जीवन" पर आधारित हैं, परंतु यह जिस बिसात पर स्थित हैं वह कालिकता है। बिना कालिकता की बिसात के ब्रह्मांड का कोई भी रेखाचित्र प्रकट नहीं हो सकता। जब यह स्पष्ट हो गया कि सभी प्रकटनों की बिसात कालिकता है, जिसे हम भौतिक नेत्रों से नहीं देख सकते, तो यह स्वीकार करना होगा कि सभी प्रकटनों की आधारशिलाएँ हमारी निगाह से अदृश्य हैं। सूफ़ी मत में कालिकता का दूसरा नाम नस्मा है। यह ऐसी रोशनी है जिसे किसी वस्तु के भीतर का खालीपन कहा जा सकता है। और यह खालीपन एक अस्तित्व रखता है। वास्तव में यह एक गति है जो अनादि से अनंत की ओर गतिमान है। इस यात्रा का प्रथम मंडल-ए-प्रवाहित "आलम-ए-मलाकूत-लोक देवदूत" है, जिसे नकारात्मक तत्त्वता का लोक कहा जा सकता है। हम पहले नस्मा-ए-मुफ़रद और नस्मा-ए-मुर्क़ब का उल्लेख कर चुके हैं। कालिकता की संरचना नस्मा-ए-मुफ़रद से होती है और कालिकता की संरचना नस्मा-ए-मुर्क़ब से। देवदूत, जिन्नात और उनके लोक वे रेखाचित्र हैं जो कालिकता की संरचना पर आधारित हैं, जबकि भौतिक लोक और उसके प्रकट स्वरूप कालिकता की संरचना का परिणाम हैं। अंतरिक्ष की एकहरी गति का नाम "काल" या नस्मा-ए-मुफ़रद है और दूरी की दोहरी गति का नाम "स्थान" या नस्मा-ए-मुर्क़ब है। प्रारंभ में अंतरिक्ष में जो अलक्षित गति घटित होती है वही त्रिविध उत्पत्ति "मवालिद-ए-शलासा" की मूल है। इस गति में जितनी तीव्रता बढ़ती है उतना ही नस्मा का जमाव भी बढ़ता है। यह जमाव दो स्तरों पर विभक्त होता है—एक स्तर "अयन" और दूसरा "स्थान"। अयन को "माहियत" और स्थान को "मज़हर" कहा जा सकता है। अयन गमनशील (नकारात्मक) है और स्थान आकर्षणशील (सकारात्मक) है। जब दोनों के योग में आकर्षण का पलड़ा भारी होता है तो "आलम-ए-नासूत" (भौतिक लोक) की आकृतियाँ घटित होती हैं जिन्हें भौतिक शरीर कहा जाता है। परंतु जब गमनशीलता का पलड़ा भारी होता है तो "मलाकूती-देवदूती " आकृतियाँ उत्पन्न होती हैं। देवदूती सृष्टि के दो स्तर हैं। एक स्तर में अयन की विशेषताओं का जमाव "इमकान" की विशेषताओं पर भारी रहता है। इस स्तर की सृष्टि का नाम "देवदूत" है। दूसरे स्तर में "इमकान" की विशेषताओं का जमाव अयन की विशेषताओं पर भारी हो जाता है। इस स्तर की सृष्टि का नाम "जिन्नात" है। नस्मा जिन दो पक्षों से मिलकर बना है, उनमें एक पक्ष गमनशील (गुरैज़) है। गमनशीलता का विवरण यह है कि मनुष्य का स्वरूप, जो रोशनियाँ का संग्रह है, उसमें दो गतियाँ निरंतर

www.ksars.org

घटित होती रहती हैं। एक गति यह कि स्वरूप के अन्वार बाहर की ओर लगातार प्रवाहित होते रहते हैं। दूसरी गति यह कि बाहर से नहरों की रोशनियाँ निरंतर अपने भीतर आकर्षित होती रहती हैं। अर्थात् नस्मा के दो गुण हैं–एक देवदूतीय दूसरा मानवीय गुण एक-एक सिद्धान्त के अधीन हैं। कोई व्यक्ति बाह्य लोक में जितना डूबा रहता है, उतना ही उसके नुक्ता-ए-ज़ात के रोशनी क्षीण होते जाते हैं। यह रोशनियाँ की गमनशीलता का पक्ष है। यही वे रोशनी हैं जिनका गुण "मलाकियत-देवदूतित्व" है। इन रोशनियाँ के क्षीण होने से देवदूतित्व का गुण भी नष्ट हो जाता है। नुक्ता-ए-ज़ात में रोशनियाँ की एक निश्चित मात्रा होती है जो मलाकियत और बशरियत का संतुलन बनाए रखती है। यदि इस रोशनी की मात्रा घट जाती है तो पशुवत और भौतिक माँगें बढ़ जाती हैं। मलाकियत का गुण "आलम-ए-अमर" में आरोहित होता है क्योंकि उसका केंद्र आलम-ए-अमर (आदेश का लोक) है। इसके विपरीत, जब मलाकियत का गुण घट जाता है तो भौतिक माँगें व्यक्ति को अधम "अस्फ़ल" की ओर खींच लाती हैं। वह जितना अधम (अस्फ़ल) की ओर बढ़ता है उतना ही घनत्व और भार में वृद्धि हो जाती है। अन्य शब्दों में, उसकी तवज्जोह "आलम-ए-अमर" से हटकर अधम (अस्फ़ल) में सीमित हो जाती है।

www.ksars.org

आलम-ए-अमर (ईश्वर की कार्ययोजना का लोक)

حم ﴿١﴾ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ﴿٢﴾ إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُّبَارَكَةٍ ۚ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ﴿٣﴾ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴿٤﴾ أَمْرًا
مِّنْ عِندِنَا ۚ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٥﴾ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦﴾ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنتُم مُّوقِنِينَ ﴿٧﴾

(सूरा दुख़ान)

परमेश्वर कहते हैं:

उस रात में प्रत्येक हिकमतपूर्ण कार्य हमारी उपस्थिति से आदेश होकर निश्चित किया जाता है।" (सूरा दुख़ान, रुकू पहला)

हिकमतपूर्ण कार्य से आशय मानव-जाति की चिंतन-क्षमताएँ और उनके कर्म हैं। मनुष्यों को ईश्वर ही की ओर से प्रत्येक प्रकार की सफलता और नहर-एप्रदान होती है। जो पद्धतियाँ आलम-ए-ज़ाहिर (प्रकट लोक) के लिए ईश्वर की ओर से निश्चित होती हैं, वे आलम-ए-अमर (ईश्वर के मन में स्थित कार्यों का लोक) अथवा आलम-ए-मिसाल (प्रतिमात्मक लोक) में मूल रेखाचित्र के रूप में स्थित रहती हैं और एक क्रम के साथ आलम-ए-ख़ल्क़ या आलम-ए-ज़ाहिर (सृष्टि-लोक) में संचारित होती रहती हैं। यद्यपि आलम-ए-अमर आलम-ए-ख़ल्क़ को आवृत्त किए हुए है, तथापि इस आलम को बाहय निगाह से देखने वाली दृष्टि नहीं देख सकती। हाँ, उस दृष्टि-पक्ष से देखा जा सकता है जो आंतरिक में देखता है।

जब हम किसी वस्तु की ओर निगाह करते हैं तो कोई न कोई तत्त्व हमारे और उस वस्तु के मध्य साझे में होता है। वही साझी वस्तु देखने का साधन है और ब्रहमांड की अन्य वस्तुओं से हमारे संबंध का कारण है। उदाहरणतः जब सूर्य हमारी आँखों के सम्मुख आता है तो हमारे और सूर्य के मध्य, सूर्य के नुक्ता-ए-ज़ात और हमारे नुक्ता-ए-ज़ात के अतिरिक्त, कोई तीसरा तत्त्व विद्यमान होता है। यह तत्त्व इतना तीव्रगामी है कि हमारे नुक्ता-ए-ज़ात और सूर्य के नुक्ता-ए-ज़ात के मध्य की दूरी को प्रत्येक क्षण संबद्ध रखता है। इसी के माध्यम से हमारी सत्ता सूर्य की सत्ता से आदिकाल से परिचित है। हज़ारों वर्ष पूर्व की दुनिया भी सूर्य से उसी प्रकार परिचित थी जिस प्रकार आज की दुनिया परिचित है। परिचय की शैली में परिवर्तन होना परिचय के मूल रेखाचित्रों पर कोई प्रभाव नहीं डालता। यदि इन रेखाचित्रों के माध्यम से परिचय की खोज की जाए तो परिचय के गुणों को समझना संभव हो सकता है।

www.ksars.org

परिचय का एक गुण यह है कि हज़ारों वर्ष पूर्व का मनुष्य जिस रूप में सूर्य को देखता था, वर्तमान युग का मनुष्य भी उसी रूप में देखता है। इस तथ्य से यह स्पष्ट हो गया कि परिचय की रोशनी अनादि से एक ही रूप में स्थापित है। सभी व्यक्तियों का नुक्ता-ए-ज़ात अलग-अलग है और एक-दूसरे से परिचित है। यह परिचय उस रोशनी के माध्यम से स्थापित है जो निगाह की बाह्य नेत्र से दिखाई नहीं देता, बल्कि आंतरिक पक्ष से देखा जा सकता है। उस रोशनी की दो प्रकारें हैं। एक प्रकार निगाह के बाह्य पक्ष से देखी जा सकती है और दूसरी निगाह के आंतरिक पक्ष से। जो प्रकार निगाह के आंतरिक पक्ष से देखी जा सकती है, वह अनादि से समान दशा में स्थापित है। उसमें कोई परिवर्तन घटित नहीं होता और उस अपरिवर्तनीय रोशनी में किसी प्रकार के रेखाचित्र नहीं होते। वही ब्रह्मांड का "अयन" संपूर्ण स्वरूप बन जाते हैं। यही "अयन" संपूर्ण स्वरूप प्रकटनों के रेखाचित्रों की मूल हैं। इसी "अयन" संपूर्ण स्वरूप की गति स्तरों में विभक्त हो जाती है। इन दोनों स्तरों को गमनशीलता (गुरैज़) और आकर्षण (कशिश) के नाम से जाना जाता है।

रोशनी की एक मूल जो अपरिवर्तनीय है उसे "सादिरुल-अइन" कहा जाता है, जबकि दूसरी जो परिवर्तनशील है उसे "अइन" कहा जाता है। ये दोनों मूल आलम-अमर में "सादिरुल-अइन" और "अइन" के उपरान्त सम्भावना की सीमा में प्रविष्ट होते हैं। उन सीमाओं का प्रथम चरण "मिसालियत" और दूसरा चरण "अन्सुरियत" है। मिसालियत रोशनी का वह ही‍ुला है जिसे अन्य शब्दों में रोशनी का शरीर कहा जाता है। आन्तरिक निगाह इसे देख सकती है और बोध इसका अनुभव कर सकता है। इस ही‍ुला में आयाम विद्यमान रहते हैं किन्तु इसका केन्द्र भौतिक लोक में नहीं है। परन्तु दूसरा चरण अन्सुरियत का केन्द्र भौतिक लोक में है।

ये दोनों सम्भावना-लोक के पदानुक्रम हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रह्मांड में चार आयाम पाये जाते हैं।

आयाम संख्या 1 – सादिरुल-अइन (अपरिवर्तनीय)

आयाम संख्या 2 – अइन (परिवर्तनीय)

आयाम संख्या 3 – मिसालियत (आदर्श शरीर)

आयाम संख्या 4 – अन्सुरियत (तत्वता)

www.ksars.org

हम पहले धाराएँ का उल्लेख कर चुके हैं। प्रत्येक धारा अपनी सीमाओं में "बु'अद" कहलाती है और विशिष्ट गुणधर्म रखती है। जब हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलातो वस्सलम) से यह प्रश्न किया गया कि इस ब्रह्मांड से पहले क्या था, तो आपने कहा – "अमआ"। फिर पूछा गया – उसके बाद क्या हुआ? तो आपने कहा – "मा"।

अमआ" अरबी परिभाषा में ऐसी नकारात्मकता है जो मानव बुद्धि में नहीं आ सकती। और "मा" अरबी में "मुशबियत-सकारात्मकता" कहलाता है, जो ब्रह्मांड की नींव हैं। इसी मुशबियत का नाम "आलम-अमर" है। अमआ, जिसे परिभाषा में "मावराउल-मावराउ" कहा जाता है, उसका परिचय "आलम-नूर" से किया जाता है। मानव समझ और शिक्षा की पराकाष्ठा जहाँ तक पहुँचती है, उस सीमा का परिभाषिक नाम "हिजाब महमूद" है। महमूद-आवरण वे उच्चताएँ हैं जिनसे महान सिंहासन की अन्तिम सीमा अभिप्रेत है। यह मानवीय सत्ता त्म-बिन्दु की मेराज का कमाल है कि वह अपने बोध को महमूद-आवरण की समझ का अभ्यस्त बना सके और उन दैवी गुणों को समझ सके जो उन उच्चताओं में सक्रिय हैं। यह लोक ईश्वर-निकट देवदूतों की उड़ान से परे है। निकटस्थ देवदूतों की उड़ान जहाँ तक पहुँचती है, उस सीमा को अन्तिम-सीमा-वृक्ष (सिद्रतुल मुन्तहा) कहा जाता है। देवदूत अति समीपी सिद्रतुल मुन्तहा से आगे नहीं जा सकते। इस सिद्रतुल मुन्तहा से नीचे एक और ऊँचाई है; उस ऊँचाई की व्यापकता को स्वर्गीय आबाद गृह कहा जाता है।

सिदरतुल-मुन्तहा और बैतुल-मामूर की सीमा में रहने वाले और उड़ान भरने वाले देवदूत तीन समूहों पर आधारित हैं। एक समूह ईश्वर के सामने रहकर स्तुति में स्त है, दूसरा समूह ईश्वर के आदेश आलम तक पहुँचाता है, और तीसरा समूह उन देवदूत का है जो आलम-ए-अमर के लिए ईश्वर के आदेशों को अपने स्मृति में रखते हैं। ये सभी देवदूत लौह-ए-महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से संबंध रखते हैं। आलम-ए-नूर से नीचे मलाइका-ए-मुक़र्रबीन (निकटतम देवदूत) या मलए आला की सीमाएँ हैं। इनमें मलए आला छह पंखों वाले देवदूत हैं। इन्हें आलम-ए-नूर को समझाने की अंतरनिगाह प्राप्त है और ये आलम-ए-नूर के संदेशों का वहन करते हैं। आलम-ए-नूर के आदेश वही हैं जो ईश्वर अर्श-ए-अज़ीम (महान सिंहासन) से लागू करते हैं। इस स्तर से नीचे मलाइका-ए-रूहानी (आत्मिक देवदूत) का स्तर है। इन्हें श्रेष्ठ देवदूत के संदेशों को समझने की अंतरनिगाह प्राप्त है। और इस स्तर से नीचे मलाइका-ए-सामवी (आकाशीय फ़रिश्ते) का स्तर है। ये आत्मिक मलाइका के संदेशों को समझने की अंतरनिगाह रखते हैं। चौथे दर्जे में अदना फ़रिश्ते (साधारण देवदूत) हैं। ये उन आदेशों को लागू कराने की अंतरनिगाह रखते हैं जो इनके पास पहुँचते हैं। ये

www.ksars.org

मलाइका पृथ्वी के स्तरों पर हर ओर फैले हुए हैं। छह पंखों वाले फ़रिश्ते छह अंतरनिगाह के अधिकारी हैं। इनमें से प्रत्येक अंतरनिगाह एक नूर (रोशनियाँ) है।

नंबर 1। उन्हें कुछ न कुछ ज़ात (स्वरूप) का अर्फ़ान (ज्ञान/पहचान) प्राप्त है।

नंबर २। वे गुणों की आत्मिक अनुभूति रखते हैं।

नंबर ३। आलम-ए-अमर के सादिर-उल-अइन (अपरिवर्तनीय संपूर्ण स्वरूप) की समझ रखते हैं।

नंबर ४। अइन की क्रमबद्धता और सृष्टि से परिचित हैं।

नंबर ५। आलम-ए-इम्कान / आलम-ए-ख़ल्क़ की मिसालियत के ज्ञान पर उन्हें पूरा अधिकार है।

नंबर ६। आलम-ए-ख़ल्क़ / आलम-ए-इम्कान के अंशों पर अधिकार रखते हैं।

दूसरे शब्दों में, मलए-आला (श्रेष्ठ फ़रिश्ते) उपर्युक्त छह ज्ञानों के रोशनियाँ का संग्रह है। यह न समझा जाए कि ज्ञान कोई ऐसी वस्तु है जो रोशनी के अस्तित्व से अलग है। वस्तुतः रोशनी ही का नाम ज्ञान है। यदि हमारे सम्मुख ज्ञान (यहाँ ज्ञान से आशय इल्म-ए-हुज़ूरी या इल्म-उल-हक़ीक़त) का स्वरूप आएगा तो वह एक प्रकार की रोशनी होगा, जो उस ज्ञान के विशिष्ट गुणों के रंगों का प्रदर्शन करेगा।

इस प्रकार आध्यात्मिक फ़रिश्ते तीन, चार, पाँच, छह रोशनियाँ का संग्रह हैं। उन्हें आलम-ए-अमर और आलम-ए-ख़ल्क़[3] की मारिफ़त (ज्ञान) प्राप्त है। उनके चार पंखों से ये रोशनियाँ अभिप्रेत हैं। समावी फ़रिश्ते (स्वर्गदूत) 'आलम-ए-अमर' की ज्ञान रखते हैं। उनके भीतर 'सादिरुल-ऐन' (संपूर्ण स्वरूप का उद्‌गम) और 'ऐन' (संपूर्ण स्वरूप) की रोशनियाँसं चित हैं। अधम फ़रिश्ते 'आलम-ए-ख़ल्क़' के अवयवों की अवधारणा पर अधिकार रखते हैं। ये 'मिसालित' (आदर्श स्वरूप) और 'अन्स्रियत' (तत्व स्वरूप) की रोशनियाँ का संयोग हैं।

www.ksars.org

[3] यहाँ ज्ञान से अभिप्राय प्रत्यक्ष ज्ञान अथवा सत्य का ज्ञान है।

निस्बत-ए याददाश्त "स्मृति"

ईश्वर ने मनुष्य के नुक्ता-ए-ज़ात में चारों लोकों को एकीकृत कर दिया है।

१. आलम-ए-नूर

२. आलम-ए-तहतुश्शऊर या आलम-ए-मलाइका मुक़र्रबीन (अवचेतन लोक अथवा निकटवर्ती फ़रिश्तों का लोक)

३. आलम-ए-अमर (ईश्वर के आदेशों का लोक)

४. आलम-ए-ख़ल्क़ (सृष्टि लोक)

आलम-ए-अमर की व्याख्या इस प्रकार हो सकती है। हमारी ब्रहमांड—ग्रह-नक्षत्र (अज़्राम-ए-समा), त्रिविध उत्पत्ति और अन्य कितनी ही सृष्टियों व अस्तित्वगत रूप का संयोग है। ब्रहमांड के सभी अवयवों और व्यक्तियों में एक रब्त (संबंध) मौजूद है। भौतिक आँखें इस रब्त को देख सकें या न देख सकें, इसके अस्तित्व को मानना अनिवार्य है।

जब हम किसी वस्तु की ओर निगाह डालते हैं तो उसे देखते हैं। यह एक सामान्य बात है। किन्तु मानवीय ज़ेहन कभी इस ओर ध्यान नहीं देता कि आखिर ऐसा क्यों होता है? अध्यात्म और तसव्वुफ़ में किसी भी वस्तु के कारण की खोज करना आवश्यक है चाहे वह कितनी ही नगण्य क्यों न हो। जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तो हमें उसकी आत्मिक अनुभूति प्राप्त होती है। हम उसकी विशेषताओं को स्पष्ट रूप से समझ लेते हैं। समझने की संबंध ज़ेहन के प्रयोग की गहराई से संबंधित है। अन्य शब्दों में इसे अधिक स्पष्ट रूप से इस प्रकार कहेंगे: जब शाहिद (देखने वाला) किसी वस्तु को देखता है तो उसकी वस्तु की आत्मिक अनुभूति की क्षमता निगाह में परिवर्तित हो जाती है। मानो देखने वाला स्वयं देखी हुई वस्तु बनकर उसकी आत्मिक अनुभूति प्राप्त करता है। यही आलम-ए-अमर का नियम है।

उदाहरण: हमने गुलाब के फूल को देखा। देखते समय हमें स्वयं को गुलाब के फूल की विशेषताओं (गुणों) में रूपांतरित करना पड़ा, तब हम गुलाब के फूल को समझ सके। इस प्रकार गुलाब के फूल की आत्मिक अनुभूति हमें प्राप्त हो गई।

आलम-ए-ख़ल्क़ (सृष्टि लोक) का प्रत्येक व्यक्ति अपने नुक्ता-ए-ज़ात (स्वरूप-बिंदु) को दूसरी वस्तु के नुक्ता-ए-ज़ात में परिवर्तित करने की अनादि क्षमता रखता है और जितनी बार और

www.ksars.org

जिस प्रकार चाहे वह किसी वस्तु को अपनी आत्मिक अनुभूति में सीमित कर सकता है। इस नियम के अंतर्गत प्रत्येक मनुष्य का नुक्ता-ए-ज़ात समूचे ब्रह्मांड की विशेषताओं (गुणों) का संग्रह है।

आलम-ए-अमर (ईश्वर के आदेशों का लोक) की एक और विशेषता यह है। जब आप किसी वस्तु का नाम सुनते हैं, जैसे आपने "महमूद" का नाम सुना, तो आपके ज़ेहन में शब्द "महमूद" या "महमूद" के अक्षर नहीं आएँगे बल्कि महमूद की ज़ात (स्वरूप) और उसकी व्यक्तित्व आएगी। वह व्यक्तित्व जो कितनी ही विशेषताओं का संयोग है। जिन विशेषताओं से आप परिचित हैं, उन विशेषताओं में महमूद की सूरत (रूप) और सीरत (चरित्र) दोनों मौजूद होंगे। यही आलम-ए-अमर की समझ का दूसरा नियम है। इस नियम के दो अंग हैं। एक अंग की व्याख्या चेतन के जिम्मे है, किन्तु महमूद के बारे में महमूद का संपूर्ण व्यक्तित्व जो अनादि से अनंत तक घटित हुआ है और जिसे चेतना अपनी समझ में नहीं ला सकी है, वह समस्त का समस्त – अनादि से अनंत तक – पूरा महमूद अवचेतन की समझ में रहता है। उस शेष महमूद की तफ़हीम अवचेतन के जिम्मे है। यदि कोई आरिफ़ (आत्माज्ञानी जन) महमूद की अनादि से अनंत तक की संपूर्ण शख़्सियत का आत्मिक उद्‌भेदन चाहता है, तो वह अपनी चेतना को अवचेतन में केंद्रित कर देता है। तब समस्त अवचेतन धीरे-धीरे चेतना में स्थानांतरित होता जाता है। यह तभी संभव है जब मनुष्य को अपनी "अना" (स्व-अहं) की आत्मिक अनुभूति प्राप्त हो, क्योंकि मानवीय अना की गति ही अवचेतन में केंद्रित होकर अवचेतन की घटनाओं को छवि (कल्पना/धारणा) में परिवर्तित कर देती है। ऐसी अवस्था को ख़्वाजा बहाउद्‌दीन नक्शबंद ने "याददाश्त" (स्मृति) का नाम दिया है।

आलम-ए-अमर (ईश्वर के आदेशों का लोक) की तफ़सील में मज़ाहिब-ए-आलम (विश्व के धर्मों) की कुछ बातों का उल्लेख कर देना आवश्यक है। ऐसे लोग, जो किसी काल में अदृश्य शक्तियों (ग़ैबी ताक़तों) से परिचित हुए हैं, कुछ अकीदे (आस्थाओं) को ध्यान में रखकर आध्यात्मिक शिक्षा-प्रणाली को व्यवस्थित किया है। इस प्रकार की शिक्षा-प्रणालियाँ अनेक बन चुकी हैं। प्रारम्भिक युग में जब संसार की बस्तियाँ और आवश्यकताएँ अत्यन्त कम थीं, ये रूहानी शिक्षाएँ बहुत व्यापक और सर्वग्राही स्वरूप धारण नहीं कर सकीं। एकदम आरम्भिक दौर में मानवीय जाति में अनेक व्यक्ति अदृश्य वस्तुओं का अवलोकन करते थे और ये अवलोकन आलम-ए-अमर से संबंधित होते थे। ये लोग उन अवलोकनों को अपने क़बीले और जीवन-शैली के सीमित अर्थों में समझते थे। उनके सामने व्यापकतर संसार और मानवीय जाति के अनेक वर्गों का जीवन नहीं होता था, इसलिए उन पर आलम-ए-अमर के जो सत्य प्रकट होते थे, उनकी व्याख्याएँ मानवीय

www.ksars.org

इन्द्रियों के कुछ अंशों पर आधारित होती थीं। फलस्वरूप उन रूहानी बुज़ुर्गों के पश्चात उनके अनुयायी व्यर्थ कल्पनाओं और कच्चे धारणाओं (तसव्वुरात-ए-ख़ाम) में पड़ जाते थे। सभी मूर्तिपूजक और प्रकृति-पूजक धर्मों की रचना इसी प्रकार हुई है।

ये मुक़ल्लिदीन (अनुयायी) जिन्होंने उस युग में धर्म के आकृतियाँ तैयार किये, स्वयं *आलम-ए-अमर* (ईश्वर के आदेशों का लोक) के सत्यों से अनभिज्ञ होते थे। ये लोग जो कुछ अपने मार्गद र्शकों से सीखते थे, उसे दूसरों तक पहुँचाने में ग़लत अकीदे (भ्रान्त आस्थाएँ), जादू और रहबानियत (संन्यासवाद) की नींवें स्थापित कर देते थे। वे प्रकटन को मूल रोशनियाँ का स्रोत मानने में हिचकिचाते नहीं थे। ऐसे धर्मों की मिसालें बाबिल में उत्पन्न धर्म, जैन मत और आर्य धर्मों में वेदान्त के प्रभाव में बने अनेक मत हैं। बौद्ध मत भी महात्मा बुद्ध के अनुयायियों की इसी प्रवृत्ति से प्रभावित होकर संन्यास से परिचित हुआ। मंगोल धर्मों में एकेश्वरवाद के ख़दोख़ाल न मिलने का यही कारण है। इन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित होकर *टाओमत* (ताओवाद) को भी अनेक उलझनों और जादूगरी का क़ैदी होना पड़ा। मंगोली धर्मों में सूर्य-पूजक, भौतिकवादी और जरथुस्त्री (ज़ोरास्ट्रियन) विश्वास रखने वालों ने या तो *आलम-ए-अमर* को शैतानी और रहमानी (असुरी और दैवी) दो सिद्धांतों पर आधारित किया है या स्वयं प्रकटन (मज़ाहिर) को *आलम-ए-अमर* की केंद्रता मान लिया है। इन प्रवृत्तियों से धीरे-धीरे मूर्तिपूजा और प्रकृति-पूजा के अकीदे मज़बूत होते गये और मानवीय प्रकृति भौतिक जीवन से विमुख रहने लगी। इस सत्य को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता कि भौतिक जीवन कुल जीवन का आधा हिस्सा है। यदि इस आधे को किसी मत में कोई स्थान नहीं है तो सामाजिक और आर्थिक जीवन की सभी निर्माण-प्रणालियाँ ढह जाएँगी। यदि ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाएँ तो धर्म को केवल कल्पना की सीमाओं में क़ैद स्वीकार करना पड़ेगा। और जब व्यावहारिक जीवन का ढाँचा धर्म की पकड़ से मुक्त हो जाए तो अकीदों (विश्वासों) में भटकाव अवश्य होगा। इस प्रकार अनेक धर्म संयम (इ'तिदाल) की राहों से हटकर *आलम-ए-अमर* और *आलम-ए-ख़ल्क़* (सृष्टि का लोक) के सत्यों से अपरिचित हो गये। अन्ततः *आलम-ए-ख़ल्क़* की जीवन-आवश्यकताओं ने मानवीय जाति को प्रतिक्रियाओं में डाल दिया और पिछले पाँच हज़ार वर्षों में ऐसे धर्मों की नींव पड़ने लगी जिनका उद्देश्य केवल शासन, राज्य और भौतिक जीवन ठहराया गया। इन धर्मों में कन्फ़्यूशी, शिन्तो और यूनानी दर्शन की प्रणालियाँ, जिनमें प्लेटो, उसके समकालीनों की शिक्षाएँ और वर्तमान युग के साम्यवादी देशों की विचारधाराएँ उल्लेखनीय हैं। इन सबकी नींव केवल इस कारण पड़ी कि प्रचलित धर्मों में *आलम-ए-ख़ल्क़* (सृष्टि का लोक) की आवश्यकताओं को नज़रअंदाज़ कर दिया

www.ksars.org

गया। परिणामस्वरूप यही प्रतिक्रिया नास्तिकता (लादिनी) का कारण बनी। कुरआन पाक में बार-बार इन बे-इ'तिदालियों (असंयम) की ओर संकेत किया गया है।

धर्म नाम है उन अकीदों (आस्थाओं) के संग्रह का जो मानवीय कर्मों और प्रेरणाओं को जन्म देता है। अनेक धर्म ऐसे हैं जिनमें ईश्वर की अवधारणा नहीं पाई जाती, जैसे जैन मत और साम्यवादी मत, जो हज़ारों वर्ष पूर्व से अब तक अस्तित्व में आते रहे हैं। मानवीय बुद्धि के दो रूप हैं। एक रूप बाह्य के बारे में सोचता है, दूसरा रूप *नफ़्स* के बारे में। पहला रूप प्रकटन को देखकर जो कुछ बाहर है उसके बारे में अनुभव और अनुभूतियों की सीमाएँ निर्धारित करता है। दूसरा रूप *नफ़्स* के सम्बन्ध में चिंतन करता है और प्रकटन की गहराई में जो तत्त्व उद्घाटित होते हैं उनकी *मारिफ़त* प्राप्त करता है। पहले रूप का प्रयोग साधारण है। उसकी सभी शैलियाँ और चिंतन वह्य और इल्हाम से पृथक हैं। किन्तु दूसरा रूप वह्य और इल्हाम से सम्बद्ध है, जो पहले रूप पर व्यापक है। अतः पहला रूप यानी *आलम-ए-अमर* दूसरे रूप यानी *आलम-ए-ख़ल्क़* को घेरे हुए है। पहला रूप इल्म-ए-नबूवत के मार्गों पर चलकर सत्यों का अनावरण करता है। दूसरा रूप वस्तुओं में खोज के द्वारा भौतिकता को समझने का प्रयत्न करता है। सभी धर्म जो दूसरे रूप की बुनियादों पर व्यवस्थित किये गये हैं, प्रायः नास्तिकता, मूर्तिपूजा, प्रकृति-पूजा, भौतिकवाद और दार्शनिक मूल्यों पर आधारित हैं। ये भौतिक ज्ञान या इल्म-ए-हुसूली के रास्तों पर चलकर अपनी मंज़िलें तय करते हैं। अधिकांशतः इनका प्रसार मध्य-पूर्व को छोड़कर दुनिया के अन्य क्षेत्रों में पाया जाता है। इन धर्मों में हज़ारों नष्ट हो चुके हैं और कितने ही शेष हैं। ये सबके सब *आलम-ए-अमर* यानी *नफ़्स* की उस ज़िंदगी के लिये, जो मृत्यु के बाद आरम्भ होती है, कोई सुविधा उपलब्ध नहीं कराते; बल्कि ऐसी अनुभवजन्य और संवेदनात्मक उलझनें पैदा करते हैं जो अनन्तकाल की पीड़ाएँ शाश्वत कष्टों में डाल देती हैं।

मध्य-पूर्व जहाँ प्राचीन काल से सामी जातियाँ आबाद रही हैं, ऐसे धर्मों का केन्द्र रहा है जो वही के अधीन प्रवाहित हुए और अंतर्ज्ञान-विज्ञान अर्थात् लोक-ए-अमर की स्पष्टताओं के नियम पर चले। इनमें प्रचलित और व्यापक तीन धर्म हैं—यहूदियत, ईसाइयत और इस्लाम। ये तीनों सामी जातियों में लागू हुए। इनमें इस्लाम अन्तिम धर्म है क्योंकि नबूवत समाप्त हो चुकी है।

अंतर्ज्ञान-विज्ञान में लोक-ए-अमर की प्रकृति ऐसे गुलाब की है जिसे हमारी आँखों ने कभी देखा है। हमारा ज़ेहन उसका एक छवि सदा के लिए सुरक्षित कर लेता है। परिणामस्वरूप उस गुलाब को हम जब चाहें लोक-ए-अमर से लोक-ए-ख़ल्क़ की दुनिया में ला सकते हैं, अर्थात् उसकी छवि हमारे ज़ेहन में वापस आ जाती है और हम उसे गुलाब की जाति का एक अवयव मानते हैं। उसमें

www.ksars.org

आकृतियाँ होते हैं और रंग होते हैं। आकृतियाँ का सम्बन्ध लोक-ए-अमर से है, और रंगों का सम्बन्ध लोक-ए-ख़ल्क़ से है।[4]

वास्तव में उसकी जाति की जो आकृतियाँ हैं, वे नफ़्स-उल-अम्र हैं। उनका अस्तित्व लोक-ए-अमर में पूर्णतः और स्थायी रूप से रहता है। लोक-ए-अमर में उसकी आकृतियों का अस्तित्व समयत्व के अवयवों का संयोग है। यह हमारे स्वरूप की सृजन-क्षमता पर निर्भर है कि हम जब चाहें उसकी आकृतियों में रंग उत्पन्न कर दें। लोक-ए-अमर में हम और गुलाब एक ही स्वरूप हैं। एक स्वरूप की वे क्षमताएँ जो हममें और गुलाब में समान हैं, संकल्प के अधीन गुलाब में रंग उत्पन्न कर के गुलाब को हमारे छवि की सीमाओं में प्रवेश कर देती हैं। लोक-ए-अमर की ये मानसिक क्षमताएँ हर सामान्य मनुष्य को प्राप्त हैं। यदि इन मानसिक क्षमताओं को असाधारण बनाने की चेष्टा की जाए तो यही ''नफ़्स-उल-अम्री संकल्प'' गुलाब को ब्रह्मांडीय सीमाओं में प्रविष्ट करा देता है। फिर वह गुलाब स्थानिक सत्य बनकर ठोस रूप से ब्रह्मांडीय दुनिया में प्रकट हो जाता है। हम इस नियम का विश्लेषण इस प्रकार, हकीकत (सत्य), मावरा (अतिक्रम/परे), मावरा-हकीकत (सत्य के परे) और अल-मावरा-हकीकत (सत्य से भी परे)।

अल-मावरा-हकीकत (सत्य से भी परे) परमेश्वर की दिव्य सत्ता है।

मावरा-हकीकत (सत्य के परे) परमेश्वर की तजल्लीयाँ हैं। हकीकत (सत्य) परमेश्वर के गुण हैं। मावरा-हकीकत (सत्य के परे) को वाजिबुल-वुजूद (अनिवार्य अस्तित्व) भी कहते हैं। यह तजल्ली-ए-इलाही (ईश्वरीय प्रकाश-प्रभाव) का आलम है।

इसके बाद स्वयं सत्य का लोक है जिसे लोक-ए-नूर भी कहते हैं। इसी लोक-ए-नूर का उल्लेख क़ुरआन पाक में किया गया है: "اَللّٰہُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ -अल्लाहु नूरुस्समावाति वल-अर्ज़" यह समझना ग़लत है कि वाजिब-उल-वुजूद ही ज़ात-ए-बारीताआला है। हम वाजिब-उल-वुजूद को केवल तजल्लि का नाम दे सकते हैं। यह तजल्लि गुण का मूल है और ज़ात से सम्बद्ध है। वाजिब-उल-वुजूद के बाद गुण हैं जिन्हें हमने सत्य कहा है। इन गुण का सम्बन्ध तजल्लियात-ए-ज़ात से है। क़ुरआन पाक के भीतर मारिफ़त-ए-इलाही को तीन मरातिब में वर्णित किया गया है।

नंबर 1. ज़ात-ए-बारी तआला(परमेश्वर का दिव्य स्वरूप)

www.ksars.org

[4] नोट: मैं यह पुस्तक पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़ूर **अलैहिस्सलातो वस्सलाम** के आदेश से लिख रहा हूँ। मुझे यह आदेश हज़ूर **अलैहिस्सलातो वस्सलाम** की ज़ात से औवैसिया तरीक़े से प्राप्त हुआ है। इसी आदेश का एक अंश यह भी है कि मैं इस पुस्तक में किसी धर्म पर टिप्पणी न करूँ। इसलिए मैं सामी और ग़ैर-सामी धर्म का आगे उल्लेख नहीं कर सकता।

नंबर 2. लोक-ए-अमर, जो "कुन" कहने से प्रकट हुआ। " اِنَّمَا اَمۡرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيۡـًٔا اَنۡ يَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ -इन्नमा अम्रहु इज़ा अरादा शैअन अन यक़ूला लहु कुन फयकून" (क़ुरआन पाक) जब वह किसी वस्तु का संकल्प करता है तो उसकी रीति यह है कि वह उस वस्तु से कहता है–"हो जा"– और वह हो जाती है।

नंबर 3. लोक-ए-अमर ख़ास। यह वह लोक है जिसके बारे में फरमाया गया है–"मैंने आदम के पुतले में अपनी आत्मा फूँकी।"

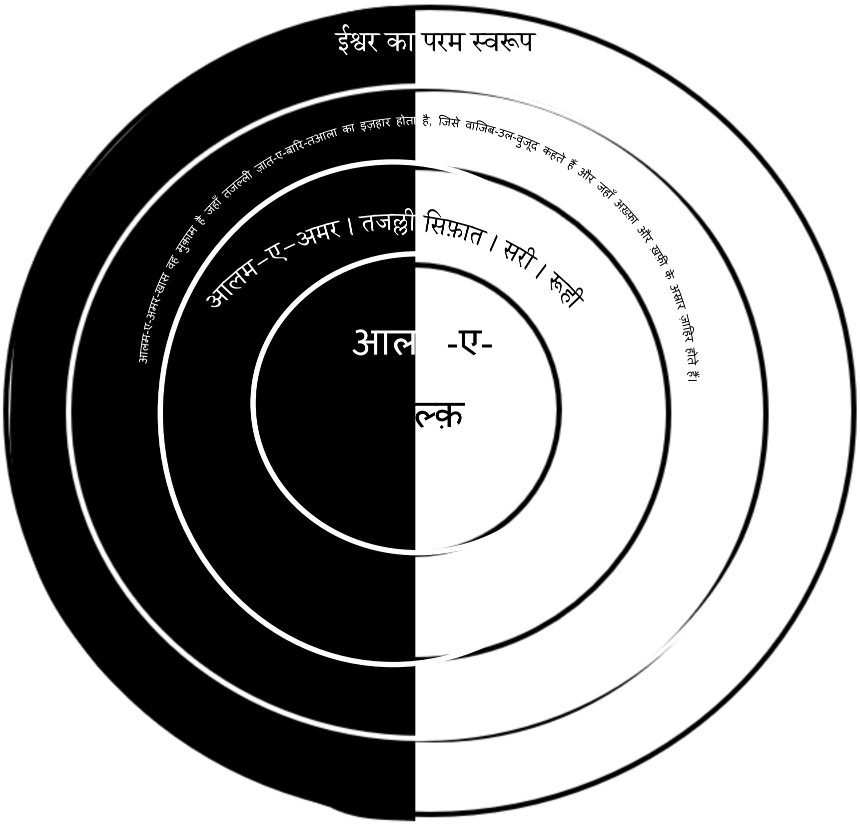

www.ksars.org

ज़ान-का-विश्वास, दर्शन-का-विश्वास, सत्य-का-विश्वास

क़ुरआन – "क़ुलिर्रूहु मिन अम्रि रब्बी।" आत्मा (रूह) को ईश्वर का कार्यादेश (अमर रब्बी) कहा गया है। चनाँचे यह भी आलम-ए-अमर है, लेकिन यह आलम-ए-अमर उस आलम-ए-अमर से अलग है जो "कुन" के प्रभावाधीन प्रकट में आया। अगर दोनों आलम-ए-अमर एक ही होते तो ईश्वर यह हरगिज़ न फरमाते कि मैंने आदम के पुतले में अपनी आत्मा फूँकी। इन अल्फ़ाज़ से यह स्पष्ट हो जाता है कि नंबर 2 "अमर आम" है और नंबर 3 "अमर ख़ास" है। यहाँ से इल्म और प्रकट के दो मरातिब हो जाते हैं जिसको क़ुरआन पाक में इल्म-ए-सुरक्षित पट्टिका (लौह) और इल्म-ए-क़लम यानी लौह व क़लम से तअबीर किया गया है। तरतीब इस तरह हुई:

नंबर 1। ज़ात-ए-बारि-तआला (अनिवार्य परमात्मा स्वरूप)

नंबर 2। आलम-ए-अमर-ख़ास, तजल्ली-ए-ज़ात, (वाजिब-उल-वुजूद – अनिवार्य अस्तित्व)

नंबर 3। ईश्वर की कार्ययोजना का लोक (आलम-ए-अमर), सामान्य आदेश (अम्र-ए-आम) या गुणों की दैवीय आभा (तजल्ली-ए-सिफ़ात)

इन तीन मरातिब के बाद चौथा मरतबा आलम-ए-ख़ल्क़ का है।

पहले छ सूक्ष्म तत्त्व का ज़िक्र आ चुका है। ज़ात-ए-बारि-तआला को मुक्त कर के बाक़ी तीन मरातिब छः रुख़ों पर मुश्तमिल हैं। अव्वल आलम-ए-अमर-ख़ास या तजल्ली-ए-ज़ात या वाजिब-उल-वुजूद का रुख़ ज़ात की तरफ़ है। दूसरा रुख़ आलम-ए-अमर-ख़ास का आलम-ए-अमर-आम की तरफ़। यह दो सूक्ष्म हुए। पहले रुख़ का नाम अख़्फ़ा और दूसरे रुख़ का नाम ख़फ़ी है। आलम-ए-अमर-आम का पहला रुख़ आलम-ए-अमर-ख़ास की तरफ़ और दूसरा रुख़ आलम-ए-ख़ल्क़ की तरफ़। इसका पहला रुख़ सरी और दूसरा रुख़ रूही है।

आलम-ए-ख़ल्क़ (आलम-ए-नासूत) का पहला रुख़ आलम-ए-अमर-आम की तरफ़ और दूसरा रुख़ ब्रहमांड यानी भौतिकताकी तरफ़ है। इसका पहला रुख़ क़ल्ब है, दूसरा रुख़ स्वरूप (नफ़्स) है।

हम इसकी उदाहरण एक चादर से दे सकते हैं जो नूर के तारों से बनी हुई है। यह नूर के तंतु जिस अंतरिक्ष में स्थित हैं, उस अंतरिक्ष का नाम आलम-ए-अमर-खास है। इस चादर में नूर के तंतु "ताने" के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, वे आलम-ए-अमर-आम हैं। फिर इस चादर में जो तंतु "बाने" के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, वे आलम-ए-नस्मह कहलाते हैं। इन तीनों लोकों के ऊपर अनुभवों का एक खोल है जिसे शरीर कहा जाता है। सूफी चिन्तन में आलम-ए-नस्मह की पहचान को इल्म-

www.ksars.org

उल-यक़ीन कहा गया है। आलम-ए-अमर-आम की पहचान को ऐन-उल-यक़ीन कहा गया है और आलम-ए-अमर-खास की पहचान को हक़-उल-यक़ीन कहा गया है। यही वह स्तर है जो परमात्मा के स्वरूप की पहचान है। शेष स्तर गुणों की पहचान हैं। सूफ़ी चिंतन में आलम-ए-नस्मह की पहचान को ज्ञान-का-विश्वास (इल्म-उल-यक़ीन) कहा गया है। आलम-ए-अमर-आम की पहचान को दृष्टि-का-विश्वास (ऐन-उल-यक़ीन) कहा गया है और आलम-ए-अमर-ख़ास की पहचान को सत्य-का-विश्वास (हक़-उल-यक़ीन) कहा गया है। यही वह स्तर है जो परमात्मा के स्वरूप की पहचान है। शेष स्तर गुणों की पहचान हैं।

मनुष्य का शरीर एक खोल है। इस खोल के दो रुख़ हैं – शरीर और मस्तिष्क। मस्तिष्क का रुख़ आलम-ए-अमर-आम की ओर है। इसी को नस्मह कहते हैं। लेकिन यह मस्तिष्क या शरीर मनुष्य नहीं है। मनुष्य इन दोनों के भीतर बसता है जिसे तजल्ली-ए-स्वरूप का एक बिंदु कहना चाहिए। यह बिंदु जो मानव का स्वरूप है, उस नूर की चादर का एक कण है। यह कण एक खोल रखता है जिसे शरीर कहते हैं। यही प्रत्यक्ष रूप (मज़हर) है।

आलम–ए–तम्साल

बिंदु-ए-स्वरूप से नस्मह (ज़ेहन) की ओर और नस्मह से शरीर की दिशा में नूर की एक धारा बहती है। प्रत्यक्ष रूप (शरीर) से नस्मह की ओर और नस्मह (ज़ेहन) से बिंदु-ए-स्वरूप की दिशा में रोशनी की एक धारा बहती है। जो नूर की धारा बिंदु-ए-स्वरूप से प्रत्यक्ष रूप की ओर बहती है, उसके भीतर उलूम-ए-लदुन्नियः का भंडार होता है। किंतु जो रोशनी की धारा प्रत्यक्ष रूप (शरीर) से बिंदु-ए-स्वरूप की ओर बहती है, वह सांसारिक ज्ञान होता है अर्थात् शारीरिक आवश्यकताओं और इच्छाओं का संग्रह। यदि बिंदु-ए-स्वरूप से अवतरित होने वाले उलूम-ए-लदुन्नियः चेतना के लिए आकर्षक और रुचिकर हैं, तो उनका रंग धीरे-धीरे प्रत्यक्ष आकृतियों पर चढ़ जाता है। अर्थात् मनुष्य का सूक्ष्म स्वरूप (लतीफ़ा-ए-नफ़्सी) उन ज्ञानों की नूरानियत से भरकर सत्य का रंग ग्रहण कर लेता है। यह सत्य का रंग ऐसा नूर है जिसके भीतर से कोई भी गाढ़ा रोशनी अर्थात् अंधकार नहीं गुजर सकता, बल्कि शरीर की आवश्यकताएँ और सारी इच्छाएँ उस रंग से छनकर सूक्ष्म नूर की किरणों में परिवर्तित हो जाती हैं और गाढ़े रोशनी (अंधकार) के बजाय मज़हर की दिशा से यह छनी हुई सूक्ष्म नूर की किरणें बिंदु-ए-स्वरूप की ओर बहने लगती हैं। बिंदु-ए-स्वरूप से मज़हर की ओर बहने वाली धारा और मज़हर से बिंदु-ए-स्वरूप की ओर बहने वाली धारा जब उपर्युक्त अवस्था तक पहुँच जाती है तो मानव ज़ेहन में एक नूर उत्पन्न हो जाता है जिसे हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने नूर-ए फिरासत कहा है। यह नूर-ए फिरासत पहले आलम-ए-अमर-आम के अनावरण का कारण बनता है, फिर आलम-ए-अमर-

www.ksars.org

ख़ास के अनावरण का। आलम-ए-अमर से मज़हर की ओर अवतरण और मज़हर से आलम-ए-अमर की ओर आरोहण की गति निरंतर होती रहती है। आलम-ए-अमर से मज़हर की ओर जो दिव्य ज्ञान का भंडार (उलूम-ए-लदुन्नियः) उतरता है उसका प्रतिबिंब चेतना पर पड़ता है। चेतना उस प्रतिबिंब को ज़मीर (अंतरात्मा) के नाम से व्यक्त करती है। चेतना मानव मस्तिष्क का ऐसा दर्पण है जिसमें उलूम-एलदुनिया के अनवार का प्रतिबिंब पड़ता है। ये उलूम-एलदुनिया आदि से अनादि तक की स्थितियों पर आधारित होते हैं। उन स्थितियों का चित्रात्मक प्रतिबिंब चेतना पर पड़ता है। स्थितियों के उस चित्रात्मक प्रतिबिंब को आलम-ए-तम्साल कहते हैं। यदि किसी व्यक्ति की चेतना (ज़ेहन) एक स्वच्छ दर्पण है तो बंद आँखों से या खुली आँखों से स्थितियों का चित्रात्मक प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यदि लतीफ़ा-ए-नफ़्सी की ओर से गाढ़ा रोशनी अर्थात् अंधकार धारा बनकर बिंदु-ए-स्वरूप की ओर बहता है तो चेतना का दर्पण स्वच्छ नहीं रहता और उलूम-एलदुनिया के सभी चित्रात्मक प्रतिबिंब निगाह से अदृश्य हो जाते हैं।

मुराकबा यदि मनुष्य चेतना के दर्पण में उलूम-ए-लदुन्निय के चित्रात्मक प्रतिबिंब देखना चाहता हो तो इसकी एक बहुत ही सरल प्रक्रिया है। वह किसी अंधकारपूर्ण कोने में जहाँ गरमी और ठंडक सामान्य से अधिक न हो, बैठ जाए। हाथ, पैरों और शरीर के सभी स्नायु ढीले छोड़ दे, इतने ढीले कि यह अनुभव न हो कि शरीर मौजूद है। श्वास की गति को न्यूनतम करना आवश्यक है। श्वास की गति तीव्र नहीं होनी चाहिए। आँखें बंद कर ले और अपने स्वरूप के भीतर झाँकने का प्रयास करे। यदि उसके विचार और उसका आचरण पवित्र है तो इस क्रिया से उसका लतीफ़ा-ए-नफ़्सी शीघ्र रंगीन हो जाएगा और लतीफ़ा-ए-नफ़्सी रंगीन हो जाने से चेतना के भीतर चमक उत्पन्न होने लगेगी। सूफ़ी चिन्तन में इस क्रिया का नाम मुराकबा है। सूरह मुज़म्मिल शरीफ़ में ईश्वर ने फरमाया है: " وَذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا वज़्कुरिस्मा रब्बिका वतबत्तल इलैहि तब्तीलन" – और सब से कटकर उसी की ओर ध्यानमग्न रहो। मुराकबा में इस आदेश का पालन आवश्यक है। शरीर को ढीला छोड़ देना, श्वास को अत्यंत हल्का कर देना – यह सब वैराग्य उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है। जब शरीर अप्रत्यक्ष हो जाता है, उस समय बिंदु-ए-स्वरूप आरोहण आरम्भ करता है। इस अवस्था के अतिरिक्त बिंदु-ए-स्वरूप केवल अवरोहण करता है, आरोहण नहीं करता। आरोहण केवल उसी समय करता है जब शरीर की आवश्यकताएँ उसे मुक्त छोड़ दें और ज़ेहन उसे सांसारिक बातों की याद न दिलाए। जब बिंदु-ए-स्वरूप को संसार की कोई चिंता नहीं होती तो वह "आलम-ए-अमर" की यात्रा में व्यस्त हो जाता है और "आलम-ए-अमर" की सीमाओं में चलता-फिरता, खाता-पीता और वे सभी कार्य करता है जिन्हें उसके नूरानी मशाग़िल कहा जा सकते हैं। वहाँ वह स्थान की क़ैद से मुक्त होता है। उसके कदम काल की शुरुआत से

www.ksars.org

काल की समाप्ति तक संकल्प के अनुसार उठते हैं। जब बिंदु-ए-स्वरूप मुराकबा के उपक्रमों में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेता है तो उसमें इतनी क्षमता उत्पन्न हो जाती है कि काल के दोनों छोर – अनादि और अनंत – को छू सके। फिर संकल्प के अधीन अपनी शक्तियों का प्रयोग कर सकता है। वह हज़ारों वर्ष पूर्व के या हज़ारों वर्ष बाद के घटनाओं को देखना चाहे तो देख सकता है, क्योंकि अनादि से अनंत तक की मध्य सीमाओं में जो कुछ पूर्व में था और जो कुछ भविष्य में होगा वह उस समय भी विद्यमान है। इसी अनुभूति को सूफ़ी साधक की परिभाषा में यथावत "सैर" कहा जाता है।

शहूद (प्रत्यक्ष साक्षात्कार) यदि किसी व्यक्ति को इस अवस्था का कमाल उपलब्ध हो जाए तो फिर वह "आलम-ए-अमर" का दर्शन करते समय आँखें बंद नहीं रख सकता, बल्कि स्वयं उसकी आँखों पर ऐसा बोझ पड़ता है जिसे वे सहन नहीं कर सकतीं और खुली रहने पर विवश हो जाती हैं। आँखों के परदे उन दिव्य रोशनियाँ को, जो बिंदु-ए-स्वरूप से प्रसारित होते हैं, संभाल नहीं पाते और स्वतः गति में आ जाते हैं, जिससे आँखों का खुलना और बंद होना अर्थात् पलक झपकने की क्रिया चलती रहती है। जब यह यात्रा खुली आँखों से होने लगती है तो उसे "फ़त्ह" के नाम से व्यक्त किया जाता है।

इस संक्षेप से यह बात भलीभांति समझ में आ जाती है कि जब तक स्वरूप के कंधों पर केवल सांसारिक आवश्यकताएँ हावी रहती हैं तो उसकी गति सांसारिक विचारों और कर्मों में चक्कर काटती रहती है। लेकिन जब बिंदु-ए-स्वरूप के कंधे सांसारिक अनुभवों के बोझ से मुक्त हो जाते हैं तो वह अदृश्य लोक की ओर आरोहण कर वहाँ की जीवन-शैली का साक्षात्कार करता है। वह आध्यात्मिक लोक से परिचित होता है। इस लोक के सूर्य-तंत्र और आकाशगंगाओं के बहुत से व्यवस्थाओं को देखता और समझता है। देवदूतों से परिचित होता है। उन बातों से अवगत होता है जो उसकी अपनी वास्तविकता में छिपी हुई होती हैं। उन शक्तियों को पहचानता है जो उसके अपने क्षेत्र-ए-अख़्तियार में हैं। आलम-ए-अमर के सत्य उस पर प्रकट होते हैं। वह अपनी आँखों से देखता है कि ब्रह्मांड की रचना में किस प्रकार की रोशनियाँ काम कर रहे हैं और उन रोशनियाँ को संभालने के लिए कौन-कौन से अन्वार प्रयुक्त होते हैं। फिर उसके बोध पर वह तजल्ली भी प्रकट हो जाती है जो उन रोशनियाँ को संभालने वाले अन्वार का मूल है।

एक नवशिक्षु को समझाने के लिए आलम-ए-अमर की उदाहरण इस प्रकार दी जा सकती है कि चाँदनी रात में जबकि चाँदनी से वातावरण परिपूर्ण हो, उस समय आतिशबाज़ी छोड़ी जाए तो आतिशबाज़ी की प्रकाश-रेखाएँ चाँदनी से आवृत होंगी और आतिशबाज़ी की उन रोशनियाँ में बहुत

www.ksars.org

से आकृतियाँ, फूल-पत्तियाँ आदि उभरी हुई प्रतीत होंगी। आतिशबाज़ी की आकृतियाँ रोशनी पर आधारित होंगी और रोशनी चाँदनी पर। यदि चाँदनी को तजल्ली-ए-स्वरूप या आलम-ए-अमर-ख़ास मान लिया जाए तो रोशनी को आलम-ए-अमर-आम और गुण कहा जाएगा। और जो आकृतियाँ रोशनी पर आधारित हैं वे अवतरित तजल्ली-ए-गुण अर्थात् आलम-ए-नस्मह ठहरेंगी। इन आकृतियों की सीमाएँ "व्यक्तियों-ए-ब्रह्मांड" (अफ़राद-ए-काएनात) के नाम से पुकारेंगी। अर्थात् तजल्ली-ए-स्वरूप पर तजल्ली-ए-गुण और तजल्ली-ए-गुण पर नस्मह स्थापित है। इस नस्मह में जब गति उत्पन्न होती है तो काल और स्थान की विभिन्न आकृतियाँ आयाम के मंडल और आकृतियाँ निर्मित करती हैं। ये " आयाम " की आकृतियाँ (ब्रह्मांड) – जैसे चाँद, सूर्य, तारे और अन्य सभी सृष्टि पर आधारित हैं। जब सूफ़ी साधक की सैर आरम्भ होती है तो वह ब्रह्मांड में बाहरी दिशाओं से प्रवेश नहीं करता बल्कि अपने बिंदु-ए-स्वरूप से (जो उपर्युक्त तीन लोकों का संग्रह है) प्रवेश करता है। उसी बिंदु से अस्तित्व की एकता (वहदत-उल-वुजूद) की शुरुआत होती है। जब सूफ़ी साधक अपनी निगाह को उस बिंदु में आकर्षित कर देता है तो एक नूर का द्वार खुल जाता है। वह उस प्रकाश-द्वार से ऐसी राजपथ में पहुँच जाता है जिससे असंख्य मार्ग ब्रह्मांड की सभी दिशाओं में खुल जाते हैं। अब वह कदम दर कदम सभी सूर्य-तंत्रों और सभी नक्षत्र-तंत्रों से परिचित होता है। वह अनगिनत तारों और ग्रहों में निवास करता है। उसे हर प्रकार की सृष्टि का अवलोकन होता है। प्रत्येक आकृति के प्रकट और अप्रकट पक्ष से परिचित होने का अवसर मिलता है। वह क्रमशः ब्रह्मांड की मूलतत्वों और वास्तविकताओं से अवगत हो जाता है। उस पर सृजन के रहस्य उद्घाटित हो जाते हैं और उसके ज़ेहन पर ईश्वर के नियम प्रकट हो जाते हैं। सबसे पहले वह अपने स्व को समझता है, फिर आध्यात्मिकता की विविध धाराएँ उसकी समझ में समा जाती हैं। उसे *तज्जली-ए-ज़ात* और *गुण* का बोध प्राप्त हो जाता है। वह भलीभाँति जान लेता है कि जब ईश्वर ने “कुन” कहा तो किस प्रकार यह ब्रह्मांड प्रकट हुआ और प्रकट रूप किस प्रकार विस्तार पर विस्तार चरणों और मंज़िलों में यात्रा कर रहे हैं। वह स्वयं को भी इन्हीं प्रकटताओं के काफ़िले का एक यात्री देखता है। यह स्पष्ट रहे कि उक्त सैर के मार्ग बाहर में नहीं खुलते। हृदय के केंद्र में जो नूर है, उसकी अथाह गहराइयों में उसके चिन्ह मिलते हैं। यह न समझा जाए कि वह लोक केवल कल्पनाओं और छवियों की निरर्थक दुनिया है। हरगिज़ ऐसा नहीं है। उस लोक में वे सभी मूलतत्त्व और वास्तविकताएँ मूर्त और साकार रूप में विद्यमान हैं जो इस लोक में पाई जाती हैं।

सत्य के अनुसार प्रत्येक आकृति के तीन अस्तित्व होते हैं:

एक अस्तित्व *तज्जली-ए-ज़ात* में,

www.ksars.org

दूसरा अस्तित्व *तज्जली-ए-गुण* में,

तीसरा अस्तित्व आलम-ए-ख़ल्क़ में।

كَلَّا إِنَّ كِتَابَا لْفُجَّارِ لَفِي سِجِّينٍ ﴿٧﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا سِجِّينٌ﴿٨﴾ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ﴿١٠﴾ الَّذِينَ
يُكَذِّبُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ﴿١٢﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ﴿١٣﴾ كَلَّا ۖ بَلْ ۜرَانَ عَلَىٰ قُلُوبِهِم مَّاكَانُوايَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾ كَلَّاإِنَّهُمْ عَن رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوبُونَ ﴿١٥﴾ثُمَّ إِنَّهُمْ
لَصَالُو الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنتُم بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٧﴾ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾ وَمَا أَدْرَاكَ
مَا عِلِّيُّونَ ﴿١٩﴾ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ﴿٢٠﴾يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾ إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾ عَلَى الْأَرَائِكِ
يَنظُرُونَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَالنَّعِيمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ﴿٢٥﴾ خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ
فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾ وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ
الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾ وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾ وَإِذَا انقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انقَلَبُوا فَكِهِينَ ﴿٣١﴾ وَإِذَا رَأَوْهُمْ
قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُّونَ ﴿٣٢﴾ وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَافِظِينَ ﴿٣٣﴾ فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾ عَلَى
الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ﴿٣٦﴾

(पारा 30, आयत 7-28)

अनुवाद: कोई नहीं, लिखा पापियों का पहुँचना कारागार में। और तुझको क्या खबर है कैसा कारागार? एक लेखा है लिखा हुआ। विनाश है उस दिन झुठलाने वालों का, जो असत्य जानते हैं न्याय का दिन और उसका झुठलाना वही है जो बढ़-चलने वाला पापी है। जब सुनाते उसको आयतें हमारी, कहता है – नक़लें हैं पहले वालों की। कोई नहीं, पर जंग पकड़ गया है उनके हृदय पर, वह जो कुछ कमाते थे। कोई नहीं, वह अपने पालनहार से उस दिन रोके जाएँगे, फिर निश्चित पहुँचने वाले हैं नरक में। फिर कहेगा – यह है जिसको तुम असत्य जानते थे। कोई नहीं, लिखा सज्जनों का है ऊपरी लोक में। और तुझको क्या खबर है क्या हैं ऊपरी लोक। एक लेखा है लिखा, उसको देखते हैं समीप वाले। निश्चय ही सज्जन लोग हैं सुख में। आसनों पर बैठे देखे जाएँगे। पहचाने तो उनके मुख पर ताज़गी सुख की। उनको पिलाई जाती है मदिरा मुहर में धरी, जिसको मुहर जमती है कस्तूरी पर और इस पर चाहें तो अभिलाषा करें, अभिलाषा करने वाले। और उस मदिरा में मिश्रण तसनीम का होगा, एक सोता जिससे पीते हैं समीप वाले।

اَلَا لَہُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ अलालहु-ल-ख़ल्कु वल-अमरु (पारा ८, रुकू १४)

अनुवाद: हमने उत्पन्न किया और आदेश किया।

www.ksars.org

उपरोक्त आयतों की निगाह से ये तीनों अस्तित्व अपनी गति और स्थिरता में ईश्वर की ओर से आदेशित होते हैं। और यह आदेश सूचना पर आधारित होता है। "हमने सृष्टि की और आदेश किया" – यह दो रुख़ों पर आधारित है। एक रुख़ "अल्लाहु नूरुस्समावात" के अंतर्गत है और दूसरा रुख़ गति के अंतर्गत, जिसका पारिभाषिक नाम नस्मह है, क्रियान्वित होता है। अल्लाहु नूरुस्समावात वह मूल है जिस पर पहले "कुन" का क़ियाम है। इस कुन का प्रकट होना एक हयूलाई-ए-नूरानी के रूप में अवतरित हुआ। यह सृष्टि का संक्षेप है। फिर ईश्वर के ज्ञान और संकल्प के अधीन (नस्मह) गति का विस्तार हुआ। हयूलाई-ए-नूरानी हर आकृति को आवृत करता है और हर आकृति के भीतर विस्तारिक कार्यों की एक निश्चित समतल का अस्तित्व है, जिसे सामान्य पारिभाषा में माहियत कहा जाता है। यह माहियत हयूलाई-ए-नूरानी के भीतर पारे के तमसुल हैं। सृष्टि की व्याख्या में ये दोनों स्पष्ट दिखाई देते हैं: पहला – हीुला, दूसरा – गति की सतह, अर्थात् पारे के तमसुल हयूलाई-ए-नूरानी वह आकृति है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता और पारे की समतल के तमसुल गति हैं जो हर क्षण परिवर्तित होते रहते हैं। इस परिवर्तनीय समतल में कालिकता, कालिकता और कार्यों का विस्तार तथा पालन पाया जाता है। इस समतल में एक प्रकार की चमक है जिसमें आदेशों का निरंतर प्रतिबिंब पड़ता रहता है। इसी प्रतिबिंब का नाम गति (हरकत) है। यह गति अंतरालों के माध्यम से विविध आकृतियों के मंडल निर्मित करती है। इन्हीं मंडलों को ईश्वर ने क़ुरआन में किताब-ए-मरक़ूम कहा है। इन आकृतियों के मंडलों की रचना गति के आरोहण और अवरोहण से होती है। गति की यह सतह, जिसे ज़ेहन कहा जाता है, एक ओर स्वरूप-बिंदु (नुक्ता-ए-ज़ात) तक आरोहण करती है और दूसरी ओर चमक की गहराई में पड़ने वाली छाया तक अवरोहण करती है। आरोहण की अवस्था को मानव पारिभाषा में स्वप्न कहा जाता है। आरोहण और अवरोहण की दोनों गतियाँ ईश्वर के संकेतों से संपन्न होती हैं। ब्रह्मांड का प्रत्येक अंश इसका बंधन है। अतः ब्रह्मांड की सभी आकृतियाँ सोती हैं और जागती हैं। आरोहण की अवस्था अर्थात् रबूदगी (अंतःप्रज्ञा) स्वरूप के समीप करती है और अवरोहण की अवस्था अर्थात् बेदारी (अक़्ल) स्वरूप से दूर करती है। मौजूद अस्तित्व की यह दो आवश्यक इकाइयाँ हैं जिन्हें पारिभाषा में जीवन का निर्धारण कहा जाता है। ब्रह्मांड की हर आकृति इस निर्धारण में बंधी है। सूफ़ी साधक की दुनिया में रबूदगी के भीतर यात्रा का साधन मुराकबा है और भौतिकवादियों की दुनिया में बेदारी के भीतर यात्रा का साधन हाथ-पाँव की गति है। क़ुरआन का कार्यक्रम इन दोनों इकाइयों की सुरक्षा पर बल देता है। यहाँ क़ुरआन का कार्यक्रम उल्लेखनीय है। ईश्वर ने अनेक स्थानों पर आदेश दिया है: अक़ीमुस्सलात वा आतुज्ज़कात (नमाज़ क़ायम करो और ज़कात अदा करो)।

www.ksars.org

नमाज़ और ज़कात का कार्यक्रम कुरआनी कार्यक्रम के ये दोनों अवयव, नमाज़ और ज़कात, आत्मा और शरीर का वज़ीफ़ा हैं। वज़ीफ़ा से अभिप्राय वह गति (हरकत) है जो जीवन की गति को बनाए रखने के लिए मनुष्य पर अनिवार्य है। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का कथन है:

"जब तुम नमाज़ में व्यस्त हो तो यह अनुभव करो कि हम ईश्वर को देख रहे हैं। या यह अनुभव करो कि ईश्वर हमें देख रहा है।"

इस कथन के विवेचन से यह सत्य प्रकट होता है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में अंगों की गति के वज़ीफ़े के साथ ईश्वर की ओर उन्मुख रहने की आदत होनी चाहिए। जब कोई व्यक्ति दस-बारह वर्ष की आयु से अठारह-बीस वर्ष की आयु तक, जो उसकी चेतना के प्रशिक्षण का समय है, इस प्रकार नमाज़ क़ायम करेगा तो उसका मस्तिष्क ईश्वर की ओर उन्मुख होने का और उसका शरीर क़ियाम, रुकूअ, क़ौमाह, सज्दा, क़अदा और जल्सा हर प्रकार की गति का अभ्यस्त हो जाएगा। मस्तिष्क का ईश्वर की ओर होना आत्मा का वज़ीफ़ा है और अंगों का गति में रहना शरीर का वज़ीफ़ा है। इस प्रकार केवल नमाज़ के द्वारा कोई व्यक्ति इस बात का अभ्यस्त हो जाता है कि उस पर रबूदगी (अंतःप्रज्ञा) और बेदारी (अक़्ल) दोनों की शुद्ध अवस्था विद्यमान रहे, ताकि जीवन की दोनों क्षमताओं का उचित उपयोग हो सके। जब वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईश्वर की ओर उन्मुख रहने और सांसारिक कार्यों को पूरा करने का अभ्यस्त हो जाता है तो रबूदगी और बेदारी – दोनों अवस्थाओं से समान रूप से परिचित रहता है। यही जीवन की पूर्णता है, यही नमाज़ का कार्यक्रम है। और दूसरा ज़कात का कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य निष्कपट और निःस्वार्थ सेवा-ए-ख़ल्क़ है। तसव्वुफ़ में इसी अवस्था को "जमअ" कहा जाता है – अर्थात वह दशा जिसमें मनुष्य हर समय ईश्वर और ईश्वर की सृष्टि दोनों के साथ रहता है। किसी सूफ़ी साधक के लिए "जमअ" पहली मंज़िल है।

सम्पूर्ण ब्रह्मांड का एक केंद्रीय एकत्व-बिंदु (नुक्ता-ए-वहदानी) है। इस एकत्व-बिंदु की गहराइयों में रोशनी के स्रोतों का नेहर गुप्त है। इस एकत्व-बिंदु से रोशनियाँ उमड़ती हैं और उबलती रहती हैं ब्रह्मांड के भीतर हर क्षण इन्हीं रोशनियाँ से तारों और ग्रहों के असंख्य तंत्र निर्मित होते रहते हैं और लगभग उतनी ही मात्रा में मिटते और नष्ट होते रहते हैं। यही रोशनियाँ पल-पल ब्रह्मांड को विस्तार देती रहती हैं रोशनी की गतियाँ नित्य नूतन रूपों और नूतन आकृतियों की छवियों में ब्रह्मांड का विस्तार करती रहती हैं। इन प्रकाश-गतियों के भी दो रुख़ होते हैं। एक रुख़ – रोशनी के गहराइयों में सिमटने और एकत्र होने पर आधारित है। दूसरा रुख़ – रोशनी के फैलने

www.ksars.org

और प्रसारित होने पर आधारित है। गहराइयों में सिमटने को गुप्त गति (मख़फ़ी हरकतें) कहा जा सकता है। फैलने और प्रसारित होने को सकारात्मक गति (मुस्बित हरकत) कहा जाता है। गति की यही दो अवस्थाएँ आकर्षण (कश्श) और प्रत्याख्यान (गुरेज़) के नाम से व्यक्त की जाती हैं। सम्पूर्ण ब्रह्मांड में आकर्षण और प्रत्याख्यान के करोड़ों मंडल पाए जाते हैं। इन मंडलों में प्रत्येक मंडल अपनी एक केंद्रिकता रखता है, किन्तु उन सभी मंडलों की केंद्रिकताएँ एकत्व-बिंदु की दिशा में गतिशील रहती हैं। अन्य शब्दों में, एकत्व-बिंदु से इन मंडलों की केंद्रिकताओं में नूर की किरणों का एक क्रम अनादि से अनंत तक प्रवाहित और स्थापित है।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰـهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا
وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللّٰـهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

(सूरह अ़आराफ़ – आयत 54)

अनुवाद: निश्चय ही तुम्हारा पालनहार अल्लाह ही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छह दिनों में उत्पन्न किया। फिर वह अरश पर प्रतिष्ठित हुआ। वह रात से दिन को ढक देता है – इस प्रकार कि रात शीघ्रता से दिन का पीछा करती है। और सूर्य, चन्द्रमा और तारों को उत्पन्न किया – सब उसके आदेश के अधीन हैं। सावधान! सृष्टि और आदेश केवल उसी के लिए हैं। अल्लाह अत्यन्त बरकत वाला है, सब लोकों का पालनहार।

इस आयत में एकत्व-बिंदु (नुक्ता-ए-वहदानी) की ओर संकेत है, जो रुबूबियत (रबानियत) का गुण है। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की हदीस "मन अ़रफ़ा नफ़्सहू फ़क़द अ़रफ़ा रब्बहू" में भी इसी ओर संकेत है। "इन्नी अनारब्बुक" (मैं हूँ तेरा पालनहार) और "इन्नी अनल्लाहु रब्बुल आलमीन" (मैं हूँ, मैं अल्लाह, सब लोकों का पालनहार) – यहाँ ईश्वर ने अपनी ज़ात (स्वरूप) को *अल्लाह* कहा है और अपनी गुण को *रब्ब* कहा है। इस प्रकार नुक्ता-ए-वहदानी गुण-ए-रुबूबियत का केंद्र है। उपर्युक्त हदीस में स्पष्ट किया गया है कि मनुष्य पहले ईश्वर के गुण-ए-रुबूबियत से परिचित होता है और यही गुण सृष्टि से सबसे अधिक निकट है।

ब्रह्मांड की प्रत्येक आकृति रोशनी की एक भिन्न प्रकार है। प्रत्येक प्रकार के रोशनी की अपनी एक मात्रात्मक गति है, जो विशिष्ट रंगों की एक अनुक्रमणा है। प्रत्येक अनुक्रमणा के अधीन समान और मिलती-जुलती आकृतियाँ प्रकट होती हैं। इस प्रकार प्रत्येक प्रकार की मात्रात्मक गति अपनी एक अलग केंद्रिकता रखती है। ये सभी केंद्रिकताएँ मिलकर नुक्ता-ए-वहदानी की ओर आरोहण करती हैं। आरोहण और अवरोहण की यही विधा किसी वस्तु में परिवर्तन उत्पन्न करती

www.ksars.org

है। और इसी परिवर्तन का नाम आदेश (हुक़्म) का विस्तार है, जिसका उल्लेख ईश्वर ने अपने वचन "अला लहुल-ख़ल्कु वल-अमरु" में किया है।

सृष्टि और आदेश

सृष्टि और आदेश को समझने के लिए ब्रह्मांडीय जीवन की केंद्रिकता और क्रम को समझना आवश्यक है। ब्रह्मांड की प्रत्येक आकृति के तीन अस्तित्व होते हैं।

पहले अस्तित्व का स्थापन सुरक्षित पट्टिका (लौह-ए-महफ़ूज़) में है।

दूसरे अस्तित्व का स्थापन लोक प्रतिरूप (आलम-ए-तम्साल) में है।

तीसरे अस्तित्व का स्थापन आलम-ए-रंग में है।

आलम-ए-रंग से अभिप्राय ब्रह्मांड के वे सभी भौतिक शरीर हैं जो रंगों की सामूहिकता पर आधारित हैं। ये शरीर असंख्य रंगों में से अनेक रंगों का संयोजन होते हैं। ये रंग नस्मह की विशेष गतियों से अस्तित्व में आते हैं। नस्मह की एक निश्चित लंबाई की गति से एक रंग बनता है। दूसरी लंबाई की गति से दूसरा रंग। इस प्रकार नस्मह की असंख्य लंबाईगत गतियों से असंख्य रंग अस्तित्व में आते हैं। इन रंगों का संख्यात्मक समूह प्रत्येक प्रकार (नऊ) के लिए अलग-अलग निश्चित है। यदि गुलाब के लिए रंगों का *अलिफ़* संख्यात्मक समूह निर्धारित है तो उसी *अलिफ़* संख्यात्मक समूह से सदैव गुलाब ही अस्तित्व में आएगा, कोई अन्य वस्तु अस्तित्व में नहीं आएगी। यदि आदमज़ाद की रचना रंगों की *जीम* संख्या से होती है तो उस संख्या से कोई अन्य पशु निर्मित नहीं हो सकता। केवल मानव-प्रकार ही के व्यक्ति अस्तित्व में आ सकते हैं। ईश्वर ने क़ुरआन में इस नियम को स्पष्ट रूप से बयान किया है:

"فِطْرَتَ اللهِ الَّتِىْ فَطرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَاتَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللهِ -फित्रतल्लाहिल्लती फतरन्नास अ़लैहा, ला तबदीला लि-ख़ल्किल्लाह" (सूरह रूम, आयत 30)

यहाँ फितरत से अभिप्राय नस्मह की गति की लंबाई, उसकी गति और उसका जमाव है। आलम-ए-रंग में जितनी वस्तुएँ पाई जाती हैं वे सब रंगीन रोशनियाँ का समूह हैं। इन्हीं रंगों के जमाव से वह वस्तु अस्तित्व में आती है जिसे सामान्य भाषा में माद्दा (पदार्थ) कहा जाता है। जैसा कि समझा जाता है यह पदार्थ कोई ठोस वस्तु नहीं है। यदि इसे तोड़कर और बिखेरकर अंतिम मानों तक पहुँचा दिया जाए तो केवल रंगों की पृथक-पृथक किरणें ही शेष रह जाएँगी। यदि अनेक रंग

www.ksars.org

लेकर जल में घोल दिए जाएँ तो एक मिट्टी जैसा मिश्रण बन जाता है जिसे हम मिट्टी कहते हैं। घास, पौधों और वृक्षों की जड़ें जल की सहायता से मिट्टी के कणों को तोड़कर और छानकर उन्हीं रंगों में से अपनी प्रजाति के रंग ग्रहण कर लेती हैं। वे सभी रंग पत्तियों और पुष्पों में प्रकट हो जाते हैं। सभी सृष्टियों और अस्तित्व की प्रकट जीवन-धारा इसी रासायनिक क्रिया पर आधारित है। नस्मह की गति भीतरी जीवन से बाहरी जीवन तक कार्य करती है और बाहरी जीवन को मज़हर (प्रत्यक्ष रूप) की आकृति देती है। वस्तुतः यह आकृति केवल रंगों की सामूहिकता है। नस्मह के भीतर दो प्रकार की मज़हरियत (प्रकटन) होती है:

प्रारम्भिक गति की लंबाई (हरकत का तूल)

क्रम में दूसरा गति की गति (हरकत की रफ़्तार)

गति की लंबाई कालिकता (मक़ानियत) है और गति की गति कालिकता (ज़मानियत) है। गति की ये दोनों विधाएँ एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकतीं।

तीन आलम क्यों?

जब चित्रकार चित्र बनाता है तो वह चित्र उसके छवि का प्रतिबिंब होता है। छवि स्वयं काग़ज़ पर स्थानांतरित नहीं होती। इसी कारण वह किसी वस्तु की जितनी भी आकृतियाँ बनाना चाहे बना सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि छवि ज्यों की त्यों उसके मस्तिष्क में सुरक्षित रहती है और प्रतिबिंब स्थानांतरित होता है। इस प्रकार सृष्टि का यह नियम उद्घाटित हो जाता है कि मूल अपनी जगह सुरक्षित रहती है और प्रतिबिंब प्रवाहित होता है। अतः सारी सृष्टि प्रकट होने से पहले जिस प्रकार सृजनहार के इरादे में सुरक्षित थी अब भी उसी प्रकार सुरक्षित है। ब्रह्मांड का यही केंद्र सुरक्षित पट्टिका (लौह महफ़ूज़) कहलाता है, जिसे नुक्ता-ए-वहदानी भी कहा जा सकता है।

अस्तित्वात् वस्तुएँ में जितनी भी प्रकारें हैं, उनकी सबकी मूलताएँ नुक्ता-ए-वहदानी में सुरक्षित हैं। नुक्ता-ए-वहदानी के ठीक सामने एक दर्पण है जिसे आलम-ए-मिसाल(लोक प्रतिरूप) कहते हैं। इस दर्पण में प्रत्येक प्रकार की अलग-अलग केंद्रिकता होती है। यह केंद्रिकता किसी प्रकार के सभी व्यक्तियों का एक ऐसा समष्टिगत ही◌ुला है जिसमें उस प्रकार की निश्चित आकृति और रूप अंकित होती है। अतः नुक्ता-ए-वहदानी की असंख्य प्रकारें अपनी रोशनियाँ से असंख्य प्रकारों का केंद्रीय ही◌ुला निर्मित करती हैं।

www.ksars.org

जब नुक्ता-ए-वह्दानी की किरणें आलम-ए-मिसाल की ओर गति करती हैं तो काल (टाइम) का उद्‌भव होता है लेकिन यह गति एकहरी होती है। इसमें एक सततता पाई जाती है। इस गति की लंबाई अनादि से अनंत तक है। काल भी अनादि से अनंत है। इसी कारण इस गति को काल (टाइम) कहा जाता है। यह गति अनादि से अनंत तक निरंतर यात्रा करती है। जब यह गति आलम-ए-मिसाल से गुज़र जाती है तो टुकड़ों में विभाजित हो जाती है।

आलम-ए-मिसाल का दर्पण किरणों को स्वीकार कर अपनी प्रकृति के अनुसार उन्हें लौटाने का प्रयास करता है। इस प्रयास से किरणों की सततता टूट जाती है। एक ओर नुक्ता-ए-वह्दानी की प्रकृति उन्हें आगे बढ़ाने पर बाध्य करती है, दूसरी ओर मिसाली दर्पण की प्रकृति किरणों को लौटाने में अपनी पूरी शक्ति लगा देती है। इस संघर्ष में यह गति संयुक्त (दोहरी) हो जाती है। गति में भी दो रुख़ होते हैं:

एक आकर्षण (कश्श), दूसरा प्रत्याख्यान (गुरेज़)।

मुफ़रद गति (काल) जो नुक्ता-ए-वह्दानी से आरंभ होती है, अवरोही गति है। नुक्ता-ए-वह्दानी से विपरीत दिशा में यात्रा करती है, इसलिए इसे प्रत्याख्यान (गुरेज़) कहा जाता है।

जब मिसाली दर्पण प्रतिबिंब को लौटाने का प्रयास करता है तो एकवचन (मुफ़रद) गति की दिशा बदल जाती है। वह अब तक अवरोह कर रही थी, लेकिन गति के विपरीत होने से आरोहण की ओर मुड़ जाती है। यह गति आकर्षण (कश्श) कहलाती है।

www.ksars.org

सृष्टि का नियम

काल और स्थान को समझने के लिए "कुन" की व्याख्या आवश्यक है। जब हम शब्द क़ुरआन कहते हैं तो हमारा आशय उससे वह समझ और समझाना होता है जो क़ुरआन के रूप में ईश्वर की ओर से हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर अवतरित हुई। हमारा आशय क़-र-आन के अक्षरों (क़ाफ़, रा, अलिफ़, नून) या मात्राओं से कभी नहीं होता। इसका अर्थ यह है कि हर बात के लिए एक नाम या प्रतीक होता है जिसे शरीर कहा जा सकता है, लेकिन कोई प्रतीक या शरीर उस वस्तु की जीवन या आत्मा नहीं होता। प्रतीक या शरीर अनुमान है; उसके भीतर रहने वाली आत्मा या जीवन ही सत्य है। सुनने वाला शब्द को सुनता है और सत्य को समझता है। जब हम क़लम (क़ ल म) कहते हैं तो सुनने वाला क़-ल-म नहीं समझता, बल्कि उसके मन में वह वस्तु आती है जो लिखने का कार्य करती है। यहाँ से संरचना का नियम स्पष्ट हो जाता है। यदि हम किसी वस्तु को उसकी जीवन या गति कहें तो हम उस वस्तु के सत्य का उल्लेख करेंगे। अब हम अस्तित्व के भीतर जितनी भी जातियाँ हैं और उन जातियों में जितने भी अवयव (व्यक्ति) हैं, उनमें से प्रत्येक का नाम कण (ज़र्रा) रख लेते हैं। यह कण वास्तव में गति (प्रेरणा) है जिसके दो पक्ष हैं: गति का एक पक्ष रंगीनी रोशनी है, जिसे उस कण का प्रकट रूप या शरीर कहा जाता है। गति का दूसरा पक्ष निर्वर्ण रोशनी है, जिसे जीवन, प्रकृति, चरित्र या सत्य कहा जाता है। सत्य या निर्वर्ण रोशनी या गति (नस्मा) का एक पक्ष काल (ज़मान) कहलाता है। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की एक हदीस शरीफ़ है...

لَاتَبسُوْءُ الدَّهْر اِنّ الدَّهْر هُوَ الله

अनुवाद :“ज़माने को बुरा मत कहो, ज़माना अल्लाह है।”

गति के उस पक्ष में कोई परिवर्तन नहीं है। ईश्वर के आदेश के अनुसार गति (नस्मा) के भी दो पक्ष होते हैं। ये दोनों पक्ष, जैसा कि नियम है, गुणों के आधार पर एक-दूसरे के विपरीत हैं। गति का वह पक्ष जिसमें परिवर्तन होता है उसे स्थान (मकान) कहते हैं, और वह विपरीत पक्ष जिसमें परिवर्तन नहीं होता उसे काल (ज़मान) कहते हैं। वे सभी गुण जो किसी सत्ता, चरित्र या जीवन की मूल धारणाएँ हैं, उनका स्थायित्व काल के भीतर है। उन मूलों में कोई परिवर्तन नहीं होता क्योंकि उनका आधार या केन्द्र काल है जो अपरिवर्तनीय है। गति का वह पक्ष जो काल के विपरीत है स्थान कहलाता है। हर प्रकार का परिवर्तन उसी पक्ष में होता है। ईश्वर ने क़ुरआन में आदेश दिया है:

www.ksars.org

“نحن أقرب إليه من حبل الوريد”

इन शब्दों में काल की व्याख्या की गई है। ईश्वर की शरण!! ईश्वर का कोई भी कथन या आदेश व्यर्थ नहीं होता। इस बात की पुष्टि हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की उपर्युक्त हदीस से होती है: “ज़माने को बुरा मत कहो, ज़माना अल्लाह है।” हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दूसरी हदीस भी इसी अर्थ को स्पष्ट करती है:

“मन अरफ़ा नफ़्सहु फ़क़द अरफ़ा रब्बहु”

مَنْ عَرَفَ نَفْسَہٗ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّہٗ

स्वरूप (नफ़्स) उस सत्य का नाम है जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता।

काल को समझ लेने के बाद सृजनशीलता (ख़ालिक़ियत) और सृष्टित्व (मख़लूक़ियत) के मूल्य अलग-अलग हो जाते हैं।

ईश्वर का आदेश है...

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌOاَللّٰهُ الصَّمَدُOلَمْ يَلِدْOوَلَمْ يُوْلَدOوَلَمْ يَكُنْ لَّہٗ كُفُواً اَحَدٌO

अनुवाद: ईश्वर लासानी है। ईश्वर निःसंग है। ईश्वर निरौलाद है। निःमाता-पिता है। ईश्वर निरकुफ़्व है। ये सब सृजनशीलता (ख़ालिक़ियत) की मूल्य-धारणाएँ हैं।

सानी होना, आश्रित होना, संतान वाला होना, माता-पिता वाला होना, वंश वाला होना – ये सब सृष्टित्व (मख़लूक़ियत) की मूल्य-धारणाएँ हैं। ये मूल्य स्थान (मकान/मज़हर - Space) पर आधारित हैं। लेकिन सृजनशीलता की मूल्य-धारणाएँ इनसे विपरीत हैं। सृष्टित्व की मूल्य-धारणाओं में आरम्भ, अन्त, संदेह, प्रतिच्छाया-रंग (रोशनी) की श्रेणीकरण और हर प्रकार का परिवर्तन होता है। विभिन्न जातियों में विभिन्न रूप, विभिन्न चिहन और अवस्थाएँ पाई जाती हैं।

काल और स्थान की बहुत स्पष्ट मिसाल मार्ग और यात्री से दी जा सकती है। मार्ग काल है और यात्री स्थान।
यद्यपि यात्री का लगाव स्वयं में, अर्थात् अपने चिन्हों और अवस्थाओं में होता है, तथापि यात्री बिना मार्ग के अपना अस्तित्व बनाए नहीं रख सकता। वह मार्ग से चाहे जितना गाफ़िल रहे, लेकिन यह असम्भव है कि वह मार्ग से असम्बद्ध हो जाए। यह बात विचारणीय है कि यात्री और मार्ग में न्यूनतम और सूक्ष्मतम फासला भी नहीं हो सकता। यात्री स्वयं मार्ग की ही सृष्टि

www.ksars.org

है। यात्री की सारी गतियाँ और ठहराव, सम्पूर्ण आचरण, जीवन की शैलियाँ और विचारधाराएँ मार्ग की सीमाओं से बाहर नहीं जा सकतीं। वह मार्ग के मूल्यों और मार्ग के नियमों का बंधनशील है। मानव जीवन में मार्ग अवचेतन है और यात्री चेतना। हम चेतना से अवचेतन को पहचान सकते हैं। यदि किसी व्यक्ति का लगाव चेतना में अधिक से अधिक है तो उसकी एकाग्रता अवचेतन में न्यूनतम है, जिससे जीवन की क्रियाएँ और मूल्य घट जाते हैं। चेतना का अधिक होना चेतना के अधिक गति में रहने की दलील है। इसलिए क्रिया की मात्रा न्यूनतम रह जाती है। जब मनुष्य लगातार विचार करता है तो अवचेतन के गति में आने का अंतराल अत्यल्प रह जाता है और वही अंतराल क्रिया का अंतराल है, क्योंकि वह सोच-विचार से मुक्त होता है।

यह नियम हुआ कि जितना अधिक समय अवचेतन को दिया जाएगा, जीवन उतने ही कर्मों के मार्ग तय करेगा। वास्तव में अवचेतन ही नस्मा की गति का वह पक्ष है जो जीवन की स्थानिकताओं, अर्थात् जीवन के कार्यों का निर्माण करता है। हम पुनः स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि नुक्ता-ए-वहदानी के दो पक्ष हैं: एक लोक-ए-नूर जो वास्तविक काल है, दूसरा लोक-ए-अमर जो वास्तविक स्थान है। लोक-ए-अमर या वास्तविक स्थान में काल प्रभावी और स्थान अप्रभावी है।

लोक-ए-मकान (लोक-ए-ख़ल्क़) में स्थान प्रभावी और काल अप्रभावी है। काल वास्तविक स्थान में भी बसात (Base Line) है और स्थान में भी। वास्तविक स्थान नस्मा-ए-मुफ़रद (एकात्मक नस्मा) है और स्थान नस्मा-ए-मुरक्कब (संयोजित नस्मा)। नस्मा-ए-मुफ़रद का सामान्य निर्माण लोक-ए-अमर कहलाता है और नस्मा-ए-मुरक्कब का समस्त निर्माण लोक-ए-ख़ल्क़ कहलाता है। इन दोनों लोकों के बीच लोक-ए-मिसाल (तमसुल) पर्दा (बरज़ख़) है। मनुष्य लोक-ए-अमर में पाँच क़दम उठाता है, फिर लोक-ए-ख़ल्क़ में दो क़दम। पाँच क़दम हैं – अख़फ़ा, ख़फ़ी, सिर्र, आत्मा और क़ल्ब। और दो क़दम हैं –एहसास (स्वरूप) और आकार (क़ालेब।) अर्थात् पाँच क़दम लोक-ए-अमर के हैं और दो क़दम लोक-ए-ख़ल्क़ के।

अख़फ़ा और ख़फ़ी की गति अवचेतन में रहती है। यही प्रथम गति (हरकत-ए-ऊला) है। सिर्र, आत्मा और क़ल्ब की गतियाँ मानव-शरीर (क़ालेब-ए-इंसानी) में वहम, ख़याल और छवि की प्रकृति रखती हैं। यही द्वितीय गति (हरकत-ए-सानी) है। स्वरूप (नफ़्स) और शरीर की गतियाँ मानव-शरीर में एहसास और कर्म की हैसियत रखती हैं। यही अंतिम गति (हरकत-ए-आख़िर) है। अख़फ़ा निर्वर्ण गति है जिसमें गुरेज़ (विकर्षण) पाया जाता है। ख़फ़ी निर्वर्ण गति है जिसमें कर्षण (आकर्षण) पाया जाता है। सिर्र एक-रंगी गति है जिसमें गुरेज़ पाया जाता है। आत्मा एक-रंगी

www.ksars.org

गति है जिसमें कर्षण पाया जाता है। क़ल्ब बहुरंगी गति है जिसमें गुरेज़ पाया जाता है। स्वरूप (नफ़्स) बहुरंगी गति है जिसमें कर्षण पाया जाता है। क़ालेब इन गतियों का प्रदर्शन है।

लोक-ए-अमर की सभी गतियाँ मुफ़रद (एकात्मक) हैं। उनमें से दो गतियाँ ऐसी हैं जिनमें कोई रंग नहीं – जो निषेध का विस्तार हैं

1. ला-गुरेज़ – अख़फ़ा (लोक-ए-अमर ख़ास)।
2. ला-कर्षण – ख़फ़ी (लोक-ए-अमर आम)।

अख़फ़ा से ला-गुरेज़ का आत्मिक उद्भेदन (कश्फ़) होता है और ख़फ़ी से ला-कर्षण का आत्मिक उद्भेदन होता है। ये दोनों लताइफ़ अस्तित्व की मूलों के बसात (Basid Points) हैं। अख़फ़ा किसी जाति की वह मूल है जिसमें उस जाति का एक ही आदि द्रव्य -(हैयूला) उसके सभी व्यक्तियों को घेरे रहता है। उदाहरण क़ायनाती वस्तु से दी जा सकती है – जैसे किसी वृक्ष का पहला बीज जो कभी उगा था, उस बीज के भीतर ब्रह्मांड की आयु तक पैदा होने वाले सभी वृक्ष मौजूद थे। वही एक बीज अपनी पूरी जाति का हैयूला बना। उस बीज के हैयूला में ऐसी गति पाई जाती है जो अपने आरम्भ (मुब्तदा) से अन्त (मज़हर) की ओर विकर्षण करने वाली है। यह जातिगत हैयूला की गति का पहला क़दम है। दूसरा क़दम ख़फ़ी है जो अपने मज़हर से मुब्तदा की ओर खींचता है। ला में लोक-ए-अमर के दो आरम्भिक बसात पाए जाते हैं। ये "कुन" के दो प्रारम्भिक क़दम हैं। लाम (ल) विकर्षण का विस्तार है। अलिफ़ (अ) कर्षण का विस्तार है। ये दोनों बसात – अख़फ़ा और ख़फ़ी – जीवन की मूल (अवचेतन) हैं। यदि इन दोनों बसातों के योग को निगाह का नाम दें तो उस निगाह को समतल और गहराई (उम्क़) दोनों दिशाओं में विभाजित करेंगे। दोनों दिशाओं में: अख़फ़ा गहराई है। ख़फ़ी समतल है। अख़फ़ा की निगाह सदैव पर्दे के पीछे देखती है और ख़फ़ी की निगाह सदैव पर्दे के ऊपर देखती है। अख़फ़ा की निगाह पर्दे से गुज़र जाती है क्योंकि पर्दा कर्षण है और अख़फ़ा विकर्षण। लेकिन ख़फ़ी की निगाह कर्षण है, इसलिए वह पर्दे पर ठहर जाती है, गुज़र नहीं सकती।

سَبَّحَ لِلَّـهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢﴾ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنزِلُ مِنَ السَّمَاءِ
وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ ۚ وَاللَّـهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِلَى
اللَّـهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾ (सूरह हदीद, आयत 1-5)

www.ksars.org

अनुवाद :अल्लाह की पवित्रता बयान करते हैं सब जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है और वह महान बलशाली, तत्वदर्शी है। उसी का आधिपत्य है आकाशों और पृथ्वी का, वही जीवन देता है, वही मृत्यु देता है और वही प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है। वही प्रथम है, वही अंतिम है, वही प्रकट है और वही आंतरिक है और वही हर वस्तु का भली-भाँति जानने वाला है। वही ऐसा है कि उसने आकाशों और पृथ्वी को छः दिनों में उत्पन्न किया, फिर सिंहासन पर प्रतिष्ठित हुआ। वही सब कुछ जानता है–जो वस्तु पृथ्वी के भीतर प्रवेश करती है और जो वस्तु उससे निकलती है और जो वस्तु आकाश से उतरती है और जो वस्तु उसमें चढ़ती है–और वह तुम्हारे साथ रहता है चाहे तुम लोग कहीं भी हो, और तुम्हारे सब कर्मों को देखता है। उसी का आधिपत्य है आकाशों और पृथ्वी का और अल्लाह ही की ओर सब विषय लौटाए जाएँगे।

नुज़ूल व सु'ऊद अवतरण और आरोहण

अख़फ़ा, ख़फ़ी, सिर्र, आत्मा, क़ल्ब और स्वरूप – ये सब छह लताइफ़ "सूक्ष्म तत्व" हुए। वास्तव में ये छह गतियों के नाम हैं। इनमें से प्रत्येक गति प्रत्येक जाति में एक लंबाई रखती है। इन छह गतियों में से तीन गतियाँ नुज़ूली हैं और तीन सु'ऊदी। तीन नुज़ूली गतियों के मुक़ाबले दूसरे पक्ष पर तीन सु'ऊदी गतियाँ एक साथ घटित होती हैं। प्रत्येक जाति में पहली गति अख़फ़ा, विकर्षण या नुज़ूल की गति है। यह गति गहराई से समतल की ओर उभरती है। यह गति अपनी निश्चित लंबाई तय करने के बाद जिस समतल पर पहुँचती है उसका नाम सिर्र है। अख़फ़ा में यह गति निर्वर्ण थी, लेकिन जब यह सिर्र (तमसुल) के भीतर क़दम रखती है तो इसमें एक रंग उत्पन्न हो जाता है। अख़फ़ा की निर्वर्णता समस्त रंगों की मूल थी। अब सिर्र की एकरंगी अपने भीतर सभी रंगों को समेटे हुए है। सिर्र के बाद यह गति एक और लंबाई तय करती है। जैसे ही यह लंबाई तय हो जाती है, एकरंगी के भीतर जितने भी रंग थे सब बिखर जाते हैं। जिन सीमाओं में ये रंग फैले हैं, उन सीमाओं का एक पक्ष क़ल्ब या छवि और दूसरा पक्ष स्वरूप या एहसास है। रंगों का यही समूह मज़हर या शरीर है, चाहे किसी भी जाति का हो। अब तक इस सफ़र में अवचेतन अर्थात् काल समतल पर था और स्थान अर्थात् चेतना गहराई में, लेकिन मज़हर की सीमाओं में क़दम रखने के बाद काल गहराई में चला जाता है और स्थान समतल पर आ जाता है तो गति सु'ऊदी हो जाती है। यह गति मज़हर (लतीफ़ा-ए-नफ़्सी) से आत्मा की ओर चढ़ती है और आत्मा से ख़फ़ी की ओर। अख़फ़ा सुरक्षित पट्टिका है। सिर्र तमसुल है। लतीफ़ा-ए-रूह धार्मिक भाषा में आ'राफ़ या बरज़ख़ कहलाता है। ख़फ़ी किताब-उल-मरक़ूम, हश्र-ओ-नशर का

www.ksars.org

पड़ाव है। जैसा कि हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं, मानवीय जीवन के ये सात क़दम हुए। सातों क़दम सात आयु हैं। इन सातों आयुओं के दो सामूहिक नाम हैं।

एक लोक-ए-रंग या लोक-ए-नासूत अर्थात वर्तमान दुनिया। दूसरा हश्र-ओ-नशर।

इन दो मंज़िलों के बीच दो और पड़ाव आते हैं। सुरक्षित पट्टिका (लौह महफ़ूज़) और लोक-ए-नासूत का मध्यवर्ती पड़ाव तमसुल (लोक-ए-मिसाल) कहलाता है। लोक-ए-नासूत और हश्र-ओ-नशर का मध्यवर्ती पड़ाव लोक-ए-बरज़ख़ कहलाता है। यह पड़ाव सु ऊदी गति में सामने आता है।

व्याख्या: क़लम अर्थात् इल्म-उल-क़लम और लौह अर्थात् सुरक्षित पट्टिका।

ये दोनों एकत्व बिंदु के दो पक्ष हैं, जो पक्ष ईश्वर का स्वरूप की ओर है उसे इल्म-उल-क़लम कहते हैं। यही पक्ष स्वरूप की तजल्लि भी कहलाता है और सामान्य परिभाषा में विराए निर्वर्ण या विराए अवचेतन कहा जा सकता है। क़लम और पट्टिका के तेइस विभाग हैं। हम यहाँ क़लम (विराए निर्वर्ण) के तेइस विभागों का उल्लेख न करके केवल पट्टिका (निर्वर्ण) के उस विभाग का उल्लेख करेंगे जिसका बयान उपर्युक्त आयत में किया गया है। यह विभाग पट्टिका या अवचेतन के उस बिंदु से सम्बद्ध है जिसकी एक पृष्ठभाग स्मृति है और दूसरी पृष्ठभाग विचार है। ये दोनों पृष्ठभाग एक ही गति के दो पक्ष हैं–एक पक्ष स्मृति का पृष्ठभाग और दूसरा पक्ष विचार का पृष्ठभाग। स्मृति का पृष्ठभाग ख़लाए नूर है। यह विस्तृत, गहन और व्यापक है। विचार का पृष्ठभाग मात्र नूर है, जो ख़लाए नूर से नूर की ओर अर्थात् अनंतता से सीमितता की ओर अवतरण करता है। इसी गति का उल्लेख ईश्वर ने उपर्युक्त आयत के पहले भाग में किया है।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَافِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ   الخ

इस प्रकार हर वस्तु अनंतता से सीमितता में आकर इस बात का परिचय कराती है कि ईश्वर का स्वरूप पवित्र, निर्मल और असीमित है और अनंतता ही ईश्वर की सुभानियत और पवित्रता का विभाग है। यदि अपरिवर्तनशील और परिवर्तनशील को अलग-अलग समझना चाहें तो अपरिवर्तनशील का नाम अनंतता और परिवर्तनशील का नाम सीमितता रखना होगा। जब किसी वस्तु में परिवर्तन उत्पन्न होता है तो पहले सीमाओं की स्थापना होती है, अर्थात् सीमाबंदी के बिना कोई वस्तु परिवर्तन का प्रदर्शन नहीं कर सकती। परिवर्तन गति का दूसरा नाम है और किसी वस्तु में जब तक सीमाओं का निर्धारण मौजूद न हो गति घटित नहीं हो सकती। परिवर्तन

www.ksars.org

से मुक्त होना प्रत्येक प्रकार की आवश्यकता, हर तरह की बंधनशीलता और हर बहुलता से स्वतंत्र होना है। क़ुरआन पाक में अनंतता को सृजनकर्ता और सीमितता को सृष्टि ठहराया गया है।

बाहरी।- बाहरी तौर पर ब्रह्मांड तीन मंडलों पर आधारित है। ये तीनों मंडल वास्तव में ब्रह्मांड के तीन हिस्से हैं।

पहला मंडल भौतिकता का है, दूसरा पशुता का और तीसरा मानवता का। बाहरी क्रिया जिसे यांत्रिक क्रिया कहना चाहिए, भौतिकता की नींव पर क़ायम है। इस यांत्रिक क्रिया के परिणामस्वरूप जड़ पदार्थ और वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। दूसरे मंडल से पशु और फिर मानव निर्माण के ख़मीर का आरम्भ हो जाता है। ये तीन निश्चित मंडल बाहरी या प्रकट कहलाते हैं लेकिन विश्लेषण की विधियाँ हमारी निगाह से अदृश्य हैं और ये आंतरिक विधियाँ ईश्वर की महान हिकमत का एक अंश हैं।

वारदात।- यह नकारात्मक विश्लेषण एकत्व बिंदु के ज़ेहन से क्रियान्वित होता है। एकत्व बिंदु का ज़ेहन ईश्वर का वह इरादा है जो कुन कहने से प्रकट हुआ। यहाँ से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि अनंतता का इरादा अख़फ़ा को ख़फ़ी का रूप प्रदान करता है, या ख़लाए नूर को नूर की आकृति देता है। यह इरादा किसी कारण या साधन की आवश्यकता नहीं रखता क्योंकि ख़लाए नूर में साधनों या कारणों का कोई अस्तित्व मौजूद नहीं है। यह परिवर्तन जिसने रोशनी के अंतरिक्ष को रोशनियाँ में रूपांतरित किया, केवल सृजनकर्ता के इरादे से क्रियान्वित हुआ है। इस सत्य से यह परिणाम निकलता है कि ख़लाए नूर और सृजनकर्ता का इरादा दोनों एक ही सत्य हैं और यही सत्य ब्रह्मांड की संरचना का विस्तार है। क़ुरआन पाक में इस सत्य को तदला कहा गया है।

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ﴿٥﴾ ذُومِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ﴿٦﴾ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ﴿٧﴾ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ﴿٨﴾ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ﴿٩﴾

(सूरह नज़्म, पारा 27)

अनुवाद: उन्हें शिक्षा देता है जो शक्ति से महान है। अपनी वास्तविक सूरत पर प्रकट हुआ जब वह क्षितिज पर था। निकट आया, फिर और निकट आया। झुका, दो धनुष के बराबर फ़ासला रह गया बल्कि उससे भी कम।

इन आयतों में उन अवलोकनों का उल्लेख है जो हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को ख़लाए नूर से संलग्न होने में प्राप्त हुए थे। यह सत्य का परिचय स्वरूप का ज्ञान के उच्चतम मरातिब से

www.ksars.org

सम्बन्ध रखता है। इस मरतबे में ईश्वर का स्वरूप के कमालात का अनावरण होता है। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने जो शिक्षाएँ प्रत्यक्षतः ईश्वर से प्राप्त की थीं, उपर्युक्त आयतों में उन्हीं शिक्षाओं का उल्लेख किया गया है। ख़लाए नूर उन तजल्लियात का समूह है -हैं जो ज्ञान के सत्य हैं। इन्हीं ज्ञान के सत्यों को इल्म-उल-क़लम कहा जाता है। ये सुरक्षित पट्टिका के आदेशों पर प्राथमिकता रखते हैं। इन्हीं ज्ञान की द्वितीयता का नाम सुरक्षित पट्टिका के आदेश हैं। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की प्रचलित दुआओं में कहीं-कहीं इन ज्ञानों का उल्लेख मिलता है। उनमें से एक दुआ यह है:

“या अल्लाह! मैं तुझे तेरे उन नामों का वास्ता देता हूँ जिन्हें तूने मुझ पर प्रकट किया, या मुझसे पहले वालों पर प्रकट किया। और मैं तुझे तेरे उन नामों का वास्ता देता हूँ जिन्हें तूने अपने ज्ञान में अपने लिये सुरक्षित रखा और तुझे तेरे उन नामों का वास्ता देता हूँ जिन्हें तू मेरे बाद किसी पर प्रकट करेगा।”

इस दुआ में ख़लाए नूर अर्थात् ईश्वर के गुण और कमालात, चिह्न और आदतें तथा तजल्लियात के नियम को ईश्वर के अस्मा (नाम) ठहराया गया है। यह ज्ञान ईश्वर का स्वरूप के बाद और आदि सृष्टि (अब्दा) से पहले है। ईश्वर के इस मरतबे की स्वरूप की परिचिति बिना साधन और कारण के सृजन और गठन की क्षमताएँ प्रदान करती है। ईश्वर के प्रत्येक नाम में असीम कमालात संचित हैं। ये कमालात ख़लाए नूर से प्रकट होकर सुरक्षित पट्टिका की शोभा बनते हैं और फिर सुरक्षित पट्टिका से लोक-ए-ख़ल्क़ में प्रकट होते हैं।

हमने पिछले पृष्ठों में ख़लाए नूर को विराए निर्वर्ण कहा है। ख़लाए नूर या विराए निर्वर्ण से नफ़ी या अदम अभिप्रेत नहीं है, बल्कि अदम-ए- नूर अभिप्रेत है–वह अदम-ए-नूर जो रोशनी के नियम नूरानियत का समुच्चय है। यह एक प्रकार का सूक्ष्मतम आभा है और इसी आभा से नूर की सृष्टि हुई है।

ईश्वर का स्वरूप ख़लाए नूर से परे है। ख़लाए नूर विराए निर्वर्ण है और ईश्वर का स्वरूप विराए-विराए निर्वर्ण है। ईश्वर का स्वरूप की पहचान में वास्तव में शब्दों का कोई हस्तक्षेप नहीं है। ईश्वर का अस्तित्व का वर्णन वहम, छवि, शब्द और हर प्रकार की समझ से परे है। केवल विचार और अंतःप्रज्ञा ईश्वर की निकटता को अनुभव कर सकते हैं। और यही अंतःप्रज्ञात्मक चेष्टा मनुष्य को उस स्थान पर पहुँचा देती है जहाँ वह तज्ली स्वरूप का अवलोकन कर सकता है। इसी स्थान में ईश्वर से संवाद के अवसर प्राप्त होते हैं। यह संवाद प्रत्यक्ष स्वरूप से नहीं होता, बल्कि तज्ली स्वरूप की अंतर्ज्ञान होता है।

www.ksars.org

ब्रह्मांडबिंदु॰ विचार उद्गार (फ़िक्र-ए-वुज्दानी)

वस्तु का अवलोकन ही वस्तु की समझ का कारण बनता है। वस्तु पहले मनुष्य के अवलोकन में प्रवेश करती है, फिर समझ अर्थात् चेतना में स्थान पाती है, लेकिन यह अंतिम मंज़िल नहीं है। अंतिम मंज़िल अवचेतन या विराए चेतना है जहाँ वस्तु अपनी वास्तविकता में प्रतिष्ठित हो जाती है। यह पृष्ठभाग चेतना की गहराई में स्थित है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में हमने इस पृष्ठभाग को निर्वर्ण या ख़फ़ी कहा है। यह पृष्ठभाग चेतना से नीचे और विराए निर्वर्ण से ऊपर स्थित है।

जब हम किसी वस्तु का नाम लेते हैं तो वह सुनने वाले के ज़ेहन (आत्मा) में प्रवेश करती है। उदाहरणार्थ, जब सूर्य कहा जाता है तो सुनने वाला अपने भीतर सूर्य का अनुभव करता है। जो सूर्य बाह्य में है उससे आंतरिक सूर्य का कोई संबंध नहीं है। यह आंतरिक सूर्य ज़ेहन या आत्मा की वारदात है। संपूर्ण संसार में जितने मनुष्य सूर्य के बारे में सोचते या सुनते हैं, उन सबका बिंदु-ए-वारदात एक ही सूर्य है। यह एक ऐसी सत्यता (हक़ीक़त साबिता) हुई जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। अर्थात यह एक स्थायी सत्य है।

जब हम किसी ऐसी वस्तु का नाम सुनते हैं जिसे हमने कभी नहीं देखा, तो वह अनदेखी वस्तु भी सत्यता साबिता की सूरत में ज़ेहन के भीतर प्रवेश करती है। उदाहरणतः किसी व्यक्ति ने ईश्वर को नहीं देखा लेकिन जब वह ईश्वर का नाम सुनता है तो उसके भीतर एक सत्य प्रवेश करता है, ऐसा सत्य जिसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इस सत्य के प्रवेश का एक ही ब्रह्मांड बिंदु है जिसके भीतर केवल ब्रह्मांड ही नहीं बल्कि अतिक्रम ब्रह्मांड भी मौजूद है। यही संवेदनात्मक बिंदु जहाँ तक ब्रह्मांड का घेराव करता है उसे जम॰ या ॰अयन-उल-यक़ीन से व्यक्त किया जाता है। लेकिन जब इस बिंदु में अतिक्रम ब्रह्मांड भी प्रवेश कर जाता है तो उसे हक़-उल-यक़ीन या जम॰-उल-जम॰ कहा जाता है।

इल्म-उल-यक़ीन उपर्युक्त वारदात या संवेदनाओं से पूर्व मानवीय ज़ेहन की एक विशेष अवस्था होती है जिसे इल्म-उल-यक़ीन कहते हैं। यह एक प्रकार का अवलोकन है।

एक हक़ीक़त एक व्यक्ति दर्पण में अपना प्रतिबिंब देख रहा है मगर दर्पण उससे ओझल है। वह केवल इतना जानता है कि मेरे सामने मुझ जैसा एक मनुष्य है—तो यह अवस्था इल्म-उल-यक़ीन कहलाती है।

www.ksars.org

अयन-उल-यक़ीन यदि देखने वाले को यह ज्ञान है कि मैं दर्पण में अपना प्रतिबिंब देख रहा हूँ लेकिन वह अपनी, दर्पण की और प्रतिबिंब की वास्तविकता से अनभिज्ञ है–तो यह अवस्था 'अयन-उल-यक़ीन कहलाती है।

हक़-उल-यक़ीन यदि देखने वाला अपनी, दर्पण की और प्रतिबिंब की वास्तविकता जानता है–तो यह अवस्था हक़-उल-यक़ीन कहलाती है।

अधिक व्याख्या: दैनिक अवलोकनों में रोशनी दर्पण का स्थान लेती है। शाहिद और मशहूद के बीच यही रोशनी दर्पण का कार्य करती है। हम देखने की क्रिया को चार मंडलों में विभाजित करते हैं। यही चार मंडल तसव्वुफ़ की परिभाषा में चार बु'द (आयाम) कहलाते हैं। पिछले पृष्ठों में इनका उल्लेख नहरों के नाम से किया जा चुका है। पहले मंडल का नाम तस्वीद है। इसी मंडल को ख़लाए नूर भी कहते हैं। ला-मकान, काल, समय आदि इसी मंडल के नाम हैं। यही मंडल तज्ली स्वरूप या ब्रह्मांड की नींव है। इसी को क़ुरआन पाक में तदला कहा गया है। हज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की दो हदीसों में है: ...

ली मा'अल्लाहि वक्तुन(لِیْ مَعَ اللهِ وَقْتٌ) – *वक्त में मेरा और अल्लाह का साथ है।*

ला तसब्बू'उ द्दहर इन्न द्दहर हुवल्लाह (لَا تَسُبُّوْا الدَّھْرَ اِنَّ الدَّھْرَ ھُوَاللہ) – *वक्त को बुरा न कहो, वक्त अल्लाह है।*

यही मंडल अपरिवर्तनीय है। इसी मंडल की सीमाएँ अज़ल से अबद तक हैं। ईश्वर का इरशाद कुन इसी मंडल का घेरा किए हुए है। " اللّٰہُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ - अल्लाहु नूरुस्समावाति वलअर्ज़" में इसी मंडल का उल्लेख किया गया है। यही मंडल पहला बु'द है और हम अपनी परिभाषा में इसका नाम दृष्टि रख सकते हैं। इसके बाद तीनों मंडल मकान (Space) हैं जिनके नाम क्रमशः तजरीद, तशहीद, तज़हीर हैं।

- आयाम नं. 1 : नज़र
- आयाम नं. 2 : नज़ारा
- आयाम नं. 3 : नाज़िर
- आयाम नं. 4 : मनज़ूर

इन चारों के नाम शुहूद, मुशाहदा, शाहिद और मशहूद भी रखे जाते हैं। दृष्टि या शुहूद या तस्वीद या ज़मान (Time) ब्रह्मांड की संरचना में मूल या आधार है। इसमें कभी कोई परिवर्तन घटित

www.ksars.org

नहीं हुआ, न भविष्य में हो सकता है। यह अपने स्थान पर एक हक़ीक़त-ए-कुबरा है। इसी हक़ीक़त-ए-कुबरा पर तीनों मकानियतों की इमारत क़ायम है। यही हक़ीक़त-ए-कुबरा उन तीनों मकानियतों की वास्तविकता है। यह हक़ीक़त-ए-कुबरा ला-मकान है। इसके बाद पहली मकानियत जो तजरीद कहलाती है, मुशाहदा या नज़ारा की प्रकृति में अपना अस्तित्व रखती है। दूसरी मकानियत या तशहीद शाहिद या नाज़िर की प्रकृति रखती है। तीसरी मकानियत तज़हीर, मशहूद या मनज़ूर कहलाती है। यह मकानियत रोशनी का महासागर (बह्र-ए-ज़ख़्ख़ार) है।

नूर और अग्नि

तजरीद या पहली मकानियत नूर है। तशहीद या दूसरी मकानियत नस्मा-ए-मुफ़रद है। यही नस्मा-ए-मुफ़रद कैनाती किरण या कॉस्मिक रेज़ (Cosmic Rays) कहलाता है। नस्मा-ए-मुर्क़ब या तज़हीर अर्थात तीसरी मकानियत, कैनाती किरणों के अतिरिक्त जितनी भी रोशनियाँ हैं, उन सब पर आधारित है। तज़हीर की किरणों के समूह से ही ब्रह्मांड के सभी शरीर निर्मित होते हैं। तज़हीर की रोशनियाँ एक प्रकार का रंगीनी दर्पण हैं।

वास्तव में चारों आयाम चार दर्पण हैं। पहला अपरिवर्तनशील और अचल दर्पण–दृष्टि या ला-मकान। दूसरा परिवर्तनशील दर्पण–दृश्य तीसरा गतिशील दर्पण–दर्शक चौथा गतिशील दर्पण–स्वीकृत

दृष्टि हम दृष्टि को एक प्रकार का ब्रह्माण्डीय चेतन कह सकते हैं। यह जिस स्थान या जिस बिंदु पर भी प्रकट होती है, एक ही प्रकार का स्वरूप धारण करती है। मनुष्य में जो दृष्टि पानी को पानी देखती है, वही दृष्टि हर वस्तु में पानी को पानी देखती है। ऐसा कभी नहीं हुआ कि मनुष्य ने पानी को पानी देखा हो और शेर ने पानी को दूध देखा हो। दृष्टि का चरित्र ब्रह्मांड के प्रत्येक कण और बिंदु में समान है। जिस प्रकार हम लोहे को कठोर अनुभव करते हैं, उसी प्रकार चींटी भी लोहे को कठोर अनुभव करती है। इसका अर्थ यह हुआ कि लोहा जिस निगाह से मनुष्य को देखता है, उसी निगाह से चींटी को देखता है। ब्रह्मांड में फैले सभी दृश्य इसी नियम के अधीन हैं। जब मनुष्य चंद्रमा की ओर दृष्टि उठाता है तो चंद्रमा को उसी आकार और रूप में देखता है, जिस रूप में चकोर देखता है। जब वृक्ष की जड़ें पानी ग्रहण करती हैं, तो उसे पानी समझकर ही ग्रहण करती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे कोई पशु पानी को पानी समझकर पीता है। एक साँप भी दूध को दूध समझकर पीता है और एक बकरी भी दूध को दूध समझकर पीती है।

www.ksars.org

नतीजा :हम इन सभी उदाहरणों से केवल एक ही निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि समस्त ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में एक ही दृष्टि कार्य कर रही है। इस दृष्टि के चरित्र में कहीं कोई मतभेद नहीं है। यह प्रत्येक कण में अपरिवर्तनशील है। इसका एक निश्चित और विशेष चरित्र है। दृष्टि के चरित्र में सृष्टि की आरम्भिक अवस्था से कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह दृष्टि मकानियत और ज़मानियत दोनों का निषेध करती है क्योंकि इसकी विधि में न तो समय के परिवर्तन से कोई परिवर्तन होता है और न समय की अदला-बदली से कोई बदलाव। यह दृष्टि अनादि से अनन्त तक किसी भी क्षण या किसी भी कण की गहराई में एक ही गुण रखती है। यही दृष्टि वह स्थान है जिसे चेतना का केंद्रीय बिंदु या ब्रह्मांड की हक़ीक़त कहा जा सकता है। यह केवल रंग से परे ही नहीं, बल्कि निर्वर्ण से भी परे है। क़ुरआन पाक में ईश्वर ने इरशाद फ़रमाया है: ...

عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمُ– *मनुष्य को वह ज्ञान सिखाया, जो वह नहीं जानता था।*

यहाँ सिखाने का अर्थ है निहित करना या अवचेतन में प्रतिष्ठित करना। अर्थात् वह तत्व जिससे ब्रह्माण्डीय प्रकृति और प्रवृत्ति रिक्त थी, उसे ईश्वर ने मनुष्य की प्रकृति में विशेष रूप से निहित किया। ईश्वर ने फरमाया है: *"मैंने आदम के पुतले में अपनी आत्मा फूँकी।"*

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُوْحِىْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ (सूरह साद, आयत 72)

अनुवाद: *"फिर जब मैंने उसे पूरा कर दिया और उसमें अपनी आत्मा में से फूँक दी, तो उसके लिए सज्दा करते हुए गिर पड़ो।"*

यह भी फरमाया गया है कि *"मैंने आदम को नामों का ज्ञान दिया।"*

عَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَاءَ كُلَّهَا

ये तमाम ईश्वरीय निर्देश इस अर्थ की व्याख्या करते हैं कि अस्तित्व के भीतर जो तत्व मूल है, उसका समझना और जानना मनुष्य के सिवा किसी और के वश की बात नहीं, क्योंकि यह विशिष्ट ज्ञान ईश्वर ने केवल आदम को प्रदान किया है। यह विशिष्ट ज्ञान अवचेतन का ज्ञान है।

नाम-तत्त्व का ज्ञान(इल्म-उल-अस्मा)

ब्रह्माण्ड में प्रत्येक सृष्टि चेतना रखती है। उदाहरण के लिए वृक्षों और पशुओं को प्यास लगती है और वे जल पीकर प्यास बुझाने का चेतन अनुभव रखते हैं। इसी प्रकार वायु को जल के सूक्ष्म

www.ksars.org

कणों का और उन्हें अपने कंधे पर उठा लेने का चेतन ज्ञान प्राप्त है। यह सामान्य स्तर की चेतना संपूर्ण अस्तित्वमान में पाई जाती है। लेकिन यह समझना कि अस्तित्वमान को यह विशेषता कहाँ से मिली—केवल मनुष्य के लिए संभव है। ईश्वर ने आदम के पुतले में अपनी आत्मा फूँक कर यह ज्ञान उसे प्रदान किया।

क़ुरआन पाक में तीन प्रकार के ज्ञान का उल्लेख मिलता है:

1. इल्म-ए-हुज़ूरी (प्रत्यक्ष ज्ञान)
2. इल्म-ए-हुसूली (अर्जित ज्ञान)
3. इल्म-ए- तदला या इल्म-ए-नुबूवत (ज्ञान-ए-नबूवत)

इल्म-ए-हुज़ूरी (प्रत्यक्ष ज्ञान): हर चेतन ब्रह्माण्ड का स्थान जानता है। वह अवश्य सोचता है कि यह सब किस जगह स्थित है, किस पृष्ठभाग पर ठहरा हुआ है। क़ुरआन पाक में इस प्रश्न का उत्तर जगह-जगह दिया गया है। बार-बार ईश्वर ने कहा है कि मैं सर्वज्ञ हूँ, मैं सर्वदर्शी हूँ, मैं सर्वद्रष्टा हूँ, मैं सर्वव्यापी हूँ, मैं सर्वशक्तिमान हूँ, मैं धरती और आकाश का नूर हूँ। इन सब उक्तियों से अनिवार्यतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ब्रह्मांड का स्थितिस्थान ईश्वर का ज्ञान है।

ब्रह्माण्ड ईश्वर के ज्ञान में किस प्रकार विद्यमान है? इसे समझने के लिए ब्रह्माण्ड के अवयवों की आंतरिक संरचना जानना आवश्यक है। हम देख रहे हैं कि हर वस्तु अपने स्थान से कदम-दर-कदम चलकर मंज़िल की ओर बढ़ रही है। इस गति का नाम उत्कर्ष है। अब यह समझना आवश्यक है कि उत्कर्ष क्या है और किस प्रकार घटित हो रहा है।

हम रोशनी के माध्यम से देखते हैं, सुनते हैं, समझते हैं और स्पर्श करते हैं। रोशनी हमें इन्द्रियाँ प्रदान करता है। जिन इन्द्रियों के द्वारा हमें किसी वस्तु का ज्ञान होता है, वे सब रोशनी के दिए हुए हैं। यदि रोशनी को बीच से हटा दिया जाए तो हमारी इन्द्रियाँ भी नष्ट हो जाएँगी। उस समय न तो हम स्वयं अपने अवलोकन में शेष रहेंगे और न कोई दूसरी वस्तु हमारे अवलोकन में रह पाएगी।

उदाहरण: यदि कोई चित्रकार श्वेत काग़ज़ पर रंग भरते समय बीच में एक कबूतर का स्थान रिक्त छोड़ दे, फिर वही काग़ज़ दिखाकर किसी व्यक्ति से पूछा जाए—"तुम्हें क्या दिखाई देता है?"—तो वह कहेगा, "मैं एक श्वेत कबूतर देख रहा हूँ।"

www.ksars.org

ठीक उसी प्रकार ईश्वर का ज्ञान सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को घेरे हुए है। ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण अंतराल के रूप में ईश्वर के नूर में स्थित है। देखने वाले को ईश्वर का नूर दिखाई नहीं देता, केवल ब्रह्माण्ड की अंतराल दिखाई देती है, जिसे वह वस्तुएँ–चन्द्रमा, सूर्य, पृथ्वी, आकाश, मनुष्य, पशु आदि–कहता है।

www.ksars.org

इख़फ़ा या इर्तिक़ा (गोपन या उत्कर्ष)

दुनिया में हज़ारों मनुष्य बसते हैं। प्रत्येक मनुष्य दूसरे की ज़िन्दगी से अनभिज्ञ है। अर्थात् प्रत्येक मनुष्य का जीवन एक राज़ है जिसे अन्य नहीं जानते। इसी राज़ की बदौलत प्रत्येक मनुष्य अपनी भूलों को छिपाते हुए स्वयं को बेहतर रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है और आदर्श बनना चाहता है। यदि उसकी भूलें लोगों के सामने होतीं तो वह स्वयं को बेहतर दिखाने का प्रयास न करता और जीवन का उत्कर्ष घटित न होता।

इल्म-ए-हुसूली (अर्जित ज्ञान): मानव जीवन की संरचना में कुछ ऐसे अवयव प्रयुक्त हुए हैं जो चेतना की निगाह से ओझल हैं और चेतना को आदर्श अथवा उच्चतर जीवन की ओर प्रेरित करते हैं। अर्थात् इख़फ़ा ऐसी सत्यता है जिसे उत्कर्ष कहा जा सकता है। मानव संरचना का यही गुण उसे पशु की संरचना से अलग करता है। लेकिन पशु-जीवन के अवयव पशु की चेतना से गोपित नहीं हैं। प्रत्येक पशु के कर्म निश्चित हैं जिन्हें उसकी चेतना पूरी तरह जानती है। इसी कारण कोई पशु स्वयं को दूसरे पशु से बेहतर दिखाने का प्रयास नहीं करता।

मानव संरचना का यही चेतनात्मक विशेषत्व सभी विज्ञान और कलाओं का स्रोत है। यही चेतनात्मक विशेषत्व मनुष्य को अपने अवचेतन से अलग करता है। यहीं से मनुष्य ऐसी सीमा निर्धारित करता है जो इल्म-ए-हुज़ूरी (प्रत्यक्ष ज्ञान) के अंशों से एक नये ज्ञान की नींव रख देती है। यही ज्ञान सभी प्राकृतिक विज्ञानों का समुच्चय है। तसव्वुफ़ की परिभाषा में इसे इल्म-ए-हुसूली (अर्जित ज्ञान) कहते हैं। इस ज्ञान के आकृतियाँ अधिकतर परिकल्पनाओं और मान्यताओं पर आधारित होते हैं।

इल्म–ए–लदुन्नी ईश्वरप्रदत्त ज्ञान यह ज्ञान इल्म-ए-हुज़ूरी (प्रत्यक्ष ज्ञान) और इल्म-ए-हुसूली (अर्जित ज्ञान) दोनों की सीमाएँ निर्धारित करता है और दोनों को एक-दूसरे से परिचित कराता है। यह उन सत्यों पर आधारित है जिन्हें इल्म-ए-हुसूली की गहराइयों में खोजा जा सकता है। इस ज्ञान के आकृतियाँ ईश्वर के चिन्ह (आयात-ए-इलाही) से निर्मित होते हैं। आयात-ए-इलाही से आशय वे निशानियाँ हैं जिनकी ओर ईश्वर ने बार-बार क़ुरआन पाक में ध्यान दिलाया है। वास्तव में सभी प्राकृतिक नियम आध्यात्मिक नियमों का अनुसरण करते हैं। प्राकृतिक नियमों से आध्यात्मिक नियमों का पता लगाना और उनकी वास्तविकता तक पहुँचकर इल्म-ए-हुज़ूरी से परिचित होना ही इल्म-ए-लदुन्नी का लक्षण है। जब यह ज्ञान अनबिया को प्राप्त होता है तो इसे

www.ksars.org

इल्म-ए-नुबूवत कहा जाता है और जब यही ज्ञान औलिया-अल्लाह को प्राप्त होता है तो इसे इल्म-ए-लदुन्नी कहा जाता है। वही अनबिया के लिए विशिष्ट है और इल्हाम औलिया के लिए।

यह ज्ञान अनबिया या औलिया को किस प्रकार प्राप्त होता है, इसे नीचे की पंक्तियों में संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है क्योंकि विस्तार की इस पुस्तक में गुंजाइश नहीं है। यदि ईश्वर की आज्ञा हुई तो किसी अन्य पुस्तक में इसका विस्तार किया जा सकेगा।

ब्रह्माण्ड की संरचना चार आयामों (या चार मंडलों) पर आधारित है। पिछले पृष्ठों में उनकी ओर संकेत किया गया है लेकिन वहाँ उनके गुण केवल एक दृष्टिकोण से वर्णित हुए हैं। इन मंडलों का दूसरा दृष्टिकोण तसव्वुफ़ की परिभाषा में अलग-अलग चार नामों से जाना जाता है:

1. राह
2. रूह
3. रुईया (स्वप्न-दृष्टि)
4. रुईयत (प्रत्यक्ष-दर्शन)

इस दृष्टिकोण के ये चार गुण अवचेतन से संबंधित हैं। राह नकारात्मक अवचेतन है और रूह सकारात्मक अवचेतन। इसी प्रकार रुईया नकारात्मक चेतन है और रुईयत सकारात्मक चेतन।

राह अर्थात् नकारात्मक अवचेतन में कोई परिवर्तन नहीं होता। वहाँ ला-मकान और मकान अर्थात् कालिक और स्थानिक दोनों ही दूरी लुप्त होती हैं। अनादि से अनन्त तक की समस्त वारदात एक ही बिंदु में निहित रहती हैं। जब यह बिंदु गति में आता है तो इसका नाम बदल जाता है। पहले यह बिंदु राह कहलाता था, लेकिन गति उत्पन्न होने के बाद यही बिंदु रूह कहलाता है। इसी बिंदु में गति का प्रकट होना कालिक और स्थानिक दूरी उत्पन्न करता है।

पूर्ववर्ती पृष्ठों में ब्रह्माण्डीय निगाह का वर्णन हुआ है। वही ब्रह्माण्डीय दृष्टि, राह है। यही निगाह कालिक और स्थानिक दूरियों में विभाजित होने के बाद हक़ीक़त वारिदा या रूह कहलाती है।

यदि हम किसी व्यक्ति के सुनने को सूर्य का नाम दें तो तत्क्षण उसके ज़ेहन से सूर्य का प्रतिबिंब गुजर जाएगा। वस्तुतः उसके ज़ेहन से गुजरने वाला वही सूर्य है जिससे वह बाहरी जगत में परिचित है। वह किसी और सूर्य को नहीं जानता। वह केवल उसी सूर्य से अवगत है जो उसके ज़ेहन में वारिद है। यही गति रूह कहलाती है, अर्थात् रूह मानवीय ज़ेहन से एक हक़ीक़त वारिदा की सूरत में परिचित है और समस्त अस्तित्वमान में समान रूप से प्रवाहित है। जब कोई व्यक्ति

www.ksars.org

इस हक़ीक़त वारिदा को अपने ज़ेहन में स्थिर करता है तो यह छवि का रूप धारण कर लेती है, यानी रूह चेतना में समाने के बाद छवि बन जाती है। इसी अवस्था को रुईया (स्वप्न-दृष्टि) कहते हैं। लेकिन जब यही छवि दृष्टि-बिंदु की पृष्ठभाग पर आ जाती है तो रुईयत (प्रत्यक्ष-दर्शन) कहलाती है। उस समय किसी व्यक्ति की निगाह वस्तु को सम्मुख मूर्त रूप में देखती है। दृष्टि का चरित्र इस मंज़िल में भी वही रहता है जो राह, रूह और रुईया में था। सामान्य परिभाषा में पहले मंडल को अवचेतन, दूसरे को अद्राक (अनुभूति/बोध), तीसरे को छवि और चौथे को वस्तु (शै) कहते हैं।

अवचेतन, अध्यवसाय और चेतना का अंतर

उपर्युक्त व्याख्या की रोशनी में ब्रह्मांड या व्यक्ति-ब्रह्मांड की चार पृष्ठभाग निश्चित होती हैं। पहली पृष्ठभाग अवचेतन से परे है। इसे निर्वर्ण से परे भी कहा गया है। यह पृष्ठभाग ब्रह्मांड या व्यक्ति के भीतर अत्यंत गहराई में स्थित है। इस पृष्ठभाग के गुणों की पहचान करना बहुत कठिन है, तथापि संभव है। जब यह पृष्ठभाग एक गति के साथ उभरती है तो नये गुणों का समूह बन जाती है। इस समूह का नाम अवचेतन है। इसे ही निर्वर्ण कहा गया है। इस पृष्ठभाग के गुणों की पहचान भी कठिन है, लेकिन निर्वर्ण से परे की तुलना में सरल है।

यह बात स्मरण रखना आवश्यक है कि गति का आरम्भ दूसरे मंडल (अवचेतन) में हुआ था। जब यही गति दूसरे मंडल से उभरकर तीसरे मंडल में प्रवेश करती है तो व्यक्ति की चेतना उसका आवरण कर लेती है। इसी आवरण का नाम छवि है। फिर यही छवि अपनी पृष्ठभाग से उभरकर रुईयत (प्रत्यक्ष-दर्शन) बन जाती है और व्यक्ति की चेतना इस रुईयत को अपने सम्मुख देखने लगती है। यही वह अवस्था है जिसे हम अस्तित्व कहते हैं और विभिन्न नामों से व्यक्त करते हैं।

प्रत्येक वस्तु को चेतना की इन चारों पृष्ठभागों से गुजरना पड़ता है। जब तक कोई वस्तु ये चारों चरण पूरे न कर ले, वह मौजूद (अस्तित्ववान) नहीं हो सकती। अर्थात् किसी वस्तु का अस्तित्व चौथे चरण में घटित होता है और पहले तीन चरणों में उस वस्तु का ताना-बाना तैयार होता है।

इस प्रकार चेतना के चार स्तर हुए। हमारे ज़ेहन की एक चेतना ऐसी भी है जो किसी ऐसी व्यापकता को जानती है जो ब्रह्मांड से भी परे है। यही प्रथम चेतना है। हम इस चेतना को ब्रह्माण्डीय से परे चेतना कह सकते हैं।

www.ksars.org

चेतना द्वितीय सम्पूर्ण ब्रह्मांड की सामूहिक चेतना है। इसे *ब्रह्मांडीय चेतना* कहा जा सकता है।

चेतना तृतीय किसी एक प्रकार (प्रजाति) की सामूहिक चेतना है। इसे *प्रजातीय चेतना* कहा जा सकता है।

चेतना चतुर्थ किसी प्रकार के व्यक्ति की चेतना है।

हमारे ज़ेहन में और शक्तियों के साथ एक ऐसी शक्ति भी है जो *उड़ान* धारण करती है, जिसे साधारण भाषा में वहमा कहा जाता है। जब यह शक्ति उड़ान भरती है तो उन ऊँचाइयों तक पहुँच जाती है जो ब्रह्मांड की सीमाओं से परे हैं। किन्तु वहाँ पहुँचकर इस प्रकार विलीन हो जाती है कि हमारा ज़ेहन उसे पुनः वापस नहीं ला सकता और न ही यह पता लगा सकता है कि उड़ान भरने वाली शक्ति कहाँ विलीन हुई और उस विलीनता में उसे क्या घटनाएँ घेर गईं। जिस लोक में यह शक्ति विलीन होती है, उसे सूफ़ी मत में *लोक लाहूत* या निर्वण से परे कहा जाता है। यही लोक *चेतना प्रथम* है। इस लोक में परमात्मा की अनन्त गुण-सम्पन्नताएँ संग्रहीत हैं। ये गुण सदा से परमात्मा के स्वरूप के साथ विद्यमान हैं, इसीलिए इन्हें स्वरूपसिद्ध कहा जाता है। इन गुणों की एकता का नाम *तज्ली स्वरूप* भी है। इसी लोक को *राह* कहा गया है। क़ुरआन पाक ने हमें तीन अस्तियों से अवगत कराया है:

प्रथम परमात्मा का स्वरूप – जो अनन्त और *वराय राह* है।

प्रथम परमात्मा के गुण – जो *स्वरूपसिद्ध* हैं। इन्हीं का नाम *वराय ब्रह्मांडीय चेतना* या *राह* है।

तृतीय ब्रह्मांड।

ये तीन अस्तियाँ हुईं: *स्वरूप, गुण और ब्रह्मांड*। स्वरूप गुण और ब्रह्मांड को आच्छादित करता है। स्वरूप *स्रष्टा*, गुण *स्वरूपसिद्ध* और ब्रह्मांड *सृष्टि* है। हर गुण के साथ परमात्मा का स्वरूप जुड़ा हुआ है। पूर्ववर्ती नबियों (हज़रत इब्राहीम (प.ब.उ.ह.) और हज़रत इस्माईल (प.ब.उ.ह.)) के पदचिन्हों पर चलने वाले नबियों ने *स्वरूप-ए-बर्री तआला* को अनुग्रह (*रहमत)* के नाम से जाना है। यह रहमत स्वरूप की अनन्त गुण-सम्पन्नताओं में हर गुण के साथ जुड़ी हुई है। नबियों ने रहमत को दो नामों से परिचित कराया है: ये दोनों नाम *जमाल* और *जलाल* हैं। उन्होंने *जमाल* के दो गुण स्थापित किए हैं। पहला गुण सृजनता (ख़ालिक़ियत), दूसरा गुण पालन-पोषण (रुबूबियत) है। और *जलाल* का एक गुण स्थापित किया गया है, जिसे 'उत्तरदायित्व' अथवा '"एहतिसाब" का नाम दिया गया है। इस प्रकार परमात्मा की अनन्त गुण-सम्पन्नताओं में हर गुण के साथ तीन

www.ksars.org

गुण – *स्रष्टा-पन (ख़ालिक़ियत), पालन-पोषण (रबूबियत) और एहतिसाब* – अनिवार्य रूप से जुड़े हुए हैं। मनुष्य के भीतर *स्रष्टा-पन* की विशेषता *कला* बनकर प्रकट होती है, *पालन-पोषण* की विशेषता *नैतिकता* के रूप में और *एहतिसाब* की विशेषता *ज्ञान* के रूप में। इस प्रकार मनुष्य इन्हीं तीन गुणों का प्रतिबिंब है।

स्वरूप— अतिक्रम ग़ैबुल-ग़ैब है, 'राह'—ग़ैबुल-ग़ैब है और आत्मा ग़ैब है। आत्मा के बाद दो चेतनाएँ—*रुइया* और *रुइयत* शेष रह जाती हैं। ये दोनों यद्यपि आत्मा में निहित हैं, तथापि 'हुज़ूर' कहलाती हैं। *रुइया* तृतीय चेतना का हुज़ूर है और *रुइयत* चतुर्थ चेतना का।

विराम

विराम या समय ऐसी स्थानिक अवस्था का नाम है जो दीर्घगामी यात्रा में परिभ्रमण करती है। उक्त चारों चेतनाएँ जब दीर्घगामी दिशा में परिभ्रमण करती हैं तो उस परिभ्रमण का नाम विराम या समय या काल (Time) है किन्तु जब ये चारों चेतनाएँ अपने केंद्रीय परिभ्रमण में संचरित होती हैं तो उस परिभ्रमण को स्थान (Space) से अभिव्यक्त किया जाता है। ये दोनों अवस्थाएँ–एक दीर्घगामी दिशा का परिभ्रमण, दूसरी धुरीय दिशा का परिभ्रमण–एक साथ घटित होती हैं। ये दोनों परिभ्रमण मिलकर चेतना के भीतर सतत गति की सृष्टि करते रहते हैं। हम दीर्घगामी गति को अपने इन्द्रियों में सेकण्ड, मिनट, घण्टे, दिन, मास, वर्ष और शताब्दियों के रूप में पहचानते हैं और धुरीय गति को पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य, ग्रह-नक्षत्र और सौर-व्यवस्था की स्थिति में जानते हैं। ये दोनों अवस्थाएँ मिलकर विराम कहलाती हैं।

वास्तव में हमारे इन्द्रियों के भीतर एक परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन परे निर्बर्ण, निर्बर्ण, एकवर्ण और सर्ववर्ण का संयोग है। वहमा से इस परिवर्तन का प्रारम्भ होता है। फिर यह परिवर्तन विचार और छवि की राहें तय करके संवेदनाओं का रूप ग्रहण कर लेता है। परिवर्तन फिर उसी सीढ़ी से लौट आता है अर्थात् उसे संवेदनाओं से छवि, विचार और वाहम तक प्रत्यावर्तन करना पड़ता है। वहमा हम, विचार और छवि ये तीनों अवस्थाएँ दीर्घगामी गति की एक ही दिशा में स्थित होती हैं और संवेदनात्मक अवस्था धुरीय गति की उसी दिशा में स्थित होती है जिस दिशा में दीर्घगामी गति घटित होती है। इस प्रकार संवेदनाओं में कालिक और स्थानिक दोनों परिवर्तन एक ही बिन्दु में घटित होते हैं। उसी बिन्दु का नाम विराम है। विराम की शृंखला अनादि से अनन्त तक प्रवाहित है। उक्त चार चेतनाओं की केंद्रित अवस्थाएँ पृथक-पृथक चार जीवन रखती हैं। संवेदनाओं की केंद्रितता लोक-नासूत कहलाती है। छवि की केंद्रितता अवरोह में स्वप्न-लोक, घटना-लोक या तम्साल-लोक और आरोह में आत्मा-लोक या बर्ज़ख-लोक (इल्लीइन और सिज्जीन)

www.ksars.org

कहलाती है। विचार की केंद्रितता अवरोह में मुब्दा और आरोह में हश्र-ओ-नशर (स्वर्ग और नरक) कहलाती है।

चेतना का प्रथम विभाग जिसका नाम "राह" लिया गया है, "अनिवार्य अस्तित्व" कहलाता है। शेष तीन विभाग "अस्तित्व" कहलाते हैं। अनिवार्य अस्तित्व में परिवर्तन नहीं होता किन्तु अस्तित्व में दीर्घगामी और धुरीय परिभ्रमण मिलकर विराम या अस्तित्व कहलाते हैं। दोनों परिभ्रमणों में पहला परिभ्रमण ब्रह्माण्ड के कण-कण का आपसी सम्बन्ध है। इस परिभ्रमण में ब्रह्माण्ड का अस्तित्व और ब्रह्माण्डीय चेतना की अवस्थाओं का अस्तित्व विद्यमान है। धुरीय परिभ्रमण व्यक्ति का परिभ्रमण है। इस परिभ्रमण के भीतर व्यक्ति का अस्तित्व और उसकी अवस्थाओं का अस्तित्व है। किन्तु व्यक्ति की समस्त अवस्थाएँ ब्रह्माण्ड की सामूहिक अवस्थाओं का एक अंश होती हैं। यदि हम किसी कण के भीतर यात्रा करें तो सर्वप्रथम "संयुक्त नस्मा" की कालिकता (Space) प्राप्त होगी। यह कालिकता संवेदनाओं का जगत है। इस कालिकता की सीमाओं में व्यक्ति की चेतना "दर्शन" के इन्द्रियों में डूबी रहती है। अर्थात् "दर्शन" स्वयमेव इन्द्रियों का संयोग है। दर्शन की कालिकता के भीतर एक दूसरी कालिकता है जिसे "स्वप्न-लोक" कहते हैं। यह नस्मा-ए-मुफ़रद का काल-स्थान व्यक्ति के स्वरूप का ऊपरी वस्त्रहै, अर्थात् *रुइया* एक ऐसा काल-स्थान है जिसे व्यक्ति का आंतरिक शरीर कहा जा सकता है। *रुइया* के काल-स्थान के भीतर भी एक और काल-स्थान विद्यमान है। यह काल-स्थान परिवर्तनीय दिव्य प्रकाश (नूर-ए-मुतग़य्यिर) का शरीर है और फिर इस काल-स्थान के भीतर अपरिवर्तनीय दिव्य प्रकाश (ग़ैर मुतग़य्यिर नूर) निवास करता है। अपरिवर्तनीय दिव्य प्रकाश 'वाजिबुल-वुजूद' अथवा 'ईश्वर के, या 'तजल्लि-ए-स्वरूप', या 'लामकान' है। इसकी व्यापकता पूरे ब्रह्मांड को अपने घेरे में लिए हुए है, किन्तु ईश्वर-स्वरूप इससे परे है। तथापि, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, यह ईश्वर-स्वरूप का एक गुण है और 'क़ायिम-बिस्स्वरूप' है।

संयुक्त नस्मा, एकल नस्मा, परिवर्तनीय नूर और अपरिवर्तनीय नूर के इन्द्रिय अलग-अलग हैं। लोक-नासूत में दर्शन के इन्द्रिय प्रबल और शेष इन्द्रिय दमन में रहते हैं। जिस समय व्यक्ति रुइया में रहता है तो उसकी ध्यान निगाह से हटकर रुइया में केंद्रित होती है। मानो रुइया के इन्द्रिय प्रबल और शेष विभागों के इन्द्रिय दमन में रहते हैं। अनादि से लोक-नासूत की उत्पत्ति तक रुइया के इन्द्रिय व्यक्ति के शेष सभी चेतनाओं पर प्रबल थे किन्तु लोक-नासूत में ये इन्द्रिय केवल निद्रा की अवस्था में पुनः लौटते हैं और जाग्रति के पश्चात रुइया के इन्द्रिय दमन हो जाते हैं। मृत्यु के पश्चात बर्ज़ख या आराफ़ में ये इन्द्रिय पुनः शेष सभी इन्द्रियों पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेंगे। विभाग-ए-आत्मा के इन्द्रिय लोक-ए-वाक़िआ में भी दमन में थे, लोक-ए-दर्शन में भी दमन

www.ksars.org

में हैं और लोक-ए-बर्ज़ख में भी दमन में रहेंगे किन्तु क़ियामत के दिन विभाग-ए-आत्मा के इन्द्रिय शेष सभी इन्द्रियों को दमन कर देंगे और फिर स्थायी रूप से यही इन्द्रिय प्रबल रहेंगे।

दर्शन के इन्द्रिय

दर्शन के इन्द्रियों का सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह है कि वे व्यक्ति के भीतर सीमित रहते हैं। ये इन्द्रिय अन्य व्यक्तियों के प्रभाव और अवस्थाओं को नहीं जान सकते। इन्द्रियों को परम सत्ता ने क़ुरआन में इल्लीइन और सिज्जीन दो रूपों में व्यक्त किया है। इल्लीइन उच्च रूप है और सिज्जीन निम्न। इन्द्रियों में ये दोनों रूप अभिलेखित होते रहते हैं। लोक-नासूत में इन रूपों का अभिलेख दृष्टियों के समक्ष नहीं रहता अपितु इन्द्रियों के भीतर गुप्त रहता है। परम सत्ता ने इन दोनों अभिलेखों को "किताब-उल-मरक़ूम" कहा है। जैसे ही मनुष्य लोक-नासूत से विच्छेद होता है, दर्शन के इन्द्रिय दमन हो जाते हैं। साथ ही आत्मा के इन्द्रिय का प्रभुत्व हो जाता है और दर्शन के अभिलेखों में से उन आवश्यकताओं का अभिलेख गुप्त रहता है जिनकी क्षमता उत्पन्न नहीं की गयी थी। क़ियामत के दिन जब ब्रह्माण्ड की प्रथम यात्रा पूर्ण हो जाएगी तो मनुष्य और जिन्नात–जो ब्रह्माण्ड की यात्रा का परिणाम हैं–एकत्र किये जाएंगे ताकि ब्रह्माण्ड की दूसरी यात्रा का प्रारम्भ हो। उस दिन उन आवश्यकताओं का अभिलेख नष्ट कर दिया जाएगा जिनकी क्षमता उत्पन्न नहीं की गयी थी।

इन्द्रिय

हमने ऊपर स्पष्ट किया है कि चेतना का एक कार्य अपरिवर्तनीय है। यह कार्य अपनी सीमा में एक ही रूप से देखता, सोचता, समझता और अनुभव करता है। इस कार्य में किसी ब्रह्माण्डीय कण या व्यक्ति के लिए कोई भेदभाव नहीं होता। यह चेतना प्रत्येक कण में एक ही निगाह रखती है। इसी "लामकानी चेतना" से दूसरी चेतना की उत्पत्ति होती है। हमने इसे किसी स्थान पर "सत्य-ए-वारिदा" का नाम दिया है। इस चेतना की गति यद्यपि बहुत ठोस होती है तथापि इसकी यात्रा विचार से करोड़ों गुना अधिक तीव्र है। किन्तु जब यह चेतना उभरकर तृतीय चेतना की समतल पर प्रविष्ट होती है तो इसकी गति बहुत कम हो जाती है। यह गति फिर भी रोशनी की गति से लाखों गुना अधिक है। यह चेतना भी एक स्पष्ट समतल की ओर प्रयासरत होती है और उस स्पष्ट समतल में प्रवेश करने के पश्चात लोक-नासूत के तत्वों में रूपान्तरित हो जाती है। तत्वों का यह समूह व्यक्ति की चतुर्थ चेतना है जो पूर्णत: सतही कार्य रखती है। इसी कारण

www.ksars.org

इसका ठहराव और ठोसपन अत्यन्त अल्प विराम पर आधारित है। यही चेतना इन्द्रियों की निगाह से सर्वाधिक अपूर्ण है। इस चेतना के इन्द्रिय यद्‌यपि ऐसे आवश्यकताओं का संग्रह हैं जो अधिक से अधिक सौंदर्य की ओर झुकाव रखते हैं किन्तु सौंदर्य के स्तरों से पूर्णतः परिचित नहीं। इसी कारण उनमें निरंतर और सतत अंतरालों पाये जाते हैं। साथ ही अंतरालों को भरने के लिए इन इन्द्रियों में ऐसी आवश्यकताएँ भी विद्‌यमान हैं जिन्हें "अंतरात्मा" कहा जाता है।

परम सत्ता ने इन्हीं अंतरालों को भरने के लिए नबियों के माध्यम से शरीअतें लागू की हैं। मानव-जाति की सृष्टि के दृष्टिकोण से सौंदर्य का अन्तिम बिन्दु केवल एक हो सकता है, उसी को "एकत्व परम सत्ता" (तौहीद-ए-बारी-तआला) कहा गया है। नबियों पर यह अन्तिम सत्य वही के द्‌वारा उद्‌घाटित होता है। नबियों को न मानने वाले सम्प्रदाय तौहीद को सदैव अपने अनुमान में खोजते रहे। परिणामस्वरूप उनके अनुमान ने गलत मार्गदर्शन देकर उनके सम्मुख अतौहीदी विचारधाराएँ रख दीं और ये विचारधाराएँ कभी-कभी अन्य सम्प्रदायों की गलत विचारधाराओं से टकराती रही हैं। अनुमान से प्रस्तुत कोई विचार कुछ कदम तक दूसरे विचार का साथ देता है किन्तु फिर असफल हो जाता है। तौहीदी दृष्टिकोण के अतिरिक्त मानव-जाति को एक ही विचारधारा पर एकत्र करने का कोई और उपाय नहीं है। लोगों ने अपने अनुमान से जितने भी उपाय स्थापित किये, वे सभी किसी न किसी चरण में गलत सिद्‌ध होकर रह गये। तौहीद के अतिरिक्त अब तक जितने भी व्यवस्था-ए-हिकमत बने, वे सभी या तो अपने अनुयायियों के साथ नष्ट हो गये या धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। वर्तमान युग में लगभग सभी प्राचीन व्यवस्था-ए-फ़िक्र या तो समाप्त हो चुके हैं या परिवर्तन के साथ नये नामों का वस्त्र पहनकर विनाश के मार्ग पर तीव्र गति से अग्रसर हैं। यद्‌यपि उनके अनुयायी सहस्त्र प्रयत्न कर रहे हैं कि वे सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए रोशनी बन सकें, किन्तु उनके सभी प्रयत्न विफल होते जा रहे हैं।

आज की पीढ़ियाँ पूर्ववर्ती पीढ़ियों से कहीं अधिक निराश हैं और भावी पीढ़ियाँ और भी अधिक निराश होने पर विवश होंगी। फलस्वरूप मानव-जाति को किसी न किसी समय "एकत्व-बिन्दु" (नुक्ता-ए-तौहीद) की ओर लौटना पड़ेगा, अन्यथा उस बिन्दु के अतिरिक्त मानव-जाति किसी एक केन्द्र पर कभी एकत्र न हो सकेगी। वर्तमान युग के चिन्तक को चाहिए कि वह वही की दृष्टि-विचार को समझे और मानव-जाति की गलत पथप्रदर्शन से हाथ खींच ले। स्पष्ट है कि विभिन्न राष्ट्रों और विभिन्न जातियों के शारीरिक कार्य-कलाप अलग-अलग हैं और यह सम्भव नहीं है कि सम्पूर्ण मानव-जाति का शारीरिक कार्य एक हो सके। अब केवल आध्यात्मिक कार्य शेष रह जाते हैं, जिनका स्रोत तौहीद और केवल तौहीद है। यदि संसार के चिन्तक प्रयत्न कर इन कार्यों की गलत व्याख्याओं को सही कर सकें तो वे विश्व की जातियों को आध्यात्मिक कार्य-कलाप के एक

www.ksars.org

ही चक्र में एकत्र कर सकते हैं और वह आध्यात्मिक चक्र केवल क़ुरआन द्वारा प्रस्तुत तौहीद है। इस विषय में पूर्वग्रहों को किनारे रखना ही पड़ेगा। क्योंकि भविष्य के भयंकर संघर्ष–चाहे वे आर्थिक हों या वैचारिक–मानव-जाति को विवश कर देंगे कि वह बड़ी से बड़ी कीमत चुकाकर अपनी अस्तित्व की खोज करे और अस्तित्व के साधन क़ुरआनी तौहीद के अतिरिक्त किसी व्यवस्था-ए-हिकमत से प्राप्त नहीं हो सकते।

हमने यह उल्लेख "चेतना-चतुर्थ" के सन्दर्भ में आवश्यक समझकर किया है। वस्तुतः हमारा आशय यह है कि दर्शन के इन्द्रिय वही की पथप्रदर्शन के बिना सही कदम नहीं उठा सकते। यदि हम शेष तीन चेतनाओं को संक्षेप में समझ लें तो वही की केन्द्रीयता तक पहुँच सकते हैं। जब हम "ज्ञान-ए-नुबुव्वत" के संक्षेप को जान लेंगे तो हमारी अपनी विचारणा ज्ञान-ए-नुबुव्वत की तुलना में सभी अनुमानिक विद्याओं को अस्वीकार करने पर विवश हो जाएगी।

चार चेतनाएँ

किसी न किसी प्रकार मनुष्य को इस मत पर एकत्र होना पड़ेगा कि यह प्रत्यक्ष ब्रहमाण्ड किसी भी प्रकार भौतिक कणों का समूह नहीं है, अपितु केवल चेतना का ही आदिम तत्व है। उपर्युक्त वर्णन में ब्रहमाण्ड को चार चेतनाओं का संयोग बताया गया है। प्रथम चेतना नूर (नूर-ए-मुफ़रद) से निर्मित है, द्वितीय चेतना रोशनियाँ -समष्टि (नूर-ए-मुर्क़ब) से। तृतीय चेतना नस्मा-ए-मुफ़रद की संरचना है और चतुर्थ चेतना नस्मा-ए-मुर्क़ब की। इन चारों चेतनाओं में केवल चतुर्थ चेतना जन-साधारण से परिचित है। साधारण जन केवल इसी चेतना को जानते और समझते हैं। शेष तीन चेतनाएँ आम जन की परिचिति से परे हैं। अब तक मनोविज्ञान के विशेषज्ञों ने चतुर्थ चेतना से हटकर जिस वस्तु का अन्वेषण किया है, वह तृतीय चेतना है, जिसे वे अपनी परिभाषा में अवचेतन कहते हैं। किन्तु क़ुरआन पवित्र ग्रन्थ प्रथम चेतना और द्वितीय चेतना का भी परिचय कराता है। अतः इन दोनों चेतनाओं को भी हम अवचेतन ही गिनेंगे। इस प्रकार ब्रहमाण्ड की संरचना में तीन अवचेतन पाए जाते हैं–प्रथम अवचेतन प्रथम चेतना, द्वितीय अवचेतन द्वितीय चेतना, तृतीय अवचेतन तृतीय चेतना है। इन चारों चेतनाओं में प्रथम चेतना लामकान है और अन्य तीन चेतनाएँ मकान हैं। प्रथम चेतना को अपरिवर्तनशील होने के कारण 'लामकान- अलौकिक आयाम' कहा गया है।

प्रथम ब्रहमाण्ड के भीतर विद्यमान किसी वस्तु की अक्ष-परिक्रमा को समझना है और फिर दीर्घ-पथ की परिक्रमा को।

www.ksars.org

उदाहरण: हम अपनी आँखों के सम्मुख एक शीशे का गिलास रखकर विचार करें तो गिलास की अक्ष-परिक्रमा का विश्लेषण निम्नलिखित शब्दों में कर सकते हैं। जब गिलास पर हमारी निगाह पड़ती है तो अवरोहण और आरोहण के छह मंडल पार कर जाती है। हमारे इन्द्रियों के भीतर प्रथम गिलास वह्मा की दशा में प्रवेश करता है। फिर वही वह्मा गिलास की कल्पना बन जाता है। तत्पश्चात वही कल्पना छवि (तसव्वुर) का रूप धारण करके अनुभव का स्तर प्राप्त कर लेती है। फिर तुरंत ही अनुभव छवि में, छवि कल्पना में और कल्पना वह्मा में स्थानान्तरित हो जाती है। यह समस्त क्रिया लगभग एक सेकण्ड के सहस्रवें अंश में घटित होती है और बार-बार परिभ्रमण करती रहती है। इस परिभ्रमण की गति इतनी तीव्र होती है कि हम प्रत्येक वस्तु को अपनी आँखों के सम्मुख स्थिर अनुभव करते हैं।

वह्मा से आरम्भ होकर कल्पना, छवि, अनुभव... फिर छवि और कल्पना तक अवरोहण और आरोहण के छह चरण होते हैं। इन्हीं छह यात्राओं को लताइफ़-सित्ता- सूक्ष्म तत्व-षट्क कहा जाता है, किन्तु वह्मा से अनुभव तक आयाम केवल चार होते हैं। इन चार आयामों या चार चेतनाओं में एक चेतना है और तीन अवचेतन। सर्वप्रथम हमें वह्मा से सम्बन्ध स्थापित रखना पड़ता है, फिर कल्पना और छवि से। तथापि ये तीनों दशाएँ हमारी चेतना से परे हैं। केवल चतुर्थ दशा जिसे दर्शन (रुइयत) कहा जाता है, हमसे परिचित है।

दर्शन (रुइयत) की चेतना वास्तव में शेष तीन अवचेतनों का संयोग है। हम सर्वप्रथम पर-ब्रह्माण्डीय चेतना से, जो अपरिवर्तनशील है, अपने जीवन की शुरुआत करते हैं। अर्थात् ईश्वरीय गुणों में एक फव्वारा फूटता है और वह फव्वारा तृतीय चरण पर आकर व्यक्ति का रूप ले लेता है। प्रथम चरण पर वह फव्वारा आदिम तत्व (हीुला) के रूप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड होता है, दूसरे चरण पर वह ब्रह्माण्ड की किसी एक जाति का आदिम तत्व होता है और तृतीय चरण पर वह व्यक्ति बनकर प्रकट हो जाता है।

व्यक्ति की दशा में असंख्य रंगों का एक फव्वारा अस्तित्व में आता है। इन असंख्य रंगों की व्यवस्था को अनुभव (एहसास) में सुरक्षित रखना लगभग असम्भव है। इसी कारण चतुर्थ चेतना के इन्द्रिय अक्सर बड़ी भूलें करती हैं। इस व्यवस्था को प्रायः अनुमान (क़यास) द्वारा स्थिर रखने की कोशिश की जाती है किन्तु यह प्रयास लगभग निष्फल सिद्ध होता है। इसी कारण आध्यात्मिक विद्याओं में चतुर्थ चेतना पर विश्वास नहीं किया जाता।

तृतीय चेतना में ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण का सम्बन्ध व्यक्ति के मन से जुड़ा होता है। ब्रह्माण्ड में जो कुछ परिवर्तन घट चुके हैं या होने वाले हैं, वे सब व्यक्ति की द्वितीय चेतना में संचित

www.ksars.org

रहते हैं। द्‌वितीय चेतना का आदिम तत्व (हीुला) आदिकाल से अनन्तकाल तक की सम्पूर्ण ब्रह्‌माण्डीय गतिविधियों का लेखा होता है। इस चेतना में वे सभी अवयव विद्‌यमान रहते हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि की जड़ हैं। आध्यात्मिकता में सबसे महत्त्वपूर्ण आधार प्रथम चेतना है क्योंकि प्रथम चेतना में ईश्वरीय इच्छा (मशीयत-ए-इलाही) प्रत्यक्ष होती है। सूफ़ी परिभाषा में यही चेतना हक़ीक़त-उल-हक़ाइक़ कहलाती है। इसी को हक़ीक़त-ए-मुहम्मदिया कहा जाता है। हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम से पूर्व किसी नबी ने इस चेतना पर रोशनी नहीं डाली ईसाई शिक्षा का आरम्भ भी द्‌वितीय चेतना से होता है। सर्वप्रथम इस चेतना की तहक़ीक़ात हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने ही की। इसी कारण क़ुरआनी सूफ़ियों ने इसे हक़ीक़त-ए-मुहम्मदिया के नाम से सम्बोधित किया। नबियों-ए-मुर्सलीन की वही का अन्त द्‌वितीय चेतना पर होता है और अन्य नबियों की वही का अन्त तृतीय चेतना पर। केवल हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम वे नबी मुर्सल हैं जिनकी वही का अन्त प्रथम चेतना पर होता है। ईश्वर का यह कथन – *"यदि मैं मुहम्मद (स.अ.व.) को उत्पन्न न करता तो ब्रह्‌माण्ड को भी न रचता"* – इसी तथ्य की ओर संकेत करता है। इसी कारण क़ुरआन पवित्र ग्रन्थ में प्रथम चेतना को इल्म-उल-क़लम के नाम से प्रस्तुत किया गया है। हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने एक दुआ-ए-मासूरा में फ़रमाया:

اسئلك بكل اشهر هولك سميت بہ نفسك اوانزلتہ فی كتابك اوعلمتہ احداً من خلقك اواستاقدت
بہ فی علم الغيب عند ك

अनुवाद : "मैं तेरी बारगाह में तेरे उन सभी नामों का वास्ता लाता हूँ जो तेरे पवित्र नाम हैं और जिन्हें तूने अपने लिए निर्धारित किया है, या जिन्हें तूने अपनी किताब-ए-मजीद में उतारा है, या अपनी सृष्टि में से किसी को उनका ज्ञान दिया है, या अपने गुप्त ज्ञान में उन्हें अपने लिए सुरक्षित रखा है।"

www.ksars.org

नबियों के आध्यात्मिक स्तर

नबियों के बारे में क्रम का जो निर्धारण किया जाता है और कहा जाता है कि अमुक नबी का आध्यात्मिक स्तर वह आकाश है और अमुक नबी का आध्यात्मिक स्तर वह आकाश है–यह अवचेतन के ही परिचित मरातिब का उल्लेख है। समस्त आसमानी सीमाएँ किसी परत या किसी दिशा के आधार पर निश्चित नहीं हैं, बल्कि अवचेतन के आधार पर निश्चित हैं। जब हम खगोलीय पिंडों (सितारे, ग्रह) को निगाह की पकड़ में देखते हैं तो उस समय हमारे चेतन और अवचेतन की सीमाएँ परस्पर जुड़ जाती हैं। खगोलीय पिंड का एक आदिम तत्त्व (हीुला) हमारे चेतन (इन्द्रियों) को छू लेता है किन्तु उनके विस्तृत अवयव क्या हैं और उनके बाहरी तथा भीतरी प्रभाव और दशाएँ किस प्रकार घटित हुई हैं–यह बात हमारे चेतन से छिपी और अवचेतन पर स्पष्ट होती है। जब किसी नबी या वली का अवचेतन चेतन बन जाता है तो उसकी इन्द्रियाँ उन खगोलीय पिंडों के बाहरी और भीतरी प्रभावों और दशाओं को पूर्ण रूप से देखतीं, जानतीं, सुनतीं और छूती हैं। इन खगोलीय पिंडों के समस्त प्रभाव और दशाएँ किसी नबी या वली के लिए पृथ्वी के प्रभावों और दशाओं की भाँति समीप हो जाती हैं। स्वयं पृथ्वी के प्रभावों और दशाओं की निकटता किसी एक व्यक्ति को तब तक प्राप्त नहीं होती जब तक उसका चेतन सबल और क्रमबद्ध न हो। जिस प्रकार चेतन की नहर-एऔर व्यवस्था के स्तर भिन्न-भिन्न हैं, उसी प्रकार अवचेतन की व्यवस्था और सामर्थ्य–अर्थात् अवचेतन का चेतन की सीमाओं में प्रवेश करने का ढंग भी विविध है। एक अधिक सबल और अधिक क्रमबद्ध चेतन रखने वाला मनुष्य पृथ्वी की दशाओं से अधिक परिचित होता है और उन पर गहन विवेचन कर सकता है; किन्तु एक दुर्बल और अक्रमबद्ध चेतन रखने वाला मनुष्य पृथ्वी की साधारण समस्याओं को जानने और समझने से भी असमर्थ रहता है।

वास्तव में किसी व्यक्ति का अवचेतन उसकी सम्पूर्ण जाति के चेतन का समष्टि होता है। सम्पूर्ण जाति से अभिप्राय आदि सृष्टि से वर्तमान क्षण तक अस्तित्व में आने वाले सभी व्यक्तियों से है। किसी व्यक्ति की सम्पूर्ण जाति के सारे अनुभवों का संकलन उसके चेतन में नहीं बल्कि अवचेतन में होता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति अपनी जाति के सभी प्रचलित विद्याओं को सीखने की क्षमता रखता है–अर्थात् जब वह जातिगत चेतन के किसी अंश को, जो स्वभावतः उसका अवचेतन है, चेतन में रूपान्तरित करना चाहे तो कर सकता है। यह क्षमताएँ सामान्य लोगों की होती हैं किन्तु किसी नबी या वली की क्षमताएँ अधिक होती हैं। जब कोई नबी या वली अपनी जाति के अवचेतन अर्थात् ब्रह्माण्डीय चेतन को जाग्रत करना चाहता है तो वह अपने

www.ksars.org

प्रयासों में कम या अधिक उसी प्रकार सफल हो जाता है जैसे एक व्यक्ति अपने जातिगत चेतन से परिचित होने में सफल होता है।

अन्धकार भी रोशनी है

उपरोक्त चारों चेतन प्रत्येक व्यक्ति के स्वरूप में विद्यमान हैं। उनकी विद्यमानता का ज्ञान चेतन कहलाता है और अज्ञान को अवचेतन समझा जाता है। अर्थात् इन चारों चेतनों में सामान्य लोग केवल चौथे चेतन से परिचित हैं। यदि हम इस परिचय की वास्तविकता खोजें तो अन्ततः रोशनी ही को कारण-चेतन ठहराएँगे। यहाँ 'प्रकाश' से तात्पर्य वह रोशनी नहीं है जिसे सामान्य लोग रोशनी कहते हैं, बल्कि वह रोशनी है जो नेत्र के लिए देखने का साधन बनता है चाहे वह अन्धकार ही क्यों न हो। यदि कोई प्राणी अन्धकार में देखने का अभ्यस्त है तो उसके लिए अन्धकार ही रोशनी का पर्याय माना जाएगा। कितने ही कीट और हिंस्र पशु रात्रि के समय अन्धकार में देखने के अभ्यस्त होते हैं।

मान लीजिए कि हम किसी वस्तु को देख रहे हैं। यदि वह रोशनी जो उस वस्तु और हमारे बीच विद्यमान है निकाल दिया जाए तो वह वस्तु हमारे चेतन की सीमाओं से बाहर हो जाएगी। इस उदाहरण से हम केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते हैं–अर्थात् रोशनी ही चेतन है अथवा चेतन ही रोशनी है। यदि किसी कारण से रोशनी के आकार-प्रकार में परिवर्तन हो जाए तो चेतन के आकार-प्रकार में भी परिवर्तन हो जाएगा।

सामान्य स्थितियों में इस बात को परखने के अनेक उपाय हो सकते हैं। उनमें से एक उपाय यह है कि यदि जल से भरे टब में एक कटोरा डुबो दिया जाए तो उसकी गहराई, व्यास और भार में परिवर्तन हो जाएगा। यह परिवर्तन या तो चेतन का परिवर्तन है अथवा रोशनी का। दोनों अवस्थाओं में हम एक सिद्धान्त स्थापित कर सकते हैं कि जो वस्तु बाह्य में रोशनी है वही वस्तु आन्तरिक में चेतन है। अर्थात् चेतन और रोशनी एक ही वस्तु हैं। जब वह मनुष्य के अनुभूतियों में घटित होती है तो उसे चेतन शब्द से व्यक्त करते हैं और जब वह बाह्य में नेत्र के सामने होती है तो उसे रोशनी के नाम से अभिहित करते हैं।

नियम: यदि हम किसी प्रकार अपनी आन्तरिक रोशनी (चेतन) में परिवर्तन उत्पन्न कर लें तो नेत्र के सामने फैली हुई रोशनी में भी परिवर्तन उत्पन्न हो जाएगा। रोशनी का यही क्रम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की व्यापक सीमा तक फैला हुआ है। यह सम्भव नहीं है कि किसी एक बिन्दु में रोशनी

www.ksars.org

के आकार-प्रकार परिवर्तित हो जाएँ और ब्रह्माण्ड की शेष रोशनियों में परिवर्तन न हो। अध्यात्म की दुनिया में 'तसर्रुफ़' करने का यही उपाय है। किन्तु तसर्रुफ़ की आरम्भिकता बाह्य रोशनियों से नहीं बल्कि आन्तरिक रोशनियों से की जाती है।

जब कोई प्रभावकारी (तसर्फ़ करने वाला) बाहरी दिव्य रोशनियाँ अर्थात् बाहरी परिस्थितियों में परिवर्तन करना चाहे तो वह अपनी सत्ता अर्थात् आन्तरिक दिव्य रोशनियों (चेतना में) परिवर्तन करता है। सूफ़ी परम्परा (तसव्वुफ़) में इसी क्रिया को सूक्ष्म तत्वों (लतीफ़ों) का रंगीन होना कहा जाता है। यदि किसी व्यक्ति के सूक्ष्म तत्व (सत्ता के रोशनियाँ) रंगीन हो जाएँ तो यह रंगीनता सम्पूर्ण ब्रह्मांड के दिव्य रोशनियों में व्याप्त हो जाएगी। अर्थात् ब्रह्मांड के समस्त दिव्य रोशनियों में वही परिवर्तन उत्पन्न हो जाएगा जो व्यक्ति के सूक्ष्म तत्वों में हुआ है। ख़ानक़ाही व्यवस्था में अक़ताब-ए-तक़्वीन (मदार सज्जन) के प्रभाव का यही तरीका है।

रोशनी के कोण

हम नस्मा के विवेचन में नस्मा की संख्याओं का उल्लेख कर चुके हैं। उन असंख्य संख्याओं में प्रत्येक संख्या रोशनी के एक कोण का स्वरूप रखती है। रोशनी का प्रत्येक कोण ऊपर विवेचित आकर्षण और विकर्षण से निर्मित है। प्रत्येक व्यक्ति की सत्ता आकर्षण और विकर्षण के कोण की ही सत्ता है। प्रत्येक व्यक्ति उस कोण पर एक परिकल्पित बिन्दु बनाता है। प्रत्येक बिन्दु अपनी प्रकार (प्रजाति) के समस्त बिन्दुओं से सम्बद्ध है और उसके भीतर प्रकार के अन्य बिन्दुओं के साथ गुणों का साझा पाया जाता है। यही गुणों का साझा उसे प्रकार के अन्य बिन्दुओं से समान प्रतीत कराता है। यदि हम इन बिन्दुओं का और विस्तार से विवेचन करें तो प्रत्येक बिन्दु को एक स्थिति-स्थान कहेंगे। यह स्थिति-स्थान दो अवस्थाओं में स्थित और परिभ्रमण करता है। उसका प्रथम परिभ्रमण धुरीय गति है जो उसे सीमित रखती है और किसी प्रकार के अन्य बिन्दुओं में अवशोषित नहीं होने देती। दूसरा परिभ्रमण लम्बी गति है। यह तूलानी गति उसे ब्रह्मांड के अन्य कोणों से सम्बद्ध करती है। अर्थात् ये सभी बिन्दु (कोण) रोशनी की डोरियों में बँधे हुए हैं और इन्हीं डोरियों पर ब्रह्मांड की संरचना का आधार है।

धुरीय गति का एक पक्ष बिन्दु के व्यक्तिगत जीवन का और दूसरा पक्ष बिन्दु के जातीय जीवन का अभिलेख है। दीर्घगत की एक दिशा एक जाति के व्यक्तियों को दूसरी जाति के व्यक्तियों से सम्बद्ध रखती है और दीर्घगत की दूसरी दिशा उस सत्य से जुड़ी है जिसे *वाजिबुल वजूद* कहते हैं। यह सत्य ईश्वर की स्वरूपगत विशेषताओं पर आधारित है।

www.ksars.org

जो रोशनियाँ धुरीय गति की नींव हैं, उनका नाम *नस्मा* है और जो रोशनियाँ दीर्घगत की नींव हैं, उनका नाम *नूर* है। किसी स्वरूप में ये रोशनियाँ उस स्वरूप की केन्द्रीयता होते हैं। इन रोशनियों में प्रत्येक के दो पक्ष हैं और प्रत्येक पक्ष ब्रहमांडीय व्यवस्था का *चेतन* है।

उदाहरण: जब हम कोई सुगन्धित पेय तैयार करते हैं तो पानी, चीनी, रंग और सुगन्ध मिलाकर बोतलों में भर लेते हैं। यदि बोतल को वह रोशनी मान लें जो हमारी आँखों के सम्मुख है तो पानी को *चेतन चतुर्थ*, रंग को *चेतन तृतीय*, चीनी को *चेतन द्‌वितीय* और सुगन्ध को *चेतन प्रथम* कल्पित कर सकते हैं। जिस प्रकार हम बाहय इन्द्रियों से पानी, रंग, चीनी और सुगन्ध को अनुभव करते हैं, उसी प्रकार आन्तरिक इन्द्रियों से इन चारों चेतनों का *बोध* और *अनुभव* कर सकते हैं।

चेतन के दो पक्ष हैं। एक पक्ष *मूल* है जिसे आन्तरिक या *आध्यात्मिक पक्ष* कहना चाहिए। इस पक्ष का दूसरा नाम *व्यक्ति* है। जितनी सृष्टियाँ व्यक्ति या कण के रूप में विद्‌यमान हैं, वे सब इसी *चेतन* की सीमाओं में स्थित हैं। चेतन के दोनों पक्षों में केवल *द्रष्टा* और *द्रष्टव्य* का अन्तर है। चेतन की एक स्थिति वह है जिसे व्यक्ति अनुभव करता है। दूसरी स्थिति वह है जो स्वयं *अनुभूति* है। हम इसे ही बाहय जगत कहते हैं। किन्तु किसी वस्तु का बाहय में अस्तित्व तब तक असम्भव है जब तक उस वस्तु का अस्तित्व व्यक्ति के अन्तर में न हो। इन परिस्थितियों को देखते हुए यह स्वीकार करना ही पड़ता है कि व्यक्ति का *आन्तरिक जगत* ही यथार्थ और सत्य है। और उसी जगत का प्रतिबिम्ब बाहय में दृष्टिगोचर होता है। जब हम *अनुभूति* को विभाजित करते हैं तो उसका एक अंश *निगाह* या *रूप-दर्शन* है जो बाहय में आकृति और रूप-रेखा की उपस्थिति के बिना सम्भव नहीं। *अनुभूति* के विभाजन के बाद निगाह के अतिरिक्त और भी अंश शेष रहते हैं जिन्हें *वहम*, *कल्पना* और *छवि* कहा जाता है। *तसव्वुफ़* में इन सबका सामूहिक नाम *रूया* है। अर्थात् *अनुभूति* को रूयत और *रूया*—दो अंशों में विभाजित किया जा सकता है। इस प्रकार सम्पूर्ण ब्रहमांड इन्हीं दोनों अंशों का एक सांयोगिक समुच्चय है।

यदि जगत की समस्त सृष्टियों में प्रत्येक वस्तु को एक कण मानकर उसकी सत्ता के भीतर और बाहर की संरचना का परीक्षण किया जाए तो अन्ततः एक नूर प्राप्त होगा जिसके भीतर जीवन की समस्त मूल्य विद्‌यमान होंगी। *तसव्वुफ़* की परिभाषा में इस नूर की गति का नाम *बिदाअत* है। *बिदाअत* जीवनदायी दबाव का एक प्रकार है जो *चेतन प्रथम* से आरम्भ होकर *चेतन चतुर्थ* तक प्रभावशाली बना रहता है।

www.ksars.org

सृष्टि का सूत्र

हमने पहले उल्लेख किया है कि ये चारों *चेतनाएँ* समतल रखती हैं। *प्रथम चेतना* कुरआन पाक की भाषा में *ईश्वरीय नाम* (इस्माए इलाहीया) या *ईश्वरीय गुण* (सिफ़ात-ए-इलाहीया) के नाम से संबोधित है। जब *ईश्वरीय नाम* अभिव्यक्ति की ओर झुकाव करते हैं तो *आदेश-प्रविष्टि* (अहकाम-ए-वारिदा) बनकर *बदाअत* का रंग स्वीकार कर लेते हैं। अत जब *बदाअत प्रथम चेतना* से *द्वितीय चेतना* में प्रविष्ट होती है तो *ईश्वरीय आदेश* (अमर-ए-इलाहीया) के रूप में प्रकट होती है और सामान्य परिभाषा में *आत्मा* कहलाती है। जब *आत्मा बदाअत* (जीवनी-दबाव) के अधीन अभिव्यक्ति की एक और शर्त पूरी करती है तो *स्वप्न-जगत* (रुइया) की समतल में प्रवेश कर जाती है और *बदाअत* का अंतिम प्रयास *व्यक्ति* (*चतुर्थ चेतना*) के रूप में प्रकट होता है। यदि इन प्रेरणाओं पर विचार किया जाए तो *बदाअत* के अवतरण का तरीका स्पष्ट हो जाता है। अर्थात् *व्यक्ति बदाअत* की सीमिततम अवस्था है। अब यदि कोई *व्यक्ति बदाअत* के नेहर को विस्तार देना चाहे तो यह प्रयास *उर्ध्वगमन* (सऊद) कहलाएगा और इसकी गति *अवतरण* के विपरीत घटित होगी। यानी *बदाअत चतुर्थ चेतना व्यक्ति* से उभरकर *तृतीय चेतना* या *प्रकार चेतना* (नौई चेतना) की समतल तक पहुँच जाएगी। यहाँ *व्यक्ति* का मन *प्रकार चेतना* का आवरण ग्रहण कर लेगा। इस विषय को संक्षेप में यूँ कहा जाएगा कि *व्यक्ति* ने अपने *अवचेतन* का आवरण ले लिया। यदि फिर भी *व्यक्ति* का मन *उर्ध्वगमन* करना चाहे तो वह समस्त *प्रकारों की चेतना* अर्थात् *सामूहिक ब्रह्मांडीय चेतना* की समतल पर प्रवेश कर सकता है। यहाँ *व्यक्ति* के मन की विशेषताएँ *ईश्वरीय आदेश* की विशेषताओं में विलीन हो जाती हैं और उसकी *विचारधारा* (तरज़-ए-फिक्र) *ईश्वरीय गुणों* का अंश और रंग धारण कर लेती है।

प्रथम चेतना एकल दैवीय रोशनी (नूर-ए-मुफ़रद) और *द्वितीय चेतना संयुक्त दैवीय रोशनी* (नूर-ए-मुरक्कब) है। ये नूर की दो अवस्थाएँ हुईं। इसी प्रकार *तृतीय चेतना एकल नसमह* और *चतुर्थ चेतना संयुक्त नसमह* है। इस प्रकार *नसमह* की भी दो अवस्थाएँ हुईं। ब्रह्मांड की चार कालिकताएँ संरचनाओं में पहली दो कालिकताएँ नूर की संरचना हैं और बाद की दो कालिकताएँ *नसमह* की हैं। इनमें प्रत्येक कालिकता की दो सतहें हैं–

1. *नूर-ए-मुफ़रद* की दोनों सतहों से अलग-अलग दो किरणें निकलती हैं और गुणात्मक माँग के अधीन जिस बिंदु पर इकट्ठी होकर प्रकट होती हैं, वह नूर *नूर-ए-मुफ़रद* की *सृष्टि* है। इस सृष्टि को परम देवदूत(*मलाए आला)* कहा जाता है।

www.ksars.org

2. *नूर-ए-मुरक्कब* की दोनों सतहों से भी अलग-अलग दो किरणें निकलती हैं और गुणात्मक माँग के अधीन जिस बिंदु पर इकट्ठी होकर प्रकट होती हैं, वह *नूर-ए-मुरक्कब* की *सृष्टि* है। इस सृष्टि को देवदूत (मलाइका) कहा जाता है।

3. *नस्मा-ए-मुफ़रद* की दोनों सतहों से भी अलग-अलग दो किरणें निकलती हैं और गुणात्मक माँग के अधीन जिस बिंदु पर इकट्ठी होकर प्रकट होती हैं, वह *नस्मा-ए-मुफ़रद* की *सृष्टि* है। इस सृष्टि का नाम *जिन्नात* है।

4. *नस्मा-ए-मुरक्कब* की दोनों सतहों से भी अलग-अलग दो किरणें निकलती हैं और गुणात्मक माँग के अधीन जिस बिंदु पर इकट्ठी होकर प्रकट होती हैं, वह नस्मा-ए-मुरक्कब की *सृष्टि* है। इस सृष्टि का नाम *तत्वमय सृष्टि* है। इसी सृष्टि का एक अंश हमारा *पृथ्वी गोला* भी है।

ब्रहमांड नस्मा का प्रकट रूप

जो कुछ हमारे ज्ञान और अनुभूति में है उसका बड़ा अंश अधिकतर निराकार अर्थात् बिना रूप और आकृति का माना जाता है। किन्तु यह भ्रांति है। प्रत्येक वस्तु रूप और आकृति रखती है, चाहे वह वहम और विचार ही क्यों न हो। जिसको परिभाषा में अनस्तित्व कहा जाता है वह भी एक अस्तित्व है–ऐसा अस्तित्व जो रूप और आकृति धारण करता है।

वहम क्या है?

विचार कहाँ से आता है? यह बात गम्भीर चिन्तन की है। यदि हम इन प्रश्नों की ओर ध्यान न दें तो असंख्य सत्य गुप्त रह जाएँगे और उन सत्यों की श्रृंखला, जिसकी सौ प्रतिशत कड़ियाँ इसी विषय को समझने पर निर्भर हैं, अनजानी रह जाएगी। जब मन में कोई विचार आता है तो उसका कोई न कोई ब्रहमांडीय कारण अवश्य होता है। विचार का आना इस बात का प्रमाण है कि मन के परदों में गति हुई है। यह गति मन की अपनी नहीं हो सकती। इसका सम्बन्ध उन ब्रहमांडीय तन्तुओं से है जो ब्रहमांड की व्यवस्था को एक विशेष क्रम में गतिशील रखते हैं। उदाहरणार्थ, जब वायु का कोई तीव्र झोंका आता है तो इसके यह अर्थ होते हैं कि वायुमण्डल में कोई परिवर्तन घटित हुआ। उसी प्रकार जब मनुष्य के ज़ेहन में कोई वस्तु प्रविष्ट होती है तो उसके अर्थ भी यही हैं कि मनुष्य के अवचेतन में कोई गति प्रकट हुई है। इसे समझना स्वयं मानवीय ज़ेहन की खोज पर आधारित है। ज़ेहन के दो पृष्ठभाग होते हैं। एक पृष्ठभाग वह है जो व्यक्ति की ज़ेहनी

www.ksars.org

गति को ब्रह्मांडीय गति से जोड़ता है–अर्थात् यह गति व्यक्ति के इरादों और अनुभूतियों को व्यक्ति के ज़ेहन तक लाती है। ज़ेहन के दोनों पृष्ठभाग दो प्रकार की इन्द्रिय-शक्तियाँ उत्पन्न करते हैं। यदि एक पृष्ठभाग की सृष्टि को सकारात्मक इन्द्रियाँ कहें तो दूसरे पृष्ठभाग की सृष्टि को नकारात्मक इन्द्रियाँ कह सकते हैं। वस्तुतः सकारात्मक इन्द्रियाँ एक अर्थ में इन्द्रियों का विभाजन हैं। यह विभाजन जाग्रत अवस्था में घटित होता है। इस विभाजन के अंग शारीरिक अवयव हैं। इस प्रकार हमारी शारीरिक क्रियाशीलता में यही विभाजन कार्य करता है। एक ही समय में नेत्र किसी एक विभाग को देखते हैं और कर्ण किसी ध्वनि को सुनते हैं। हस्त किसी तीसरी वस्तु में संलग्न होते हैं और पाद किसी चौथी वस्तु की माप करते हैं। जिह्वा किसी पाँचवीं वस्तु के स्वाद में और घ्राणेन्द्रिय किसी अन्य वस्तु को सूँघने में व्यस्त रहती है। और मस्तिष्क में इन सब से भिन्न कितने ही अन्य विचार आते रहते हैं। यही सकारात्मक इन्द्रियों की कार्यप्रणाली है, किन्तु इसके विपरीत नकारात्मक इन्द्रियों में जो प्रेरणाएँ होती हैं उनका सम्बन्ध मनुष्य के इरादे से नहीं होता।

उदाहरण के लिए, स्वप्न में यद्यपि उपर्युक्त समस्त इन्द्रियाँ कार्य करती हैं, किन्तु शारीरिक अवयवों के निश्चल होने से यह संकेत मिल जाता है कि इन्द्रियों का संकलन केवल एक ही मानसिक बिंदु में है। स्वप्न की अवस्था में उस बिंदु के भीतर जो गति घटित होती है, वही गति जागृति में शारीरिक अवयवों के भीतर विभाजित हो जाती है।

विभाजन होने से पूर्व हम उन इन्द्रियों को नकारात्मक इन्द्रियाँ कह सकते हैं, किन्तु शारीरिक अवयवों में विभाजित होने के बाद उन्हें सकारात्मक कहना उचित होगा। यह बात विचारणीय है कि नकारात्मक और सकारात्मक दोनों इन्द्रियाँ एक ही पृष्ठभाग में स्थित नहीं रह सकतीं। उनका निवास मन की दोनों पृष्ठभागों में मानना पड़ेगा। तसव्वुफ़ की परिभाषा में नकारात्मक पृष्ठभाग का नाम नस्मा-ए-मुफ़रद और सकारात्मक पृष्ठभाग का नाम नस्मा-ए-मुरक्कब लिया जाता है।

नस्मा-ए-मुरक्कब ऐसी गति का नाम है जो निरंतर घटित होती रहती है–अर्थात् एक क्षण, दूसरा क्षण, फिर तीसरा क्षण और इस प्रकार क्षण पर क्षण गति होती रहती है। इस गति की कालिकता क्षणों में है जिसमें एक ऐसी व्यवस्था पाई जाती है जो कालिकता का निर्माण करती है। प्रत्येक क्षण एक स्थान है। इस प्रकार सम्पूर्ण कालिकता क्षणों की गिरफ्त में है। क्षण ऐसी बंदिश करते हैं जिसके भीतर कालिकता स्वयं को बंधा हुआ पाती है और क्षणों के नेहर में परिभ्रमण और ब्रह्मांडीय चेतना में स्वयं को उपस्थित रखने पर विवश है। मूल क्षण ईश्वर के ज्ञान में उपस्थित हैं और जिस ज्ञान का यह शीर्षक है, ब्रह्मांड उसी ज्ञान की व्याख्या और अभिव्यक्ति है। ईश्वर ने क़ुरआन में आदेश दिया है कि मैंने हर वस्तु को दो पहलुओं पर उत्पन्न किया है। अतः सृष्टि के यही दो पहलू हैं। सृष्टि का एक पहलू स्वयं क्षण हैं, अर्थात् क्षणों का आंतरिक भाग या एकवर्ण चेतना। और दूसरा पहलू क्षणों का बाहरी भाग या बहुवर्ण चेतना। एक ओर क्षणों की गिरफ्त में ब्रह्मांड है और दूसरी ओर क्षणों की गिरफ्त में ब्रह्मांड के व्यक्ति हैं। क्षण एक साथ दो पृष्ठभागों

www.ksars.org

में गति करते हैं। एक पृष्ठभाग की गति ब्रहमांड की प्रत्येक वस्तु में अलग-अलग घटित होती है। यह गति उस चेतना का निर्माण करती है जो वस्तु को उसकी विशिष्ट सत्ता के दायरे में बनाए रखती है। दूसरी पृष्ठभाग की गति ब्रहमांड की समस्त वस्तुओं में एक साथ प्रवाहित है। यह गति उस चेतना का निर्माण करती है जो ब्रहमांड की सभी वस्तुओं को एक ही मंडल में उपस्थित रखती है। क्षणों की एक पृष्ठभाग में ब्रहमांडीय व्यक्ति अलग-अलग विद्‌यमान हैं–अर्थात् व्यक्तियों की चेतना भिन्न-भिन्न है। क्षणों की दूसरी पृष्ठभाग में ब्रहमांड के सभी व्यक्तियों की चेतना एक ही बिंदु पर केन्द्रित है। इस प्रकार क्षणों की दोनों पृष्ठभाग दो चेतनाएँ हैं–एक पृष्ठभाग व्यक्तिगत चेतना और दूसरी पृष्ठभाग सामूहिक चेतना। सामान्य परिभाषा में सामूहिक चेतना को ही अवचेतन कहा जाता है।

यदि हम ब्रहमांड को एक व्यक्ति मान लें और ब्रहमांड के भीतर की वस्तुओं को उसके अवयव मान लें, तो ब्रहमांडीय चेतना को केन्द्रीय चेतना कहेंगे। फिर उसी केन्द्रीय चेतना के विभाजन का नाम व्यक्तिगत चेतना होगा। वास्तव में एक ही चेतना है जो ब्रहमांड की हर वस्तु में अलग-अलग प्रवाहित हो रही है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति की चेतना में उसके अपने विशेष परिवेश की वस्तुएँ होती हैं। अर्थात् क्षणों की एक पृष्ठभाग उस विशेष समय में व्यक्ति की चेतना का निर्माण करती है, और साथ ही क्षणों की दूसरी पृष्ठभाग में ब्रहमांड के कण-कण की प्रेरणाएँ प्रवाहित होती हैं। यही स्थिति केन्द्रीय चेतना की है। अब हम इस प्रकार कह सकते हैं कि व्यक्ति को परिवेश की जानकारी क्षणों की ऊपरी पृष्ठभाग से होती है और ब्रहमांड की पूर्ण जानकारी क्षणों की निचली पृष्ठभाग से मिल सकती है। क्षणों की निचली पृष्ठभाग व्यक्ति की केन्द्रीय चेतना है। उसी में अनादि से अनन्त तक का पूरा लेखा-जोखा उपस्थित है। और क्षणों की एक पृष्ठभाग व्यक्ति की अस्थायी चेतना है और क्षणों की दूसरी पृष्ठभाग व्यक्ति की शाश्वत चेतना है। व्यक्ति की शाश्वत चेतना (अवचेतन) में अनादि से अनन्त तक की समस्त प्रेरणाएँ एक ही क्षण में स्थित हैं। हम इसे अमर क्षण कहेंगे। यही क्षण व्यक्ति की चेतना की गहराई है। इसी क्षण के लिए हुज़ूर अलैहि अस्सलातो वस्सलाम ने कहा:

"ली मा'अ अल्लाहि वक़्तु لِیْ مَعَ اللهِ وَقْتٌ -"

अनुवाद: समय में मेरा और अल्लाह का साथ है।

यही क्षण वास्तविक है। समय-नेहर इसी क्षण की एक शाखा है। यही क्षण ज्ञान-ए-इलाही है। इसी क्षण को प्रत्यक्ष ज्ञान (इल्म हुज़ूरी) कहा जाता है। इसी क्षण के भीतर परमात्मा की वे गुणधर्म एकत्र हैं जिन्हें कुरआन पाक में “शेयून” कहा गया है। हमारा उद्‌देश्य यहाँ परमात्मा के सभी गुणधर्मों का उल्लेख करना नहीं है। परमात्मा के गुणधर्म तो अनन्त हैं। यहाँ केवल उन गुणधर्मों का वर्णन है जो ब्रहमांड से परिचित हैं। यह क्षण जिसे हमने ज्ञान-ए-इलाही कहा है, उसी क्षण के भीतर इरादा-ए-इलाही प्रवाहित है और इरादा-ए-इलाही के ही अंश समय-नेहर हैं।

www.ksars.org

अकाल (लाज़मान) और काल (ज़मान) की व्याख्या अनेक प्रकार हो सकती है। आदिकाल से ही नबियों (अलैहि अस्सलातो वस्सलाम) ने परमात्मा और परमात्मा के आदेश का परिचय कराया है। नबियों ने अपनी शिक्षा में सदैव इस पर बल दिया है कि स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ता(ज़ात-ए-मुतलक़) को समझना अनिवार्य है। बिना स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताको समझे उसके आदेश (अमर) को समझना सम्भव नहीं। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि अमर (आदेश) क्या स्वयं अमर को समझने का उत्तरदायी हो सकता है? इसका उत्तर हाँ में देना होगा। यदि अमर किसी बात का उत्तरदायी है तो वह बात केवल यह हो सकती है कि अमर अपनी वास्तविकता की तलाश स्वामी-अमर (साहिब-ए-अमर) के परिचय से करे। तब यह सम्भावना निकलती है कि अमर अपने विषय में बोध उत्पन्न कर सके और अपनी गहनता को जान ले। बिना स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताके परिचय के अमर अपनी वास्तविकता को नहीं पहचान सकता। जब मूसा अलैहि अस्सलातो वस्सलाम ने कोह-ए-तूर पर रोशनी देख कर प्रश्न किया–"कौन?" तो परमात्मा ने उत्तर में फरमाया–"मैं हूँ तेरा रब।" इसी घटना से स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताऔर स्वरूप-ए-अमर की सीमाओं का ज्ञान मिलता है। मूसा अलैहि अस्सलातो वस्सलाम स्वरूप-ए-अमर हैं और परमात्मा स्वरूप-ए- निरपेक्ष सत्ता साथ ही परमात्मा का गुण रब्बानियत और मूसा अलैहि अस्सलातो वस्सलाम की स्थिति मर्बूबियत प्रकट होती है। एक ओर स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताऔर उसके गुणधर्म, दूसरी ओर स्वरूप-ए-अमर और उसकी आवश्यकता। यही वे चार बातें हैं जिन पर ज्ञान-ए-नुबुव्वत (विज्ञान-ए-नबी) का आधार है। कुछ लोगों ने अपने अभिव्यक्ति-पद्धति में स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताको सत्य-ए-निरपेक्ष सत्ता(हक़ीक़त-ए-मुतलक़ा) कहा है और स्वरूप-ए-अमर निरपेक्ष सत्ता को ब्रह्मांड कहा है। यह पद्धति हिकमत-ए-रब्बानी (दैवी दार्शनिकों) की है। नबियों और दार्शनिकों में यह अन्तर है कि नबी भीतर से बाहर को खोजते हैं और दार्शनिक बाहर से भीतर को खोजते हैं। किसी सीमा तक दार्शनिकों की पद्धति गलत नहीं है, लेकिन उसमें एक कमी है कि जिन चिन्हों को वे बाहर नहीं देखते, उन्हें उपेक्षा कर देते हैं। इस प्रवृत्ति से ब्रह्मांड की रचना में जितने सत्य छिपे हैं वे अधिकतर अज्ञात रह जाते हैं। नबियों की प्रवृत्ति में यह कमी नहीं। वे स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताके माध्यम से अमर-मुतलक़ की खोज करते हैं। इस प्रकार उनकी चिन्तन-धारा उन तत्वों तक पहुँचती है जो केवल प्रपंच (मज़ाहिर) के बन्धन में नहीं हैं। नबी प्रपंच को नज़रअंदाज़ नहीं करते, किन्तु वे प्रपंच को मूल मान कर केवल उसी की रोशनी में गुम नहीं हो जाते। वे प्रपंच को उतनी ही महत्ता देते हैं जितनी उसकी मूलों (असलों) को। नबियों की भाषा में प्रपंच की मूलों का नाम गुणधर्म-ए-इलाही ए इलाहीया) है। वे इन्हीं गुणों के माध्यम से स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्तातक पहुँचते हैं। उन पर स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताकी मसलहतें (गूढ़ रहस्य और हित) उद्घाटित हो जाती हैं। तब उनके लिए यह असम्भव हो जाता है कि उन मस्लहतों को उपेक्षा कर दें या उन्हें जीवन का उद्देश्य न बनाएं। नबियों के चिन्तन में स्वरूप-ए-निरपेक्ष सत्ताही जीवन है। इसलिए वे जीवन को अनन्त (अब्दी) मानने पर विवश हैं। इसी प्रकार उनके दृष्टिकोण में यहाँ से ब्रह्मांड द्वितीयक स्तर में प्रवेश करता है। इसके विपरीत प्रपंच को प्राथमिक मानने वाले जीवन की सम्पूर्ण गहराइयों और विस्तारों तक नहीं पहुँच सकते।

www.ksars.org

नबियों ने यह बात अनुसंधान की है कि मानव-विचार में ऐसी प्रकाश-रेखा मौजूद है जो किसी प्रकट के आंतरिक का, किसी उपस्थित के गुप्त का अवलोकन कर सकती है। और गुप्त का अवलोकन उपस्थित के अवयवों की विश्लेषण-प्रक्रिया में सफल हो जाता है। अन्य शब्दों में यदि हम किसी वस्तु के आंतरिक को देख सकें तो फिर उसके प्रकट का छिपा रहना सम्भव नहीं है। इस प्रकार प्रकट की व्यापकताएँ मानव-मन पर उद्घाटित हो जाती हैं और यह जानने की सम्भावनाएँ उत्पन्न हो जाती हैं कि जीवन की आदि कहाँ से होती है और अन्त कहाँ तक है। नबी मृत्यु के बाद की जीवन पर इसी लिए बल देते हैं।

www.ksars.org

भूत और भविष्य

पिछले पृष्ठों में हमने विभक्त इन्द्रियाँ और अविभक्त इन्द्रियाँ का उल्लेख किया है। अतः ये विभक्त इन्द्रियाँ (अमर्-'मुतलक़') ही हैं जो स्वयं को अनादि से अनन्त तक का रूप देकर ब्रह्माण्ड की आकृति और स्वरूप में प्रस्तुत करती हैं। आकृति और स्वरूप से आत्मा को पा जाना सम्भव नहीं, किन्तु आत्मा से आकृति और स्वरूप की गहनता तक पहुँचना निश्चित है। इस स्थान से उन लोगों की भूल स्पष्ट हो जाती है जो प्रकट को ही "जीवन-व्यापकता" मानते हैं। प्रकट को जीवन-व्यापकता समझने वालों का तात्पर्य इसके अतिरिक्त क्या हो सकता है कि वे भूत और भविष्य दोनों का इन्कार कर रहे हैं। अर्थात् उन्होंने काल की आपेक्षिकता को पूर्णतः नज़रअंदाज़ कर दिया, जबकि काल की आपेक्षिकता ही अमर्-'मुतलक़' और ब्रह्माण्ड है। वास्तव में भूत ही ब्रह्माण्ड है। जहाँ तक वर्तमान और भविष्य का प्रश्न है–ये दोनों स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं रखते, अपितु भूत ही के अवयव हैं। प्रत्येक क्षण भविष्य से भूत की ओर यात्रा कर रहा है।

हज़रत मुहम्मद 'अलैहि-स्सलातु वस्सलाम' का यह कथन جَفَّ الْقَلَمُ بِمَا هُوَ كَائِنٌ (जो कुछ होने वाला है उसे लिखकर कलम सूख गया) इसी तात्पर्य की व्याख्या करता है। इस हदीस से भूत के अतिरिक्त काल का कोई अन्य ढाँचा ज्ञात नहीं होता। वर्तमान और भविष्य दोनों भूत ही के अवयव हैं।

यहाँ से ब्रह्माण्ड की संरचना का प्रत्यक्ष संकेत मिलता है। क़ुरआन पाक में ईश्वर का यह इरशाद है:

اِنَّمَا اَمْرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيْئًا اَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ

अनुवाद: ख़ुदा का अमर यह है कि जब वह किसी वस्तु को उत्पन्न करने का इरादा करता है तो कहता है 'हो जा' और वह हो जाती है।

इस आयत में इरादा की महत्ता और अवयवों का वर्णन है। ज्ञात नहीं प्राचीन लोगों ने 'माहियत' को किस अर्थ में प्रयुक्त किया, किन्तु हम इस शब्द में 'नूर' का अवलोकन करते हैं। अर्थात् ईश्वर का इरादा अनन्त नूर है। इस आयत में ईश्वर ने अपने अमर की व्याख्या की है। यह कथन कि मैं जिस वस्तु को होने का आदेश देता हूँ, वह हो जाती है–इस बात की व्याख्या है कि अम्र-ए-इलाही के तीन अंग हैं:

१. इरादा
२. जो कुछ इरादा में है अर्थात् वस्तु
३. फिर उसका प्राकट्य

www.ksars.org

ईश्वर के शब्दों से यह वस्तु प्रमाण तक पहुँच जाती है कि वह जो कुछ करना चाहते हैं, पहले से उनके *ज्ञान* में विद्यमान है। अतः जो कुछ विद्यमान है, वह *भूत* है। जब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि भूत की मात्रा क्या है? हमारे पास भूत की मात्रा को समझने के बहुत से ढंग हैं। उदाहरणतः वर्तमान काल के *वैज्ञानिक* रोशनी की गति एक लाख छियासी हज़ार दो सौ बयासी मील प्रति सेकण्ड बताते हैं। इस प्रकार रोशनी की दुनिया में एक सेकण्ड का विस्तार एक लाख छियासी हज़ार दो सौ बयासी मील हुआ।

ब्रह्माण्ड के एक लाख छियासी हज़ार मील जिस *कालिकता* पर आधारित हैं, उसी में एक साथ कितने *कर्म* और *क्रियाएँ* अर्थात् *घटनाएँ* प्रकट हुई–इसका अनुमान असम्भव है। इसको इस प्रकार समझना चाहिए कि एक सेकण्ड के भीतर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जितनी भी क्रियाएँ घट सकती हैं, वे सब केवल एक ही सेकण्ड में घटित होने वाली घटनाएँ हैं। यदि किसी प्रकार इन क्रियाओं का गणना सम्भव हो तो ज्ञात हो सकता है कि एक सेकण्ड का विस्तार कितना है। यह विचारणीय है कि एक सेकण्ड की ब्रह्माण्डीय घटनाओं को लेखनी में लाने के लिये निश्चय ही मानव जाति को *अनादि* से *अनन्त* तक का काल चाहिए। यदि यह दावा किया जाये कि एक सेकण्ड अनादि से अनन्त तक की अवधि के समान है तो इस दावे में शंका की कोई गुंजाइश नहीं। जब अनादि से अनन्त तक एक ही सेकण्ड (क्षण) कार्यशील है तो *क्रमबद्ध काल* का कोई अर्थ नहीं रह जाता। वास्तव में ईश्वर के शेऊन ही *काल* की वास्तविकता हैं।

ब्रह्माण्ड में तीन काल परिचित हैं: *सत्य काल* *क्रमबद्ध काल* *अक्रमबद्ध काल*

क्रमबद्ध काल वह है जिसका अनुभव हमें *विभक्त इन्द्रियों* में होता है। ब्रह्माण्ड की बाहरी समतल पर सभी क्रियाओं और घटनाओं को क्रमबद्ध काल ही के पैमाने से मापा जाता है। ब्रह्माण्ड जो भी कदम उठाता है वह एक क्षण का बन्धन है। इसी प्रकार दूसरा कदम दूसरे क्षण का बन्धन है। अतः ब्रह्माण्ड की यात्रा जब एक बिन्दु के बाद दूसरे बिन्दु और तीसरे बिन्दु में घटित होती है तो बिना परिवर्तन के नहीं होती। अर्थात् एक क्षण एक परिवर्तन है और दूसरा क्षण दूसरा परिवर्तन। दूसरे शब्दों में क्षण ब्रह्माण्डीय परिवर्तन का नाम है। इस प्रकार क्षणों का अलग-अलग होना इस बात की दलील है कि प्रत्येक क्षण की घटनाएँ अलग-अलग हैं। साथ ही काल की पृथक इकाइयाँ इस तथ्य पर संकेत करती हैं कि उनके बीच *विभाजन* है और यह विभाजन *विरोधी इकाइयाँ* हैं। और ये विरोधी इकाइयाँ अपनी सत्ता में अलग-अलग *गुणधर्म* रखती हैं। शब्दावली में इन्हीं को *अक्रमबद्ध काल* कहा जाता है। यदि क्रमबद्ध काल *ज्ञात घटनाएँ* हैं तो अक्रमबद्ध काल *अज्ञात घटनाएँ* हैं। यदि क्रमबद्ध काल की इकाइयाँ ऐसी घटनाओं का संग्रह हैं जिनसे *चेतना* परिचित है तो अक्रमबद्ध काल की इकाइयाँ ऐसी घटनाओं का संग्रह हैं जिनसे चेतना अपरिचित है।

ईश्वर ने *क़ुरआन पाक* के भीतर दोनों कालों का उल्लेख इस प्रकार किया है। इरशाद है:

www.ksars.org

“मैंने आदम की मूर्ति में अपनी आत्मा फूँकी और उसे वस्तुओं का ज्ञान दिया।”

ये दो *एजेंसियाँ* हुईं: *आत्मा-ए-इलाही वस्तुओं का ज्ञान*

वस्तुओं का ज्ञान के मुकाबिल *प्राकृतिक जगत* (क्रमबद्ध काल) है जिसे *क़ुरआन पाक* में *आलम-ए-शहादत* कहा गया है। और *आत्मा-ए-इलाही* के मुकाबिल *आध्यात्मिक जगत* (अक्रमबद्ध काल) है जिसे *क़ुरआन पाक* में *आलम-ए-ग़ैब* का नाम दिया गया है।

दो एजेंसियों का विवरण जानने के लिए किसी सीमा तक नूर और नसम को समझना आवश्यक है। मानव सत्ता इन्हीं दोनों से संयोजित है। यही दोनों मानव ज़ेहन के अचेतन और चेतन मापदण्ड हैं।

मानव ज़ेहन की तीन पृष्ठभाग हैं। पहली पृष्ठभाग के दो पक्ष हैं वराए वहम और वहम इसी प्रकार दूसरी पृष्ठभाग के भी दो पक्ष हैं—अनुभूति और निरीक्षण। ज़ेहन की एक पृष्ठभाग अर्थात् भ्रांति-पार (आत्मा) के सम्मुख आलम-ग़ैब अवस्थित है। इस आलम का विस्तार आत्मा में होता है। चेतन इस आलम से अनभिज्ञ रहता है। यह आलम ब्रह्मांड के पार और ब्रह्मांड के भीतर के तत्त्वों पर आधारित है। यह आलम काल-हक़ीक़ी (Timeless-ness) और काल-अग़ैर-मुतवातिर (Non-serial Time) का सम्मिलन है। काल-हक़ीक़ी ईश्वर का ज्ञान है, जिसे शब्दावली में ग़ैबुल-ग़ैब कहा जाता है। काल-अग़ैर-मुतवातिर देवदूतों की सत्ता है, जिसे शब्दावली में ग़ैब कहते हैं। इस प्रकार आलम-ग़ैब की ये दोनों एजेंसियाँ—ग़ैबुल-ग़ैब और ग़ैब—आत्मा के सम्मुख अवस्थित हैं। ग़ैबुल-ग़ैब नूर-मुफ़रद में और ग़ैब नूर-मुर्क़ब में। बाक़ी मानव ज़ेहन के पाँच पक्ष—वाहमा, विचार, छवि, अनुभूति और निरीक्षण—इन्हीं का समुच्चय हैं और इन्हीं के सम्मुख आलम-फितरत अवस्थित है। अब ब्रह्मांडीय जीवन का विवेचन यह हुआ कि पहले आलम-ग़ैब का क्षण आता है और फिर आलम-फितरत का। आलम-ग़ैब के क्षण से हमारा चेतन अनभिज्ञ रहता है किन्तु आत्मा जागरूक रहती है।

ग़ैबुल-ग़ैब अनन्तता है, अर्थात् काल-हक़ीक़ी। इस अनन्तता के सम्मुख प्रत्येक सीमितता का स्वरूप है, जिसका दूसरा नाम ज्ञान है। अन्य शब्दों में ज्ञान वह सत्ता है जो अनन्तता के भीतर अन्वेषण करती है और अनन्तता की व्याख्या में संलग्न रहती है। ज्ञान की सत्ता अनन्तता की उन रोशनियों को ज्ञात करना चाहती है जो अब तक उसके सम्मुख नहीं आईं। ज्ञान की सत्ता अनन्तता की रोशनि की खोज करती रहती है और जिन्हें पा लेती है उन्हें अपने भीतर समाहित कर लेती है। वह जिस रोशनियों को ग्रहण करती है, उस रोशनि की सत्ता ज्ञान की सत्ता में स्थायी छाप बन जाती है। इस छाप का नाम जाति है। यही काल-अग़ैर-मुतवातिर है। ज्ञान की सत्ता में जाति की छाप का यह अर्थ है कि जाति को अपनी सत्ता का बोध है। इसीलिए जाति अपनी सत्ता के बोध को सुरक्षित रखने के लिए स्वयं को पुनरावृत्त करती है, जिससे जाति के व्यक्तियों की

www.ksars.org

सृष्टि होती रहती है। यही कालानुक्रमिक समय है। स्पष्ट रहे कि जाति का स्वयं को दोहराना अनन्तता के स्तर के सम्मुख सीमितता के स्तर में प्रकट होता है। अनन्तता का स्तर "ग़ैबुलग़ैब" है और सीमितता का स्तर "ग़ैब" है। ज्ञान का स्तर-सीमितता जाति है किन्तु जाति का स्तर-सीमितता व्यक्ति है। व्यक्ति का प्राकट्य "आलम-ए-शहादत" है। पारिभाषिक रूप में व्यक्ति के प्राकट्य को कालानुक्रमिक समय कहा जाता है।

हमने प्रतिपादित किया है कि *ज्ञान-ए-ग़ैब* के दो स्तर हैं–"ग़ैबुलग़ैब" और "ग़ैब"। "ग़ैबुलग़ैब" का मरतबा नूर (नूर-ए-मुफ़रद) का क्षण है। इसी क्षण को हमने "सत्य समय" (ज़मान-ए-हक़ीक़ी) कहा है। यह क्षण अपरिवर्तनीय है, जिसकी व्यापकता अनादि से अनन्त तक व्याप्त है। ज्ञान की सत्ता इसी क्षण के गुणों को ग्रहण करने में संलग्न रहती है–अर्थात् ज्ञान इस क्षण की अनन्तता से सीमितता की दिशा में प्रवासरत रहता है। ज्ञान का यह संक्रमणकालीन क्षण, जो अनन्तता से सीमितता की ओर यात्रा करता है, नूर-ए-मुरक्कब का क्षण है। इस क्षण की अवधि मानव-चेतना की सीमाओं से परे है, क्योंकि मानव-चेतना का उद्‌भव स्वयं सीमितता (तनाहियत) में होता है। सीमितता का क्षण हमारी भौतिक दुनिया का समय है, जिसका उल्लेख "क्रमानुगत समय" (ज़मान-ए-मुतवात्तर) के नाम से किया गया है। यह क्षण नस्मा-ए-मुफ़रद से आरम्भ होकर नस्मा-ए-मुरक्कब पर समाप्त हो जाता है। मानव-चेतना, बोधगम्य वस्तुएँ (वहम, ख़याल, तसव्वुर) की सीमाओं में नस्मा-ए-मुफ़रद से अवगत होती है और महसूसात व मशाहिदात की सीमाओं में नस्मा-ए-मुरक्कब से परिचित होती है। चेतना में घटित रूपान्तरों को समझने की प्रक्रिया ही चेतना की सत्ता है। इस प्रकार चेतना की सत्ता उसी क्षण के भीतर निर्मित होती है। *क़ुरआन* की भाषा में नस्मा के क्षण का नाम "आफ़ाक़" और नूर के क्षण का नाम "अनफ़ुस" है। नूर का क्षण मानव-आत्मा के सम्मुख और नस्मा का क्षण मानव-ज़ेहन के सम्मुख स्थित है।

उदाहरण: ज़ैद एक व्यक्ति है। यदि प्रश्न किया जाए कि ज़ैद कौन है, तो उत्तर होगा–ज़ैद अमुक का पुत्र है, अमुक का भ्राता है, ज़ैद विद्‌वान है, उसकी आयु पच्चीस वर्ष है, वह सदाचारी है, विवेकी है, युवा है, रूपवान है, धैर्यशील है। इसका तात्पर्य यह है कि ज़ैद इन समस्त गुणों का संग्रह है और उसकी सत्ता इन्हीं विशेषताओं से निर्मित है। अतः ज़ैद की वास्तविक सत्ता केवल रगों, स्नायु-पेशियों, अस्थियों और मांस से नहीं, वरन् उसके समस्त आचरण और क्रियाओं के समष्टि से है। यदि ज़ैद के जीवन को एक चलचित्र की भाँति व्यवस्थित किया जाए तो उस चलचित्र का नाम "वराय-ए-चेतन" अर्थात् "अवचेतन" होगा–या वह नूर-ए-मुरक्कब की ऐसी सत्ता होगी जो *अक्रमानुगत समय* (ज़मान-ए-ग़ैर-मुतवात्तर) पर आधारित है। यहाँ ज़ैद की सत्ता को समझने के लिए अक्रमानुगत समय की अवधारणा को ग्रहण करना आवश्यक है।

उदाहरण: यदि ज़ैद को सूर्य का ख़याल आया, तो इसका अर्थ यह हुआ कि ज़ैद के ज़ेहन ने अवचेतन रूप से सूर्य के सम्पूर्ण तंत्र को अपने घेरे में ले लिया। परिणामस्वरूप ज़ैद की आंतरिक

www.ksars.org

सत्ता (आत्मा) के सम्मुख सूर्य का पूर्ण तंत्र एक चलचित्र की भाँति उपस्थित हो गया। इस चलचित्र में सूर्य-तंत्र की समस्त विवरणियाँ *अक्रमानुगत समय* का एक क्षण हैं।

क्षण का विवरण अर्थात् आसार व अवस्थाएँ, स्थितियाँ और घटनाएँ यदि समेट दी जाएँ तो यह ज़ैद के जीवन का एक क्षण बनता है। यह क्षण *क्रमानुगत समय* (ज़मान मुतवात्तर) का क्षण है। इस क्षण की भी दो *पृष्ठभाग* हैं–एक पृष्ठभाग इन्द्रियों के सम्मुख स्थित है जिसे *प्रकृति-लोक* (आलम-ए-फ़ित्रत) कहा जाता है। ऐसे असंख्य क्षणों का समष्टिगत नाम *ज़ैद* है। वही ज़ैद जिसे इन्द्रियाँ देखतीं, छूतीं और जानती हैं। अर्थात् ज़ैद असंख्य क्षणों, यानी *प्रकृति-लोक* की समेटी हुई एक बंद चलचित्र-पट्टी है। उसी बंद चलचित्र-पट्टी का नाम ठोस और प्रत्यक्ष ज़ैद है। अन्य शब्दों में, ज़ैद *क्रमानुगत समय* की इकाई (Unit) का एक शीर्षक है। इस शीर्षक का विस्तार *अक्रमानुगत समय* (ज़मान ग़ैर मुतवात्तर) की वह इकाई(Unit) है जिसे ज़ैद का *स्वरूप* (माहियत) कहा जाना चाहिए। हम यह भी कह सकते हैं कि अक्रमानुगत समय की इकाई(Unit) ज़ैद का स्वरूप है। हम स्पष्ट कर चुके हैं कि स्वरूप (माहियत) का अर्थ है *नूर* का विस्तार–या ऐसा विस्तृत नूर जो किसी इकाई के अंगों की चलचित्र छवि है। इस चलचित्र-छवि में किसी इकाई का प्रत्येक *वहम*, प्रत्येक *ख़याल*, प्रत्येक *तसव्वुर* और प्रत्येक *अनुभूति* लिपिबद्ध है।

हम उपर्युक्त कथन को इस प्रकार भी रख सकते हैं कि *क्रमानुगत समय* का क्षण शीर्षक या शरीर है और *अक्रमानुगत समय* का क्षण उसकी विस्तृत चलचित्र है। यह जानना आवश्यक है कि *अक्रमानुगत समय* का क्षण निरन्तर हमारे सम्मुख रहता है किन्तु हमारा ज़ेहन उसकी ओर नहीं जाता। इसी कारण वह *ग़ैब* है।

उदाहरण: जब हम किसी वस्तु को देखते हैं तो *अक्रमानुगत समय* का क्षण, मध्यवर्ती दूरी को हमारी अज्ञानता में इस प्रकार माप लेता है कि न तो वस्तु का रोशनी हमारे ज़ेहन से रत्तीभर बाहर रहता है और न रत्तीभर हमारे ज़ेहन की पृष्ठभाग में प्रवेश करता है। यही कारण है कि हम वस्तु को देख सकते हैं। यदि हमारा ज़ेहन वस्तु से रत्तीभर दूर हो जाए या रत्तीभर वस्तु में प्रवेश कर जाए तो वस्तु अदृश्य हो जाएगी और हम उसे किसी प्रकार नहीं देख पाएँगे।

क्रमानुगत चेतना (मतवात्तर शऊर) में निरन्तरता होती है। जैसे:

आज के बाद परसों का दिन तब तक नहीं आता जब तक कल का दिन न बीत जाए। इसी प्रकार रबीउल-अव्वल के बाद ज़ीक़अद का महीना तब तक नहीं आ सकता जब तक मध्यवर्ती महीने न बीत जाएँ। इसके विपरीत *अक्रमानुगत समय* क्रम का बन्धन स्वीकार नहीं करता। इसका एक उदाहरण स्वप्न है। स्वप्न देखने वाला मनुष्य दस वर्ष पश्चात् की घटनाएँ अचानक देख लेता है, यद्यपि अभी मध्यवर्ती अवधि नहीं बीती होती। अर्थात् अक्रमानुगत समय में भूत, वर्तमान, भविष्य की कोई शर्त नहीं है। *अक्रमानुगत समय* में ब्रह्मांडीय घटनाओं को मापने के ऐसे समस्त

www.ksars.org

मानक उपस्थित हैं जिनसे भूत, वर्तमान और भविष्य बिना किसी क्रम के मापे जा सकते हैं। स्वप्न अथवा कल्पना में हम ऐसे काल को लौटा सकते हैं जो सहस्त्रों वर्ष पूर्व बीत चुका है। कल्पना या स्वप्न में उसे वापस लाने में मध्यवर्ती अंतराल उपेक्षित हो जाता है। अक्रमानुगत समय की एक पृष्ठभाग वह है जिसका हमने उपर्युक्त पंक्तियों में उल्लेख किया है। और अक्रमानुगत समय की दूसरी पृष्ठभाग निरन्तर हमारे ज़ेहन के साथ जुड़ी रहती और क्रियाशील रहती है–जिसका एक उदाहरण ऊपर गुज़र चुका है और असंख्य उदाहरण निरन्तर हमारे अनुभव में आते रहते हैं। उदाहरण: जब हम किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जिसे हमने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व देखा था, तो हमें पिछले पच्चीस वर्षों की सम्पूर्ण घटनाएँ स्मरण करने की आवश्यकता नहीं होती, वरन् हम तत्काल उस व्यक्ति का चेहरा अपने ज़ेहन में ले आते हैं। वस्तुतः वह *अक्रमानुगत समय* के घेरे में सुरक्षित रहता है। हमारा ज़ेहन उसकी व्यक्तित्व को वापस लाने के लिए सभी मध्यवर्ती अंतरालों को हटा देता है। अन्य शब्दों में, या तो हमारा ज़ेहन *अक्रमानुगत समय* के उस घेरे में प्रवेश कर जाता है जिसमें वह व्यक्तित्व सुरक्षित है, या फिर *अक्रमानुगत समय* का घेरा हमारे ज़ेहन में प्रवेश कर जाता है।

इस दूसरी पृष्ठभाग की और भी अनेक मिसालें दी जा सकती हैं। जब हम सीढ़ी से उतरते हैं तो सीढ़ियों का माप जो पहले से *अक्रमानुगत समय* में अंकित है, हमारे पैरों का सही मार्गदर्शन करता है। इसीलिए हमें सीढ़ी उतरते समय सचेतन विचार नहीं करना पड़ता। किन्तु कभी-कभी पाँव डगमगा जाता है और हम गिर पड़ते हैं। उस क्षण किसी कारणवश हमारा ज़ेहन *अक्रमानुगत समय* के घेरे से हट जाता है और मार्गदर्शन *क्रमानुगत समय* के हाथों में आ जाता है। फलस्वरूप पाँव भूल कर बैठते हैं क्योंकि सीढ़ियों का माप *क्रमानुगत समय* में अंकित नहीं होता। क़ुरआन में *अक्रमानुगत समय* को *इल्म-उल-अस्मा* से अभिहित किया गया है। *इल्म-उल-अस्मा* वह चेतना है जिसका नाम हमने अपनी पारिभाषिक भाषा में *अक्रमानुगत समय* रखा है–अर्थात् यह चेतना अक्रमानुगत समय की अतिरिक्त विशेषता है।

आत्मा की स्वाभाविक विशेषता कालातीत समय है। इसमें अनादि से अनन्त तक की सभी चित्रमय फिल्में सुरक्षित हैं। क़ुरआन की भाषा में इसे सुरक्षित पट्टिका कहा गया है। यह समय स्वरूप-तजल्लि में अंकित है। इसकी अपनी स्थिति गुण-तजल्लि की है। ईश्वर का वचन है कि मैंने आदम की प्रतिमा में अपनी आत्मा फूँकी। यही आत्मा कालातीत समय का चेतन है। इसी चेतन के सम्मुख स्वरूप-तजल्लि (ज्ञान-कलम) और गुण-तजल्लि (सुरक्षित पट्टिका) स्थित हैं। ये दोनों लोक नूर के पदक्रम हैं। गुण-तजल्लि के पदक्रम में असंवहित समय और संवहित समय दोनों के लेख सुरक्षित हैं। गुण-तजल्लि वही चेतन है जिससे असंवहित चेतन और संवहित चेतन दोनों को जीवन प्राप्त होता है। क़ुरआन की भाषा में गुण-तजल्लि को आदेश का लोक और बाक़ी दो समयों को सृष्टि का लोक कहा गया है।

www.ksars.org

सृष्टि के लोक के दो पदक्रम हैं। एक लोक प्रतिरूप का है जो असंवहित समय है, दूसरा लोक प्रकृति का है। यह संवहित समय है। इसी को स्थूल लोक या इतिहास का लोक और प्रकट जगत कहा जाता है।

ईश्वर का वचन है:

“نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْہِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْد

हम तुम्हारी प्राण-नाड़ी से भी अधिक निकट हैं।”

इस आयत में तीन पदक्रम बताए गए हैं। पहला पदक्रम ईश्वर की स्वरूप और गुण का है। यह कालातीत समय अर्थात् ईश्वर के प्रत्यक्ष ज्ञान का चेतन है। दूसरा पदक्रम प्राण-नाड़ी का है जो मानवीय “अना” अर्थात् नामों का ज्ञान का चेतन है। तीसरा पदक्रम उसका है जो प्राण-नाड़ी की ओर संकेत किया गया है। यह मनुष्य वस्तु के रूप में है जिसका दूसरा नाम संवहित समय है। संवहित समय व्यक्तियों का चेतन है। इस चेतन में ब्रह्मांड का प्रत्येक कण अपनी विशिष्टता की सीमा में स्वयं को जानता है। असंवहित समय ब्रह्मांडीय चेतन है। यह व्यक्तियों में अचेतन रूप से काम करता है।

कालातीत समय ईश्वर का ज्ञान (प्रत्यक्ष ज्ञान) है। यह वही चेतन है जो ब्रह्मांड के प्रत्येक कण में क्रियाशील है। जब यह चेतन ब्रह्मांड में काम करता है तो ब्रह्मांड इसे अपना स्वाभाविक चेतन मानता है और जब यह चेतन कण में काम करता है तो कण इसे अपना व्यक्तिगत चेतन समझता है। जब तक यह चेतन ब्रह्मांड से परे है तब तक यह कालातीत समय है। जब ब्रह्मांड में समा जाता है तो असंवहित समय कहलाता है और जब कण के भीतर गति करता है तो संवहित समय बन जाता है। “ الله نور السموات والارض-अल्लाह आकाशों और पृथ्वी का नूर है” में इसी चेतन को नूर कहा गया है।

मनुष्य की स्वरूप में इन्हीं तीन चेतनों के चरण काम करते हैं। وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْ افِيْنَالَنَهْدِ يَنَّهُمْ سُبُلَنَاوَاِنَّ اللہ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ(सूरा 29, आयत 69)

अनुवाद: और जिन्होंने परिश्रम किया हमारी राह में, तो निश्चय हम दिखाएँगे उनको अपनी राह और निस्संदेह अल्लाह उनके साथ है जो उपकार करने वाले हैं।

ईश्वर ने इस आयत में कालातीत समय और असंवहित समय दोनों की ओर संकेत किया है। जो लोग ईश्वर की खोज करते हैं उन पर ये दोनों समय अनावृत हो जाते हैं। उनकी स्वरूप में वह जागरूकता उत्पन्न हो जाती है जो संवहित समय में इन दोनों समयों को समझती और अनुभव करती है। अनेक अवसरों पर उन पर वे वस्तुएँ अनावृत हो जाती हैं जो कालातीत समय से

www.ksars.org

असंवहित और असंवहित से संवहित में कभी स्थानांतरित हुई थीं या आगे कभी स्थानांतरित होंगी। उनकी दृष्टि, उनकी समझ और उनके अनुभव कभी-कभी अतीत, वर्तमान और भविष्य के आकृतियाँ एक साथ देख लेते हैं। फिर उनकी समझ अतीत, वर्तमान और भविष्य की गतिविधियों को एक-दूसरे से अलग जान लेती है। संवहित समय का संबंध अपने हर छोर पर असंवहित समय से जुड़ा हुआ है और असंवहित समय का संबंध अपने हर छोर पर कालातीत समय से सम्बद्ध है।

कोई भी वस्तु जो इस समय विद्यमान है, संवहित समय की एक इकाई (Unit) है। यह अस्तित्व में आने से पहले जीवन के मंडल से बाहर नहीं हो सकती, क्योंकि जो वस्तु जीवन के मंडल से बाहर है वह जीवन के मंडल में प्रवेश करने की क्षमता नहीं रखती। एक वृक्ष जो पूर्ण रूप से विकसित होकर हमारे सामने आ चुका है, अपने पूर्वजों के भीतरी रूप में विद्यमान था। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि वृक्ष के पूर्वजों का भीतरी रूप ही प्रकट की आकृति ग्रहण कर वृक्ष बना है। वृक्ष के पूर्वजों का भीतरी रूप असंवहित समय है। क़ुरआन में ईश्वर ने ब्रह्मांड की संरचना का उल्लेख निम्नलिखित शब्दों में किया है:

اَلَّذِیْ خَلَقَ فَسَوّٰی وَالَّذِیْ قَدَّرَ فَهَدٰی

वह जिसने उत्पन्न किया, फिर सम्यक् अनुपात दिया, और जिसने नियति बनाई, फिर मार्गदर्शन किया।

व्याख्या: किसी वस्तु का अस्तित्व वस्तुतः उन निहित तत्त्व-आवश्यकताओं का समष्टि है जो उसकी प्रकृति-संरचना में अंतःस्थापित हैं। अर्थात् वस्तु केवल एक आवरण (खोल) है जिसके भीतर वे तत्त्व-आवश्यकताएँ संचित रहती हैं। इसे हम मानक-पात्र (पैमाना) से उपमेय कर सकते हैं। यही सृष्टि-विधान का प्रथम चरण है।

द्वितीय चरण है संवेदी-संयोजन (हस्से मुश्तरक)। यह उस मानक-पात्र के प्रयोजन-नियम का विवेचन है–अर्थात् उन आवश्यकताओं का किस प्रकार उपयोग-नियज़ेहन किया जाए।

तृतीय चरण है प्रयोग-फलन का नियम । उदाहरणतः अग्नि का स्वभाव है दग्धन। यदि कोई द्रव्य अग्नि में समर्पित किया जाए तो उसका दहन होगा। जल का स्वभाव है शोषण। यदि कोई पदार्थ जल में निमज्जित हो तो वह आर्द्र हो जाएगा। यह सब प्रयोग-फलन-नियम के अंतर्गत है।

चतुर्थ चरण है प्राप्ति अथवा उपलम्भ । यदि कोई द्रव्य किसी कल्याणकारी प्रयोजन से दग्ध किया जाए तो वह कर्म शुभ कहलाएगा, और यदि व्यर्थ अथवा विध्वंसकारी प्रयोजन से हो तो वह कर्म अशुभ अथवा अप्रयोज्य माना जाएगा। दोनों ही कर्मों के फल-परिणाम होते हैं। यही फल हितकारी अथवा अनिष्टकारी कहलाते हैं। इस ही चरण का नाम है अनुग्रह अथवा मार्गदर्शन ।

www.ksars.org

जब मनुष्य अपनी अंतःस्थित आवश्यकताओं का युक्तिपूर्ण और सुसंयमित प्रयोग करता है और उससे संपूर्ण मानव-जाति के लिए कल्याण-फलन उत्पन्न होते हैं तो उसकी प्रकृति से निष्कलुष भाव-स्रोत फूट पड़ता है। यही स्रोत उसकी चिन्तन-शक्ति को पोषण देकर ऐसे स्तर तक ले जाता है जहाँ उसकी चिन्ता संपूर्ण मानवता के सामूहिक आवश्यकताओं का अवलोकन एवं संवेदन करने लगती है। इसके आगे यह चिन्ता ऐसे विशाल आयामों में प्रवेश करती है जहाँ उस पर समस्त ब्रह्माण्डीय तत्त्व-आवश्यकताएँ उद्घाटित हो जाती हैं। इसके पश्चात भी एक और चरण है–उस पर मनुष्य की चिन्ता अतीन्द्रिय-ब्रह्माण्ड (मावराये कायनात) से प्रत्यक्षानुभूत हो जाती है। यही साक्षात्कार सत्य-जागरूकता (हकीकत-आगही) और दैवीय-अनुभूति (इलाही-मारिफ़त) है। यहाँ पहुँचकर मनुष्य असतत्-काल (ज़मान ग़ैर मुतवातर) और नित्य-काल (ज़मान हक़ीक़ी) दोनों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

समष्टि-आवश्यकताओं का यह उद्घाटन मनुष्य में असतत्-कालिक चेतना को उद्बुद्ध करता है। इस दशा को सूफ़ी परिभाषा में जम' (संग्रह-स्थिति) कहा जाता है, और जब मानव-चिन्ता का केन्द्रीयकरण अतीन्द्रिय-ब्रह्माण्ड में होता है तो इसे जम'-अल-जम' (संग्रह का संग्रह) कहा जाता है। यह केन्द्रिता नित्य-कालिक चेतना को जागृत करती है।

संदिग्ध: इस विमर्श पर विचार करने वाले को यह भ्रम (वहम) हो सकता है कि ब्रह्माण्ड और व्यक्ति-ब्रह्माण्ड परस्पर पृथक हैं। परन्तु यह केवल आभासी-संदेह है। वास्तव में ब्रह्माण्ड अपने प्रत्येक व्यक्ति-अस्तित्व के सिद्ध (इस्बात्) और निषेध (नफ़ी) का योग है।

जब हमारे समक्ष केवल गुलाब है, तो उस क्षण–क्षण से अभिप्राय है क्षण का अत्यन्त सूक्ष्मांश (जैसे क्षण का करोड़वाँ अंश)–उस क्षण में गुलाब के अतिरिक्त और कोई सत्ता नहीं है। हमारे अन्तःचेतन में केवल गुलाब का होना और गुलाब का न होना विद्यमान है। इस स्थिति में हमारी चिन्ता का सम्पूर्ण केन्द्र केवल गुलाब पर ही अवस्थित है। हम उस विशेष क्षण में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक ही एकक (Unit) मानते हैं–जिसका नाम है गुलाब। जब तक हम उस एकक को त्याग न दें और अपने चिन्तन-केन्द्र को उससे न हटाएँ, तब तक दूसरे एकक-अस्तित्व से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकते। सतत्-काल (ज़मान मुतवातर) में जब हम अपनी चिन्ता का विश्लेषण करते हैं तो हम एक समय में केवल एक ही व्यक्ति-ब्रह्माण्ड से परिचित हो सकते हैं। इस प्रकार हम उसी एकक को संपूर्ण ब्रह्माण्ड का नाम देते हैं। जब तक अन्य सभी व्यक्तियों का निषेध न हो जाए, तब तक हम उस विशेष व्यक्ति का अनुभव या प्रत्यक्षीकरण नहीं कर सकते। यहीं से इन्द्रिय-अवगाहन (इद्राक बि-ल-हवास) का नियम स्पष्ट हो जाता है कि हम एक ही क्षण में केवल एक सत्ता का अनुभव कर सकते हैं और इसके लिए अन्य सभी सत्ताओं का निषेध अनिवार्य है।

www.ksars.org

यदि इस सिद्धान्त को और विस्तृत रूप में कहें तो यह प्रत्यक्ष होता है कि हमारे ज़ेहन की केवल एक ही दिशा है, और वही दिशा हमारे स्वभावगत तत्त्व-आवश्यकताओं की गति-प्रवाहिनी है। हम न दाएँ, न बाएँ, न आगे, न पीछे, न ऊपर, न नीचे—कहीं भी नहीं देख सकते। ये छ दिशाएँ केवल कल्पित अनुमिति की उपज हैं। वस्तुतः दिशा वही है जिस ओर हमारे मानसिक तत्त्व-आवश्यकताएँ गज़ेहन कर रही हैं। उसी दिशा का नाम है समन्वित काल (Serial Time)। हम अपने दैनिक अनुभवों में इसी काल का साक्षात्कार इन्द्रिय-अवगाहन (इद्राक बि-ल-हवास) के नाम से करते हैं। यह समझा जाता है कि काल प्रवाहित होता रहता है, जबकि वास्तविकता यह है कि काल प्रवाहित नहीं होता, वह अभिलेखित (रिकार्ड) होता है। अर्थात् हम काल में उन्हीं घटनाओं (हवादिस/अश्या) को पाते हैं जिनका अर्थ-भार (म‘नवियत) सम्पूर्ण गहनता के साथ हमारे चेतन-मंडल में पहले से विद्यमान है। क़ुरआन मजीद में ईश्वर ने इसी काल को किताब-ए-मरक़ूम (पंजीकृत ग्रंथ) कहा है। यही है ‘इल्म-उल-अस्मा (ज्ञान-नामावलि)। हमें किसी अर्थ-भावना को नाम देने का पूरा अधिकार है। परन्तु नाम देने से पूर्व हम उसका अनुभव या तो दृश्य (मरई) रूप में करते हैं या अदृश्य (ग़ैर मरई) रूप में। चाहे यह रूप ख़याल के रूप में प्रकट हो या प्रत्यक्षानुभूति (शुहूद) की अवस्था में, हर दशा में यह रूप अंकित (नक़्श) होता है और यही अंकन इन्द्रिय-अवगाहन की छवि है। अतः जिन मूल्यों का अधिकारी प्रत्यक्षानुभव (मशाहदा) है, उन्हीं मूल्यों का अधिकारी ख़याल भी है। यही कल्पना अन्तःचेतन-स्तर से यात्रा करके बहिःचेतन-स्तर पर प्रकट होकर प्रपंच (मज़ाहिर) के रूप में दीप्त हो जाती है।

गोलक-गति (हरकत-ए-दौरी):

उपरोक्त विमर्श को समझने के लिए गोलक-गति का विवेचन आवश्यक है। ब्रहमाण्ड एक ऐसा बिन्दु (नुक़्ता) है जिसे हमें अपने ज़ेहन में अनुमित रूप से मानना पड़ता है। यही ब्रहमाण्डीय अस्तित्व का गूढ़ रहस्य है। बिन्दु गणितीय परिभाषा में न लम्बाई रखता है, न चौड़ाई, न गहराई। वह केवल चेतना (शऊर) की रचना है। यही बिन्दु चेतन-बिन्दु से यात्रा कर के इन्द्रिय-अवगाहन बनता है। इसका इन्द्रिय-अवगाहन बन जाने का तरीका अत्यन्त सरल है। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि चेतना अपने आप में क्या है। चेतना स्वयं को स्थिर रखती है और निरन्तर स्वस्मरण (याद-दहानी) में संलग्न रहती है। चेतना निरन्तर यह उद्घोषणा करती रहती है: “मैं हूँ, मैं यह हूँ, मैं वह हूँ, मैं चन्द्रमा को देख रहा हूँ, मैं सूर्य को देख रहा हूँ, मैं तारों का अवलोकन कर रहा हूँ, मेरे हाथ में पुस्तक है, मेरे हाथ में लेखनी है।” ये सभी उद्घोषणाएँ चेतना द्वारा निर्मित चित्र-रूप हैं। चेतना इन चित्रों का जिस ढंग से उपयोग करती है, उस ढंग के अनेक नाम हैं। उनमें से एक नाम है निगाह । निगाह एक साथ दो केन्द्रों में देखती है—एक केन्द्र की समतल ग़ैब (अदृश्य) है, दूसरी समतल शुहूद (दृश्य) है। ग़ैब की समतल निगाह की व्यक्तिगतता (इन्फ़िरादियत) है, और शुहूद की समतल निगाह की सामूहिकता (इज्तिमाइयत)। वास्तव में इन

www.ksars.org

दोनों सतहों में एक ही निगाह सक्रिय है। यदि हमारी नेत्रों के समक्ष बादाम का एक वृक्ष हो, तो हमारा उद्घोष होगा: “यह बादाम का वृक्ष है।” और जब हम किसी अन्य व्यक्ति से पूछें, तो वह भी कहेगा: “यह बादाम का वृक्ष है।” हम लाखों मनुष्यों से पूछेंगे, और उत्तर एक ही होगा। इस अनुभव से यह यथार्थ उद्घाटित होता है कि उन लाखों मनुष्यों में देखने वाली निगाह एक और केवल एक है। यदि दृष्टियाँ वास्तव में अनेक होतीं तो उनके अवलोकन भी भिन्न-भिन्न होते– क्योंकि अनेकरूपता का तात्पर्य है भिन्नता। परन्तु अनुभव यह गवाही देता है कि निगाह अनेक नहीं है। अतः कहना पड़ेगा कि निगाह चेतना की एक प्रकार (तर्ज़) है, या चेतना की एक समतल (पृष्ठभाग) है। यही समतल सामूहिक है, जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड सहभागी है। इस सामूहिक समतल को ही हम इन्द्रिय-अवगाहन (इद्राक बि-ल-हवास) कहते हैं। यही सामूहिक समतल ब्रह्माण्ड है। और स्पष्ट है कि यह सामूहिक समतल भी व्यक्ति ही का अंश है। व्यक्ति से पृथक कोई सत्ता नहीं है।

निगाह की व्यक्तिगत सतह

निगाह की दूसरी समतल व्यक्तिगत है। इस समतल से स्वरूप (नफ़्स) जो कुछ देखता है, वह ब्रह्मांड के अन्य व्यक्तियों से गुप्त रहता है। पहली निगाह एकता है और दूसरी बहुलता (कस्रत)। यह बहुलता वास्तव में उसी एकता की निगाह है, अथवा एकता-निगाह के असंख्य कोण हैं जिन्हें व्यक्तिगत निगाह कहा जाता है। हम इस आशय को इस प्रकार स्पष्ट कर सकते हैं कि एकता-निगाह अपनी प्रत्येक शान को अलग-अलग देखती है। अलग-अलग देखने से ही व्यक्ति अथवा बहुलता की सृष्टि होती है। हदीस कुदसी *"कुन्तु क़न्ज़न मख़्फ़ियन्"*- كُنْتُ كَنْزاًمَخْفِياً-में इसी ओर संकेत है।

रात्रि और दिवस (लैल व नहार)

ऊपर उल्लेख हो चुका है कि चेतना (ज़ात-ए-वाजिब-उल-वुजूद) अपनी पुनरावृत्ति करती रहती है और जैसे ही पुनरावृत्ति घटित होती है, एक बिन्दु के दो हो जाते हैं। फिर प्रत्येक बिन्दु के दो हो जाते हैं। आदि से यही क्रम चल रहा है। यदि हम गणितज्ञों की शैली में समझें तो ये असंख्य बिन्दु मिलकर एक वृत्त का रूप धारण कर लेते हैं। इन बिन्दुओं में प्रत्येक बिन्दु स्वयं अपनी जगह एक वृत्त है। ये सभी वृत्त मिलकर एक महान् वृत्त बनाते हैं। इस महान् वृत्त का नाम ब्रह्मांड है। इसी को गोलक-गति (हरकत-ए-दौरी) कहा जाता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि गोलक-गति केवल चेतना की पुनरावृत्ति है। क़ुरआन मजीद में इस पुनरावृत्ति का उल्लेख इस प्रकार हैः

www.ksars.org

وَلَہٗ مَاسَکَنَ فِی الَّیْلِ وَالنَّھَارِ وَھُوَالسَّمِیْعُ الْعَلِیْمُo

"वलहु मा सकन फ़ी लैलि व नहारि व हुवास्समीउल अलीम"

(सूरतुल अनआम, आयत १२)

अनुवादः “अल्लाह ही का है जो रात और दिन में वास करता है। वही सुनने वाला और जानने वाला है।”

रात्रि और दिवस में जो कुछ निवास करता है, वह सब अल्लाह ही का स्वामित्व है। मनुष्य की अनुभूति (इद्राक) और इन्द्रियाँ (हवास) जिनको ग्रहण करती हैं, ईश्वर ने उन्हें दो भागों में विभाजित कर दिया है। एक भाग वह है जिसका सम्बन्ध रात्रि के इन्द्रियों से है। ये दो वृत्त हैं, अथवा इन्हें गोलक-गति की दो सतहें कहा जा सकता है। ये दोनों सतहें विभिन्न इन्द्रियों का स्रोत हैं। इसी कारण ईश्वर ने लैल (रात्रि) और नहार (दिवस) के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि रात्रि की इन्द्रियों को अन्धकार, निद्रा अथवा तन्द्रा कहकर अवास्तविक समझा जाता है। किन्तु ईश्वर के शब्द इस अवधारणा का खण्डन कर देते हैं और यह प्रमाणित हो जाता है कि अल्लाह के निकट रात्रि और दिवस की इन्द्रियाँ समान रूप से सुदृढ़ और वास्तविक हैं। यदि हम थोड़ा विश्लेषण करें तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाएगा कि दिवस की इन्द्रियों को सामूहिक साक्ष्य प्राप्त है और रात्रि की इन्द्रियों को व्यक्तिगत साक्ष्य। किन्तु यह सत्य भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि सामूहिक साक्ष्य में अनेक भूलें होती हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे व्यक्तिगत साक्ष्य में।

यहाँ यह उल्लेख आवश्यक है कि निगाह की दो सतहों में सामाजिक समतल को वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिगत समतल को आत्मनिष्ठ नाम दिया जाता है। इन्हीं दो सतहों से काल (Time) की नींव पड़ती है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से परिचित होता है तो यही परिचय का चरण काल बनता है। यह परिचय आत्मा का एक क्रियान्वयन है। जब आत्मा अपनी किसी विशेषता को देखती है तो एक ठहराव घटित होता है। वास्तव में यह ठहराव देखने की एक शैली है जिसे मानव-बुद्धि काल कहती है। ऐसा नहीं है कि कोई वस्तु या क्षण गुजरता हो, बल्कि यह केवल ज़ात की विचार-शैली है, चेतना-शैली है, दृष्टि-शैली है।

ईश्वर का एक वचन यह है कि “मैं समीअ हूँ, मैं बसीर हूँ,” अर्थात् श्रवण और दर्शन मेरी एकमात्र स्वामित्व है। और दूसरा वचन यह है कि “मैंने मनुष्य को श्रवण दिया, दर्शन दिया।” इन दोनों वचनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मनुष्य ईश्वर की श्रवण-शक्ति से सुनता है और ईश्वर की दर्शन-शक्ति से देखता है। यह ध्यान रहे कि ईश्वर का सुनना और देखना वास्तविक है, चाहे वह ईश्वर की ज़ात में घटित हो अथवा व्यक्तियों की ज़ात में। देखने और सुनने में समानता (मुतशाबेह) केवल मनुष्यों को प्रतीत हो सकती है। क्योंकि जो कुछ ईश्वर की ओर से होता है,

www.ksars.org

मनुष्य उसे स्वयं से सम्बद्ध कर लेता है और यहीं से वह किसी वस्तु को समझने में भूल करता है। यह सम्भव नहीं है कि किसी व्यक्ति की निगाह बादाम को अंजीर देखे। वह अंजीर को अंजीर देखने के लिए बाध्य है। हाँ, अर्थ पहनाने में अपनी गलत राय प्रयोग कर सकता है। यह कह सकता है कि अंजीर एक निरर्थक वृक्ष है, एक हानिकर वृक्ष है। क़ुरआन पाक में ईश्वर का वचन है:

وَ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ (सूरा अअराफ़, आयत 189)

वही है जिसने तुम्हें बनाया एक स्वरूप से।

समस्त मानव-जाति एक गुप्त योजना के अन्तर्गत बनाई गई है। वह गुप्त योजना जो प्रकट रूपों के पीछे कार्य कर रही है। उसी को ईश्वर ने स्वरूप एकत्व (नफ़्से-वाहितह) कहा है। गुप्त योजना दृश्य अन्धकार और रोशनी की गहराई में ऐसे नक़्श की रचना करती है जिन्हें हमारी इन्द्रियाँ प्रकट रूपों के रूप में देखती और अनुभव करती हैं। यह असम्भव है कि हम उन नक़्शों के बोध से इन्कार कर दें या उनकी उपस्थिति को स्वीकार न करें। हम अपने भ्रम में केवल इतना कर सकते हैं कि सत्य को असत्य कह दें और असत्य को सत्य समझ लें। अतः इसी भ्रम और गलत विचार-शैली के अधीन मनुष्य गुमराही में पड़ जाता है।

ईश्वर की आवाज़

क़ुरआन पाक में एक स्थान पर वर्णन है–"हमने मरियम पर *वही* की।" यह स्पष्ट है कि हज़रत मरियम न तो रसूल थीं और न नबी। इस स्थल से यह सिद्ध होता है कि *अल्क़ा* अथवा *वही* की दशा आम मानव को भी प्राप्त होती है। इससे ईश्वर सर्वशक्तिमान की प्रदत्त श्रवण-शक्ति (समा'अत) और दृष्टि-शक्ति (बसीरत) की व्याख्या हो जाती है। सामान्य परिस्थितियों में प्रत्येक मनुष्य को यह स्थिति प्राप्त होती है। मनुष्य इस स्थिति को अपनी भाषा में अंतरात्मा (ज़मीर) की संज्ञा देता है। वह अंतरात्मा की ध्वनि सुनता है और उसकी मार्गदर्शना में निष्कर्ष निकालता है। वस्तुतः यह ईश्वर सर्वशक्तिमान की आवाज़ होती है और वही प्रदत्त निष्कर्ष मनुष्य के स्वरूप (नफ़्स) तक पहुँचता है। यहीं से स्वरूप की आलोचना (आत्म-समीक्षा) आरम्भ होती है। यह आत्म-समीक्षा मनुष्य की नीयत को कभी शुद्ध रखती है और कभी विकृत कर देती है। क़ुरआन पाक में स्वरूप की इस आत्म-समीक्षा को रूयत और दृष्टि की संज्ञा दी गई है। ईश्वर सर्वशक्तिमान का कथन है:

وَتَرٰىهُمْ يَنظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ

(सूरए अ'राफ़, आयत 189)

www.ksars.org

"और तू देख रहा है कि वे तेरी ओर देख रहे हैं, यद्यपि वे देखते नहीं।"

इस आयत में चार अभिकरणों (एजेंसियों) का उल्लेख है। स्वरूप (नफ़्स) की दो अभिकरणों को रूयत और दृष्टि कहा गया है, और लायुब्सिरून में ईश्वरीय श्रवण-शक्ति और दृष्टि-शक्ति–दोनों अभिकरणों का समावेश है। जब तक मनुष्य अपनी अंतरात्मा की ध्वनि पर ध्यान नहीं देता, उसे सत्य मार्गदर्शन प्राप्त नहीं हो सकता।

www.ksars.org

यहाँ इस बात का विवेचन आवश्यक है कि ब्रह्मांड किस प्रकार उत्पन्न हुआ है और स्थान तथा काल का ब्रह्मांड की तकोवीन (सृष्टि-प्रक्रिया) से क्या संबंध है।

ब्रह्मांड की दो पृष्ठभाग हैं। यदि हम एक पृष्ठभाग को समष्टि-स्वरूप (Internal Self) कहें तो दूसरी पृष्ठभाग को व्यष्टि-स्वरूप (Personal Ego) कहा जाएगा। समष्टि-स्वरूप छोटे से छोटे अणु और बड़े से बड़े ग्रह-पिंड का आधार-रेखा (Base Line) है। अर्थात् छोटे से छोटा अणु और बड़े से बड़ा गोला जिन प्रकाशो का समुच्चय है, वे समस्त प्रकाश-रेखाएँ समष्टि-स्वरूप के ही अवयव हैं। यदि हम इन रोशनियाँ को देख सकें तो वे छवि-स्वरूप में दृष्टिगोचर होंगी। यही छवियाँ समष्टि-स्वरूप से व्यष्टि-स्वरूप में प्रवाहित होती हैं। उनका प्रवाहित होना केवल समष्टि-स्वरूप पर निर्भर है। समष्टि-स्वरूप जिन छवियों को व्यष्टि-स्वरूप के हवाले कर देता है, व्यष्टि-स्वरूप उन्हें स्वीकार करने के लिए बाध्य होता है। उदाहरण के लिए गुलाब को समष्टि-स्वरूप से वही छवियाँ प्राप्त होती हैं जो गुलाब के आकार-प्रकार में प्रकट होती हैं। इसी प्रकार मनुष्य को भी समष्टि-स्वरूप से वही छवियाँ मिलती हैं जो उसकी मानवीय आकृति का प्रदर्शन करती हैं।

मनुष्य की संरचना क्या है?

वह ऐसी छवियों का संकलन है जो समष्टि-स्वरूप में व्यष्टि-स्वरूप का चैतन्य प्राप्त करती हैं। मनुष्य का अवचेतन (समष्टि-स्वरूप) स्वयं अपने शरीर की रचना करता है। सामान्य भाषा में जिसे पदार्थ(Substance) कहा जाता है, वह अवचेतन की मशीनरी का निर्मित हुआ है। यह समझना कि बाहर से मिलने वाला आहार ही रक्त और शरीर का निर्माण करता है—यह धारणा मूलतः असत्य है।

वास्तव में मनुष्य का अवचेतन (समष्टि-स्वरूप) छवियों को रोशनी से पदार्थ का रूप देता है। यही पदार्थ शारीरिक आकृति (ख़द-ओ-ख़ाल) और भार (गुरुत्व) के रूप में प्रकट होता है। जब अवचेतन किसी कारणवश छवियों को पदार्थ में रूपांतरित करने का उपक्रम नहीं करता, तो मृत्यु घटित हो जाती है।

जीवन में मनुष्य को एक से अधिक बार गहन रोगों से सामना करना पड़ता है। इस समय आहार या तो न्यूनतम रह जाता है या पूर्णतः अनुपस्थित हो जाता है, परंतु मृत्यु नहीं होती। इसका अभिप्राय यह है कि शरीर की भौतिक मशीन जीवन को चलाने की उत्तरदायी नहीं है। इन अनुभवों से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि बाहर से प्राप्त पोषण जीवन का हेतु नहीं है। जीवन का वास्तविक हेतु केवल अवचेतन की कारीगरी है।

www.ksars.org

समष्टि-स्वरूप को समझने के उपाय असंख्य हैं। समष्टि-स्वरूप की विशेषताएँ असीम हैं। मनुष्य जन्म लेता है, कुछ महीनों का होता है, फिर साठ, सत्तर, अस्सी या नब्बे वर्ष का हो जाता है। उसके शरीर, उसके विचार और उसके ज्ञान-क्रियाओं में प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहता है। उसके शरीर और चिंतन का प्रत्येक कण परिवर्तित हो जाता है, परंतु वह व्यक्ति नहीं बदलता। जो कुछ वह कुछ महीनों की अवस्था में था, वही नब्बे वर्ष की अवस्था में भी है। यदि उसका नाम ज़ैद है तो उसे ज़ैद ही कहा जाएगा। वह सदा ज़ैद ही के नाम से पहचाना जाएगा।

अंतरवाक्य (जुम्ला-ए-मुअतरिज़ा)

यह ज़ैद क्या है?

यह ज़ैद समष्टि-सत्ता है। जितना भी परिवर्तन घटित होता है वह व्यष्टि-सत्ता (Personal Ego) समष्टि-सत्ता ब्रह्मांड को आवृत्त करती है। ब्रह्मांड का ज्ञान व्यक्तिगत-सत्ता को प्राप्त नहीं होता। समष्टि-सत्ता से असंबद्धता उसका कारण है। यदि किसी व्यक्ति की समस्त रुचियाँ केवल उसके परिवार तक सीमित रहें तो उसकी बौद्धिक क्षमता केवल परिवार की मर्यादाओं में ही सोच सकती है। उसके अनुभव और अवलोकन भी उसी के अनुसार सीमित होंगे। यह कहना उचित होगा कि उसने अपनी बौद्धिक क्षमता को सीमित कर लिया है, यहाँ तक कि वह परिवार से बाहर देखने में अक्षम है। मनुष्य की निगाह और श्रवण केवल उसकी बौद्धिक सीमा के भीतर ही देख सकते और सुन सकते हैं। उस सीमा से बाहर न देख सकते हैं, न सुन सकते हैं। बाह्यतः तो यह प्रतीत होता है कि वह संसार के चारों ओर देख और सुन रहा है, किन्तु उसकी बुद्धि को परिवार से बाहर किसी भी वस्तु में तनिक भी रुचि नहीं होती। उसका चेतन बिल्कुल उसी छोटे बच्चे के समान होता है, जिसे आप रेडियो पर संपूर्ण विश्व की समाचार सुना दें, परन्तु वह न कुछ समझेगा, न अनुभव करेगा। यदि कोई व्यक्ति पचास वर्ष की आयु में भी केवल अपने परिवार की सीमा में ही सोचता है तो आध्यात्मिक दृष्टिकोण से उसकी आयु कुछ वर्षों से अधिक नहीं मानी जा सकती। ऐसा व्यक्ति जिसका चेतन केवल अपने स्वार्थ तक सीमित है, सौ वर्ष की आयु में भी परिपक्वता को प्राप्त नहीं कर पाता। यही आधार है कि वह समष्टि-सत्ता से अनभिज्ञ रहता है। ब्रह्मांड की रंगभूमि पर उसकी स्थिति वही होती है जो किसी तीन वर्ष के बालक की किसी अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में हो सकती है। इसी कारण धर्म मानव-जीवन का अनिवार्य तत्त्व है। जिस जाति का विश्वास ब्रह्मांडीय निष्कपटता पर आधारित नहीं है वह जाति ब्रह्मांडीय मूल्यों का अवलोकन नहीं कर सकती और न उसकी बुद्धि ब्रह्मांडीय विज्ञानों तक पहुँच सकती है। उसने स्वयं को समष्टि-सत्ता से विच्छिन्न कर लिया है। ऐसी जाति हजारों वर्षों की आयु प्राप्त कर लेने पर भी पालने का शिशु बनी रहेगी।

यह रोशनी जिसे हमारी आँखें देखती हैं, व्यक्तिगत-सत्ता (एक-जात) और समष्टि-सत्ता (कुल-जात) के बीच एक आवरण है। इसी रोशनी के माध्यम से समष्टि-सत्ता के चिन्तनात्मक संकेत व्यक्तिगत-

www.ksars.org

सत्ता तक पहुँचते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि समष्टि-सत्ता जो सूचनाएँ व्यक्तिगत-सत्ता को प्रदान करती है, उन सूचनाओं को यह नूर रूप, वर्ण और आयाम प्रदान कर व्यक्तिगत-सत्ता तक पहुँचाती है। इसकी उपमा दूरदर्शन से दी जा सकती है। दूरदर्शन की समतल पर वे सभी दृश्य और ध्वनियाँ प्रकट होती हैं जिन्हें प्रसारण-केंद्र से प्रेषित किया जाता है। जिस क्षण यह प्रसारण विच्छिन्न हो जाता है, न कुछ दिखाई देता है और न ही सुनाई पड़ता है। यही स्थिति समष्टि-सत्ता से आने वाली सूचनाओं की है। मानव-जाति के प्रत्येक व्यक्ति को रोशनी के माध्यम से ही सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। जिस प्रकार सूचना आती है, मनुष्य उसी प्रकार देखता और जानता है। जब किसी व्यक्ति से सूचना का नेहर रुक जाता है, तब उसकी मृत्यु घटित हो जाती है; किन्तु यह विच्छेद केवल सांसारिक लोक से होता है। अर्थात जीवन की एक समतल से व्यक्ति विच्छिन्न हो जाता है, किन्तु दूसरी समतल से (जिसे हम "ग़ैब" कहते हैं) सूचनाएँ आती रहती हैं।

यह ध्यान देने योग्य है कि जिस रोशनी के द्वारा हमारी आँखें देखती हैं, उसी रोशनी की भी दो समतल हैं। एक समतल में इन्द्रियों के अनुभव में गुरुत्व और आयाम दोनों सम्मिलित हैं; किन्तु समतल समतल केवल आयाम की है। आयाम की समतल रोशनी की गहनता में स्थित है। रोशनी हमें जो ऊपरी समतल से सूचनाएँ देती है, उन्हें इन्द्रियाँ प्रत्यक्ष देखती और सुनती हैं; परन्तु जो सूचनाएँ निचली समतल से आती हैं, उनकी ग्रहण-प्रक्रिया में एक प्रतिरोध अवश्य होता है। यही कारण है कि इन्द्रियाँ उन सूचनाओं को पूर्णतः ग्रहण नहीं कर पातीं। वास्तव में, ऊपरी समतल की सूचनाएँ ही निचली समतल से आने वाली सूचनाओं के मार्ग में अवरोध बन जाती हैं। जैसे कोई दीवार खड़ी हो जाती है। यह दीवार इतनी कठोर होती है कि हमारी इन्द्रियाँ प्रयास करने पर भी उसे पार नहीं कर सकतीं। ऊपरी समतल की सूचनाएँ दो प्रकार की होती हैं:

१. वे सूचनाएँ जो स्वार्थ या प्रयोजन पर आधारित हों – उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण पक्षपाती होता है।
२. वे सूचनाएँ जो किसी व्यक्तिगत स्वार्थ से सम्बद्ध न हों – उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण निष्पक्ष होता है।

इन दोनों प्रकार की सूचनाओं के आलोक में विचार किया जाए तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य के पास बोध के दो कोण हैं। एक कोण वह है जो व्यक्तित्व तक सीमित है; दूसरा वह है जो व्यक्तित्व की सीमाओं से बाहर है। जब हम व्यक्तित्व के भीतर देखते हैं, तो ब्रहमांड सम्मिलित नहीं होता; किन्तु जब हम व्यक्तित्व से बाहर देखते हैं, तो ब्रहमांड सम्मिलित हो जाता है। उस कोण में, जिसमें ब्रहमांड सम्मिलित है, हम ब्रहमांड की प्रत्येक वस्तु के साथ अपना बोध करते हैं। यह बोध की क्रिया बार-बार घटित होती है, और इसे ही हम **प्रयोगात्मक जगत** कहते हैं। एक ओर मनुष्य ब्रहमांड को अपनी व्यक्तिगत सीमा में देखने का आदी है, और दूसरी ओर अपनी व्यक्तिगत सीमा को ब्रहमांड में देखने का आदी है। वह एक ओर व्यक्तिगतता की

www.ksars.org

व्याख्या करता है, दूसरी ओर ब्रह्मांड की। जब ये दोनों व्याख्याएँ आपस में टकराती हैं, तो व्यक्तिगतता की व्याख्या को सत्य सिद्ध करने के लिए तर्क और व्याख्या का सहारा लिया जाता है। कभी-कभी इस तर्क-व्याख्या के समर्थक अपने प्रतिद्वन्द्वियों से संघर्षरत हो जाते हैं। यहीं से विचारधाराओं का संघर्ष प्रारम्भ होता है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति, एक समुदाय या पूरी एक क़ौम पर सम्मिलित हो सकता है। व्यक्तित्व के दृष्टिकोण की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह किसी न किसी चरण में ब्रह्मांड और वस्तुओं से विमुख हो जाता है। इस कोण में निगाह हमेशा ग़लत देखती है। उदाहरण के लिए, किसी वस्तु का आकार(SIZE) वायु में कुछ और प्रतीत होता है, जल में कुछ और। यह निगाह का अंतर काल और अकालिक की बन्धनों के कारण है। जब तक दृष्टा काल-अकालिक से मुक्त न हो, किसी वस्तु की वास्तविकता को प्राप्त नहीं कर सकता।

काल-अकालिक की व्याख्या अकालिक कोण से

काल और अकालिक दो भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं। रोशनी से मिलने वाली सूचनाओं की जो समतल हमारे सामने है हम उसे अकालिक कहते हैं और जो समतल निगाह से ओझल है उसे काल का नाम देते हैं। वास्तव में ये दोनों समतल मिलकर एक इकाई हैं। चेतना की ऊपरी समतल में यह क्षमता नहीं है कि वह एक साथ असंख्य वस्तुओं को देख सके, सुन सके और समझ सके। यह क्रमशः एक-एक वस्तु को देखती, सुनती और समझती है। इन्द्रियों की इस क्रमबद्धता में जो अवस्थाएँ आती हैं उन्हें विराम, आन, क्षण आदि विविध शब्दों से पुकारा जाता है। यही काल के अंश हैं। जब इन अंशों को निगाह देखती है, कान सुनते हैं, ज़ेहन समझता है तो अकालिक की रचना होती है।

यद्यपि ब्रह्माण्ड की बनावट अत्यधिक जटिल नहीं है किन्तु मानव-विचार इस बनावट को अपरिचित होने के कारण जटिल समझता है। विषय अत्यन्त सरल है। उसका कहना और समझना भी सहज है। अनन्तता का एक लोक है। यह लोक ब्रह्माण्ड के पार स्थित होकर सम्पूर्ण आकाशगंगा-तंत्रों को आच्छादित करता है। सम्पूर्ण आकाशगंगाओं को इस लोक से बोध वितरित होता है। यह बोध असंख्य क्षणों से होकर प्रवाहित होता है। यही क्षण आकाशगंगा-तंत्रों का रूप और संरचना धारण कर लेते हैं। किसी परमाणु के सूक्ष्मतम अंश और किसी ग्रह के विराट्तम पिण्ड का प्रकट होना एक ही क्षण में घटित होता है। इस तथ्य को अन्य प्रकार से भी कहा जा सकता है कि ब्रह्माण्ड के बोध में गति होती है, स्वयं अनन्तता में गति नहीं होती। यह गति एक इकाई, एक सत्ता अथवा ईश्वरीय संकल्प है और दो सतहों पर आधारित है–एक काल और दूसरा अकालिक ये दोनों जुड़वाँ हैं और एक-दूसरे का प्रतिपादन करते हैं। कुरआन-पाक में ईश्वर ने काल को "अमर" और अकालिक को "ख़लक़" कहा है।

www.ksars.org

कार्यादेश (अमर) और सृष्टि के अंश

ईश्वर का वचन है:

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا

(सूरह दहर, आयत 1)

अनुवाद: "क्या आया है मनुष्य पर एक काल का वक़्फ़ा जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था।"

1. दहर *लाज़मान* अकलिक है। इसे हम ईश्वरीय बोध कह सकते हैं। यह अनादि अनन्तता है।
2. समय *ब्रह्मांड* का वक़्फ़ा है और ब्रह्मांड को व्याप्त करता है। यह अनादि से अनन्त तक है। हज़रत मुहम्मद अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: *ली मा'अल्लाहि वक्तुन* – "मेरे लिए अल्लाह के साथ एक समय है।" इसमें ब्रह्मांड ही के समय का उल्लेख है।
3. ब्रह्मांड से परे जो समतल है उसे ईश्वर ने दहर (अमर) कहा है। यही समतल *लाज़मान* है। ब्रह्मांड की सीमाओं में इसी समतल को हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने "वक्त" कहा है। यही समतल *ज़मान* है। और ब्रह्मांड के व्यक्तियों में इसे हीन के शब्द से अभिव्यक्त किया गया है। यह समतल स्वयं *प्रकट रूप* नहीं है बल्कि प्रकट रूप की आधार है। ईश्वर ने आयतों में इसी मर्म की ओर संकेत किया है:

1. خَلَقَ الْإِنسَانَ مِن صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ

   (सूरह रहमान, आयत 14)

   अनुवाद: "मनुष्य को बनाया खनखनाती मिट्टी से जैसे ठिकरा।"

2. هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا

   (सूरह दहर, आयत 1)

   अनुवाद: "क्या नहीं आया मनुष्य पर एक समय जब वह वस्तु (छवि) बिना क्रम के (अव्यवस्थित) था।"

3. خَلَقَكَ مِن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ

   (सूरह कहफ़, आयत 37)

www.ksars.org

अनुवाद: “तुझे बनाया मिट्टी से फिर बूंद से।”

4. إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

(सूरह दहर, आयत 2)

अनुवाद: “हमने मनुष्य को बनाया एक मिश्रित बूंद से, उसे पलटते रहे फिर कर दिया उसे सुनने वाला और देखने वाला।”

ईश्वर ने *मिट्टी* को “बजती और खनखनाती” कहा है, अर्थात् अंतराल (ख़ला) मिट्टी के प्रत्येक कण का स्वभाव है। इसी आकाश को हीन कहा गया है। और फ़रमाया: “हमने मनुष्य को फिर देखने-सुनने वाला बना दिया।” अभिप्राय यह है कि अंतराल में इन्द्रियाँ उत्पन्न कर दी गईं। यही इन्द्रियाँ वह “बूंद” हैं जिनका उल्लेख नुत्फ़ा के शब्द से है। अंतराल *ग़ैर-क्रमबद्ध समय (ज़मान-ए-ग़ैर-मुतवातिर)* है और बूंद *क्रमबद्ध समय (ज़मान-ए-मुतवातिर)* है। अंतराल *नूर* है और बूंद *नस्मा* है। बूंद का आशय कोई स्थूल देह नहीं है बल्कि वह एक नुक़्ता है जिसमें छवियाँ संचित होती हैं। और फ़रमाया: *“पलटते रहे उसे”* – अर्थात् जो छवियाँ मूल-सूत्र (दहर/अमर) से अंतराल (हीन) को प्राप्त हुईं, उनमें व्यवस्था स्थापित की गई। और उसी व्यवस्था ने इन्द्रियों अथवा प्रकट रूप की संरचना धारण कर ली।

कुरआन-पाक में किताब-उल-मुबीन का उल्लेख है। यह किताब-उल-मुबीन वही ग़ैब है जिसे हम भविष्य कहते हैं। यह अनादि से अनंत तक की पूर्ण छवि है तथा समस्त प्रकट-विश्व का आदिस्रोत है। जब हम ‘अनंत’ शब्द उच्चारित करते हैं तो यह एक मात्र शब्द अनादि से अनंत तक की सभी धारणा-छवियों का समग्र संकलन है। शब्द स्वयं प्रकट है, और उस शब्द के भीतर निहित धारणाएँ ग़ैब हैं। शब्द, वास्तव में, ज़ेहन की एक गति है। इस गति में तीन प्रकार की किरणें संकेन्द्रित होती हैं–

१. अनुभूति-सम्बन्धी किरणें
२. आस्था-सम्बन्धी किरणें
३. परिवर्तन-सम्बन्धी किरणें

अनुभूति-सम्बन्धी किरणें एकात्मक होती हैं, और आस्था-सम्बन्धी किरणें संयुक्त। एकात्मक और संयुक्त किरणें मिलकर परिवर्तन-सम्बन्धी किरणों का रूप ग्रहण कर लेती हैं। इन्हीं परिवर्तन-सम्बन्धी किरणों को ब्रह्मांड के प्रकट रूप का नाम दिया जाता है।

www.ksars.org

सृष्टि का रहस्य

क़ुरआन-पाक में सृष्टि का रहस्य उद्घाटित हुआ है। परम सत्ता का अमर यह है कि–

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ (सूरा या-सीन, आयत ८२)

अनुवाद: जब वह किसी वस्तु के करने का इरादा करता है तो कहता है 'हो' और वह हो जाती है।

इस आयत पर विचार किया जाए तो शब्द के भीतर जो रहस्य निहित हैं, उन रहस्यों का और उन रहस्यों को गति में लाने का उद्घाटन हो जाता है। जब परम सत्ता ने कहा "कुन", तो उसका सम्बोधन कोई ऐसी सत्ता थी जो अब तक प्रकट नहीं हुई थी; परन्तु जब उसे प्रकट होने का आदेश दिया गया तो वही आदेश उस सत्ता के भीतर यांत्रिक गति में परिणत हो गया। विचारणीय यह है कि सत्ता के प्राकट्य की माहियत और उसकी प्रकृति क्या थी। यह माहियत वे छवियाँ थीं जो परम सत्ता के इरादे में निहित थीं। किन्तु उन छवियों की कोई क्रमबद्धता न थी। क्रम न होना इस तथ्य का द्योतक है कि कोई सत्ता अनन्त में व्याप्त है। जब इरादा ने सत्ता की छवि को अनन्त से ग्रहण किया तो सत्ता का एक रूप निर्मित हुआ। अब सत्ता का वह रूप ज्ञान बन गया और ज्ञान स्वयं शब्द है। अर्थात जिस क्षण सत्ता की समग्र छवियाँ ज्ञान के साँचे में ढल गईं, वही क्षण शब्द बन गया। तब सत्ता का अस्तित्व शब्द की पकड़ में आ गया और शब्द उसे पर्दे (किताब-उल-मुबीन) से बाहर खींच लाया।

शब्द की तीन श्रेणियाँ हैं। इनमें से दो श्रेणियाँ ऐसी हैं जिन्हें केवल नाममात्र शब्द कहा जा सकता है। ये दोनों प्रकार के शब्द प्राकट्य के पश्चात् प्रयुक्त होते हैं, जैसे– "अच्छा" या "बुरा"। "अच्छा" वह शब्द है जो अनुमोदन करता है, और "बुरा" वह शब्द है जो निषेध करता है। इन दोनों शब्दों में वे छवियाँ निहित हैं जो पहले ही प्रकट हो चुकी हैं। अब इरादा में ऐसी छवियों की कोई संभावना नहीं है जिन्हें आगे प्रकट होना हो। अर्थात इरादा में अब कोई छवि का अवकाश नहीं है। इन दोनों श्रेणियों के शब्दों को सृष्टि या ब्रह्मांड कहा जाता है। ये दोनों अमर के क्षेत्र से पृथक हैं। क़ुरआन-पाक में कहा गया है:

هُوَ الْأَوَّلُ هُوَ الْآخِرُ هُوَ الظَّاهِرُ هُوَ الْبَاطِنُ

इन अर्थों में परम सत्ता समष्टि-सत्ता को आच्छादित है और अस्तित्व उसका बोधगम्य है। हम प्रकट को देखते हैं, अप्रकट को नहीं देखते। जो कुछ हम देखते हैं, वह तो देखते हैं; परन्तु यह नहीं देखते कि किससे देख रहे हैं। हम अनुभव करते हैं, किन्तु यह अनुभव नहीं करते कि किससे अनुभव कर रहे हैं। यदि हम यह अनुभव कर लें कि किससे अनुभव कर रहे हैं तो परम सत्ता का

www.ksars.org

अनुभव कर लेंगे। इसीलिए हमारी फ़हम केवल सृष्टि "ख़लक़" में सक्रिय रहती है। आदेश "अमर" तक उसकी पहुँच नहीं होती। हम शब्दों को किसी वस्तु के निषेध में या स्वीकार में प्रयोग करते हैं। जिस शब्द का प्रयोग निषेध में किया जाता है, उसमें निषिद्ध छवियाँ सक्रिय रहती हैं; और जिस शब्द का प्रयोग स्वीकार में किया जाता है, उसमें स्वीकृत छवियाँ कार्य करती हैं। ये दोनों प्रकार के शब्द ख़लक़ हैं क्योंकि छवियों से पूर्ण होने के बाद ये प्रकट हो चुके हैं।

www.ksars.org

जल धारणाओं का खोल है

ईश्वर का वचन है:

وَاِلَى اللّٰهِ تُرْ جَعُ الْاُمُوْر – सब कार्य-व्यवहार परम सत्ता की ओर लौटते हैं।

सृष्टि के बाद केवल *लौटने* का चरण रह जाता है। किन्तु ईश्वरीय आदेश वह चरण है जिसमें *अवतरण* है। अवतरण का अर्थ है शून्य (कण) में धारणाओं का प्रवेश करना। जो सूचनाएँ शून्य (कण) में प्रवेश करती हैं, उन्हें धारणाएँ (छवि) कहा जाता है। इन धारणाओं को ईश्वर ने "माअ" (जल) का नाम दिया है। वास्तव में जल धारणाओं का खोल है, या वह ऐसे तत्वों का समूह है जिसमें प्रत्येक तत्व धारण (छवि) की हैसियत रखता है। यही है जल की वास्तविकता। ऊपर की आयत में इसी प्रकृति की ओर संकेत है। जल का गुण यह है कि वह फूल में जाकर फूल बन जाता है, काँटे में जाकर काँटा बन जाता है, पत्थर में जाकर पत्थर बन जाता है, सोने में जाकर सोना बन जाता है और हीरे में जाकर हीरा बन जाता है।

हमारे ज़ेहन में धारणाओं का एक समूह है जिसे हम "सोना" कहकर पुकारते हैं। और धारणाओं का एक दूसरा समूह है जिसे हम "हीरा" कहकर पुकारते हैं। सोना और हीरा दो शब्द हैं या दो खोल हैं, जिनमें धारणाओं के अलग-अलग समूह आबद्ध हैं। इनका प्रत्येक समूह चेतन-अनुभव (अद्रक/बोध) है। जब चेतन-अनुभव को ध्वनि में आबद्ध किया जाता है तो शब्द बन जाता है। चेतन-अनुभव के बहुत से नाम हैं, जैसे: अंतरिक्ष, मर्म (Secret Plan), ईश्वरीय आदेश, समय (Non-Serial Time), या स्वरूप इत्यादि। यही ब्रह्मांड की नींव है।

मनुष्य के भीतर चेतन-अनुभव ज़ेहन (मानसिक सत्ता) है। ज़ेहन की व्यापकता ब्रह्मांड के एक सिरे से दूसरे सिरे तक है। इसी का एक पहलू गहराई अर्थात् *काल (समय)* है और दूसरा पहलू *प्रसार अर्थात् अकालिक* है। जब ज़ेहन काल में देखता है तो उसकी गति ईश्वरीय आदेश होती है और जब अकालिक में देखता है तो उसकी गति सृष्टि होती है। सृष्टि वह शब्द है जिसकी दोनों श्रेणियों का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

ब्रह्मांड का उद्भव किस प्रकार होता है

मनुष्य के चेतन को प्रारम्भ से ही सुख और दुःख का अनुभव रहा है। वह यह जानना चाहता है कि सुख और दुःख का कारण क्या है, ताकि दुःख से सुरक्षित रह सके और सुख को स्थायी बना सके। सुख को त्यागना उसके लिए सम्भव नहीं है, इसलिए सुख के नष्ट होने का भय और दुःख

www.ksars.org

उसके अन्तर्मन से कभी नहीं मिटता। मनुष्य निरन्तर ऐसी गारंटी की तलाश करता है जिससे वह दुःख से दूर और सुख से निकट रह सके। अपनी सीमाओं के कारण वह घटनाओं पर नियन्त्रण करने को अक्षम समझता है और इसीलिए किसी ऐसी शक्ति की खोज करता है जो उसे सुख की स्थिरता प्रदान कर सके। यही गुप्त शक्तियों की खोज का कारण है। कुरआन पाक ने " يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْب" में इसी सत्य की ओर संकेत किया है।

कोई मनुष्य आत्मविश्वास का दावा कर सकता है, परन्तु वह सुख-दुःख से मुक्त नहीं हो सकता। किन्तु जब वह ग़ैब पर ईमान लाता है तो उसके भीतर यह विश्वास दृढ़ हो जाता है कि ग़ैब में जो कुछ है, वह उत्तम ही है, क्योंकि ग़ैब रहीम और करीम के अधीन है।

وَ ما كانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللهُ إِلاّ وَحْياً أَوْ مِنْ وَراءِ حِجابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولاً

(सूरः शूरा, आयत 51)

अनुवाद: किसी मनुष्य की क्षमता नहीं कि अल्लाह उससे बात करे सिवाय संकेत के, या परदे के पीछे से, या दूत को भेजकर।

इस आयत में मानवीय इन्द्रियों की सीमा को स्पष्ट किया गया है। जब ईश्वर सर्वशक्तिमान मनुष्य को सम्बोधित करते हैं तो संकेत द्वारा करते हैं—यही हृदय है जो देख लेता है और जान लेता है।

مَاكَذَّبَ الْفُؤَا دُمَارَاٰی

अनुवाद: हृदय ने जो देखा, उसे झुठलाया नहीं।

यही ईश्वर सर्वशक्तिमान का संवाद का वह ढंग है जिसे वही कहा जाता है, या फिर दूत के माध्यम से सम्बोधन होता है। तीसरा तरीका यह है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान किसी अन्य रूप में अपने बन्दे को मार्गदर्शन करते हैं। इसे हिज़ाब कहा गया है—उदाहरणतः एक सुन्दर *नूरुन अला नूर* रूप में। यह रूप स्वयं अल्लाह नहीं होता, बल्कि हिज़ाब होता है।

इन आयतों से यह निश्चित होता है कि मानवीय इन्द्रियों की दो अवस्थाएँ हैं। जब इन्द्रियाँ किसी बिन्दु पर ठहरती हैं तो उस ठहराव को *शय* कहा जाता है, और यह एक आकार धारण करती है। वस्तुतः यह एक लम्हा है जिससे स्वयं इन्द्रियाँ देह ग्रहण कर लेती हैं। इन्द्रियाँ इस देह को बाहय और वस्तुनिष्ठ रूप में देखती हैं क्योंकि देखने का तरीका यह है कि इन्द्रियाँ स्वयं को अपने सामने देखें और स्वयं को स्वयं से भिन्न ठहराएँ। जीवन की सभी गतियाँ इसी निगाह की अभिव्यक्तियाँ हैं। जब इन्द्रियाँ किसी ओर संकेत करती हैं तो वे आन्तरिक संरचनाओं को बाहय रूप में प्रस्तुत कर देती हैं। जब इन्द्रियाँ कहती हैं *"मैं"* तो यह "मैं" वास्तव में केवल अंतरिक्ष

www.ksars.org

होती है–सरल और पारदर्शी। फिर जब यही इन्द्रियाँ इस “मैं” के रंग-रूप और आकृतियों की ओर संकेत करती हैं तो कहती हैं: *मैंने यह कहा, मैंने वह किया, देखो यह चन्द्रमा है, यह तारे हैं।* इस प्रकार इन्द्रियाँ अपनी गति को समीप और दूर दोनों रूपों में अनुभव करती हैं। यही निगाह ब्रह्मानी इन्द्रियों की है। यही इन्द्रियाँ व्यक्ति के भीतर *“मैं”* बन जाती हैं और निकट-दूर के संकेतों से स्वयं को दोहराती रहती हैं।

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا

अनुवाद: क्या मनुष्य पर ऐसा समय नहीं बीता जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था?

कभी मनुष्य ऐसा समय था जब इन्द्रियों में पुनरावृत्ति नहीं थी, फिर ऐसा समय हुआ जब पुनरावृत्ति प्रकट हुई। यहाँ दो ही संस्थाएँ हैं: पहली इन्द्रियाँ, दूसरी उनकी पुनरावृत्ति। दोनों मिलकर एक इकाई बनाती हैं। इसका और स्पष्ट रूप

आल-ए-इमरान आयत 27 में मिलता है:

تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ

इस आयत में ईश्वर ने अपना कार्य-पद्धति व्यक्त किया है। अल्लाह रात को दिन में प्रवेश कराता है और दिन को रात में प्रवेश कराता है, तो ज़िन्दगी को मौत से निकालता है और मौत को ज़िन्दगी से निकालता है। रात इन्द्रियों (हवास) की एक प्रकार है और दिन इन्द्रियों की दूसरी प्रकार। रात की इन्द्रियों की प्रकार में स्थानिक और कालिक दूरीयाँ मृत हो जाती हैं किन्तु दिन की इन्द्रियों की प्रकार में यही दूरीयाँ जीवित हो जाती हैं।

ज़ैद स्वप्न देखता है कि वह अपने एक मित्र से बातें कर रहा है। जबकि उसका मित्र दूर-दराज़ दूरी पर रहता है। स्वप्न में ज़ैद को यह अनुभव बिल्कुल नहीं होता कि उसके और मित्र के बीच कोई फ़ासला है। ऐसे स्वप्न में स्थानिक दूरी शून्य होती है। इसी प्रकार ज़ैद घड़ी देखकर रात के एक बजे सोता है। स्वप्न में एक देश से दूसरे देश तक सप्ताहों का लंबा सफ़र तय करता है। रास्ते में मंज़िल पर ठहराव भी करता है। एक दीर्घ अवधि बिताने के बाद घर लौटता है। नेत्र खुलते ही घड़ी देखता है। अब भी वही एक ही बजा है। इस प्रकार के स्वप्न में कालिक दूरी शून्य होती है। यह रात के इन्द्रियों की प्रकार है। जो दूरी इस प्रकार में मृत होती है वही दूरी दिन के इन्द्रियों में जीवित हो जाती है। स्वप्न की प्रकृति में अकालिक-कालिक सभी दूरी मिट जाती है। कुरआन पाक का यही कथन है कि रात की प्रकार दिन में प्रवेश करती है और दिन की प्रकार रात में। रात और दिन में बोध समान है। केवल दूरी मरती और जीती है। रात के इन्द्रिय *किताबुल-मुबी (लौह महफ़ूज़)* हैं और दिन के इन्द्रिय *किताबुल-मरक़ूम* हैं। इन दोनों में एक ही वस्तु समान है। हम उस वस्तु का प्राकृतिक घटनाओं में अनुभव करते हैं। जैसे ज़ैद और महमूद दोनों बैठे हुए हैं। दीपक जल रहा है। दीपक की रोशनी में ज़ैद महमूद को और महमूद ज़ैद को

www.ksars.org

देख रहा है। दोनों के लिये रोशनी देखने का माध्यम है। अब रोशनी की गति एक ही समय दो दिशाओं में है। ज़ैद की ओर से नूर महमूद की आँख तक पहुँचती है और महमूद की ओर से रोशनी ज़ैद की आँख तक पहुँचती है। यह एक ही दीपक की रोशनी है जो महमूद से ज़ैद तक और ज़ैद से महमूद तक यात्रा कर रही है। यात्रा की दिशाएँ भिन्न हैं किन्तु रोशनी का स्रोत एक है। या फिर यूँ कहें कि रोशनी एक है। इस रोशनी की अनुभूति में कोई ऐसी सत्ता है जो एक ही समय दो दिशाओं में यात्रा करती है और उसके परिणाम समान हैं। भेद कहाँ है? – यही रोशनी जो धारणाएँ ज़ैद में उत्पन्न करती है, वे ज़ैद की धारणाएँ कहलाती हैं। यही रोशनी जो धारणाएँ महमूद में उत्पन्न करती है, वे महमूद की धारणाएँ कहलाती हैं। यह अंतर केवल दृष्टा के दृष्टिकोण का है। यहाँ से घटनाओं का यह नियम प्रकट हो जाता है कि दिशाओं का परिवर्तन रोशनी में नहीं बल्कि दृष्टा की निगाह में है। इसका कारण वह केंद्रीय बिंदु है जिसे दृष्टा की सत्ता कहा जाता है। यही वही सत्ता है जो परम सत्ता से जुड़ी हुई है। نَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ में इसी संबंध का उल्लेख है। यहाँ यह बिंदु विचारणीय है कि ईश्वर ने इस स्थान पर 'हम' शब्द का प्रयोग किया है। इसके अर्थ यह हुए कि ईश्वर बहुलता में प्रत्येक व्यक्ति की सत्ता के साथ स्वयं को सम्बद्ध कर रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति की विशिष्ट स्थिति इसी कारण अपनी जगह स्थापित है।

रोशनी का केंद्र एक ही दीपक है। ज़ैद और महमूद दोनों को एक ही दीपक से रोशनी मिल रही है। किन्तु यह समझना आवश्यक है कि परिवर्तन रोशनी में नहीं होता। रोशनी निरंतर अपनी स्थिति पर क़ायम रहती है। केवल ज़ैद और महमूद की अभिव्यक्ति में परिवर्तन है क्योंकि वही रोशनी ज़ैद में ज़ैद की जीवन-छवि है और महमूद में महमूद की।

सूफ़ी-दर्शन में इस प्रकार को *मरतबा* पद कहते हैं। यदि हम *मरतबा* का अनुवाद सामान्य भाषा में करना चाहें तो अंग्रेज़ी का शब्द *मैकेनिज़्म* प्रयुक्त किया जा सकता है। *मैकेनिज़्म* की आधार-रेखा एक है, केवल नाम अलग-अलग हैं। यही *मैकेनिज़्म* या *मरतबा* असंख्य प्रकारों पर आधारित है। यही *मैकेनिज़्म* मनुष्यों में ज़ैद और महमूद है और यही वृक्षों में आम और बादाम है। एक ही रोशनी है जो इन सबकी आकृतियाँ बनाती है। यह *मैकेनिज़्म (मरतबा)* ऐसे काले बिंदुओं से बना है जो ब्रह्मांड की मूल है। इन काले बिंदुओं को *तजल्ला* कहते हैं। इनकी गति दोहरी होती है। कुरआन पाक में जहाँ ईश्वर ने पुनरावृत्ति (तकरार) का अर्थ प्रयुक्त किया है वहाँ यही दोहरी गति अभिप्रेत है। दोहरी गति प्रत्येक दिशा में घटित होती है। इस प्रकार एक ही समय वह प्रत्येक विस्तार, प्रत्येक गहराई, प्रत्येक दिशा और काल के सूक्ष्मतम इकाई में जारी है। यह दोहरी गति *सदूरी* हृदयगत होती है अर्थात काला बिंदु जो *काल (*Time*)* है, विस्तार, गहराई और दिशाओं में निरंतर छलाँग लगाता रहता है। जहाँ तक इस बिंदु की छलाँग है वहाँ तक *स्थान (*Space*)* की आकृति बनती रहती है। इस काले बिंदु में वे सभी रूप जो स्थानिक आकृति में दृष्ट होते हैं छिपे

www.ksars.org

हैं। जब यह बिंदु छलाँग लगाता है तो छिपी हुई घटनाएँ रूप धारण कर लेती हैं। इसी रूप का नाम ब्रह्मांड है। इस बिंदु में असंख्य आवरण हैं।

काला बिंदु

काला बिंदु को समझने के लिए उसका नाम समय(Time) रखना आवश्यक है। समय के दो पदक्रम हैं। एक पद में स्थान और समय के अंतराल विद्यमान हैं। दूसरे पद में स्थान और समय के अंतराल विद्यमान नहीं हैं। एक पद में द्रष्टा क्रमशः देखता है। उसका देखने का ढंग कुछ इस प्रकार होता है कि वह एक क्षण के बाद दूसरे क्षण, तीसरे क्षण और इसी प्रकार अनगिनत क्षणों के अनुक्रम का अनुभव करता है। यही अनुभव की पुनरावृत्ति है। अनुभव की पुनरावृत्ति से साक्षात्कार की गहराइयाँ

उदाहरणार्थ दिन एक हब्ज़ (Space) है। रात एक स्पेस है, फूल एक स्पेस है, फ़ज़ा एक स्पेस है, मिट्टी एक स्पेस है, पानी एक स्पेस है, ख़याल एक स्पेस है, आग एक स्पेस है, हवा एक स्पेस है, चाँदी एक स्पेस है, सोना एक स्पेस है, हर शै का छोटे से छोटा ज़र्रा एक स्पेस है, ब्रह्मांड का बड़े से बड़ा गोला एक स्पेस है। यदि किसी छोटे से छोटे परमाणु (Atom) के खरब दर खरब टुकड़े किये जाएँ तो हर टुकड़ा एक स्पेस है। यदि एक सेकेंड को संख दर संख हिस्सों में विभाजित किया जाए तो हर हिस्सा एक हब्ज़ (Space) है। काला बिंदु में अनादि से अनंत तक जितने हब्ज़ हो सकते हैं, वे सब तह दर तह मौजूद हैं।

काले बिंदु का दोहरा दृष्टिकोण पूर्ववर्णित दृष्टिकोण से विपरीत है। इस दृष्टिकोण में काले बिंदु की गहराइयाँ उस स्तर की अनंतता रखती हैं कि प्रथम दृष्टिकोण का बोध उसका परिग्रहण नहीं कर सकता। तथापि यह दृष्टिकोण अपना पृथक् बोध रखता है। इस बोध को ईश्वर ् ने "लैलतुल क़द्र" कहा है।

गत पृष्ठों में तसुवीद, तजरीद, तशहीद और तज़हीर का उल्लेख हुआ है। ये चारों ही बोध हैं। और बोध को समझने के लिए ब्रह्मांड की गहराई और चौड़ाई के विषय में जानना आवश्यक है। ब्रह्मांड को चौड़ाई में देखना और गहराई में अनुभव करना अथवा हृदय की आँख से ब्रह्मांड का अवलोकन करना बोध की प्रवृत्तियाँ हैं। प्रकट में देखना चौड़ाई में देखना है। और गुप्त में देखना गहराई में देखना है। क़ुरआन पाक में इन दोनों प्रवृत्तियों का वर्णन किया गया है। अल्लाह वही है जिसने धरती और आकाश को छह दिनों में रचा और फिर अर्श पर प्रतिष्ठित हो गया। अन्य स्थान पर ईश्वर सर्वशक्तिमान ने कहा – "हम तुम्हारी रग जान से भी अधिक समीप हैं।" यह भी कहा गया है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान धरती और आकाश (ऊँचाइयों और गहराइयों) का नूरहै।

www.ksars.org

अद्राक क्या है?

ईश्वर सर्वशक्तिमान का अरश पर स्थित होना और प्राण-नाड़ी से समीप होना... दोनों अरशादों में साझा अर्थ खोजना पड़ेगा। वस्तुतः यह ‘अदराक’ ही के दो आकलन हैं। व्यापकता (पहनाई) में अदराक करना तो मानवीय ‘कल्पना’ को अनन्तता (लातनाहित) के आयाम में ले जाता है। उसी आयाम को ईश्वर सर्वशक्तिमान ने अरश कहा है। गहराई में अदराक करना मानवीय चेतना के समीप पहुँचाता है। इसे ईश्वर सर्वशक्तिमान ने प्राण-नाड़ी से आसन्नता कहा है। यहाँ यह बात उपेक्षित नहीं की जा सकती कि अनन्तता का आयाम और अनन्तता का समीप हमअर्थ और पर्यायवाची अर्थ उत्पन्न करते हैं। ये दोनों स्थान वस्तुतः एक ही हैं। केवल अदराक के आकलन अलग-अलग हैं। अदराक एक ओर व्यापकता में यात्रा कर अरश तक पहुँचाता है, दूसरी ओर गहराई की दूरीयाँ तय कर प्राण-नाड़ी के आसन्नता में विलीन हो जाता है। दोनों ही प्रकार अल्लाह तक पहुँचना है। पहला अदराक ‘तसविद’ और दूसरा अदराक ‘तज़हीर’ है। अब दो अदराक ‘तजरीद’ और ‘तशहीद’ शेष हैं। तजरीद तसविद का दूसरा पक्ष है। प्रत्येक ऊँचाई की एक नीचाई होती है और प्रत्येक नीचाई की एक ऊँचाई। इस प्रकार तसविद का नीचा पक्ष तजरीद है और तज़हीर का ऊँचा पक्ष तशहीद है। ये दोनों पक्ष ब्रह्मांड की उन सीमाओं का वर्णन करते हैं जो पार-ब्रह्मांड (मावरा-ए-कायनात) से जा मिलती हैं। इस अर्थ की व्याख्या इन शब्दों में की गई हैः

अल्लाह ऊँचाइयों और नीचाइयों का नूर है। जैसे एक ताक़, उसमें एक कन्दील और कन्दील के भीतर रखा हुआ दीपक। यह पवित्र तेल का दीपक बिना किसी प्रकट रोशनी के प्रकाशमान है, जिसकी रोशनी ‘नूर अंदर नूर’ हर दिशा से मुक्त है।”

जब आयाम की खोज की जाएगी तो ईश्वर की विशेषताएँ ‘नूर दर नूर’ मिलेंगी। इन्हीं चार इद्राक के ज़रिए ईश्वर की स्वरूप-ज्ञान हासिल होती है। सियाह बिंदु का ज़िक्र आ चुका है। इसी बिंदु से चारों इद्राक का स्रोत उबलता है। इस मुक़ाम पर यह सवाल हो सकता है कि आख़िर इद्राक है क्या? इद्राक काल है। यही अद्राक सेकण्ड की न्यूनतम कणिका है। हम समझने के लिये इसे खरबवाँ अंश कह सकते हैं अथवा उससे भी कोई सूक्ष्मतर अंश जो हमारे चिन्तन में आ सकता हो। दूसरी ओर अति दीर्घ अवकाश, जिसे मानव जाति की मानसिक उड़ान गिन सकती हो। ये दोनों अद्राक हैं और श्याम बिन्दु के गुण हैं। लघुतम से लघुतम तथा महत्तम से महत्तम अवकाशों की प्रत्यक्ष दृष्टान्त हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु-बम का घटना है।

www.ksars.org

एक सेकेण्ड की विनाश, खरबों वर्षों की स्थायित्वता

वे पर्वत-शृंखलाएँ जो भू-विज्ञान के विशेषज्ञों के अनुसार खरबों वर्षों में बनी थीं, एक सेकेण्ड के भीतर इस प्रकार विनष्ट हो गईं कि उनके चिन्ह तक लुप्त हो गए। इस सत्य से कौन इन्कार कर सकता है कि एक सेकेण्ड की विनाश ने खरबों वर्षों की स्थायित्वता को अपने भीतर समाहित कर लिया। या यूँ कहना चाहिए कि एक सेकेण्ड ने खरबों वर्षों का परिग्रह कर लिया। खरबों वर्षों का रूप वे पर्वत-शृंखलाएँ थीं और एक सेकेण्ड का रूप उन पर्वत-शृंखलाओं का अन्त।

इसी प्रकार श्याम-बिन्दु के एक सेकेण्ड का खरबवाँ अंश अनादि से अनन्त तक व्याप्य है। किन्तु जिस अद्राक का प्रयोग करने के हम अभ्यस्त हैं, वह सेकेण्ड के खरबवें अंश का अवलोकन नहीं कर सकता। जो अद्राक सेकेण्ड के खरबवें अंश का अवलोकन कर सकता है उसका उल्लेख सूरः क़द्र में है।

अनुवाद: हमने उतारा *शब्-ए-क़द्र* में और तू क्या जानता है *शब्-ए-क़द्र* क्या है? *शब्-ए-क़द्र* उत्तम है हज़ार मासों से। अवतरित होते हैं देवदूत और आत्मा इसमें अपने प्रभु की आज्ञा से प्रत्येक कार्य पर। शान्ति है वह रात्रि प्रभात के उदय तक।

शब्-ए-क़द्र वह रात्रि है जिसमें श्याम-बिन्दु के अद्राक का अवतरण होता है। यह अद्राक सामान्य चेतना से सत्तर हज़ार गुना या उससे भी अधिक है, क्योंकि एक रात्रि को एक हज़ार मासों से सत्तर हज़ार गुने की संगति है। इस अद्राक से मनुष्य ब्रह्माण्डीय आत्मा का, देवदूतों का और उन विषयों का जो सृष्टि के रहस्य हैं, प्रत्यक्षीकरण करता है।

सूफ़ी विचार में इस अद्राक को *विजय (फ़तह)* कहा जाता है। *विजय* में मनुष्य अनादि से अनन्त तक के प्रसंगों को जाग्रत अवस्था में चल-फिर कर देखता और समझता है। ब्रह्माण्ड के अत्यन्त दूरस्थ अन्तरालों में खगोलीय पिण्डों को बनते और अपनी स्वाभाविक आयु पूरी कर नष्ट होते देखता है। असंख्य आकाशगंगाएँ उसकी निगाह के सामने सृजित होती हैं और असीमित कालखण्ड व्यतीत कर विनष्ट हो जाती हैं। *विजय* का एक सेकेण्ड प्रायः अनादि से अनन्त तक के कालखण्ड का व्याप्य हो जाता है।

अद्राक क्या है?

ज़ैद कहता है कि मैंने अख़बार पढ़ा, मैंने पत्र लिखा, मैंने भोजन किया। अख़बार किसने पढ़ा, पत्र किसने लिखा, भोजन किसने किया? ज़ैद ने। यह सब कुछ ज़ैद ने किया। मगर यह सब कुछ बयान करने वाला, समझने वाला ज़ैद का ज़ेहन है। ज़ैद ने क्या किया, इसका जानने वाला केवल ज़ैद का ज़ेहन है। जानने की प्रकृति सूचना से अधिक कुछ नहीं है। अख़बार पढ़ना, पत्र लिखना

www.ksars.org

इत्यादि सूचनाएँ हैं। जब हम इन सूचनाओं से कटा दृष्टि करते हैं तो ज़ैद कौन है, ज़ैद ने क्या किया है, सब निरर्थक है। वास्तविकता केवल इतनी है कि ज़ैद के ज़ेहन को सूचनाएँ प्राप्त हुईं। यहाँ दो संस्थाएँ उल्लेखनीय हैं: सूचनाएँ और ज़ेहन। सूचना देने वाला भी ज़ेहन है और सूचनाएँ प्राप्त करने वाला भी।

एक ही इकाई है जिसके दो पक्ष हैं। ज़ेहन कहता है नष्ट होने वाले पर्वतों की आयु दो खरब वर्ष है। यह एक सूचना है। यदि एक वर्ष को एक इकाई ठहराया जाए तो दो खरब वर्षों को दो खरब इकाइयाँ कहा जाएगा। इसका अर्थ यह हुआ कि अद्राक ने एक अनुभव को दो खरब हिस्सों पर बाँट दिया। यह एक सूचना है लेकिन इसकी अवधि दो खरब वर्षों का काल है। जब यह सूचना मिली तो सुनने वाले ज़ेहन ने वास्तव में दो खरब वर्षों की अवधि का अनुभव किया। अर्थात् अद्राक के एक सेकंड में दो खरब वर्षों का माप उपस्थित है। दो खरब वर्ष कब गुज़रे, किसने गुज़ारे, कैसे गुज़रे – यह कोई नहीं बता सकता। यह केवल सूचना है, ऐसी सूचना जिसका अद्राक केवल एक सेकंड से अधिक नहीं। हमारे ज्ञान में केवल ज़ेहन ही एक संस्था है जिसे ब्रह्मांड कहते हैं। ईसा (अलैहि सलाम) ने कहा:

”God Said LIght and There Was Light“

ईश्वर ने कहा रोशनी हो और रोशनी हो गई।" क़ुरआन के शब्दों में: "कुन फ़ैकून" – हो जा और वह हो गया। जब हमारी निगाह किसी पुस्तक के शब्दों पर पड़ती है तो मानो रोशनी पड़ती है, क्योंकि हम रोशनी के अलावा कुछ देख ही नहीं सकते। जब हम पुस्तक पढ़ते हैं तो रोशनी पढ़ते हैं, और जो कुछ समझते हैं, रोशनी समझते हैं। क्योंकि जब हम रोशनी पढ़ेंगे तो रोशनी ही समझेंगे। और जो कुछ हम समझ रहे हैं वह केवल सूचना है। अब कहना पड़ेगा कि नूर और सूचना एक ही वस्तु हैं। देखना यह है कि सूचना का स्थान क्या है। यदि हम स्थान का पता कर लें तो काल और मकान(Time and Space) को समझ लेंगे। खगोलशास्त्री कहते हैं कि हमारे सौर-मंडल से अलग कोई ऐसा तारा नहीं जिसकी रोशनी हम तक चार वर्ष से कम में पहुँचे। वे ऐसे तारों का भी उल्लेख करते हैं जिनकी रोशनी हम तक एक करोड़ वर्ष में पहुँचती है। इसका अर्थ यह हुआ कि हम इस सेकंड में जिस तारे को देख रहे हैं, वह एक करोड़ वर्ष पहले का स्वरूप है। इसे मानना पड़ेगा कि वर्तमान क्षण ही एक करोड़ वर्ष पहले का क्षण है। यह विचारणीय है कि इन दोनों क्षणों के बीच – जो एक ही और बिल्कुल एक हैं – एक करोड़ वर्षों का अंतराल है। यह एक करोड़ वर्ष कहाँ गए? यह स्पष्ट हुआ कि ये केवल अद्राक की विधि है। अद्राक की विधि ने केवल एक क्षण को एक करोड़ वर्षों पर बाँट दिया। जिस प्रकार अद्राक बीते हुए एक करोड़ वर्षों को वर्तमान क्षण में देखता है, उसी प्रकार अद्राक आने वाले एक करोड़ वर्षों को भी वर्तमान क्षण में देख सकता है। इस प्रकार यह प्रमाणित हो जाता है कि अनादि से अनंत तक तक का सम्पूर्ण अंतराल केवल एक क्षण है, जिसे अद्राक की विधि ने अनादि से अनंत तक के चरणों पर बाँट दिया है। हम इसी बाँट को मकान (Space) कहते हैं। अर्थात् अनादि से अनंत तक तक का

www.ksars.org

सम्पूर्ण अंतराल मकान है और जितनी घटनाएँ ब्रहमांड ने देखी हैं, वे सब एक क्षण की बाँट में सीमित हैं। यह अद्राक का चमत्कार है जिसने एक क्षण को अनादि से अनंत तक तक का रूप दे दिया है।

अद्राक कहाँ से आया?

ऊपर उल्लेख हो चुका है कि वह केवल सूचना है। यह सूचना कहाँ से प्राप्त हुई है?

ईश्वर कहते हैं कि श्रवण मैंने दिया है, निगाह मैंने दी है। इसका अर्थ यह हुआ कि सूचना मैंने प्रदान की है। हम सामान्य परिस्थितियों में जितनी सूचनाएँ प्राप्त करते हैं, उनकी तुलना समस्त प्रदत्त सूचनाओं के सामने क्या है? संभवतः शून्य के समान। प्राप्त सूचनाएँ इतनी सीमित हैं कि उन्हें नगण्य कहा जाएगा। यदि हम व्यापकतर सूचनाएँ प्राप्त करना चाहें तो उसका साधन आत्मविद्या (आध्यात्मिक विज्ञान) के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, और आत्मविद्या के लिए हमें कुरआन पाक की ओर ही उन्मुख होना पड़ेगा।

www.ksars.org